धर्म और संस्कृति कोश

अरुण

अरुण का जन्म 3 जनवरी, 1928 में हुआ था। आगरा यूनिवर्सिटी से पोज़ीशन के साथ एम०ए० प्राचीन भारतीय इतिहास में किया। आयु कम होने के कारण उसी साल आई०ए०एस० में न बैठ सके। इसी बीच प्रेस में लग जाने के कारण विचार त्याग दिया। तभी से निष्काम प्रेस चला रहे हैं जो हीरक जयंती मना चुका है।

सन् 1939 में 11 वर्ष की अवस्था में टाँग की हड्डी टूटने पर एक मास का खाट-वास और कहानी लिखना चालू। पहली कहानी 1944 में प्रकाशित, पहला कहानी-संग्रह दिल्ली से 1946 में प्रकाशित। इस समय तक 74 पुस्तकें प्रकाशित जिनमें उपन्यास, कहानी, एकांकी, हास्य और इतिहास-शोध पर विशेष बल। 1000 पृष्ठ का 'भारतीय पुरा-इतिहास कोश' एक साल में अप्राप्त। ' धर्म जनकोश', धर्म सूक्ति कोश', 'भारत की प्रमुख जातियों का कोश, 'यक्षों की भारत को देन' और 'इतिहास की गुत्थियाँ', The Untold Life of Jesus प्रकाशित।

'सचित्र गृह-विनोद' पर उत्तर प्रदेश सरकार का पुरस्कार। भारतीय साहित्यकार संघ से 'कविर्मनीषी' की उपाधि और स्वर्ण-पदक। सरस्वती परिषद् का प्रथम वीणा पुरस्कार व ताम्रपत्र।

कॉलिज में प्रथम आने के पुरस्कार, अनेक परिषदों के मुख्य मंत्री, चीफ प्रीफेक्ट, यूनियन के उप-मुख्य मंत्री, मेरठ विद्यार्थी कांग्रेस के 1945-46 से 1947-48 तक मंत्री, 1947 में प्रांतीय-रक्षा-दल में सैनिक शिक्षा लेकर वार्ड कमांडर, मेरठ में 1949 में हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन की संयोजक समिति के सदस्य।

सन् 1959 में प्रगतिशील साहित्यकार परिषद् के प्रधान। 1962 में मेरठ में जूनियर चैंबर इंटरनेशनल की शाखा खोली और फाउंडर-प्रधान। 1963 और 1967 में दुबारा तिबारा प्रधान। मेरठ रौटरी क्लब के सबसे पुराने सदस्य (1951 से) और 1966-67 में प्रधान।

क्रिकेट के धत्ती कॉलिज और डिस्ट्रिक्ट टीम के सदस्य। 1952 से 1962 तक कैण्ट स्पोर्ट्स क्लब के कप्तान जिसने भारत में 11 ट्रॉफी जीतीं। विशेष रुचि-लिखना, निजी विशाल पुस्तकालय में डूबे रहना, क्रिकेट, यात्राएँ और फोटोग्राफी।

धर्म और संस्कृति कोश

भाग-2

धर्म और संस्कृति कोश

भाग-2

लेखक

अरुण

राधा पब्लिकेशन्स

नई दिल्ली -110002

धर्म, संस्कृति और मनुष्य

भीषण धमाका हुआ और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। बिग बैंग (घोर धमाका) सिद्धान्त सर्वत्र माना जाने वाला अधुनातम पृथ्वी की उत्पत्ति का सिद्धान्त है यही ऋग्वेद के प्रसिद्ध सूक्त में वर्णित है।

उत्पत्ति के बाद तीन भूखण्ड बने थे। उत्तर में एशिया था, दक्षिण में गोंडवानालैण्ड (दक्षिणी भारत, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, आदि) और पश्चिम में दोनों अमेरिका। गोंडवाना दक्षिणी भारत का भूगोल में पढ़ाया जाता नाम है क्योंकि यहाँ गोंड प्रजाति (race) की जन जातियाँ पाई जाती हैं। और यही प्रजाति अफ्रीका, पूर्वी द्वीप समूह और आस्ट्रेलिया में भी पाई जाती हैं। इसी कारण पश्चिमी भूगर्भशास्त्रियों ने इस लुप्त महाद्वीप का नाम गोंडवानालैण्ड रखा।

हजारो वर्षो तक भूकम्पों, ज्वालामुखियों के फटने और जल में स्थित भू- परतें टूटने से संसार का नक्शा पलटता रहा और वर्तमान रूप लेता रहा। भू-परत के टूटने से अफ्रीका का उत्तर-पूर्वी भाग अलग हो गया और खिसक कर एशिया की दक्षिणी भू-परत से जुड़ने लगा। पूर्वी द्वीप समूह और आस्ट्रेलिया ने फट कर अपना वर्तमान रूप ले लिया। गोंडवानालैण्ड केवल पुस्तकों में रह गया।

अफ्रीका की परत नीची थी और एशिया की ऊँची। वह एशिया की परत के नीचे घुसी तो वह ऊपर उठी। बीच का टेथिस सागर सूख गया (राजस्थान की खारे पानी की सांभर झील उसका अवशेष है) और गंगा-सिन्धु का विस्तृत उपजाऊ समतल मैदान निकल आया। हिमालय को दक्षिणी भारत की परत नीचे आगे बढ़कर ऊपर उठा रही है और हजारों सालों से उसका उठना जारी है। आज भी वह हर साल कुछ से.मी. ऊपर उठ रहा है।

यह भगवान् की देन है, ईश्वर का आशीर्वाद है जिसने भारत को यह रूप दिया, यह साज-सज्जा दी– एक त्रिकोण ऊपर से पर्वत श्रेणियों से ढँका। विश्व की सबसे ऊँची पर्वत-श्रृंखला हिमालय जो गर्मी में हिम पिघलाकर गंगा-सिन्धु के उपजाऊ मैदानो को सींचती है और वर्षा में जल भरे मेघों को रोककर उन्हें बरसाती है। दक्षिण में मानसून (पानी भरी हवाओं के लिये अरबी शब्द) का वरदान जो शेष संसार को नहीं मिला है। सागरों से जल लेकर वे सम्पूर्ण भारत को जल-मग्न कर देती है। पूरी दुनिया में दो ऋतुएँ हैं जबकि भारत में चार ऋतुएँ हैं।

उपजाऊ समतल प्रदेश होने के कारण भारत उन बिरले इने-गिने देशों में से एक है जहाँ पाँच-छह हजार वर्ष पूर्व शिकारी युग समाप्त होकर खेतिहर युग आरम्भ हुआ जबकि विश्व के अधिकतर भागों में यह आज से डेढ़-दो हज़ार वर्ष पूर्व हुआ।

नदी किनारे कुटिया बनीं। खेती आरम्भ हुई। मनुष्य की जब तक फसल तैयार होती अवकाश मिलता था और उसने सोचना आरम्भ किया– मैं अपने जीवन को कैसे सुचारू रूप से व्यतीत करूँ? इसमें कौन मुझे सहायता देता है? प्रकृति का क्या सहयोग है? ठीक जीवन जीने के लिये प्रयोग आरम्भ हो गये। ऋग्वेद में उसे ऋत् कहकर पुकारा गया-ठीक चलने की राह, सच्चा-अच्छा जीवन बिताने की रीति।

यह धर्म का आरम्भ हुआ। यः जीवन धारयेत। यह जीवन को सुचारू रूप से धारण करने की रीति और नीति है। धर्म का विकास होता रहा। प्रयोग होते रहे। जो रीति ठीक नहीं पाई गई वह तज दी गई। बाकी सूर्य के समान सत्य सिद्ध होती रही।

ये रीतियाँ और नीतियाँ संस्कार बनते रहे। देश को इन्होंने संस्कृति दी और संस्कृति ने सद्मानव का विकास किया। सहस्त्रों वर्षो की धार्मिक साधना और संस्कृति ने भारतवासी को ओत प्रोत कर दिया।

इस ठीक राह दिखाने वाले धर्म को, उससे उत्पन्न विचारों को और उनसे आच्छादित मानवों को मैंने इस कोश में एकत्र करने की चेष्टा की है।

हमारे विद्वानों ने थोड़े में बहुत को कहने का प्रयास किया है। ऋग्वेद में उसे सूक्त कहा है, कुछ शब्दो में बहुत समझाने का। पाणिनी ने तो अपने सूत्रों में सीमा पार कर दी, चार पाँच शब्दों का अर्थ समझने-समझाने में पूरा पृष्ठ लगता है। मैंने भी धर्म सम्बन्धी रीति को कम से कम शब्दो में व्यक्त किया है।

मनुष्य पर संस्कृति की क्या प्रक्रिया चलती है, उसके क्या अनुभव होते हैं और उसकी क्या मानसिक प्रतिक्रियायें होती है तथा वे उन्हें कैसे अपने लेखन में उजागर करता है। उन सुभाषितों को भी मैंने इस कोश में स्थान दिया है।

साथ ही दैनिकी, रोजनामचा, जर्नल के साथ, कुछ स्पष्ट विचार, विचारों के टकराव और अनुभवों को मूर्त रूप में प्रगटाया है।

प्रत्यक्ष है संकलन में लेखक भी सामने आ जाता है। सो अपनी कमियों का क्षमाप्रार्थी मैं आपकी सेवा में इस कोश को समर्पित करने का दुस्साहस कर रहा हूँ।

15 अगस्त, 2006

निष्काम प्रेस, मेरठ

अरुण

अनुक्रमणिका

विषय-सूची

कुछ स्फुट विचार

न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या।

×

जब अपने ऊपर भरोसा उठ जाता है तब दूसरों के प्रति जलन उत्पन्न होती है।

×

सोते समय कोई तकिया इतना मुलायम नहीं जितना एक स्वच्छ अन्तःकरण।

×

संसार को प्यार करना बड़ा आसान काम है। इस बगल वाले बेवकूफ़ के साथ रहना एक समस्या है।

×

अज्ञानं, मौन के समान, अद्‌भुत शरणस्थल है। वह अन्तःकरण के हर विद्रोह, हर विरुचि, हर प्रतिवाद से बचाता है।

×

ईसाइयों में मृत्यु के समय पादरी के सामने पापों की स्वीकृति करने की प्रथा है। चित्रकार पेरुगिनो ने पादरी बुलाने को मना करते हुए कहा था, "मैं तो दूसरी दुनिया में जो अस्वीकृत जाता है उसका क्या होगा, यह देखने का बहुत इच्छुक हूँ।" और प्रसिद्ध दार्शनिक हेनरीख हेयने ने कन्धे हिला दिये थे, "भगवान् मुझे माफ करेगा .... यह उसका व्यवसाय है।"

×

अधिक पाने के लिये कम की इच्छा करो।

×

अफ़वाह दुहराई नहीं जाती, सुधारी जाती है।

×

आलसी आदमी काम से नहीं थकता, वह केवल यह समझकर कि उसे काम करना है थक जाता है।

×

अपने प्रति अपनी राय को छिपाकर रखना सबसे कठिन काम है।

×

मजे की बात है कि डाक्टर को जिस ऑपरेशन को करने में एक घंटा लगता है, मरीज को उसे बताने में सालों।

×

वादा तो करलो आज, वो झूठा ही क्यों न हो।

×

सब निराशावाद में बुद्धिमत्ता है किन्तु वह बाँझ बुद्धिमत्ता है। सब आशावाद में पागलपन है, परन्तु वह सर्जनात्मक पागलपन है।

×

अपने ही प्रभापुंज को प्रशंसात्मक दृष्टि से घूरते जाने से मनुष्य की गरदन तिरछी हो जाती है।

×

किसी आदत को अपनाना बड़ा आसान है परन्तु उसे फिर त्यागना अपनी खाल उधेड़ने के बराबर है।

×

मैं इमर्सन से इस बात पर पूरी तरह सहमत हूँ कि जितने मेरे अच्छे विचार हैं सब पूर्वजों ने चुरा रखे हैं।

×

प्रेमचन्द शताब्दी सब जगह मनाई जा रही है। मेरठ यूनिवर्सिटी भी एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित कर रही है। उसके लिये मुझसे भी एक लेख लिखकर देने के लिये कहा गया।— प्रेमचन्द के उपन्यासों पर, या पात्रों पर, या कहानियों पर या शैली पर। मेरे मुँह से बेसाख्ता निकल पड़ा, "लेखक को विशेष लेख लिखकर देने को कहना एक गर्भवती स्त्री को यह कहने के बराबर है कि तू एक गोरा काले बालों वाला लड़का पैदा कर।"

×

हम हर जगह यही सुनते हैं युवावस्था जीवन का सुनहरा संमय है। लेकिन यही कहने वाले दूसरे सांस में युवकों से कहते दिखाई देते हैं कि उन्हें अपने भविष्य का सोचना चाहिए।

×

अपने आप एक अर्ध-सत्य पर पहुँचना दूसरों द्वारा बतलाये सत्य से अधिक उत्तम है।

×

एक व्यक्ति को दान की विलासिता को समझने के लिये निर्धन होना चाहिये।

×

एक रिटायर्ड आदमी आज शाम मिल गया। वह बहुत खुश था। सब अपने मन की करता है। सवेरे पत्नी के लिये साग-सब्जी ला देता है। ठाठ से अखबार और मैगज़ीन पढ़ता है। मौसम अच्छा होता है तो घूमने निकल जाता है। बस, एक ही अफ़सोस है। अब उसे इतवार या त्यौहारों की छुट्टी नहीं मिलती।

×

सर्वोत्तम व्यवस्था कहाँ पाई जाती है? कब्रिस्तान में। वहाँ एक धरती में लेटे वे कोई माँग नहीं करते और अपनी समानता का मौन शान्ति से उपभोग करते हैं।

×

अनुशासन पालक के समान है। हम उसे चाहे स्वयं स्वाद से न खाते हों, किन्तु दूसरों के स्वास्थ्य के लिये उसे बहुत आवश्यक समझते हैं।

×

जो दूसरे आदमी खरीदते हैं वह विलासिता है।

×

एक जापानी विद्वान ने लिखा है, "विद्वान हर नई खोज पर मानते हैं कि वह प्रगति की द्योतक नहीं है बल्कि एक रुकावट है, क्योंकि हामी भरने के स्थान पर वह नए प्रश्नों को जन्म देती है।"

×

ध्यान की सीढ़ियों पे पिछले पहर
कोई चुपके से पाँव धरता है। —*नासिर काज़मी*

×

खुल गई थी आंधियों के सामने दिल की किताब
एक काग़ज़-सा हवा में देर तक उड़ता रहा।
—*विमल कृष्ण 'अश्क'*

×

दिल के रिश्ते अजीब रिश्ते हैं
साँस लेने से टूट जाते हैं। —*मुस्तफा ज़ैदी*

×

तेरे बदन में धड़कने लगा हूँ दिल की तरह
ये और बात कि अब भी तुझे सुनाई न दूँ। —*अहमद फ़राज*

×

अहंवादियों में एक गुण होता है, वे दूसरों की बुराई नहीं करते।

×

यदि तुम सोचते हो कि शिक्षा बहुत महँगी है तो अज्ञान को अपनाकर देखो।

×

कार्यश्रमी को कार्यप्रेमी से नहीं मिलाना चाहिये। बाद वाले का कार्य उसका खेल भी होता है। मार्क ट्वेन जब ७३ वर्ष का हुआ तब उसने लिखा, "मैं अपनी रोटी बिना श्रम किए कमा सका हूँ। पुस्तकें और पत्रिका के लिये लेख लिखना मेरे लिए काम नहीं है। वह तो मेरे लिए बिलियर्ड के समान है।"

×

आराम अतिथि की तरह आता है, रुक कर घरवाला बन जाता है और फिर हमें दास बना डालता है।

×

ठण्ड का वर्णन एक घुमक्कड़ ने कितना सजीव किया है— वहाँ होटल में इतनी ठण्ड थी कि मुझे ब्रुश को पकड़ना होता था, बाकी सारा काम दाँत कर देते थे।

×

राजनीतिज्ञों ने एक कमेटी बैठा दी है वह शब्द ढूँढने के लिये जो बोला 'हाँ' की तरह जाता हो परन्तु मतलब 'ना' का निकलता हो।

×

'ऑटोमैटिक' का सीधा-सादा अर्थ है कि आप उसमें कितनी ही माथापच्ची करें परन्तु ठीक न कर पायें।

×

चिन्ता कल की रोटी को खाने वाला आज का चूहा है।

×

आईने में वो देख रहे बहारे-हुस्न
आया मेरा ख़्याल तो शरमा के रह गये —*हसरत मोहानी*

×

समय भगवान के हाथ सब चीज़ एक साथ न घटने देने की चाभी है।

×

राह पर उनको लगा लाए तो हैं बातों में
और खुल जायेंगे दो-चार मुलाकातों में। —*दाग़ देहलवी*

×

यदि तुम्हारे पास ज्ञान है, तो उसकी लौ से दूसरों को भी अपनी मोमबत्ती जलाने दो।

×

आजकल के ज़माने में विनोदी बनना कोई दूभर काम नहीं है जबकि सारी सरकार और राजनीतिज्ञ तुम्हारे लिए काम कर रहे हैं।

×

आदम को एक लाभ था। जब भी उसने कोई विनोद सुनाया, उसे यह निश्चय था कि वह उससे पहले किसी ने नहीं कहा होगा।

×

बिखरे-बिखरे है किसी शोख़ के बालों की तरह
हम तो आवारा हैं शायर के ख़्यालों की तरह। —*कामिल कुरैशी*

×

हैरान से क्यूँ मेरा खंडहर देख
जिसका भी जो पत्थर हो, ले जाओ। —*मनमोहन*

×

परत-परत है हरेक चेहरा प्याज की मानिंद
बहुत दिनों से कोई आदमी नहीं देखा। —*मीमालिफ़*

×

एक बात ध्यान में रखो— जब तुम सोचते हो कि सब कुछ लुट चुका है, तब भी भविष्य तुम्हारे हाथ में है।

×

तेज़ से तेज़ चाकू को भी पथरी चाहिए, इसी प्रकार सर्वाधिक बुद्धिमान को भी कम्पनी चाहिये।

×

तमिल दार्शनिक थायुमनवर ने कहा है, "मौन वह सागर है जिसमें समस्त धर्मों की सारी नदियाँ अपने को विलीन कर देती हैं।"

×

समय उनके लिये बहुत धीमा है जो इन्तज़ार करते हैं; उनके लिये बहुत तेज़ है जो डरते हैं; बहुत लम्बा है उनके लिये जो दुःख मानते हैं; बहुत थोड़ा है उनके लिये जो आनन्द मनाते हैं। लेकिन उनके लिये जो प्यार करते हैं, समय लुप्त हो जाता है।

×

चुभती बात संक्षेप में कहो क्योंकि शब्द और किरण जितने एक स्थान पर केन्द्रित होंगे और घनीभूत होंगे उतना ही अधिक जलाएँगे।

×

"अनीस, दम का भरोसा नहीं, ठहर जाओ,
चिराग़ लेके कहाँ सामने हवा के चले।"

×

"इस शहरे बेचिराग़ में तू जायेगी कहाँ,
आ ऐ शबे-फ़िराक़ तुझे घर ही ले चलूँ।"

×

आज के टेलिविज़न-हैलीकोप्टर युग से तंग आकर एक पश्चिमी लेखक ने पूर्वी यूरोप के लेखक से कहा था कि हम सब आपके देश के प्रयोग को बड़ी आशा की दृष्टि से देख रहे हैं।

उसका उत्तर था—इसी आदर्श के पीछे हम लड़े थे, मिटे थे। किन्तु जो यथार्थ में हमने प्राप्त किया है, वह वही है जिससे आप परेशान हैं। हमारे यहाँ की जनता बड़ी उत्सुकता से आपकी औद्योगिक प्रगति को देख रही है। हम और आप जानते हैं कि दोनों जगह ढोल की पोल है।

सबसे भयानक बात यह है कि स्वयं मज़दूर वर्ग तेज़ी से उन मध्यवर्गीय स्वार्थों और आदर्शों को अपनाता जा रहा है जिनके विरुद्ध उनका जिहाद था। यह पूँजीवादी और समाजवादी दोनों देशों में है। "अगर मज़दूर को अपनी स्थिति को सुधारने का अवसर मिले, तो वह भी मध्य वर्ग के लोगों की तरह सतही और उथला हो जायेगा, जिन पर वह आज ईर्ष्या करता है ... सतहीपन से मतलब है जब आदमी बेहतर स्थिति के अवसरों को स्वीकार करके दूसरे लोगों को भुला देता है, जो उससे बुरी स्थिति में जीते हैं। दूसरों को भूल जाने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह के सफल लोग खुद अपने अस्तित्व की जटिलता को भुला देते हैं क्योंकि वे अपने को मृत्यु और संकट के बोध से बचाकर जीना चाहते हैं।"

—स्टीफेन स्पेण्डर (वर्ल्ड विदिन वर्ल्ड)

×

आज एक ऐसी संस्कृति बन गई है जो न बुर्जुवा है न प्रोलिटेरियट बल्कि एक हरामी, लक्ष्यहीन घोल जो गन्दे पानी की तरह सब ओर इकट्ठा हो गया है।

×

मार्क ट्वेन ने कहा है कि एक असली दोस्त की पहचान है कि वह जब तुम ग़लत हो तब भी तुम्हारा साथ दे। जब तुम ठीक हो तो कोई भी तुम्हारा साथ दे देगा।

×

लियोनार्डो ड विंची ने कहा, "नदियों में जो पानी तुम छुओगे वह अन्तिम होगा जो गुज़र चुका है उसका, और प्रथम होगा उसका जो आ रहा है। यही वर्तमान समय के साथ है।"

×

मौन असह्य प्रत्युत्तर है। —जी० के० चेस्टरटन

×

बच्चों को सलाह देने की सबसे आसान युक्ति— खोज निकालो कि वे क्या चाहते हैं और फिर उन्हें सलाह दो उसे पूरा करने की।

×

जीवन को मोमबत्ती के समान मानना ग़लत है, वह तो तेज़ टार्च है।

—जार्ज बर्नर्ड शॉ

×

ज़रूरत से ज़्यादा स्वामित्व रखना सम्भव है। एक मनुष्य जिसके पास एक घड़ी है जानता है कि क्या समय है; दो घड़ी वाला कभी निश्चित नहीं होता। —शॉ

×

घर से निकला हूँ आँसुओं की तरह,
वापसी का कोई सवाल सहीं। —डॉ बशीर बद्र

×

केवल एक चीज़ तुम्हारी है, वह जो तुम सीख सकते हो और सीखा है। इसे कोई तुमसे नहीं छीन सकता सिवाय उस समय जब वह तुम्हारा जीवन भी ले ले।

×

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ टॉमस बैबिंगटन मैकाले ने १८२५ ई० में लिखा था, "हमारे समय के बहुत से राजनीतिज्ञ को यह प्रस्ताव सच मानकर रखने की आदत है कि कोई भी जनता स्वाधीन नहीं होनी चाहिये जब तक वे अपनी स्वाधीनता को प्रयोग में लाने के लिये उपयुक्त न हो। यह नीति उस पुरानी कहानी के मूर्ख के लायक है जिसने प्रण किया था कि जब तक वह तैरना नहीं सीख लेगा पानी में पैर नहीं धरेगा। यदि जनता जब तक वह दासता में बुद्धिमान और भली न हो जाये, स्वाधीनता के लिये इन्तज़ार करे, तो उसे हमेशा हमेशा बाट जोहनी पड़ेगी।" यह है इतिहास-बोध। मैकाले का कथन आज भी उतना ही सत्य है जितना १८२५ ई० में था।

×

भगवान् ने हमसे चीज़ें छिपाने का सरल तरीक़ा ढूंढा है उन्हें हमारे पास रखने का।

×

यदि हमें अपने को सुधारना है तो अपने संस्मरण लिखने शुरू कर दें।

×

यदि कोई युवक किसी युवती की शिकायत करे कि उस पर दिल नहीं है, तो यह निश्चित है कि युवती पर उस युवक का दिल है।

×

अर्थशास्त्री वह विद्वान है जो आगामी कल को यह बता सके कि आज जो उसने होने की भविष्यवाणी की थी वह क्यों नहीं हुई।

×

सेवानिवृत्ति (रिटायरमैंट) वह अवस्था है जब जीना बड़ा आसान है पर जीने की क़ीमत चुकाना उतना ही मुश्किल।

×

कहा जाता है कि अपने घर को महल समझो। आज जब उसमें कोई मरम्मत करानी हो तो यह प्रत्यक्ष हो उठता है।

×

मैं तो स्वयं स्त्री-स्वातन्त्र्य का पक्षपाती हूँ। पर इस हालत से परेशान हूँ अब वे नारी तो रही नहीं और पुरुष बन नहीं पा रहीं।

×

लियोनार्डो डा विंची ने लिखा था, "जो वास्तव में जानता है वह कभी ज़ोर से नहीं बोलेगा।"

×

मुद्दतें गुज़रीं तेरी याद भी आई न कभी,
और हम भूल गये हों तुझे ऐसा भी नहीं। —*फ़िराक़*

×

यों ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ तेरे बग़ैर।
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूँ मैं। —*जिगर*

×

होगा किसी दीवार के साये में पड़ा 'मीर'
क्या काम मुहब्बत से उस आराम-तलब को। —*मीर तकी मीर*

×

किसी बेकस को ऐ बेदादगर मारा तो क्या मारा
जो आप ही मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा। —*जौक़*

×

हँसते जो देखते हैं किसी को किसी से हम
मुँह देख-देख रोते हैं किस बेकसी से हम। —*मोमिन*

×

एक कमेटी के सदस्य होकर काम करने के कुछ सुनहरी नियम हैं :—

कभी समय पर नहीं आओ नहीं तो अनाड़ी लगोगे।

जब तक मीटिंग आधी समाप्त न हो जाये मुँह से एक शब्द न निकालो। बुद्धिमान कहलाओगे।

जितना अस्पष्ट हो सको उतना अच्छा। दूसरों की बात नहीं कटेगी।

बीच में एक उपसमिति बनाने का प्रस्ताव कर दो।

स्थगन-प्रस्ताव रखने वाले पहले तुम हो तो लोकप्रिय हो जाओगे, क्योंकि सब अगले कार्यक्रम की इच्छा कर रहे होंगे।

×

हर आदमी के जीवन की तीन स्टेज होती हैं।

—मेरे पिता जी के बराबर तेरे पिताजी कैसे हो सकते हैं।

—ओह पिताजी, तुम कुछ नहीं जानते।

—मेरे पिताजी कहा करते थे।

×

"ब्रह्मा ने सीता की सृष्टि करके चन्द्रमा और सीता के मुख को तुला पर रखा। सौन्दर्य में सीता का मुख अधिक सारयुक्त होने के कारण भारी हुआ। इसी कारण चन्द्रमा आकाश में चला गया।" *—अनर्घराघव*

बोर वह आदमी है जो हमारे हज़ार बार अपना दृष्टिकोण समझाने पर भी अपने स्वयं के दृष्टिकोण पर दृढ़ रहता है।

×

चिन्ता सभ्य होने का हमें इन्कम-टैक्स भरना पड़ रहा है।

×

व्यस्ततम मनुष्यों में से कोई भी इतना व्यस्त नहीं होता कि तुम्हें अपनी व्यस्तता बखानने में समय न निकाल सके।

×

इस तरह अब राह में मिलते हैं लोग
जैसे हर इन्सान बेघर बन गया। *—उरुज ज़ैदी*

×

फिर वफ़ा लौट के आई न कभी
रास्ता भूल गई हो जैसे! *—कृष्णमुरारी*

×

उबलते हुए जल में जिस प्रकार हम अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते, उसी प्रकार हम क्रोधी बनकर नहीं समझ सकते कि हमारी भलाई किस बात में है।

—महात्मा बुद्ध

×

जब एक राजनीतिज्ञ अपने पिछले वक्तव्य की सफाई पेश करने लगे तो समझ लो कि जनता उसे अच्छी तरह समझ गई है।

एक सिनिक (दोषदर्शी) क़ीमत हर चीज़ की जानता है लेकिन मूल्य किसी का नहीं जानता।

×

तर्क करते समय अपनी राय की सफाई देना कोई मुश्किल नहीं बनिस्बत यह जानने के कि वह है क्या।

×

एक आदमी मिला जो कोई दोस्त न होने की शिकायत कर रहा था। उसे कैसे समझाऊँ कि भगवान् और अच्छी पुस्तकों की मैत्री के बाद भी क्या दोस्त चाहिये ?

×

आजकल भी चमत्कार होते रहते हैं, लेकिन उनके होने के लिये हमें मेहनत बहुत करनी पड़ती है।

×

एक अच्छा राजनीतिज्ञ, उसे क्या नहीं बोलना चाहिये इस पर कड़ी मेहनत करने के बाद, जो मर्जी में आये बोलता रहता है।

विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावे कौन।
बिना डुलाने न मिले, ज्यों पंखा को पौन॥
ऐ शमा तेरी उम्र तबई है एक रात।
हँस कर गुज़ार या इसे रोकर गुज़ार दे॥

×

जब तुम्हारे दुखों का पार न हो तब यह स्मरण कर लेना कि जिस कोयले के टुकड़े को लम्बे समय तक अत्यधिक भार सहना पड़ता है वही हीरा होता है।

×

भली-बुरी वृक्ष की जड़ें पृथ्वी के मौन अन्तःकरण में एक दूसरे की भुजाओं में गुंथी हुई हैं।

×

वनचारी हिरन को आवारा समझने वाले ऐसे ही व्यक्ति अधिक हैं जो कोल्हू के बैल की तरह एक खूंटे से बँधे रहते हैं।

×

मुसीबत इस दुनिया की यह है कि मूर्ख पूरे निश्चय से अपनी बात कहते हैं और बुद्धिमानों के पास न निश्चय है और न कोई बात।

×

सँभलकर चलना बहुत अच्छा है पर कुछ लोग इतना सँभल कर चलते हैं कि उनका चलना ही बन्द हो जाता है।

×

आप धनी हैं तो लोग आपसे रुपया उधार मांगने आ सकते हैं, पर आप सुखी हों तो आपसे आपका सुख उधार माँगने कौन आ सकता है ?

×

जब आप एक मिनट तक क्रोधित रहते हैं तो आप सुख के ६० सेकिण्ड खो देते हैं।

×

फूटे घड़े से जैसे बूंद बूंद गिर कर जल कम होता जाता है, वैसे ही क्षण क्षण करके आयु समाप्त हो रही है। अभी से सावधान हो जाओ। सावधानी यही कि मन को संसार में मत फँसने दो।

×

यदि एकान्त में न रह सको तो अच्छे लोगों के संग रहो।

×

अपने आन्तरिक शत्रुओं का यदि दमन कर लिया तो बाहर व्यवहार में कोई शत्रु उत्पन्न ही नहीं होगा और यही वास्तविक विजय होगी।

×

जैसे चारपाई का एक पाया खींचने से शेष तीनों पाये अपने आप खिंच आते हैं, उसी प्रकार आन्तरिक शत्रुओं में से किसी एक का दमन कर देने से बाकी सभी शिथिल हो जाते हैं।

×

अविश्वास करने की आदत मत डालो। हीरा भी मिल जाये और अविश्वास करके कांच मान लोगे तो वह भी व्यर्थ हो जायेगा। परन्तु ऐसा भी विश्वास मत करो कि बालू में चीनी की भावना हो जाये।

×

जितना दूसरों के दोषों को जानने की चेष्टा करते हो, उससे आधी भी चेष्टा यदि अपने दुर्गुणों को जानने की करो तो मनुष्य से देवता बन जाओगे।

×

उपेक्षा बहुत बड़ा अस्त्र है। कोई कटुवचन कहे या किसी रूप में अपमान करे तो उसकी उपेक्षा कर दो। क्योंकि जब कोई किसी का अपमान करता है तो इसलिए करता है कि उसे कष्ट हो और यदि उसकी उपेक्षा कर दी गई तो उसका मनोरथ विफल हो जायेगा। यही है उसकी हार और आपकी जीत।

×

चलो चलो सब कोई कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥

×

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
प्रेम गलि अति सांकरी, ता में दो न समाहिं॥

×

सज्जन तजत न सुजनता, कीने हूँ अपकार।
ज्यों चन्दन छेदै तऊ, सुरभित करत कुठार॥

×

जैसे बन्धन प्रेम को, तैसो बन्ध न और।
काटहि भेदै, कमल को छेद न निकरै भौर॥

×

कण्व ऋषि कहते हैं— प्राची दिशा जैसे सूर्य को उत्पन्न करती है वैसे ही तू पुत्र उत्पन्न कर हम सबको भूल जायेगी।

×

उदयन वासवदत्ता के चित्र को देखकर कहते हैं— छलछलाती नदी को पार करके अब मैं इस मृगमरीचिका के पीछे रो रहा हूँ।

×

बातचीत की कला को एक प्रकार का खेल समझो। संभाषण के विषय को गेंद की तरह घुमाते जाओ, ताकि उस पर भिन्न दृष्टि-बिन्दुओं से चर्चा हो सके। ऐसे वातावरण का निर्माण करो कि बातचीत में सब रस लेने लगें।

×

जिस प्रकार सोने की परीक्षा चार प्रकार से होती है— घिस कर, छेद कर, तपा कर और पीट कर, उसी प्रकार मनुष्य की भी परीक्षा चार प्रकार से होती है—ज्ञान, शील, गुण और कर्म से।

×

बाहरी एकान्त वास्तविक एकान्त नहीं, मन में चिन्ता और शंका का प्रवेश न हो वही सच्चा एकान्त है।

—आविस

×

मानव हृदय कितना विलक्षण है। जिनसे हम प्रेम करते हैं उन्हीं पर अत्यन्त क्रोध भी आ जाता है। जिनका नाम सुनते ही हृदय स्निग्धता से द्रवित हो उठता है वे जब हमारे सामने आते हैं तो हमारे मुख से कठोर वचन निकल पड़ते हैं। जिन्हें देखने के लिए हमारी देह की नस-नस विह्वल बनी रहती है उनके सामने आते ही हम उनसे ऐसा दुर्व्यवहार कर बैठते हैं मानो उनका आना हमें अप्रिय लगा हो। जिनसे बिछुड़ जाने पर हमें असह्य दुःख होता है उनके मिलने पर हमारा दिल ऐसी बातें करने के लिए मजबूर करता है कि जिनके कारण मिले हुए प्रेमीजन से बिछुड़ जाना पड़ता है।

×

सचमुच मनुष्य का हृदय अत्यन्त विलक्षण है।

—कुराल

×

मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने में बड़ी योग्यता दर्शाई है, परन्तु अपने ऊपर शासन करने में वह बहुत ही पिछड़ा हुआ है।

—आर्नल्ड

×

मैंने बहुत से उपदेश सुने हैं, मगर अपने सफेद बालों से बढ़कर उपदेश मैंने कोई नहीं सुना। मैंने बहुतों की सलाह ली है, मगर अन्तरात्मा की आवाज जैसी उत्तम सलाह कोई नहीं मिली। मैंने बहुविधि-खानपान और काम-भोग के मज़े लिए हैं, मगर तन्दरुस्ती के बराबर आनन्द किसी में नहीं मिला। मैंने कड़वी से कड़वी चीज़ें खाई हैं, मगर गरीबी से कड़वी कोई चीज़ न निकली। मैंने बड़े बोझे उठाये हैं, मगर ऋण सरीखा भारी बोझा कोई न था। मैंने सब प्रकार का ऐश्वर्य देखा, मगर संतोष बराबर कोई ऐश्वर्य न पाया।

—अरबी रीतिवचन

×

मनुष्य का निर्माण भाग्य नहीं, पुरुषार्थ करता है। गौरव परिश्रम का अनुगामी है। श्रम आत्मा के लिए रसायन का काम करता है। श्रम ही मनुष्य की आत्मा है।

—स्वामी कृष्णानन्द

अगर आप और मैं निरा सत्य और केवल सत्य ही पाँच मिनट तक कहें तो हमारे तमाम मित्र हमें छोड़ जायेंगे; यदि दस मिनट तक कहें तो हमें देश निकाला दे दिया जायेगा, और यदि पन्द्रह मिनट तक कहें तो हमें फाँसी पर लटका दिया जायेगा।

—खलील ज़िब्रान

×

धनिक लोग मन्दिर बनाते हैं, मैं क्या बनाऊँ भगवान? मैं तो निर्धन हूँ प्रभो! मेरे पैर ही मन्दिर की नींव हैं, देह देवालय है, और मस्तक स्वर्ण कलश है, स्वामी! सुनिये, हे संगमनाथ! वह शिवालय तो स्थावर होता है, यह शिवालय तो जंगम है।

—कन्नड़ महात्मा बसवेशार

रणभूमि में जाने से पहले ईश्वर की एक बार प्रार्थना करो, समुद्र पर जाना हो तो दो बार ईश्वर की प्रार्थना करो, और अगर तुम्हें शादी करनी हो तो तीन बार प्रार्थना करो।

—रूसी कहावत

×

चेहरे पर हरदम प्रसन्नता बनाये रखना मुक्ताओं से भरे थाल भेंट करने के समान है।

×

जिस चेहरे को देखकर हृदय प्रसन्न नहीं होता, वह देखने योग्य नहीं है, जिस शब्द में सुन्दर भावना न हो वह सुनने योग्य नहीं।

×

सदाचारी पुरुष का हमेशा सम्मान होता है। अतएव सदाचार की कीमत प्राणों से भी अधिक माननी चाहिए।

×

वेद का पाठ एक बार भले ही भूल जाने पर उसे पुनः पढ़ा जा सकता है। किन्तु सदाचार से वंचित हो जाने पर पूर्व स्थान प्राप्त करना असम्भव है।

×

प्रकाशस्तम्भ— "मैं राह भूली हुई नाव को रास्ता बताता हूँ। तूफान में नाव फँस कर कहीं टूट कर चकनाचूर न हो जाये इसलिये रात दिन सतर्क रहता हूँ। इसी तरह तुम भी संसार में प्रकाशस्तम्भ बन जीवन रूपी नैया का पथ प्रदर्शित करो।"

समुद्र— "वर्षा ऋतु में मेरे अन्दर नदियाँ खूब पानी लाकर डालती हैं, ग्रीष्म में सूर्य अपनी प्रचण्ड गरमी से पानी खींच लेता है। फिर भी मैं अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता। इस प्रकार तुम भी अपना मन मर्यादाशील और स्थिर रखो।"

साबुन— "कैसी भी गन्दी वस्तु क्यों न हो, मैं उसे स्वच्छ बनाता हूँ। उसी तरह तुम भी सत्संग रूपी साबुन से मन के मैल को दूर करो।"

पुस्तक— "मुझे पढ़ कर बैठे न रहना। पढ़ने के उपरान्त विचार करके कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करना; साथ ही साथ इतना अवश्य याद रखना कि जितना सामर्थ्य हो उसी के अनुसार ही ग्रहण करना।"

×

हाँ, हिन्दू धर्म के वेदान्त का अध्ययन करने से मुझे आशा अवश्य बंधी है और उसी से अपने कल्पना के ईश्वर की सच्ची रूपरेखा मिली है। वेदान्त का कथन है— "मुझे घृणा से मुक्त करो, मुझे अजातशत्रु बनाओ, और जहाँ मतमतांतरों की आंधी चल रही हो वहाँ मुझे अचल बुद्धि प्रदान करो कि मैं सभी को समझ सकूं ..."

इसी प्रार्थना के महत्त्व को समझाते हुये, उपनिषद का आगे कथन है— "यहाँ, वहाँ, सर्वत्र आनन्द का एकमात्र माध्यम सृजन है, सृजन के सामने दूसरे सुख छाया मात्र हैं, भले ही यह सृजन भौतिक हों या आध्यात्मिक। सृजन अपने को इस क्षणभंगुर देह से मुक्ति प्रदान करता है और चिरन्तन जीवन के क्षेत्र में ले जाकर मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है; कारण यह है कि यह सृजन शिल्पी है जिसके सामने सर्वभक्षी काल को भी हार खानी पड़ती है।"

—रोमां रोलां

×

जीवन अक्षय है, इसे जानने के लिये मैं बारम्बार अपने प्राणों का त्याग करूँगा।

×

किसी दिन हमें इस बात का ज्ञान हो जायेगा कि मृत्यु हमारी आत्मा की सिंचित निधियों का अपहरण नहीं कर सकती। वह भी उन्हीं क्षणजीवी वस्तुओं पर स्वत्व जमा सकती है जो उसके अनुरूप हों।

×

कुहरा, धरती की आकांक्षा के अनुसार है। जिस सूर्य को वह बहुत चाहता है उसी को आच्छादित किये रहता है।

×

रात्रि अवसान होते हुये दिवस का चुम्बन करती और धीरे से कान में कहती है, "मैं तुम्हारी माता मृत्यु हूँ। मैं तुम्हें नया जीवन दूँगी।"

×

खुशी शबनम के कतरे की तरह नाजुक और अस्थाई वस्तु है जो अपनी हँसी में ही टूट जाती है। लेकिन गम़ में शक्ति है और अमरता। अतः अपनी आँखों में गमगीन प्यार को जगाओ।

—टैगोर

×

जो मनुष्य अपने हर्ष को छिपा सकता है, वह उससे महान् है जो अपने दुःख को छिपा सकता है।

×

मननशील व्यक्तियों की राय हमेशा बढ़ती और बदलती रहती है, जैसे जीवित बच्चे।

×

हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं बल्कि गिर कर उठने में है।

×

जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत है— किसी विशेष बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना। उसी की पूर्ति में मनुष्य को सुख मिलता है।

×

जिस मनुष्य के साथ तुमने भलाई की है उसको सुखी देखकर तुम्हारा प्रसन्न होना ही तुम्हारी भलाई का पुरस्कार है।

×

प्रत्येक आपत्ति शाप के समान नहीं होती। जीवन की प्रारम्भिक विपत्तियाँ प्रायः आशीर्वाद होती हैं। बीती हुई कठिनाइयाँ न केवल हमें शिक्षा देती हैं बल्कि वे भविष्य के प्रयत्नों में हमें साहसी बनाती हैं।

×

यदि प्रेम का आदर्श देखना चाहते हो तो जल व कीचड़ को देखो। जल के वियोग में कीचड़ अपने हृदय को फाड़ देता है। *—तुलसीदास*

×

अन्य यात्राओं की भाँति विचारों की यात्रा में भी पड़ाव होते हैं और आप एक पड़ाव को छोड़ कर दूसरे पड़ाव तक नहीं जा सकते। मानव जीवन का इतिहास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। *—प्रेमचन्द्र*

×

दोष छिपाने में ही वह संग्रहित होता रहता है, दिखाने से निकलता रहता है।

×

मेरे जीवन का सुन्दर समय वह होता है; जब मैं कोई नया निर्माण करता हूँ।

×

मेरे जीवन का सुन्दर समय वह होता है जब मैं अपने बच्चों के सामने अपने परिश्रम से कमाया भोजन देखता हूँ।

×

दुर्भावना को अपने जहर का आधा भाग स्वयं पीना पड़ता है।

×

सच्चा संतोष इस बात पर निर्भर नहीं है कि हमारे पास क्या है; डायोनीज के लिये एक नांद ही काफी बड़ी थी, लेकिन सिकन्दर के लिये एक दुनिया भी निहायत छोटी थी।

×

हिन्दुस्तान में एक प्रवृत्ति यह देखी जाती है कि लोग पीछे देखना चाहते हैं, आगे नहीं। वे उस ऊँचाई की तरफ देखते हैं जिस पर कभी वे थे; उस ऊँचाई की तरफ नहीं, जिस पर उनको आगे पहुँचना है।

×

यदि आप चाहते हैं कि लोग आपकी बड़ाई करें तो स्वयं अपनी बड़ाई मत कीजिये।

×

जो व्यक्ति कभी खतरों में से नहीं गुजरा वह अपने साहस का दावा नहीं कर सकता।

×

पति को रखने के लिए सबसे अच्छा तरीका उसे भ्रम में रखना है।

×

क़ानून पाप को खोज तो सकते हैं, लेकिन मिटा नहीं सकते।

×

पागलपन और बेवकूफी की चाहे कितनी ही क़िस्में क्यों न हों बुद्धिमत्ता केवल एक ही प्रकार की होती है।

×

जब विचार वाणी का रूप लेते हैं और वाणी सत्य बन जाती है— वह युवावस्था है।

×

पहले चिराग तले अंधेरा होता था— अब चिराग के ऊपर अँधेरा होता है।

×

सबसे अधिक असहाय रोग मूर्खता है।

×

अच्छा मित्र प्राप्त करने से पहले स्वयं अच्छा मित्र बनना आवश्यक है।

×

अमीर वह है जिसकी आय उसके व्यय से अधिक है और ग़रीब वह है जिसका व्यय आय से अधिक है।

×

ग़रीब वह नहीं है जिसके पास थोड़ा है, बल्कि वह जो अधिक की आकांक्षा करता है।

×

मित्रता जो कुछ देती है वह भूल जाती है और जो कुछ पाती है उसे सदा याद रखती है।

×

अपनी भूल को स्वीकार करने में हुई देर कोई देर नहीं है।

×

बूँद ने फल पर गिर कर कहा: "मुझे अपने में समा ले।"

फूल ने कहा : "अच्छा," और वह बिखर गया। —टैगोर

×

वायदा कर गये हैं पाँचवे दिन का
किसी से सुन लिया था चार दिन की ज़िन्दगानी है। —*जौंक*

×

तुम्हारा ताल भरा रहने पर भी तुम्हें जिस प्यास का भय बना रहे वह तृष्णा है; वह कभी शान्त नहीं हो सकती।

×

विषाद तुम्हारी आत्मा में जितनी गहरी रेखाएँ खोदेगा, उतना ही अधिक आनन्द उसमें तुम भर सकोगे।

×

आत्मा वह वस्तु है जो उस समय चुभती है जब और सब चीज़ें सुखद मालूम होती हैं।

×

मृत्यु-किरण वह नजर है जो एक स्त्री अपने पति पर डालती है जब वह बाजार में किसी और स्त्री की ओर मुड़ कर देखता है।

×

अधेड़ अवस्था वह समय है जब मनुष्य बीमा-एजेण्टों से मित्रभाव से बातचीत करने लगता है।

×

चींटी से अच्छा उपदेश और कोई नहीं देता— लेकिन चींटी बोलती नहीं।

×

किसी आदमी को अपनी गल्तियाँ मान लेने में शरम नहीं आनी चाहिये क्योंकि गलती मान लेना एक तरह से यह कहना है कि वह कल से आज अधिक बुद्धिमान हो गया है।

×

यदि तुम्हारे कुछ विश्वास हैं तो उनका कुछ लाभ मुझे भी उठाने दो। अपने सन्देह अपने तक ही सीमित रखो क्योंकि मेरे अपने सन्देहों भी कम नहीं हैं।

×

अपनी सफाई बहुत कम पेश करनी चाहिये, यदि आपका चरित्र स्वयं अपना बचाव नहीं कर सकता तो वह बचाने लायक है भी नहीं।

×

शिक्षा का उद्देश्य है मन को संयम में लाना, सजाना नहीं, उसको अपनी शक्तियों का प्रयोग करना सिखाना, दूसरों के विचारों को इकट्ठा करना नहीं।

×

एक कर्त्तव्य पूरा करने का पुरस्कार यही है कि दूसरा कर्त्तव्य निभाने की शक्ति मिल जाती है।

×

सेवा ही वह सीमेण्ट है जो दम्पत्ति को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है।

×

परदा होता है हवा के लिये। आंधी में परदे उठाकर रख दिए जाते हैं।

×

बच्चों को बिगाड़ने के दो सरल उपाय हैं या तो उनकी कोई भी इच्छा पूरी न करो, या प्रत्येक इच्छा पूरी करते जाओ।

×

प्रेम का बुद्धिमानी, अनुभव या तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं, वह तो यौवन के संसार में बहने वाली बयार है।

×

अतीत की स्मृतियाँ ही एक ऐसा स्वर्ग है जहाँ से हम कभी नहीं निकाले जा सकते।

×

यदि कोई सुखी ही होना चाहे तो उसकी इच्छा आसानी से पूरी हो सकती है। लेकिन हम दूसरों से अधिक सुखी होना चाहते हैं और इसी में कठिनाई होती है। क्योंकि हम दूसरों को वास्तव से अधिक सुखी समझते हैं।

×

अपना धर्म समझ कर मनुष्य जो कर्म करे उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। जिस धर्म को तुम अपना कर्त्तव्य समझते हो उसका पालन करो।

×

दूसरों के विषय में बुरी राय बनाने में शीघ्रता न करो, परमेश्वर भी मनुष्य को दण्ड देने के लिए उसकी मृत्यु पर्यन्त ठहरता है।

×

जीवन की दो भयंकर दुर्घटनाएँ हैं— पहली इच्छित वस्तु का न पाना, दूसरी उसका पा जाना।

×

अज्ञान की भाँति ज्ञान भी सरल निष्कपट सुनहले स्वप्न देखने वाला होता है।

×

यह कोई नया आविष्कार नहीं है कि संकटों में ही हमारी आत्मा को जागृति मिलती है।

×

यदि हम समाज और व्यक्ति में समन्वय बनाये रखना चाहते हैं तो हमें आदर्शवादी बनना पड़ेगा। आदर्शों से जीवन में उमंग और आशा आती है परन्तु आदर्श व्यक्तिगत न होकर सामाजिक मान्यताओं को महत्त्व प्रदान करने वाले होने चाहिए।

×

जब कभी मुझे दोष देखने की इच्छा होती है तो मैं अपने से आरम्भ करता हूँ और फिर इससे आगे बढ़ने ही नहीं पाता।

×

कला प्रकृति की नकल करने में नहीं है— प्रकृति वह सामग्री देती है जिसके जरिये वह सौन्दर्य प्रकट किया जाता है जो अभी तक प्रकृति में अप्रकट था— कलाकार प्रकृति में वह देखता है जिसका स्वयं प्रकृति को भान न था।

×

अग्नि तृण पर पड़कर भड़कती है। बिना तृण की भूमि पर पड़कर स्वयं जलकर राख हो जाती है।

×

चन्द्र दोषों की खान है, कुटिल (तिरछा) है, कलंकित है, मित्र (सूर्य) के अस्त के समय अपना उदय करने वाला है, पर फिर भी शिवजी इसे माथे पर धारण किये रहते हैं। बड़े आदमी अपने आश्रितों के गुण-दोष ध्यान में नहीं लाते।

×

चन्दन को कितना ही घिसते रहो फिर भी चारुगन्ध देता है, ईख का गन्ना कितना भी चूसते रहो फिर भी मीठा निकलता है, सोना जितना जलाते रहो उतना ही कान्तवर्ण निकलता है, उत्तम प्रकृति वाले प्राणान्त तक में प्रकृति-विकृत नहीं होते।

×

विष्णु भगवान् अपने घर की हालत देख देख कर रो रहे हैं— "एक पत्नी तो सरस्वती है जो स्वभाव से मुखर है, दूसरी लक्ष्मी है जो चंचल है, एक पुत्र है कामदेव जो सारे संसार को विजय करने वाला है और किसी से रोका नहीं जा सकता, शेषनाग की सेज है, समुद्र में सोना है और सवारी साँपों का शत्रु है।"

×

"मैं वल्कल से सन्तुष्ट हूँ तू लक्ष्मी से परितुष्ट है। दोनों में सन्तोष बराबर-बराबर का है। दरिद्र तो वह है जिसकी तृष्णा विशाल है। मन से परितुष्ट होने पर कौन दरिद्र है और कौन धनी।"

×

सुखी होने में धनी होने से यह लाभ अधिक है कि कोई सुख उधार नहीं माँगता।

×

शान्त मन कभी भी दुविधा या भय में नहीं पड़ते बल्कि शान्ति से अपना काम करते रहते हैं जैसे तूफान के समय भी घड़ी की टिक-टिक अपनी पहली चाल से चलती है।

×

मेरे पास एक ही दीपक है जो मुझे राह दिखाता है और वह है अनुभव का दीपक।

×

सच्चे मित्र सम्पन्नता में केवल बुलाने पर आते हैं पर विपत्ति में स्वयं भागे चले आते हैं।

×

सज्जन अपने साथ कितना भी अपकार किये जाने पर सज्जनता नहीं छोड़ते, जैसे चन्दन का पेड़ अपने काटने वाले कुठार को भी सुरभित कर देता है।

×

गले में लिपटे भूखे साँप गणपति के वाहन चूहे का भोजन करना चाहते हैं और उनका भोजन स्कन्द का मयूर करना चाहता है। गिरिजा का सिंह गणेश पर झपटना चाहता है। गौरी गंगा से ईर्ष्या करती है। माथे पर तीसरे नेत्र की अग्नि चन्द्रमा से द्वेष रखती है। कुटुम्ब के इन कलहों से निर्विण्ण होकर बेचारे शंकर ने हलाहल पी लिया।

×

एक मनुष्य के पीठ पीछे करने का सबसे बढ़िया काम है उसकी पीठ थपथपाना।

×

सच्ची बात ही सबसे बड़ा व्यंग होती है।

×

वह विषय छोड़ दो जिस पर तुम एकमत नहीं हो सकते। क्रोध करने से क्या लाभ जब तुम जानते हो कि तुम सही हो।

×

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है॥

×

दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए तू अपने कष्टों की परवाह मत कर। जैसे पेड़ अपने सिर पर तीव्र धूप लेकर दूसरों को छाया प्रदान करता है।

×

ऐसी जन्नत को कोई क्या करे।
जिसमें लाखों बरस की हूरें हों॥

×

सब मनुष्य अपनी पत्नी की प्रशंसा सुनना पसन्द करते हैं, किन्तु सबसे, किसी विशेष एक से नहीं।

×

हमारी मनुष्यों की राय इस पर कम निर्भर करती है कि हम उनमें अन्दर क्या देखते हैं। बनिस्बत इस पर कि हमें अपने अन्दर क्या देखने को वे मज़बूर करते हैं।

×

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढे खोट।
अन्तर हाथ सहारहै, बाहर बाहै चोट॥

×

जब मुझे किसी को धोखा देना होता है मैं सच बोल देता हूँ। —*बिस्मार्क*

×

मनस्वी पुरुष अपना काम समाप्त करने के पश्चात् स्त्री की चिन्ता करता है। जैसे सूर्य पूरे जगत को आक्रान्त करने से पहले सन्ध्या को नहीं भजता।

×

एक मनुष्य जिसके प्रेम का दुखी अन्त हुआ हो, को पेड़ में रस्सी बाँधकर नहीं लटकना चाहिए बल्कि सबसे पास की नारी की गरदन के चारों ओर लटक जाना चाहिए। —*जीन रिनोअर*

×

चन्द्रमा तक पहुँचने की राह दिखाने के लिए हमें वैज्ञानिकों का आभारी नहीं होना चाहिए। आखिर उन्होंने ही तो हमारा पृथ्वी पर रहना दूभर कर दिया है।

×

मैंने अपने साथी से कहा, "मैं कॉमेडियन बनना चाहता हूँ।" तो वह बोला, "आरम्भ करने को यह चुटकुला अच्छा है।"

×

मैं आप सबको बहुत सारी ख़बरें सुनाना चाहता हूँ। इतनी सारी घटनायें हो चुकी हैं। ··· हमारे घर में भी। मेरी पत्नी का विवाह हो गया है।

×

मैं अपनी पत्नी से बचपन में मिला था, तब वह पाँच वर्ष की थी और मैं भी। अब वह २१ वर्ष की है और मैं ३३ वर्ष का।

×

जोन सिम्स— उसने मुझसे कहा वह मुझे उल्लुओं की रात की आदतें दिखायेगा। और तुम जानते हो उसने क्या किया? उसने मुझे उल्लुओं की रात की आदतें दिखाईं।

×

एक स्त्री जो अपने को बुद्धिमती समझती है पुरुष के समान अधिकार माँगती है। एक स्त्री जो वास्तव में बुद्धिमती है ऐसा न करने का विशेष ध्यान रखती है।

×

सैंकड़ों युवतियाँ अच्छी पत्नियाँ बन जायें यदि वे अच्छा पति बनाने की ओर ध्यान न दें।

×

चुप रहो चाहे लोग तुम्हें मूर्ख समझें। यदि तुम बोले तो उनका शक ही मिटा दोगे। —*अब्राहम लिंकन*

×

कानन डायल— "कोई स्त्री बदसूरत नहीं है, बस इतना है कि कुछ स्त्रियाँ शेष से अधिक सुन्दर होती हैं।"

×

एक स्त्री क्योंकि वह स्वयं किसी भेद को गुप्त नहीं रख सकती, उसे सुरक्षित रखने के लिये दूसरे को दे देती है।

×

प्रत्येक मनुष्य को समय समय पर बुद्धिमानी की बातें सूझती हैं। जो उन्हें लिख देता है, दूसरों को सुना देता है, वह बड़ा आदमी बन जाता है।

×

जीवन विशृंखल घटनाओं का ढेर है। किसी को नहीं पता कि क्या परिस्थितियाँ उसके सामने आ रही हैं, वह कैसे उनसे जूझेगा, क्या उनमें कोई तारतम्य है।

×

क्या कोई ऊपरी दुनिया भी है, क्या देवता हैं? उनकी दुनिया में भी झगड़े टंटे मचे हैं जो हम मर्त्यों की दुनिया में हैं?

×

देवता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान होने चाहिये, पर अफसोस वे हैं नहीं।

×

देवता उन्हें चुन लेते हैं जिन्हें उन्हें आदर देना है। मनुष्य ऐसा क्यों नहीं कर सकता?

×

सुसराल में जो सुख है वह कहीं नहीं है। तभी भगवान् विष्णु सागर में रहते हैं और शिवजी हिमालय पर।

×

'मैं वर्षों से अचम्भे में थी कि मेरे पति अपनी सन्ध्या कहाँ बिताते हैं।' एक पत्नी बोली, 'एक दिन मैं ब्रिज से जल्दी उठकर घर पहुँची— और वह वहाँ थे।'

×

"क्रासवर्ड पहेली करते हुए एक हल आया 'प्रतिभाशाली, तेजस्वी' और ३ अक्षरों का शब्द था। सो मैंने लिख दिया 'अरुण।' यहाँ तक तो ठीक था पर ऊपर से नीचे में एक भी अक्षर नहीं मिलता था।"

×

अपनी पत्नी की आदतों को बदलने में क्यों समय बरबाद करते हो, इससे आसान तो स्वयं उसे बदल डालना है।

×

सूर्य सब को समान धूप और प्रकाश देता है। सो बड़े आदमियों को सब को समान देखना चाहिये।

×

दीप अंधेरे को खाता है और स्याही उत्पन्न करता है। जैसा जिसका भोजन होता है वैसा ही काम करता है।

×

जंगल में जाकर सीधे पेड़ को ही सब काटते हैं, कुटिल (तिरछे) को कोई नहीं काटता।

×

समय समय पर कई विपत्तियां मैंने सहीं जो एक भी मेरे साथ नहीं घटी।

×

तप का अर्थ है मृत्यु से पहले का ताप, शान्ति है मृत्यु पर शान्त हो जाना, वन-गमन है अरथी-यात्रा और यज्ञ है देह का जलना। मृत्यु में सब की प्राप्ति होती है। —*बृहदारण्यक उपनिषद्*

×

हम जानते थे इल्म से कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी॥ —*जौक़*

×

इश्क से तो नहीं हूँ मैं वाक़िफ़
दिल को शोला सा कुछ लिपटता है। —*मिर्ज़ा सौदा*

×

जख़्म की तरह जमाने में तू काट अपनी उम्र
रो ले या हँस ले, पर इतना है, जरा दर्द के साथ। —*मिर्ज़ा सौंदा*

×

शिक्षक दीपक के समान होता है जो दूसरों को प्रकाश देते हुए अपने को समाप्त करता रहता है।

×

जो २० पर कुछ नहीं जानता, वह ३० पर कुछ नहीं करता और ४० पर कुछ नहीं रखता।

×

तुम्हें बहुत लम्बे और ऊँचे उद्देश्य रखने चाहिये जिससे छोटे ध्येयों की प्राप्ति न होने से तुम साहस न हार बैठो।

×

आजकल के नमूने बड़े रमणीय हैं और रमणी बड़ी नमूना हैं।

×

पहले की युवतियाँ पुरुष को देखकर विवाह की गाँठ बनाया करती थीं पर आजकल की नेकटाई बनाकर ही सन्तुष्ट हो जाती हैं।

×

हँसी खुशी रहना जीवन बीमे की तरह है। आप जितने वृद्ध होते जायेंगे उतना यह कठिन और खर्चीला हो जायेगा।

×

हम कहेंगे क्या, कहेंगे यह सभी,
आँख के आँसू न ये होते अगर।
बांवले हम हो गये होते कभी,
सैंकडों टुकड़े हुआ होता जिगर॥

×

फिदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर।
मगर देखी न इस आइने में अपनी अदा तूने ॥

×

स्वयं पंचमुखः पुत्रौ गजाननषडाननौ ।
दिगम्बरः कथं जीवेदन्नपूर्णा न चेद् गृहे ॥

स्वयं पंचमुख, एक बेटा हाथी के मुख का, दूसरा छः मुख का ।धन दौलत का पता इससे लगता है कि दिगम्बर कहे जाते हैं। यदि साक्षात् अन्नपूर्णा पार्वती घर की स्वामिनी न होती तो वे कैसे जीते !

×

इश्क में भी हैं मेरी सरबुलन्दियाँ क़ायम।
चाहे तेरे कदमों पर झुका हूँ मगर आस्माँ की तरह ॥

×

गुल से यह बात जरा हँस के बहारों ने कही,
रात से चाँद ने आकाश से तारों ने कही।
जिन्दगी स्वप्न सही स्वप्न बहुत सुन्दर है,
मुझसे कुछ बात यही तेरे इशारों ने कही ॥

×

जो आदमी सिर उठाकर चलने लायक हो जाता है वह गंजा हो जाता है।

×

पैदल कौन है, एक अमरीकन से पूछा गया।

जिसके दो मोटरें होती हैं और एक पत्नी तथा एक पुत्री।

×

फुसफुसाहट— वह तरीका जो लोगों को विश्वास करने पर मजबूर करता है जिसका वे पहले कभी विश्वास नहीं करते।

×

पत्नी— एक स्त्री जो पुरुष को उन सब दुखों में जो कभी कुँआरेपन में नहीं हो सकते बड़ी सान्त्वना देने वाली होती है।

×

स्त्री पुरुष के बराबर कभी सफल नहीं हो पाती, इसका मुख्य कारण यह है कि उसे सलाह देने को पत्नी नहीं होती।

×

ऊँट को देखकर यह फौरन पता चल जाता है कि उसे किसी कमेटी ने बनाया है।

×

उसे भविष्य की कोई चिन्ता नहीं रहती है। देखो न, परसों वह शादी करने जा रहा है और आज तक उसने अपनी पत्नी के लिये कोई नौकरी नहीं ढूँढी है।

×

'तुम मुझसे विवाह करलो।' युवक गिड़गिड़ाया। 'मुझे वह उत्तर दो जिससे मैं जीवन भर सुखी रह सकूँ।'

"नहीं," युवती ने उत्तर दिया।

और काफी दिन बाद युवक को पता लगा कि युवती ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ठीक उत्तर दिया था।

×

निराशावादी होना बड़ा लाभदायक है। वह जानता है कि कल कोई आशा नहीं है, इसलिये कभी चिन्ता नहीं करता।

×

कल्पना वह साथी है जो पति के बहुत रात किये घर लौटने पर पत्नी का साथ देती है।

×

महापुरुषों की शक्ति सम्पत्ति में नहीं विपत्ति में दिखलाई पड़ती है। अगर की धूप में पहले उतनी सुगन्ध नहीं होती जितनी कि अग्नि में डाली जाने पर।

×

पहले ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड को रचा और आराम किया।

तब ब्रह्मा ने पुरुष को रचा और फिर आराम किया।

तब ब्रह्मा ने स्त्री को रचा और उस दिन से न ब्रह्मा को आराम मिला, न पुरुष को।

×

स्वतन्त्रता कोई निजी मामला नहीं है, बल्कि एक सामाजिक समझौता है।

×

आशा से भर कर यात्रा करनी गन्तव्य स्थान पर पहुँचने से अधिक अच्छी है; और सच्ची सफलता कार्य करने में है।

×

दुःख एक कड़वी औषधि है जिससे तुम्हारा अंतर्वासी चिकित्सक तुम्हारी रोगी आत्मा को स्वस्थ करता है।

×

तुलसी सन्त सुअम्ब तरु, फूल फलहिं परहेत।
इततें ये पाहन हनें, उततें वे फल देत॥

×

हृदय से बढ़कर कोई प्रचारक नहीं, समय से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं, संसार से बढ़कर कोई पुस्तक नहीं, और ईश्वर से बढ़कर कोई मित्र नहीं।

×

जैसे उजली धूप सबको हँसाती हुई आलोक फैला देती है, जैसे उल्लास की मुक्त प्रेरणा फूलों की पंखुड़ियों को गद्‌गद् कर देती है, जैसे सुरभि का शीतल झोंका सबका आलिंगन करने के लिये विह्वल रहता है, वैसे ही जीवन की निरंतर परिस्थिति होनी चाहिये।

×

साँस रुकती है उसे मौत कहते हैं, गति रुकती है उसे मौत कहते हैं, हवा रुकती है वह भी मौत है। रुकना सदा मौत है, जीवन नाम चलने का है।

×

बेवकूफ़ी अक्ल का पहला दरज़ा है और अक्ल बेवकूफ़ी का दूसरा दरज़ा।

प्रेमिका किसी की भी बदसूरत नहीं होती।

×

क्रोध में मनुष्य का मुख खुला रहता है तथा आँखें बन्द।

×

संसार में सड़क सबसे अकेली है। इसे सब छोड़कर चले जाते हैं।

×

सुना है संगदिल की आँखों से आँसू नहीं बहते,
अगर सच है तो फिर पत्थर से चश्मे क्यों निकलते हैं?

×

दामन बचाके मुश्किले ग़म से गुज़र गया,
उठ उठ के देखती रही ग़र्दे सफ़र मुझे।

×

आदत या तो मनुष्य की सबसे अच्छी सेविका है या सबसे बुरी मालकिन।

×

दूसरों से बाजी लगाने में हारने की सम्भावना रहती है। किन्तु जो स्वयं अपने से बाजी लगाता है वह हमेशा जीतता है।

×

सौन्दर्य के लिये शादी करना मन्दा सौदा है, क्योंकि कोई भी आदमी, जो आपकी पत्नी को देखता है, उससे उतनी ही प्रेरणा पा लेता है, जितनी आपको मिलती है।

×

दवा में अधिक हँसी-मजाक नहीं चल सकता, लेकिन हँसी-मजाक दवा का काम करते हैं।

×

लोग निन्दा के तीर फेंकते हैं। वे तीर जमीन पर आ गिरते हैं। उन्हें हम उठा लेते हैं और अपनी छाती में भोंकने लगते हैं। फिर कहते हैं कि हमें तीर लगा। इसी तरह दूसरों से की हुई अपनी निन्दा के शब्द हम दूसरों के सामने उच्चारण करते हैं और इसी तरह हम अपने दुःख की वृद्धि करते हैं।

×

सदा सिंर पर रखे हुए और स्नेह से पाले हुए बाल भी एक दिन रंग बदल ही देते हैं।

×

आज और कल में केवल इतना ही अन्तर नहीं है कि आज जा रहा है और कल आ रहा है, बल्कि सबसे बड़ा अन्तर तो यह है कि आज हमारा है और कल पता नहीं किसका।

×

हमारी अच्छाइयाँ ही हमारे भीतर स्थित भगवान के अनेक रूपों में प्रकट होती हैं और यदि उन रूपों की अभिव्यक्ति संभव नहीं होती तो हमें मानना पड़ेगा कि हम घर में प्रभु की प्रतिमा तो रखते हैं लेकिन सात पर्दें में छिपाकर।

×

जो ज़हर हलाहल है अमृत भी वही लेकिन
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ ही पीने के।

×

हँसी में दुनिया आपका साथ देती है, रोने में केवल गीला रुमाल साथ देता है।

×

"हीरा सबसे कठोर पदार्थ माना जाता है।"

"क्योंकि वह महिलाओं पर भी छाप डालने में समर्थ होता है।"

×

स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्व जुड़वाँ बालकों के समान हैं, यदि उन्हें अलग किया जाय तो दोनों की मृत्यु हो जाती है।

×

ऐसा कभी सुनने में नहीं आया कि बिजली की बत्ती का खम्भा आत्म-सुरक्षा के प्रयत्न के अतिरिक्त कभी किसी मोटर से जा टकराया हो।

×

स्वतन्त्रता वह वस्तु है जो आप दूसरों को दिये बिना स्वयम् भी नहीं प्राप्त कर सकते।

×

प्रश्न— "किस बात को गुप्त रखना मनुष्य के लिये सबसे कठिन होता है?"

उत्तर— "अपने बारे में अपनी राय को।"

×

माली आवत देख के, कलियाँ करी पुकार।
फूली फूली चुन लिये, काल्हि हमारी बार॥

×

पाहन पूजै हरि मिले, तो मैं पूजों पहार।
ताते ये चक्की भली, पीस खाय संसार॥

×

वह व्यक्ति जो ऐसी चीज ख़रीदता है जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है, बहुधा आवश्यकता अनुभव करेगा जिसे वह ख़रीद नहीं सकेगा।

×

चितां प्रज्वलितां दृष्ट्वा वैद्यौ विस्मयमागतः।
नाहं गतौ न मे भ्राता कस्येदं हस्तकौशलम्॥

(ज़लती चिता देखकर वैद्य को विस्मय हुआ— 'न मैं गया न मेरा भाई, यह किसके हाथ की सफाई है?')

×

शिष्टाचार संसार का बहुधा ऊपरी व्यवहार है। परन्तु सदाचार हृदय की सात्विक वृत्ति से उत्पन्न होता है। शिष्टाचार का आधार लोगों का पारस्परिक संतोष और सुभीता है पर सदाचार का अवलम्बन धर्म पर है।

×

परिष्कार के बिना जैसे बहुमूल्य हीरा भी व्यर्थ होता है वैसे ही शील के बिना ज्ञान।

×

नैनों की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि कै, पिय को लिया रिझाय॥

×

घड़े को कुएँ में डाल दो या सागर में, एक समान जल ग्रहण करेगा। सब कुछ ग्रहण करने वाले की वरीयता पर निर्भर है।

×

जब कोई असली जीनियस दुनिया में आता है तो आप उसे फौरन पहचान जाते हैं क्योंकि सारे मूर्ख उसके विरुद्ध संघ बना डालते हैं। क्या यह स्विफ्ट ने इन्दिरा गांधी के बारे में कहा था?

×

बर्ट्रेण्ड रसल कहते हैं, "यदि मैं डाक्टर होता तो उस मरीज़ को जो अपना काम बहुत जरूरी समझता है, छुट्टी का नुस्खा लिखता।"

×

हर बार जब मैं एक पोर्ट्रेट चित्रित करता हूँ, अपना एक दोस्त खो देता हूँ।

—प्रसिद्ध चित्रकार जॉन सार्जेन्ट

×

हे दरिद्रता, तूने मुझे अदृश्य रहने का वर दिया, मैं तुझे नमस्कार करता हूँ। मैं सबको देखता हूँ पर कोई मुझे नहीं देखता।

×

जैसे जैसे भोज का यश बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे वह संसार श्वेत करने को उद्यत हो गया है। और मेरे हृदय में यह शंका हो गई है कि मेरी प्रिया की अलकावली भी सफेद न हो जाय।

×

एक भग्नाश स्त्री वह पत्नी है जो पाँच मास पहले डाक में डालने के लिये पति को दिये गये पत्र को उसके कोट की जेब में पाती है जो तभी से एक बटन टांकने के लिये घर में रखा है।

×

पागलपन तलाक़ के लिये ज़मीन नहीं होना चाहिये क्योंकि सम्भवतः वह ही शादी का केवल कारण है।

×

They say cows hate motor-cars but, we just a saw a beautiful pair of calves getting into a Bentley in the Strand.

×

"मैं एक जासूस बनना चाहता हूँ। इसके लिये केवल बुद्धि, साहस और रिवाल्वर की आवश्यकता है। और मेरे पास एक रिवाल्वर है।"

×

मुझे उड़ने से घृणा है और तो क्या, जब मैं ईरानी कालीन पर पैर रखता हूँ तो उड़न-बीमारी (airsickness) का शिकार हो जाता हूँ।

×

"तुम पुरुष सब एक से हो।"

"प्रिये, तुम ठीक कह रही हो। बस, हम लोगों को चेहरा अलग अलग मिला हुआ है जिससे मर्दुमशुमारी हो सके।"

×

मैंने उस युवती को इतना परिपक्व देखा है कि सैल्फ से काम चल सकता है, हैंडिल लगाने की आवश्यकता नहीं। जहाँ बटन दबाया वह स्टार्ट हो गई।

×

किसी का ऐब निहारना शैतान का काम है, भगवान का नहीं।

×

खाली दिमाग खाली बाल्टी से एक महत्त्वपूर्ण तथ्य से भिन्न होता है। जितना खाली दिमाग होगा उतना ही उसमें कोई चीज़ भरना मुश्किल होगा।

×

"क्या तुम विवाहित हो?" युवती ने अपने धोखेबाज प्रेमी से पूछा।

"मैडम," वह बड़े उत्साह से बोला, "तुम्हें देखकर मैं स्वर्ग में पहुँच जाता हूँ। और स्वर्ग में कोई विवाहित नहीं है।"

×

तक्षकस्य विष दन्ते, भक्षिकायाश्च मस्तके।
वृश्चिकस्य विष पुच्छे, सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तत्॥

×

सकल जगत को आनन्द देने वाले शशि-बिम्ब को रचने में तथा लक्ष्मी के लीलावास-भवन कमलों को रचने में ब्रह्मा ने इसके मुख के आकार को बनाने के कौशल का अभ्यास किया है।

×

उस पर विश्वास न करो चाहे तुमने उसे कहीं पढ़ा हो या किसी से सुना हो, हो सकता है कहने वाला मैं ही हूँ, जब तक वह तुम्हारे तर्क और तुम्हारी व्यावहारिक बुद्धि से मेल न खाए। —*बुद्ध*

×

उसे देखकर और को भी जो देखे,
कोई देखने वाला ऐसा न देखा।

×

क्या शेख की तल्ख जिंदगानी गुज़री
बेचारे की एक शब न सुहानी गुज़री।
दोजख़ के तसव्वर में बुढ़ापा बीता
जन्नत की दुआओं में जवानी गुज़री॥ —*जोश मलीहावादी*

×

लाके फूले कमलदल को श्याम के सामने ही।
थोड़ा-थोड़ा विपुल जल में व्यग्र हो हो डुबाना।
यों करना ऐ भगिनि जतला एक अंभोजनेत्रा।
आँखों को ही विरह-विघुरा वारि में बोरती है॥ —*हरिऔध*

×

ले चल वहाँ भुलावा देकर, मेरे नाविक! धीरे धीरे
जहाँ साँझ-सी जीवन छाया
ढीले अपनी कोमल काया
नील नयन से ढुलकाती हो
ताराओं की पाँति घनी रे! —*'प्रसाद'*

×

तुझसे तेरे कूचे का पता पूछ रहा हूँ,
इस वक्त ये आलम है मेरी बेख़बरी का। —*अहमद नदीम क़ासिमी*

×

सज्जन के पास पहुँच कर दोष भी गुण हो जाते हैं और दुर्जन पर गुण भी दोष हो जाते हैं। समुद्र का खारा पानी बादल के पास पहुँच कर मीठा जल बन जाता है। दूध सर्प के पीने पर दुस्सह जहर हो जाता है।

×

लोगों में शक्ति की नहीं, इच्छा की कमी रहती है। —*विक्टर ह्यूगो*

संसार में रहकर संसार वालों की राय के अनुसार चलना आसान है और एकान्त में रहकर अपनी आत्मा के पथ पर; लेकिन वास्तविक महापुरुष वे ही हैं, जो सबके बीच रहकर भी एकान्तवास के स्वातन्त्र्य का सम्पूर्ण माधुर्य के साथ उपभोग कर सकते हैं। —*इमर्सन*

×

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इनसां होना॥ —*ग़ालिब*

×

भद्रं भद्रं कृतं मौनं कोकिलैर्जलदागमे।
वक्तारो दर्दुरा यत्र तत्र मौनं ही शोभनम्॥

×

रफ़ीक़ों से रक़ीब अच्छे जो जलकर नाम लेते हैं।
गुलों से ख़ार बेहतर है जो दामन थाम लेते हैं॥

×

खिले हैं फूल जो रोई है रात भर शबनम।
हँसी नहीं है हसीनों का मुस्करा देना॥

×

कलियाँ तमाम बाग की खिल जायें आज ही।
कल तक यहाँ ठहरने की फुर्सत नहीं मुझे।

×

दुनियाँ एक ऐसी हस्तलिखित पुस्तक है जिसका पहला और पिछला पृष्ठ खो गया है। दर्शन उन्हीं पृष्ठों की खोज का एक प्रयास है। —*मौलाना आजाद*

×

··· मूर्खों की बात चली है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि, मूर्ख दो तरह के होते हैं। प्रथम वे, जो यह कहते हैं कि, कोई चीज अच्छी है; क्योंकि वह पुरानी है। द्वितीय वे जो यह कहते हैं कि, कोई चीज अच्छी है क्योंकि वह नई है। —*बर्नार्ड शॉ*

×

"आदमी के पास देने के लिये कितना कुछ है— प्रेम का सागर है, हँसी के फूल हैं। और, इन दोनों की कोई क़ीमत नहीं लगती। तो भाई, सोचते क़्या हो, देना शुरू कर दो— तुम्हारी क्यारी के फूल रोज-व-रोज झड़ रहे हैं, जीर्ण होकर सड़ रहे हैं, उन्हें बाँटते चलो। स्वयं खिलो और दूसरों को खिलाते चलो।" —*डेनी के*

×

रात भर आलू पकाया फिर भी कच्चा रह गया।
सारे शायर मर गये, यह उल्लू का पट्ठा रह गया॥

×

गुड़गुड़ाता है पर निकलता नहीं।
क्या मैं हौआ हूँ जो तुझे खा जाऊँगा॥ —*चिरकीन*

×

ग़ालिब बुरा न मान, जो कोई बुरा कहे।
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे॥

×

अल्लाह शबे-हिज्र दोबारा न दिखाये।
पहरों तो मुझे याद तेरा नाम न आया॥ —*अज्ञात*

×

बागबाँ ने आग दी जब आशियाने को मेरे।
जिन पै तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे॥ —*साकिब लखनवी*

×

बे तुम्हारे मैं जी गई अब तक।
तुमको क्या खुद मुझे यकीं नहीं॥

×

कफ़स में मुझसे रूदादे' चमन कहते न डर हमदम।
गिरी हैं जिस पै कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो॥ —*ग़ालिब*

×

दिल ही तो है न संगो-खिश्त दर्द से भर न आये क्यों।
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताये क्यों॥ —*ग़ालिब*

×

क्या ढूँढती है बाग़ में मेरे तू ऐ खिजाँ।
तू जानती है सबके चमन में बहार है॥ —*इबरत*

×

जिन्दगानी की हकीक़त से नहीं हम वाक़िफ़।
मौत का नाम जो सुनते हैं तो मर जाते हैं॥ —*इबरत*

×

थमते थमते थमेंगे आँसू।
रोना है यह कुछ हँसी नहीं है॥ —*मीर*

×

मेरे आशियाने के थे चार तिनके।
चमन लुट गया आँधी आते आते॥

×

ख़ारोख़स जमा करे नाम नशेमन रख दे।
जिसको मंजूर हो गुलशन को बयाबाँ करना॥ —*आसी मेरठी*

×

दिल का जा दादये बहार किया।
यों ख़िज़ाँ को गले का हार किया॥ —इबरत गोरखपुरी

×

जिगर के दाग जब सीने पै हमरंगे चिरागाँ हो।
यही अहदे-ग़ुलामी में ग़ुलामों की है दीवाली॥

×

तरीक़े-अहले-दुनिया है गिला शिकवा ज़माने का,
नहीं है ज़ख़्म खाकर आह करना शाने-दुरवेशी।
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर जिन्दों में है,…

×

इस संसार में हरेक को मौत का सामना कभी न कभी करना ही पड़ता है। लेकिन संघर्षों से लड़ते हुए मरने के बराबर और कौन मौत, ज्यादा बहादुरी की हो सकती है? वह मनुष्य जो अपने पूर्वजों की संस्कृति और अपने आदर्शों के देवता के लिये मरता है वही सच्चा शहीद है।

×

शाम से कुछ बुझा सा रहता है।
दिल हुआ है चिराग मुफ़लिस का॥ —मीर

×

महफिले यार से उठने को उठे तो लेकिन।
दर्द की तरह उठे गिर पड़े आँसू की तरह॥

×

इन्तहाये लागरी से जब नजर आया न मैं।
हँस के वो कहने लगे बिस्तर को झाड़ा चाहिये॥ —नासिख़

×

बन्द हो जाती हैं सैय्यारों की आँखें खौफ से।
फेंकता हूँ जब मैं दिल से आहे आतिशबार को॥ —नासिख़

×

तारें तो ये नहीं मेरी आहों से रात की।
सूराख पड़ गये हैं तमाम आसमान में॥ —मीर

×

उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक।
वे समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है॥ —ग़ालिब

×

दिल के आइने में है तस्वीरे यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली॥ —मीर हसन

×

समुन्दर कर दिया नाम उसका नाहक सबने कह कह कर।
हुए थे जमा कुछ आँसू मेरी आँखों से वह बह कर॥ —सौदा

×

न करता ज़ब्त मैं ताला तो फिर ऐसा धुंवा होता।
कि नीचे आसमां के एक नया और आसमां होता॥ —ज़ौक़

×

यही सोजे दिल है तो महशर में जलकर।
जहन्नुम उगल देगा मुझको निगलकर॥ —अमीर मीनाई

×

दिला ! क्योंकर मैं उस रुखसारे रोशन के मुक़ाबिल हूँ।
जिसे खुरशीदे महशर देखकर कहता है मैं तिल हूँ॥ —अकबर

×

मुझ जुल्फ के मारे को न जंजीर पहनाओ।
काफी है मेरी क़ैद को एक मकड़ी का जाला॥ —नज़ीर अकबराबादी

×

नातवानी ने बचाई जान मेरी हिज्र में।
कोने कोने ढूंढती फिरती कजा थी मैं न था॥ —बादशाह जफ़र

×

क्या नजाकत है कि आरिज उनके नीले पड़ गये।
हमने तो बोसा लिया था ख्वाब में तस्वीर का॥ —ग़ालिब

×

शब को किसी के ख्वाब में आया न हो कहीं।
दुखते हैं आज उस बुते नाजुक बदन के पाँव॥ —ग़ालिब

×

सौदा जहाँ में आके कोई कुछ न ले गया।
जाता हूँ एक मैं ही दिल पर आरजू लिये॥ —सौदा

×

दोस्तों से इस कदर सदमे उठाये जान पर।
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा॥

×

जल में कुंभ, कुंभ में जल है,
बाहर-भीतर पानी।
फूटा कुंभ, जल जलहिं समाना,
यह तत कथौ गियानी॥ —कबीर

×

ढूँढता फिरता हूँ ऐ 'इकबाल' अपने आप को।
आप ही गोया मुसाफिर, आप ही मंज़िल हूँ मैं॥

×

अपने मन में डूब कर पा जा सुरागे ज़िन्दगी।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन॥ —इकबाल

×

आजाद से दीन का गिरफ़्तार अच्छा।
शरमिंदा हो दिल में जो गुनहगार अच्छा॥ —अकबर

×

कोई हँस के मरा दुनियाँ में कोई रोके मरा।
जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा॥ —अकबर

×

जब तुम जनमें जगत में, जगत हँसा तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम विहंसो जग रोय॥

×

मानुस बैठे चुप करे, कदर न जाने कोय।
जब ही मुख खोले कली, प्रगट बास तब होय॥ —कबीर

×

हीरा परा बाजार में रहा छार लपटाय।
बहुतक मूरख चलि गये, पारख लिया उठाय॥ —कबीर

×

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधा मौन।
अब दादुर वक्ता भये, हमहिं पूछिहै कौन॥

×

बड़े न हूजै गुनन बिन, विरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय॥ —बिहारी

×

नाज उसी से कर जो तेरा खरीदार हो। —शेख सादी

×

करें दोस्तो! पहले आप अपनी इज़्ज़त।
जो चाहो करें लोग इज्जद जियादा॥ —हाली

×

जो व्यक्ति मेरे यश पर डाका डालता है। वह एक ऐसी चीज़ का अपहरण करता है जो यद्यपि उसे तो धनी नहीं बनाती, किन्तु मुझे ग़रीब अवश्य बना जाती है।

—शैक्सपियर

'ग़ालिब' बुरा न मान जो वायज़ बुरा कहे।
ऐसा भी है कोई कि सब अच्छा कहें जिसे॥ —*ग़ालिब*

×

तू भला है तो बुरा हो नहीं सकता ऐ 'जौक़'।
है बुरा वह ही जो तुझको बुरा जानता है॥

×

अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्।
अहो सुमनसां वृत्तिर्वामदक्षिणयोः समा॥

(जैसे अंजलि में लिये हुए फूल बांये और दाहिने दोनों हाथों को समान रूप से सुगंधित करते हैं, उसी प्रकार सुधी, सज्जन शत्रु-मित्र सबके प्रति एक-सा भाव रखते हैं।)

×

हम इल्म से जाना था कि कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी॥ —*जौक़*

×

रोज पाँच घण्टे चाहे कुछ भी पढ़ा करो, इससे तुम विद्वान् हो जाओगे।

—*जॉनसन*

×

कोई-न-कोई अच्छी पुस्तक पढ़ते रहने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

—*मो० क० गाँधी*

×

जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रह सकता है।

—*मो० क० गाँधी*

×

मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी, वहाँ आप ही स्वर्ग बन जायेगा। —*बाल गंगाधर तिलक*

×

हर बात में लज़्ज़त है अगर दिल में मज़ा हो। —*अमीर*

×

मुश्किलें इतनी पड़ी मुझ पर कि आसाँ हो गईं। —*गालिब*

×

जिन्दगी करती ही रहती है मुसीबत पैदा।
बाखुदा इसमें भी कर लेते हैं लज़्ज़त पैदा॥ —*अकबर*

×

जिस प्रकार बिना भूख के खाया हुआ भोजन नहीं पचता, उसी प्रकार बिना दु:ख के सुख भी नहीं पचता। *—मो० क० गाँधी*

×

स्मृत्वा स्मृत्वा याति दु:खं नवत्वम्। *—स्वप्नवासवदत्ता*

(बार बार स्मरण करने से दु:ख नया होता जाता है।)

×

यह आश्चर्य देखो— मेरे दु:ख का एक भाग मेरी सुख पाने की इच्छाओं में ही है। मुझे यह एक नवीन बात जान पड़ी कि सुख पाने की इच्छा का ही अर्थ है—दु:ख। *—खलील जिब्रान*

×

हम से नज़र फेर ली उस शोख़ ने।
हम भी हैं इनसान ख़फ़ा हो गए। *—जिगर मुरादाबादी*

×

मिला के आँख न महरूमे नाज़ रहने दे।
तुझे कसम, जो मुझे पाकवाज़ रहने दे॥ *—जिगर मुरादाबादी*

×

ओह, क्या देह है! वह अपने स्वेटर को किस तरह भरती है! मुझे बेचारी ऊन पर बड़ा तरस आता है।

×

बच्चों का मुख ऊपर उठा मानो प्याले में आश्चर्य भरा हो।

×

खिड़की के शीशे टूटे हुए थे जिन्हें एक मकड़ी ने ठीक करने का प्रयत्न किया था।

×

वह दिन ऐसा सुन्दर था जब प्रत्येक लहर झाग के झण्डे लिये आ रही थी।

×

गुणी लोग दुख पाते हैं, गुणहीन मौज करते हैं। तोते पिंजरे में कैद रहते हैं, कौए उड़ते फिरते हैं।

×

खुशमिजाजी एक बेहतरीन पोशाक है जिसे हर सोसाइटी में पहना जा सकता है। *—थैकरे*

×

स्वार्थ बिना तली का प्याला है। उसमें चाहे तुम तमाम बड़ी-बड़ी झीलों का पानी उंडेल दो, पर उसे भर कभी नहीं पाओगे। *—होम्स*

×

चापलूस उन बिल्लियों की तरह हैं जो सामने से चाटती हैं और पीछे से खसोटती हैं।

×

इससे बढ़कर दोस्त कोई दूसरा होता नहीं।
सब जुदा हो जाएँ, लेकिन गम जुदा होता नहीं। —*ज़िगर*

×

चिरागे हुस्न तेरा और मेरा चिरागे दिल।
वह जल के बुझ न सका और यह बुझ के जल न सका॥
—*'नानक' लखनवी*

×

एक महरूम चले 'मीर' हमी दुनिया से,
वरना आलम को जमाने ने दिया क्या-क्या कुछ।

×

शौक था जो यार के कूचे लाया था 'मीर'!
पाँव में ताकत कहाँ इतनी कि अब घर जाइये।

×

ऐ शोरे कयामत! हम सोते ही न रह जाएँ
इस राह से निकले तो हमको भी जगा देना। —*मीर तकी 'मीर'*

×

दागे दिल से भी रोशनी न मिली,
यह दिया भी जला के देख लिया। —*'अर्श' मल्सियानी*

×

तड़फते देखता हूँ जब कोई शै,
उठा लेता हूँ अपना दिल समझ कर। —*तस्लीम*

×

बेताबियों को सौंप न देना कहीं मुझे।
ऐ सब्र! मैंने आन के ली है तेरी पनाह। —*मीर तकी 'मीर'*

×

बहुत से लोग अपना दिमाग खुला रखते हैं। तभी तो उसमें काफी कूड़ा-करकट जमा हो जाता है।

×

किसी पुरुष का कुवाँरा रहना विश्व भर की महिलाएँ अपने लिये व्यक्तिगत अपमान की बात समझती हैं।

×

विवाह दो व्यक्तियों द्वारा की गई ग़लती का परिणाम है, जिसे एक व्यक्ति जन्म भर भुगतने के लिये मजबूर कर दिया जाता है।

×

प्यार अंधा होता है और शादी नेत्र चिकित्सक।

×

कितने तरस की बात है कि मनुष्य अपने अनुभव को उस मूल्य पर नहीं बेच सकता जिस मूल्य पर उसने उसे ख़रीदा है।

×

प्रेम ही केवल वह वस्तु है जिसे मुफ्त नमूना चखाकर नहीं बेचना चाहिये।

×

कोई भी प्रेम व्यापार ठप्प हो जाता है यदि एक भी हिस्सेदार सोचना शुरू कर दे।

×

गर्मी खाकर पानी के बौखलाने को भाप कहते हैं।

×

सब तलाक़ शादी के नतीज़े हैं।

×

इस संसार में हरेक किसी न किसी को प्रेम करता है। दुख की बात है अधिकतर लोग अपने आप को चुन लेते हैं।

×

अन्तःकरण वह चीज है जो आपको लालसा के वशीभूत होकर आनन्द उठाने से रोक देता है।

×

जब सफेद पंछियों का झुण्ड आसमान में उड़ता है तब ऐसा लगता है मानो किसी ने हल्की स्याही से आसमान में प्रेम पत्र लिख दिया है।

×

स्नॉब वह होता है जो स्टेशन पर फ़र्स्ट क्लास का प्लेटफार्म टिकट मांगे।

×

उम्र भर जलता रहा दिल और खामोशी के साथ,
शमा को एक रात की सोजेदिली पर नाज था। —*'साकिब' लखनवी*

×

आमदनी की तुलना हम अपने जूतों से कर सकते हैं। जूते अगर छोटे हुए तो हमारे पाँवों में फफोले पड़ जाते हैं और बड़े हुए तो हम लड़खड़ाने लगते हैं।

—*केल्टन*

×

वुडहाउस कहते हैं कि अच्छा लिखने का भेद यह है कि अपने लिखे को दुबारा पढ़ जाओ और जो चीज़ तुम्हें अच्छी लगे उसे काट दो।

×

सफल राजनीतिज्ञ वह है, जो जानता हो कि भीड़ किस तरफ जायेगी और जो दौड़कर उसके आगे चल सके।

×

समझौता: रेवड़ी बाँटने की कला, जब वे इस प्रकार बाँटी जायें कि प्रत्येक समझे कि उसे ही सबसे अधिक मिली हैं।

×

प्रणय चन्द्रमा की भाँति है, यदि वह बढ़ता नहीं तो घटने लगता है।

×

मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है, जो हँसता और रोता है; क्योंकि वही एक ऐसा प्राणी है जो जानता है कि दुनिया कैसी है और कैसी होनी चाहिये। —*हैज़लिट*

×

हृदय से बढ़कर कोई प्रचारक नहीं, समय से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं, संसार से बढ़कर कोई पुस्तक नहीं और ईश्वर से बढ़कर कोई मित्र नहीं। —*खलील जिब्रान*

×

दीप अंधेरे का भक्षण करता है और काजल को जन्म देता है। जैसा अन्न खाया जाता है, वैसी ही प्रज्ञा उत्पन्न होती है। —*सुभाषित*

×

ज्ञान अर्जित कर हमें फिर प्राप्त क्या होता?
सिर्फ इतनी बात— "हम सब मूर्ख हैं।"

—*'दिनकर कृत नये सुभाषित' से*

×

चैपमैन पिंचर एक मनोवैज्ञानिक की रिपोर्ट का हवाला देता है जिसने सिद्ध किया है कि हर पाँच नारी-वैरियों में से चार नारी होती हैं।

×

"पुस्तकें पंडित बनने के लिये नहीं पढ़ी जातीं, वे पढ़ी जाती हैं— जीना सीखने के लिये, जिन्दगी का राजमार्ग पाने के लिये। पंडित बनने के लिये पुस्तकें पढ़ना और अल्मारी में पुस्तकें सजाकर रखना, दोनों बराबर है। पुस्तकों की यथार्थ उपयोगिता तो यह है कि वे कुँजियाँ हैं, जिनसे जीवन-कोष के एक-एक करके सब ताले खोले जाने चाहियें।" —*सिसेरो*

×

दुखी के आँसू आदमी के दिल में छेद कर देते हैं और स्त्री के आँसू उसकी जेब में छेद कर देते हैं।

×

जो पुरुष अपनी स्त्री से झूठ नहीं बोलता उसे उसकी भावनाओं का ध्यान नहीं रहता।

×

लड़की अपने माता-पिता के संतोष के लिये विवाह करती है और अपने संतोष के लिये तलाक़ देती है।

×

बिना कभी कभार के झगड़ों के विवाह बराबर है नमक बिना आलू के।

×

क़ानून मकड़ी के जाले की भांति होता है; छोटी मक्खियाँ इसके सुन्दर धागों में फंस जाती हैं। किन्तु बड़ी इसके जाल को तोड़कर निकल जाती हैं।

×

बहुतेरी स्त्रियाँ अपने कपोलों पर लाली केवल इसलिये लगाती हैं कि लज्जा की लाली ढकी रहे।

×

नकली दाँत सितारों की तरह होते हैं। केवल रात में बाहर निकालते हैं।

×

सुस्त आदमी सब से अधिक दिनों तक जीवित रहते हैं। क्योंकि उनके पास अधिक समय होता है।

×

किसी स्त्री को एक इंच सूत दीजिये, वह एक पुरुष को सारे जीवन के लिये बाँध लेगी।

×

जो बँगले झांकता है वह बगलें झांकता है।

×

सबसे अधिक धोखा उन युवकों को होता है जो इसलिये विवाह करते हैं कि पका-पकाया भोजन मिलने में कठिनाई न हुआ करे।

×

अवसरवादी वह है जो बड़े ध्यान से सुनता है कि आप क्या करना चाहते हैं और फिर स्वयं वही करता है।

×

विवाह के बाद स्त्री बहुत कुछ बदलती है— मुख्यतः अपने पति की आदतें।

×

सम्बन्ध-विच्छेद या तलाक़ का सबसे बड़ा कारण है विवाह।

×

विवाह ऐसी पुस्तक है जिसका पूर्वाद्ध पद्यमय होता है और उत्तरार्द्ध गद्यमय।

×

विवाह चिड़ियाओं के लिये गले हुए जाल की तरह होता है। जो चिड़ियाएँ बाहर होती हैं अन्दर के दानों के लिये ललचाती हैं; जो अन्दर फँसी होती हैं वे खुली हवा में भाग जाना चाहती हैं।

×

बहुतेरी स्त्रियाँ प्रेम के लिये सब कुछ देती हैं; बहुतेरी सब कुछ के लिये प्रेम देती हैं।

×

स्त्रियाँ बुद्धि की अपेक्षा हृदय की बात अधिक मानती हैं। इसलिये वे बुद्धि की अपेक्षा हृदय को अधिकतर खोती हैं।

×

स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक चतुर होती हैं क्योंकि वे कम जानती हैं पर अधिक समझती हैं।

×

जब तुम श्रम करते हो तो तुम एक वंशी होते हो, जिसके अन्तर से निकल कर क्षणों की कानाफूसी संगीत बन जाती है।

×

स्वयं जीना व्यक्ति का अधिकार है किन्तु समाज को जीवन देना उसका कर्त्तव्य है।

×

नारी जाति की निन्दा सुनते-सुनते ईश्वर भी इतना तंग आ जाता है कि वह नारी जाति को ही मिटा देना चाहता है। किन्तु इसके पहले वह संसार के सब विद्वानों का मतामत सुन लेना चाहता है। इसलिये वह सब विद्वानों को आमन्त्रित करता है। स्वर्ग से अरस्तू और अफलातून, शेक्सपीयर, और सुकरात सभी की आत्माएँ एक के बाद एक स्त्री जाति के विरुद्ध अपना अपना मत प्रकट करती हैं। अन्त में काँटों का मुकुट और रक्तरंजित घावों से भूषित ईसा मसीह आते हैं और एक ही वाक्य में सबका मुँह बन्द कर देते हैं। वे उनसे पूछते हैं— 'आप लोगों की माता थी या नहीं?'

×

मूर्ख अपने आपको अपनी झूठी प्रशंसा से खुश करते हैं, बुद्धिमान बेवकूफों को उनकी झूठी प्रशंसा से खुश रखते हैं।

×

तीन तभी एक बात को गुप्त रख सकते हैं जब उनमें से दो मर चुके हों।

×

अपने बारे में स्वयं लिखना मुश्किल भी है और दिलचस्प भी, क्योंकि अपनी बुराई लिखना खुद हमें बुरा मालूम होता है और अगर अपनी तारीफ़ करें तो पाठकों को उसे सुनना नागवार होगा।

×

शब्दों से कर्म अधिक बोलते हैं।

×

जब तुम स्वर्ग में पहुँचोगे तो बहुत सम्भव है कि तुम वहाँ पर कई ऐसे प्राणी देखोगे जिनकी उपस्थिति से तुम्हें धक्का पहुँचेगा। लेकिन तुम बिल्कुल शान्त रहना, यहाँ तक कि घूरना भी नहीं, क्योंकि निस्सन्देह कई व्यक्तियों को तुम्हारी उपस्थिति भी धक्का पहुँचायेगी।

×

नारियाँ घर की अपेक्षा बाहर अपने को अधिक अनुरूप बनाने का प्रयत्न करती हैं।

×

लक्ष्मी कमल पर निवास करती हैं, शिव हिमालय पर तथा विष्णु क्षीर सागर में, सो केवल खटमल के भय के कारण।

×

मैं पति होने वालों की सूची पर हूँ। तुम इनके केवल वास्तविक पति हो, लेकिन मैं अगला पति हूँ। तुम निराशा हो, मैं उत्कण्ठा हूँ।

×

यह बात नहीं कि मनुष्य के अन्य विचार नहीं उठते। सोचते समय प्रत्येक शेखचिल्ली से प्रतियोगिता करता है। लेकिन पेट भरने की समस्या इतनी टेढ़ी है कि उसे इन कामनाओं को पूरी करने का अवसर नहीं मिलता।

×

दुनिया एक दर्पण है जिसमें जैसी शक्ल बनाकर तुम देखोगे वैसा ही तुम्हें सारा संसार नजर आयगा।

×

वह जीवन को दर्शन बनाने का प्रयत्न करता है लेकिन जीवन उसकी खिल्ली उड़ाता है।

×

एक मनुष्य का लक्ष्य उसकी पहुँच से बाहर होना चाहिये,

नहीं तो स्वर्ग किसका नाम है। —*ब्राउनिंग*

×

कोई दुर्घटना हो जाने पर पहले की गई सहानुभूतियों से दिल भर जाता है। लेकिन फिर सहानुभूति के शब्दों को सुनते सुनते मनुष्य ऐसा कटु हो जाता है कि वह सहानुभूति करने वालों को अपना मूर्ख बनाने वाला समझता है और उनकी बातों पर उपेक्षा से हँस देता है।

×

मेरा दीपक दोनों सिरों से जल रहा है,
वह पूरी रात्रि नहीं जल पायगा।
फिर भी, ओह; मेरे शत्रुओ और मित्रो!
यह कितना सुन्दर प्रकाश दे रहा है।

×

गाढ़ अन्धकार होने पर लाये गये दीपक के समान दुःख भोगने के बाद प्राप्त हुआ सुख अच्छा प्रतीत होता है, किन्तु जो मनुष्य सुख की अवस्था से दरिद्रता में पहुँचता है वह जीवित होता हुआ भी मरे के समान है।

×

हमारे नरक की निचाई स्वर्ग की ऊँचाई पर निर्भर है।

×

दुखों के बाद सुख अच्छा लगता है जैसे धूप से तपे को तरु की छाया अधिक शीतल लगती है।

×

प्रिय वस्तुओं से शोक उत्पन्न होता है और प्रिय से ही भय। जो प्रिय वस्तुओं के बंधन से मुक्त है, उसे न शोक है, न भय। —*महात्मा बुद्ध*

×

अपना रखा हुआ क़दम ठीक होगा, तो आज या कल उसका फल होगा ही।

—*महात्मा गांधी*

×

बहुत अजीब है ये दर्दोगम के रिश्ते भी।
कि जिसको देखिये अपना दिखाई देता है। —*खुर्शीद अहमद 'जामी'*

×

मुझको खुद मुझसे भी मिलने नहीं देती दुनिया
छिप के मिलता हूँ कभी जब नहीं होता कोई। —*सुलेमान अरेब*

×

मुझे बहुत अफसोस है कि मैं ग़लत समझा गया हूँ। लेकिन मुझे और ज्यादा अफसोस करना पड़ता यदि मुझे ठीक समझ लिया जाता।

×

मैं जीनियस हूँ या न हूँ लेकिन अनुभवों का मोटा पुलिन्दा अवश्य हूँ।

×

ठहरी है तो इक चेहरे पै ठहरी रही बरसों
भटकी है तो फिर आँख भटकती ही रही है। —*वहीद अख्तर*

×

पुराने दिनों में आपकी तबियत खराब हुई तो आप डाक्टर के पास चले जाते थे। आजकल आपको जानना पड़ेगा कि आपकी तबियत क्यों खराब है, ठीक डाक्टर तक पहुँचने के लिये।

×

एक लड़का दूसरे लड़के से तीसरे की बुराई कर रहा था, "देखो, नौ साल का हो गया, फिर भी इसे अपने बाप को चलाना नहीं आया।"

×

प्रसिद्ध जीवशास्त्री जीन रोस्टैंड से एक विवाहोन्मुख युवक ने पूछा, "आप मुझे विवाह के बारे में कुछ सलाह दें।"

"अपनी पत्नी के बारे में कभी दोस्तों से बात न करना। और अपने दोस्तों के बारे में कभी पत्नी से बात न करना।"

×

क्या हिमशैल (Iceberg) केवल उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के आसपास मिलते हैं? प्रतिदिन के जीवन में जो चीज़ हम देखते हैं उसका सात बटा आठ भाग छिपा होता है।

×

यदि तुम ज़ीवन को प्यार करते हो तो समय को मत गँवाओ। समय इकट्ठा होने पर जीवन बन जाता है।

×

वादा ज़रूर करते हैं आते नहीं कभी।
फिर भी ये चाहते हैं शिकायत कभी न हो —*कृष्ण मोहन*

×

मछली और मेहमान तीसरे दिन बदबू देने लगते हैं।

×

कहावत है कि सत्य कल्पना से विचित्र होता है। होगा ही क्योंकि वह जाना नहीं जाता और बिना तारतम्य के घटता है।

×

विदेशी कहावत है—हमेशा सत्य बोलो। संस्कृत की सूक्ति है— सत्य बोलो, मीठा बोलो, और कड़वा सत्य न बोलो। पहली सूक्ति भयानक सिद्ध हो सकती है। क्या आप अपने मित्र से कह सकते हैं कि वह अपने पायरिया-भरे मुँह की साँस किसी शीशी में भर कर रासायनिक संघर्ष के मन्त्रालय को भेज दे? क्या आप अपनी पत्नी से, जब वह बन-ठन-कर आपके साथ किसी डिनर पर जा रही हो, कह सकते हैं कि उसकी वेशभूषा किसी फैन्सी ड्रैस पार्टी के अधिक उपयुक्त है।

×

क्या लेखक अपने लेखन से पेट भर सकता है? भारत क्या दुनिया में भी, नहीं के बराबर लेखकों को छोड़कर, इसका उत्तर 'नहीं' है। बल्कि लेखक बनने का शौक इतना तीव्र होता है कि आरम्भ में लेखक स्वयं अपने पैसों से पुस्तकें छपवाते हैं। टॉमस हार्डी ने अपना पहला उपन्यास छपा देखने के लिए ७५ पौंड दिए थे। बर्नर्ड शॉ को लन्दन में पहले नौ सालों की लिखाई से ६ पौंड की आमदनी हुई थी। वर्जीनिया वुल्फ़ का विचार था कि एक लेखक को सफल होने के लिये ५०० पौंड साल की आमदनी और रहने का एक कमरा आवश्यक है। एक कहावत भी है, चाहे वह काटती हो, कि हर सफल लेखक के पीछे एक धनी पत्नी होती है।

×

मृत्यु से डरने के विषय में जे० कृष्णमूर्ति लिखते हैं, "मैं उस वस्तु से कैसे डर सकता हूँ जिसे मैं जानता नहीं? मेरा भय मृत्यु से नहीं बल्कि अपनी निजी चीज़ों से सम्बन्ध टूटने का है। यह अपना परिवार, अपनी ख्याति, अपना चरित्र, अपनी भोज्य-सामग्री ··· खोने का भय है।"

×

शत्रु जो तुम्हारे घर आता है उसे शरण देनी चाहिये; पेड़ लकड़हारे को भी अपनी पूरी छाँह देता है।

×

मार्क ट्वेन का बड़ा तीखा व्यंग है— मैंने स्कूल की पढ़ाई को कभी शिक्षा के आड़े नहीं आने दिया।

×

इतिहास अपने को दुहराता है। और यही इतिहास की एक कमज़ोरी है।

×

इच्छाएँ पूर्ण न होने पर बड़ा बुरा लगता है; परन्तु असली मुसीबतें तब आती हैं जब इच्छाएँ पूर्ण होने लगती हैं।

×

समस्या का हल समस्या को ही बदल देता है।

×

प्रकृति के नियमों को समझने का यह अर्थ नहीं है कि उनका पालन करने से हम स्वतन्त्र हो गए हैं।

×

यदि किसी संस्था या राष्ट्र के नाम में पहले युनाइटेड (संयुक्त) आए, जैसे युनाइटेड नेशन्स या युनाइटेड किंग्डम, तो समझ लो वह इसके विपरीत है।

×

जो इतिहास को नहीं पढ़ते वे पुरानी गल्तियों को दुहराते हैं, जो इतिहास का अध्ययन करते हैं वे नई गल्तियाँ करने को स्वतन्त्र हैं।

×

कोई भी इतना धनी नहीं है कि बिना पड़ौस के उसका काम चल सके।

×

यदि तुम किसी बहस में अपनी बात अन्तिम रखना चाहते हो तो 'मेरा ख्याल है 'आप ठीक हैं' कहना सीखो।

×

"तुम एक सुधरा संसार बनाओ।
उसने पूछा, "कैसे ?
"संसार इतना अद्‌भुत स्थान है।
"आज इतना जटिल ;
"और मैं इतना तुच्छ और निरर्थक हूँ,
"कि मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ।"
लेकिन सर्वबुद्धिमान और दयालु ईश्वर ने उत्तर दिया,
"केवल एक सुधरा तुम बनाओ।"

×

फरिश्ते से बेहतर है इन्सां होना।
मगर इसमें लगती है मेहनत ज़्यादा॥

×

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के ज़माने में।
मगर यह क्या ग़जब है आदमी इन्सां नहीं होता॥

×

वह कौन है जिन्हें तोबा की मिल गई फ़ुरसत।
हमें गुनाह भी करने को ज़िन्दगी कम है॥

×

तुलसीदास की नारी के प्रति सहानुभूति देखिये—

"कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं॥

×

पुरुष में जब नारी के गुण आ जाते हैं तो पुरुष महान् हो जाता है। नारी में जब पुरुष के गुण आ जाते हैं तो घर नष्ट हो जाता है।

×

कैण्टन की कहावत है कि उस आदमी से खबरदार रहो जिसका हँसते समय पेट नहीं हिलता है।

×

आदतें संकल्प पर समय की विजय है।

×

बच्चों को मारना जरूरी नहीं है, इस पर विश्वास करने का सबसे सरल तरीक़ा है जल्दी से जल्दी बाबा बन जाना।

×

मैं जब भी उसके ख्यालों में खो सा जाता हूँ।
वो खुद भी बात करे तो बुरा लगे है मुझे॥ —*जाँ निसार अख़्तर*

रात यूँ दिल में तेरी खोई हुई याद आई
जैसे वीराने में चुपके-से बहार आ जाए
जैसे सहराओं में चले हौले से बादे नसीम
जैसे बीमार को बेवजह क़रार जा आए॥ —*फ़ैज अहमद फ़ैज*

×

लुई पाश्चर ने लिखा है कि समझदारों को मैंने इतना नासमझ पाया कि मैं मानता हूँ कि यहाँ समझदार होना सारी दुनिया की आँखों में नासमझ होना होगा। और दुनिया इतनी पागल है कि यहाँ पागल न होना एक प्रकार का पागलपन मालूम होता है।

×

मृत्यु तो अवश्यम्भावी है। अधिकतर तो थेगली लगा लगाकर कपड़े को जिलाये रखने का प्रयत्न करते हैं। एक भिखमंगे की तरह। और जिन्हें मृत्यु की समझ आ गई वे राजा की तरह पुराने कपड़े को उतार फेंकते हैं और नया पहन लेते हैं।

×

अगर तुम डरते हो तो वह मृत्यु है। अगर तुम निर्भय हो गये तो वह परमात्मा आता है। और कुछ तो ऐसे हैं जो जीते हुए भी परमात्मा में मिल जाते हैं।

×

बन्दरगाह में खड़ा जहाज़ बिल्कुल सुरक्षित होता है परन्तु क्या जहाज़ इसी लिये बनाये जाते हैं।

×

बहुधा मनुष्य यह सोचते रहते हैं कि— काश ! मैंने ऐसा किया होता।— और पछताते रहते हैं। जो इस मूलमन्त्र के स्थान पर अपना मूलमन्त्र यह बना लें—अगली बार ऐसा करूँगा—फिर देखो उसके जीवन में क्या परिवर्तन आता है।

×

आशंसन बीमा पॉलिसी के समान है, उसे भी समय समय पर नवीकरण कराना होता है।

×

एक आदमी किसी कहानी को एक से अधिक बार कहना चाहता है लेकिन सुनना केवल एक बार चाहता है।

×

गप शप पर सुकरात—

"ओ सुकरात, क्या तुमने सुना है कि ···

"एक मिनट रुको भई," सुकरात ने टोका, "क्या तुमने यह निश्चित कर लिया है कि जो तुम कहने जा रहे हो वह सच है ?"

"नहीं, मैंने यह दूसरों को कहते सुना है।"

"अच्छा ! तब तो हम इसके बारे में परेशान क्यों हों जब तक कि यह कोई अच्छी चीज़ नहीं है ? क्या यह अच्छाई के परीक्षण पर खरी उतरती है ?"

"नहीं, नहीं, यह तो इससे उल्टी है।"

"हूँ ! शायद यह इसलिये ज़रूरी हो कि मेरा इसे जानना दूसरों को नुक़सान से बचा सके ?"

"यह भी नहीं।"

"तो फिर," सुकरात बोला, "हमें इसे भूल जाना चाहिये। जीवन में इतनी सारी उपयुक्त वस्तुएँ हैं। हमें उस चीज़ के लिये परेशान होना बेकार है जो इतनी निरर्थक है कि न सत्य है न अच्छी और न लाभदायक।

×

"पढ़ो, प्रतिदिन, वह जो कोई नहीं पढ़ रहा है। सोचो, प्रतिदिन, वह जिस पर कोई सोच विचार नहीं कर रहा है। करो, प्रतिदिन, वह जिसे कोई मनुष्य इतना मूर्ख न हो उसे करे। सर्वदा सर्वसम्मति का भाग होना किसी मानव के लिये ग़लत है।"

—*क्रिस्टोफर मॉर्ले*

×

कोई स्त्री आदमी को मूर्ख बनाती है तो कोई मूर्ख को आदमी।

×

आत्मीयता की एक नज़र पीड़ित हृदय के लिये कुबेर के कोष से भी कहीं अधिक मूल्यवान है। —*महाकवि गेटे*

×

अब भी इक उम्र पै जीने का न अन्दाज़ आया।
ज़िन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा मैं बाज़ आया॥ —*जोश*

×

भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से एक बार एक व्यक्ति ने पूछा— "आपकी सफलता का मुख्य कारण क्या है?"

लिंकन ने जवाब दिया— "मैं कभी दूसरों की नुक्ताचीनी कर उनका दिल दुखाने का प्रयास नहीं करता।"

ठीक इसी तरह के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए हेनरी फोर्ड ने कहा था— "मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को भी उतना ही महत्त्व देता हूँ जितना कि अपने दृष्टिकोण को दिया करता हूँ।"

×

जर्मन भाषा के विख्यात कवि श्री गेटे की प्रथम पुस्तक जब प्रकाशित हुई, तो समालोचकों ने उसकी धज्जी धज्जी उड़ा दी। गेटे ने जान बूझ कर उन आलोचकों में बताये गये मिथ्या दोषों का कोई उत्तर नहीं दिया। उनके कई मित्र आकर एक दिन उनसे कहने लगे— "आप कहें, तो हम लोग आपकी ओर से उन समालोचकों को करारा उत्तर दें।" गेटे ने हँसते हुए कहा— "आप लोग करारा उत्तर देने से पहले एक गीत सुनिये।" कहकर उन्होंने सस्वर बर्गन की एक कविता सुना दी—

"जब अपवाद उड़ाने वालों की जिह्वा आपको पीड़ा देने लगे, उस वक्त आप उस पीड़ा को ही सांत्वना मानिये। याद रखिये, कुत्सित फूल पर भ्रमर कभी नहीं बैठते हैं।"

मित्र मण्डली ने गेटे द्वारा इस कविता पाठ के बाद अपना पूर्व विचार स्थगित कर दिया।

×

"जीवन क्या है?" एक जिज्ञासु के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महात्मा टॉल्स्टाय ने एक कहानी सुनाई—

"एक बार एक यात्री जंगल-पथ से चला जा रहा था। अचानक एक जंगली हाथी उसकी ओर झपटा। बचाव का अन्य कोई उपाय नहीं देख वह रास्ते के एक कुँए में कूद पड़ा। कुँए के बीच में बरगद का एक मोटा पेड़ था। यात्री उसी का एक तन्तु पकड़कर लटक गया।

"कुछ देर बाद उसकी नज़र कुएँ में नीचे की ओर गई— कदाचित् वहाँ त्राण की कोई सूरत दीख जाय! किन्तु वहाँ तो साक्षात मौत ही खड़ी थी— विकराल मगर उसके नीचे टपकने की बाट जोह रहा था। भय से कम्पित निरुपाय आँखें पेड़ पर गयीं— देखा, शहद के एक छत्ते से बूँद-बूँद मधु टपक रहा था। स्वाद के सामने वह भय को भूल गया। उसने टपकते हुए मधु की ओर बढ़कर अपना मुँह खोल दिया और तल्लीन होकर बूँद-बूँद मधु पीने लगा।"

"लेकिन यह क्या? उसने साश्चर्य देखा, वट-तन्तु के जिस मूल को पकड़ कर वह लटका हुआ था, उसे एक सफेद और एक काला चूहा कुतर-कुतर कर काट रहे थे।" *—उपनिषद की कहानी*

जिज्ञासु की प्रश्नसूचक मुद्रा देख महात्मा टॉल्स्टाय ने कहा— "नहीं समझे तुम? वह हाथी काल था, मगर मृत्यु था, मधु जीवन-रस था और काला तथा सफेद चूहा दिन-रात। इन सबका सम्मिलित नाम ही जीवन है।"

×

सुखयतितरां न रक्षति, परिचयलेशं वारांगनेव श्रीः।
कुलकामिनीवनोज्झति, वाग्देवी जन्मजन्मन्यपि॥

(लक्ष्मी वारांगना की भाँति पुरुष को सुख देती है, किन्तु वह परिचय की तनिक भी रक्षा नहीं करती, अर्थात् शीघ्र ही दूसरों के पास चली जाती है। परन्तु वाग्देवी (विद्या सरस्वती) कुलकामिनी के समान जिस पुरुष के पास पहुँच जाती है, उसे जन्म-जन्मान्तर तक नहीं छोड़ती।

×

हाथ छुड़ाये जात हो, निबल जानिके मोहि।
हिर्दे से जो जाइहो, सबल बदौंगो तोहि॥

×

लक्ष्मि क्षमस्व वचनीयमिदं दुरुक्त-
मन्धीभवन्ति पुरुषास्त्वदुपासनेन।
नो चेत्कथं कमलपत्रविशालनेत्रो
नारायणः स्वपिति पन्नगभोगतल्पे॥

(हे लक्ष्मी, मेरे बुरे वचनों को क्षमा करना किन्तु यह सच है कि तुम्हारी उपासना करने वाले पुरुष अन्धे हो जाते हैं। नहीं तो भला कमलपत्र के समान विशाल नेत्र वाले विष्णु साँप की शय्या पर क्यों सोते?)

×

कटोरे पर पड़ती हुई चन्द्रमा की चाँदनी को बिलार यह समझकर कि दूध है, जीभ से चाट रहा है। पेड़ के पत्तों से छन-छनकर आती हुई किरणों को हाथी कमल की नाल समझकर सूंड से उखाड़ रहा है। रति के अन्त में पलंग पर पड़ी हुई चन्द्रमा

की चाँदनी को स्त्री साड़ी समझकर समेटने के लिए पलंग पर हाथ फेर रही है। इस प्रकार प्रभा के मद में मतवाला होकर चन्द्रमा समस्त जगत को चक्कर में डाल रहा है।

×

उष्ट्रकाणां विवाहेषु गर्दभाः स्तुतिपाठकाः।
परस्परं प्रशंसन्ति अहोरूपमहो ध्वनिः॥

×

मैंने तो मन को नपुंसक समझकर प्रिया के पास भेजा था, लेकिन वह तो वहीं रम गया। पाणिनि को धिक्कार है।

×

प्रियतम की याद में कोई स्त्री आँसू बहाकर अपना वक्षस्थल भिगो रही थी। वह कहती है, "प्रियतम के वियोग की अग्नि चाहे मेरे सब अंगों को भस्म कर दे किन्तु मेरे हृदय में निवास करने वाले प्रियतम को इसकी आँच भी न लगने पाये।" इसीलिए वह पानी से सींच रही है।

×

मेरा दिल ले लिया हुशियार ऐसे,
दिया दिल ग़ैर को वो ऐसे भोले। —*आह*

×

मुस्कराये वो हाले दिल सुनकर,
और गोया जवाब था ही नहीं। —*फानी*

×

मैं केवल दो बार बरबाद हुआ हूँ— पहली बार, जब मैं एक मुक़दमा हार गया और दूसरी बार, जब मैं एक मुक़दमा जीत गया।

×

बे अब्र मुश्किल-अस्त नज़ारा-ए आफ़ताब।
'सायब' नज़ारा-ए-रुख़े-इ-उ दार नक़ाब कुन॥

(सूरज को बिना बादल देखना मुश्किल है। इसलिए ए 'सायब' (कवि का नाम)! अपने प्रेमी को परदे की ओट से ही देख।)

×

हे सागर, रत्न तो रत्न ही रहेगा और तिनका, तिनका ही। पर तू अपना बुरापन दिखाता है जब रत्नों को नीचे दबा देता है और तिनकों को सिर पर चढ़ा लेता है।

×

गुलों की गोद में जैसे नसीम आकर मचल जाए,
उसी अन्दाज़ से उन पुरखुमार आँखों में ख्वाब आए।

—*असर लखनवी*

×

दिल की बिसात क्या थी निगाहें जमाल में।
एक आइना था टूट गया देखभाल में॥ —*सीमाब अकबराबादी*

×

विद्या पढ़ने से पहले मनुष्य में बुद्धि आवश्यक है। अन्धे को दर्पण दिखाने से क्या लाभ?

×

तूफान मुलायम घास का कुछ नहीं बिगाड़ता क्योंकि वह झुक जाती है लेक़िन उन्नतभाल खड़े वृक्ष को उखाड़ फेंकता है। महान् महान् से ही पराक्रम करता है नीच से नहीं।

×

नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते, सूर्य अपने स्वार्थ के लिये नहीं दिन भर तपता। सज्जनों का जीवन ही परोपकार के लिये होता है।

×

लक्ष्मी चंचला क्यों न हो आख़िर बूढ़े पुरुष नारायण की युवती स्त्री है।

×

कार्य आरम्भ करने के पश्चात् उसमें कोई दोष दीखने पर उसे छोड़ देना नहीं चाहिये। सब कार्यों का प्रारम्भ दोष से आवृत्त रहता है। अग्नि पूरी तरह जलने से पहले धुआँ देती है।

×

प्रसिद्धि छाया के समान है। यदि उसके पीछे लगो तो वह आगे भागती जायेगी लेकिन उससे मुँह फेर लो तो वह पीछे लग जायेगी।

×

वो कौन हैं जिन्हें तोबा
को मिल गई फुरसत।
हमें गुनाह भी करने को
ज़िन्दगी कम है॥

×

किस पर मरते हो मुझसे पूछते हैं।
मुझको फ़िक्रे जवाब ने मारा॥

×

उनको चाहें, उनके चाहने वालों को भी चाहें, सो हमसे न होगा। भई उनसे कहो कि हमारा दिल वापिस कर दें।

×

अपनी सहायता खुद करने वांले लक्ष्य पर पहुँच गये लेकिन तक़दीर पर भरोसा रखने वाले तक़दीर का ग़िला कर रहे हैं।

×

उन्हें है अक़्ल जो मोहताजे ग़ैर है हरदम।
मुझे है इश्क़ कि जो खुद है मुद्दआ मेरा॥

×

सज्जन जलती लकड़ी के समान होता है जिसे कितना ही नीचे झुका दो फिर भी शिखा ऊपर को ही जायेगी।

×

महापुरुष के संसर्ग में आकर बड़ा लाभ होता है। कमल के पत्ते पर पड़ा पानी मोती के समान चमकता है।

×

करों से बचने को लोग मरना चाहते थे, लेकिन अब मृत्यु-कर के भय से मर भी नहीं सकते।

×

दुष्ट की मैत्री और शत्रुता दोनों ही दुखदायक हैं। अंगारा गरम जलाता है तो ठण्डा काला करता है।

×

नदी छिछली होने के कारण भागी फिरती है। गम्भीर समुद्र स्थिर और स्थायी रहता है।

×

विवाह वह प्रणय-कथा है जिसके प्रथम परिच्छेद में ही नायक का अन्त हो जाता है।

×

स्त्री के एक अङ्ग को भाग्य से ही कभी अवकाश मिलता है और वह है उसकी जिह्वा।

×

सफल होना भी क्या मनोरंजक अनुभव है! रोज़ नये नये रिश्तेदार मिलते हैं।

×

आज हम पिछले साल के कपड़े पहनते हैं, इस साल के टैक्स देते हैं और आने वाले साल के वेतन पर गुज़र करते हैं।

×

दुनिया में एक ही ऐसी वस्तु है, जो कभी भी बुलाने पर अवश्य आ जाती है— मुसीबत।

×

हम अच्छी आदतें उनसे ही सीखते हैं जिनमें वह आदतें नहीं होतीं।

×

प्रायः वही लोग हमें सबसे अधिक कष्ट देते हैं जो हमारे पास यह कहते हुए आते हैं— "आशा है मैं आपको कष्ट नहीं दे रहा हूँ।"

×

कूटनीतिज्ञ जब कुछ नहीं कहता, तब उसके कुछ अर्थ होते हैं और जब कुछ कहता है तो उसके कुछ अर्थ नहीं होते।

×

कपड़े पुरुष को तो बना देते हैं, पर स्त्रियों के विषय में यह प्रकट कर देते हैं कि वह कैसी बनी है।

×

मौन— तिरस्कार की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति।

×

बुद्धिमत्ता— एक विशेष गुण, जो उन व्यक्तियों में अधिक मात्रा में होता है जो हमारी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर उनसे सहमति प्रकट करते हैं।

×

उस व्यक्ति के विकास की कोई आशा नहीं, जिसने स्वयं को ही अपना चरम आदर्श मान लिया हो।

×

मित्र की व्याख्या (एक छोटी लड़की के शब्दों में)— एक ऐसा व्यक्ति जो आपको भली-भाँति जानते हुए भी आपको चाहता है।

×

सुन्दर जीवन से बढ़कर कोई सजीव कलाकृति नहीं।

×

बातें करते समय आप वही दुहराते हैं जो आप जानते हैं, पर सुनते समय आप कुछ नई बातें सीखते हैं।

×

घोड़ा निस्सन्देह आदमी से ऊँचे दर्जे का प्राणी है। दस घोड़ों की दौड़ देखने आधे लाख से अधिक आदमी जमा हो जाते हैं। पर आदमियों की दौड़ देखने के लिये आज तक कहीं एक भी घोड़ा नहीं आया।

×

टीम टाम की ही दुनिया में क़द्र होती है। बेचारे जटाजूटधारी नंगे भोले बाबा शंकर को सागर ने गरल दिया तथा पिताम्बरधारी भड़कीले विष्णु को अपनी पुत्री लक्ष्मी।

×

अन्तस्स्वर— एक विचित्र स्वर जो प्रत्येक स्त्री को हमेशा यह बताता रहता है कि वह ठीक है चाहे वह ठीक हो अथवा नहीं।

×

वैवाहिक जीवन कैसे सुखी हो सकता है?

पति यदि अपने दोनों कान बन्द कर लें और पत्नियाँ अपनी आँखें, तो वैवाहिक जीवन सुख से व्यतीत हो सकता है।

×

एक दिन सौभाग्य ने एक व्यक्ति का दरवाज़ा खटखटाया, परन्तु उस व्यक्ति ने वह आवाज़ नहीं सुनी; वह पड़ौसी के यहाँ बैठा अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना रहा था।

×

सुकरात ने अपने वैवाहिक जीवन की कटुता के आधार पर कहा है, "विवाह अवश्य करो। यदि पत्नी अच्छी मिली तो तुम्हारा जीवन सुखी हो जायेगा; यदि पत्नी बुरी मिली तो तुम दार्शनिक बन जाओगे— और यह हर आदमी के लिये अच्छा है।"

×

संसार में कोई भी मनुष्य इतना धनाढ्य अथवा महान् नहीं कि मुस्कान के बिना काम चला सके और न कोई इतना निर्धन है कि मुस्कान से सम्पन्न न बनाया जा सके।

×

क़ादम्ब, कांचन, कामिनी— ये तीन 'क' मनुष्य को पागल बनाते हैं।

×

भाषा का निर्माण इसलिए हुआ था कि लोग एक दूसरे से मीठी बातें कह सकें।

×

तलाक़ के माने सिर्फ़ यही है कि लोकतंत्र दो व्यक्तियों के बीच में सफल नहीं हो सका।

×

कितने खेद की बात है कि लोग अपनी समस्याएँ आपस में बदल नहीं सकते। हर एक आदमी दूसरे की समस्या को सुलझाने की तरकीब जानता है, लेकिन अपनी नहीं।

×

प्रेम प्रकृति द्वारा दिया गया एक चित्रफलक है, जिस पर कल्पना ने कशीदाकारी की है।

×

दुखी होने का भेद यही है कि आपके पास यह सोचने के लिये अवकाश हो कि आप सुखी हैं या नहीं।

×

आप वास्तविकताओं को नहीं बदल सकते, किन्तु उनके प्रति आपका दृष्टिकोण अवश्य बदल सकता है।

×

सुख-प्राप्ति का भेद यह नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे वह कर सकें, बल्कि यह कि जो आप कर सकें वह अच्छा हो।

×

सज्जन वही है जो उन व्यक्तियों का भी सम्मान करता है जो उसके किसी काम नहीं आ सकते।

×

सबसे सुखी पत्नी वह नहीं है जो सबसे अच्छे पुरुष से विवाह करती है, बल्कि वह जो अपने पति को सबसे अच्छा बना लेती है।

×

अपने बच्चों को केवल उतनी ही बात बताइए जितनी आप चाहते हैं कि आपके पड़ौसी जान सकें।

×

गोर्की ने एक औरत की कहानी लिखी थी। वह शराब पीकर गंदी नाली में पड़ी है और किसी मकान के पतनाले का गंदा पानी उसके मुँह पर पड़ रहा है और उसका छोटा-सा बच्चा उसके पास बैठा रो रहा है, 'माँ! माँ!!' गोर्की से यह कहानी सुनते ही टॉल्स्टॉय की आँखों से आँसू झरने लगे। "यह यथार्थ नहीं है, गोर्की," बूढ़े सौंदर्य-ऋषि ने रोते हुए कहा, "तुम कहाँ ले जा रहे हो महान रूसी साहित्य को? तुम नरक को यथार्थ कह रहे हो। कुछ दिनों में सारा रूस इसे ही यथार्थ कहने लगेगा। फिर जो मानवीय यथार्थ का चित्रण करेंगे, उन्हें कल्पनावादी कहकर दुत्कार दिया जायेगा।"

×

यूँ ज़िंदमी गुज़ार रहा हूँ तेरे बग़ैर
जैसे कोई गुनाह किये जा रहा हूँ मैं। —*जिगर मुरादाबादी*

×

ये ज़िंदगी के कड़े कोस, याद आता है
तेरी निगाहे-करम का घना-घना साया। —*फ़िराक़ गोरखपुरी*

×

'जैसी परिस्थिति वैसी प्रतिक्रिया', जैसा स्टीमुलस वैसा रेसपॉन्स, यह यथार्थ पशु जीवन का है, मनुष्य जीवन का नहीं, जैसा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पावलोव ने दर्शाया था। मनुष्य जीवन का यथार्थ है मनुष्य की स्वाभाविक भावनाएँ, विचार, अनुभूतियाँ और समग्र जीवन के प्रति सहज सहानुभूति और संवेदना।

×

ज़िन्दगी शम्अ की मानिंद जलाता हूँ 'नदीम',
बुझ तो जाऊँगा मगर सुबह तो कर जाऊँगा।

—*अहमद नदीम कासिमी*

×

कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं जो मुख से पढ़े-लिखे पता लग जाते हैं, कुछ को बोलकर अपना पढ़ा-लिखा दिखाने का प्रयत्न करना पड़ता है।

—कृष्ण चन्द्र शर्मा एम पी के ऊपर

×

प्रसिद्ध फ्रेंच आलोचक जेकम् मेरितां ने यह चेतावनी बहुत पहले अपनी पीढ़ी को दी थी। आंद्रे जीद से उसने कहा था : 'नरक में उतरना ही काफी नहीं है। उतरने से पहले आत्मा में सेण्ट पॉल का प्रकाश जगाओ, वरना नरक में एक बार जाने के बाद तुम यथार्थ में लौटना ही भूल जाओगे। तुम्हें नरक का यथार्थ ही मनुष्य जीवन का यथार्थ लगने लगेगा।'

×

पहले आती थी हाले दिल पे हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती। —*मिर्ज़ा ग़ालिब*

×

ठानी थी दिल में अब
न मिलेंगे किसी से हम
पर क्या करेंगे हो गये
लाचार जी से हम। —*मोमिन*

×

Laugh and the world laughs with you
Weep and you weep alone.

—*Ela Wheeler Wilcox*

×

ईश्वर नाम अमूल्य है दामन बिना बिकाय।
तुलसी अचरज देखिये कोई गाहक न आय॥

×

हश्र ढाने में एक हैं दोनों
आपकी खामोशी, मेरी फ़रियाद। —*तपिस रादपुरी*

×

तुलसी पिछले पाप से हरिचर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के वेग से भूख विदा हो जाय॥

×

तुलसी कर पर कर करो, कर तर कर न करो।
जा दिन कर तर कर करो, ता दिन मरन करो॥

×

झूठे वादे भी नहीं करते आप,
कोई जीने का सहारा ही नहीं। —*अज्ञात*

×

"इस दुनिया में अच्छी तरह जीने के लिये ज़रूरी है कि भीतर-भीतर आदमी मर जाय।"

×

गाँधी जी ने ब्रिटिश व्यंगकार डेविड् लो को नुस्खा दिया, "संग्रह मत करो, न संग्रह की इच्छा करो, नाम, रुपया-पैसा और सत्ता-प्राप्ति जैसी तुच्छ आकांक्षाएँ न रखो; जो भी काम करो, इसलिए करो कि वह तुम्हारा धर्म है न कि फल की कामना से— ध्येयसिद्धि से मिलने वाले आत्मसंतोष की कामना से भी नहीं। सादगी, स्पष्टता और शक्ति— यो जिसमें हैं उसे कोई हरा नहीं सकता।"

×

मैं उस सूर्यास्त में नहा उठा जो मानो मोतियों के परदे से छनकर आ रहा था। यहाँ अप्रैल की मधुर बौंछार हो रही थी।

×

उसकी छातियाँ ऐसी थीं जो हर ऊबड़ खाबड़ को समतल कर सकती थीं।

×

क्रोध एक वास्तविक संवेग नहीं है बल्कि संवेग से पलायन है।

×

आदि अन्त 'मथुरा' वरन, जपै विलोम न जोय।
मध्यम अक्षर तासु मुख-मध्य करौ सब कोय॥

(मथुरा का म और रा लेकर उलट पर राम जो नहीं जपता उसके मुख में सब मध्यम अक्षर थु करें।)

×

रहिमत अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ॥

×

धूर धरत नित सीस पै कहु रहीम केहि काज।
जेहि रज मुनि-पत्नी तरी सो ढूँढत गजराज॥

×

जलौका केवलं रक्तमाददाना तपस्विनी।
प्रमदा सर्वमादत्ते चित्तं वित्तं बलं सुखम्॥ —*पुराण*

(बेचारी जोंक तो केवल रस चूसती है किन्तु प्रमदा तो चित, वित्त, बल, सुख सब चूस लेती है।)

×

सरहपा कहते हैं— "यदि नंगे रहने से मुक्ति मिलती हो तो कुत्तों और गीदड़ों को भी मिल जायेगी। यदि रोम उखाड़ने से सिद्धि प्राप्त होती हो तो युवतियों के नितम्बों को भी प्राप्त हो जायेगी।"

×

मृद्वंगी कठिनौ, तन्वि पीनौ, सुमुखि दुर्मुखी
बहिर्यातौ हृदयात्ते पयोधरौ।

(तुम्हारा शरीर मृदु है, लेकिन ये स्तन कठोर हैं। तुम छरहरी हो, वे भरे हुए हैं; तुम सुमुखी हो, ये दुर्मुख हैं। इसी कारण इन पयोधरों को हृदय से बाहर निकाल दिया है।)

×

वह बहुत दुबला पतला और बातूनी था। बचपन में जरूर उसे ग्रामोफोन की सुई से टीका लगाया गया होगा।

×

एक दिलफेंक की प्रशंसा में— तुम्हारा दिल एक होटल की तरह है जिसमें हमेशा नये आने वाले के लिये जगह खाली रहती है। कामदेव तुम्हारी बार में तीर से काम नहीं लेता बल्कि मशीनगन प्रयोग करता है।

×

संसार की सबसे शक्तिशाली जल शक्ति क्या है?—

स्त्री के आँसू।

×

एक बार मैंने किसी रमणी से कुछ कह दिया।

वह चहकी, "ये शब्द एक बार और कह दो फिर मैं आजीवन तुम्हारी हो जाऊँगी?"

मैं मुस्कराया— "इस चेतावनी के लिए धन्यवाद।"

×

बेपर्दा कल जो आई नग्न चन्द बीबियाँ,
अकब़र जमीं में ग़ैरते-क़ौमी से गड़ गया।
पूछा जो उनसे आपका पुरदा वो क्या हुआ
कहने लगीं कि अकल पर मर्दों की पड़ गया॥

×

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है ख़ुदा का इस ज़माने में॥

×

नई तहज़ीब में दिक़्क़त ज़्यादा तो नहीं होती।
मज़हब रहते हैं क़ायम फ़कत ईमान जाता है॥

×

क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्कामों के साथ।
रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ॥

×

उसकी बेटी ने उठा रखी है दुनिया सर पर।
ख़ैर गुज़री कि अंगूर का बेटा न हुआ॥

×

लुट गया इश्क में यों तो सब-कुछ मगर।
इक तेरी याद को हम बचाकर ले गये॥ —*फ़रहत क़ादिरी*

×

अन्धप्रज्ञा क़ा अर्थ झूठों के मध्य रहकर पढ़ने की शक्ति।

×

सहनशक्ति है वह दुखदायी शक कि दूसरा आदमी शायद ठीक है।

×

राष्ट्रीयता से शिकायत यह है कि वह सारे संसार में फैली हुई है।

×

लाउडस्पीकर से शिकायत यह है कि वह भाषणकर्त्ता की ध्वनि को बढ़ाता है उसके विचारों को नहीं।

×

जब कभी पिता से मेरी बातें होती थीं तो ये नहीं कि बच्चों को जुखाम हो रहा है क्या? व्यापार ठीक चल रहा है न? बल्कि वे अख़बार में ख़बर पढ़कर सुनाते थे— देखा, क्या कह रहा है यह सम्पादकीय! हमें ज़रूर इस बात का प्रतिरोध करना चाहिये। यही उनकी लम्बी उम्र का रहस्य था।

×

किसी बात पर आप रोने लगते हैं तो यह एक अच्छा साधन है उस दु:ख को बहाने का जो आपको साल रहा है। आप ज़ार-ज़ार रो रहे हों तब भी कहीं न कहीं आपने अपने ऊपर कन्ट्रोल कर रखा है। मग़र यदि आप दिल खोलकर हँस देते हो तो तनिक से दु:ख के रहने का भी सवाल नहीं उठता।

×

अपने जीवन में जिन व्यक्तियों को तुम जानते हो उनमें केवल तुम स्वयं हो जो दूर नहीं जा सकता, न खोया जा सकता है। अपने जीवन के प्रश्न के केवल तुम्हीं उत्तर हो। अपने जीवन की समस्याओं के तुम्हीं केवल मात्र हल हो।

×

एक आदमी जो हाथों से काम करता है वह श्रमिक है; जो हाथों और दिमाग़ से काम करता है वह कारीगर है; जो हाथों और हृदय से काम करता है वह कलाकार है।

×

यह सही है कि राजनीति तथा अर्थतंत्र के प्रहारों से मनुष्य का यथार्थ टूट कर विकृत हो रहा है। इस विकृति को दर्शानि मात्र को अगर यथार्थवाद कहा जाये तो इसे दर्शाने का काम और भी बेहतर ढंग से वे कोढ़ी करते हैं, जो ज़ख्मों को दिखाते हुए लकड़ी की रेड़ियों में बैठे, हिड़कियाँ मार-मार क़र रोते हुए, अपने नरक बने जीवन की ओर राहगीरों का ध्यान खींचते हैं।

×

जब उपनिषद् सत्य का उच्चारण करते हैं 'तत् त्वमसि।', जब बुद्ध शिक्षा देते हैं कि हर व्यक्ति के अन्दर यह शक्ति है कि वह बुद्ध या बोधिसत्व बन जाय, जब यहूदी कहते हैं कि 'मनुष्य की आत्मा भगवान् की मोमबत्ती है', जब ईसा मसीह श्रोताओं को बताते हैं कि स्वर्ग का राज्य तुम्हारे अन्दर है और जब हज़रत मौहम्मद

हामी भरते हैं कि खुदा हमारी गरदन की नस से भी अधिक हमारे निकट है, उन सब का अर्थ यह था कि जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य मानव से बाहर कोई चीज ढूँढना नहीं है बल्कि वह पाना है उसके विचार और अनुभूति की छिपी सतहों में।

—*सर्वपल्ली राधाकृष्णन्*

×

क्रांतियाँ की नहीं जातीं, स्वयं होती हैं। क्रांति की उपज उतनी ही प्राकृतिक है जितनी किसी वृक्ष की। क्रांति भूत में से आती है— उसकी जड़ें बहुत पीछे तक जमी होती हैं।

×

किसी कड़े क़ानून को रद्द कराने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि उस पर सख़्ती से अमल किया जाये।

×

वीरता प्रदर्शित करने का समय तब तक समाप्त नहीं हो सकता, जब तक संसार में कहीं भी अन्याय है।

×

अगर कोई आदमी अपने को कीड़ा बना ले, तो पददलित होने पर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिये।

×

अगर तुम्हें वफादार और दिलपसन्द नौकर की ज़रूरत है तो अपने सेवक स्वयं बनो।

×

पहले बालक के जन्म पर पति-पत्नी खुशियाँ मनाते हैं। दूसरे के जन्म पर सन्तोष प्रकट करते हैं, तीसरे के समय पर विचार करते हैं, चौथे के समय चिन्ता में पड़ जाते हैं, पाँचवें के समय प्रतिज्ञा करते हैं और छठे के समय या तो संन्यास लेने की बात सोचते हैं या आत्महत्या करने की।

×

शक्ति शारीरिक क्षमता से उत्पन्न नहीं होती, वह अजेय संकल्प से उत्पन्न होती है।

×

वही व्यक्ति जीने की कला को भूल गया है, जो नये मित्र नहीं बना सकता।

×

बेवकूफ जो काम अन्त में करते हैं, बुद्धिमान वह पहले ही कर लेते हैं।

×

हमारे इस जीवन में प्रेम के प्रथम अनुभव से पवित्र और कोई वस्तु नहीं है।

×

दूसरों को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन।

×

गर्व क़ी भावना से देवता दानव बन जाते हैं, और विनय से मानव देवता।

×

सबसे भयानक झूठ वह है जो कहा नहीं जाता, बल्कि बरता जाता है।

×

पतंगा तो एक पल में जल कर ख़ाक हो गया पर बेचारी लौ तो रात भर जल कर शोक मनाती रही।

×

'तुमने मूँछें क्यों बढ़ा रखी हैं?'

'बात यह है कि चूमते समय होठों के रस के स्थान पर मुझे पाउडर का आनन्द आता है। सो ये झाड़ने के लिये हैं।'

×

वही पानी की बूँद जो तपे हुए लोहे पर पड़कर लुप्त हो जाती है, नलिनी के पत्ते पर मोती के समान चमकती है और समुद्र में सीपी के पेट में पड़कर सचमुच मोती हो जाती है। एक व्यक्ति जैसा सहवास करता है, उसी से अधम, मध्यम और उत्तम गुण उत्पन्न होते हैं।

×

पन्द्रह की युवती ही चन्द्रमा के समान षोडश कलाओं से पूर्ण हो जाती है।

×

भूगोल के रंगमंच पर ही इतिहास का अभिनय होता है।

×

उदये सविता रक्ता रक्तश्चास्तमनेऽपि च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

×

प्रेम में जूब कर जैसे तुम एक मन से परमात्मा की प्रार्थना करते हो वैसे ही तुम अपने कर्तव्य के पालन में भी लग जाओ और उसे पूरा करो, नहीं तो तुम्हारी सारी प्रार्थना और पूजा व्यर्थ है।

×

वह वीर नहीं जिसने किसी को हरा कर उसके शरीर को चकनाचूर कर डाला। धन्य है वह वीर जिसने जिसको हराया उसके मन को भी जीत लिया।

×

हे वैद्यराज, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम यमराज से भी बढ़कर हो। यमराज तो केवल शरीर ही लेता है लेकिन तुम शरीर के साथ साथ धन भी लेते हो।

×

स्त्री— युवक की प्रेमिका, प्रौढ़ की मित्र और वृद्ध की नर्स है।

×

स्त्री वादा नहीं करती पर पुरुष के लिये अपना सब कुछ निछावर कर देती है। पुरुष बहुत वादे करते हैं पर समय आने पर मुकर जाते हैं।

×

उल्लू को दिन में नहीं दिखाई पड़ता। कौए को रात में नहीं सूझता। किन्तु काम वासना से सताया पुरुष तो अजीब अन्धा होता है, उसे दिन और रात दोनों में नहीं सूझता।

×

ब्राह्मण, ज्योंतिषी, वेश्याएँ, कुत्ते और मुर्गे, अपनी जाति के अन्य व्यक्ति को देखकर गुर्राते हैं। इसका कारण आज तक न जाना जा सका।

×

महान् है वह आदमी जो अपने मिट्टी के बर्तन का ऐसे आनन्द से उपभोग करता है मानो वह थाल हो, और वह आदमी भी कम महान् नहीं है जिसे अपना थाल मिट्टी के बर्तन से अधिक नहीं है।

×

दूसरे गाँव को जाते समय जैसे रास्ते में यात्री कहीं किसी घर में ठहर जाया करता है और सवेरे उठकर उस घर को छोड़ कर आगे बढ़ जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने माता-पिता, घर और धन के साथ कुछ दिन बिताकर चल देता है। इसीलिए सत्पुरुष उनके मोह में नहीं पड़ा करते।

×

"प्रकृति स्त्रीलिंग है या पुल्लिग?" यह एक प्रश्न पूछा गया है।

प्रकृति स्त्रीलिंग है। और कारण भी यदि प्रश्नकर्त्ता जानना चाहें तो यह है कि स्त्री की भांति उसकी ठीक आयु किसी को भी ज्ञात नहीं।

×

मुझे ऋतु की बदली बड़ी अच्छी लगती है। स्वप्न देखने की आदत है। गर्मियों में भी शरीर कमरे के अन्दर सर्द हवा के बीच लिहाफ में दुबकने की कल्पना करता रहता है और जाड़ों में हर समय चन्द्रमा और तारों के शामियाने का ध्यान लगा रहता है।

×

जो जितना दुःखी होता है, उतना ही अधिक हँसता है।

×

भावुक मनुष्य इस संसार में हमेशा ही फेल रहेगा। वह हर बात में हारेगा। और हार भावुक मनुष्य के लिये विष का प्याला होती है। एक व्यावहारिक आदमी हार से ही जीत ग्रहण करने की शिक्षा पाता है।

×

मेरी अल्पबुद्धि के अनुसार तो भंगी पर जो मैल चढ़ता है वह शारीरिक है और वह तुरन्त दूर हो सकता है। किन्तु जिन पर असत्य और पाखंड का मैल चढ़ गया है वह इतना सूक्ष्म है दूर करना बड़ा कठिन है। किसी को अस्पृश्य गिन सकते हैं तो वे हैं असत्य और पाखंड से भरे हुए लोग।

×

आदमी गूदे की अपेक्षा छिलके पर अधिक झगड़ते हैं।

×

सूर्य के उगने पर उसकी महिमा समाप्त हो जायेगी, यह जानता हुआ भी प्रभात का चन्द्रमा शान्त मुख से कहता है— "अस्त-सिन्धु के किनारे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि सूर्य के उदित होने पर उन्हें प्रणाम तो करता जाऊँ।"

×

खुशामदी आदमी इसलिये आपकी खुशामद करता है, क्योंकि वह आपको अयोग्य समझता है। किन्तु एक आप हैं कि मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर फूले नहीं समाते।

×

जो गुणी तथा कर्त्तव्यपरायण होते हैं, वे अपनी ज़िम्मेदारियों की बात समझते हैं, किन्तु जो गुणहीन हैं, वे सदा अपने अधिकारों की बात रटा करते हैं।

×

दुःखी होने का भेद यही है कि आपके पास यह सोचने के लिये अवकाश हो कि आप दुःखी है अथवा नहीं।

×

जो मेरा बटुआ चुराता है वह कूड़ा चुराता है। लेकिन जो मुझसे मेरा अच्छा नाम छीन लेता है, वह ऐसी चीज़ लेता है जिससे वह स्वयं धनी नहीं होता परन्तु मुझे अवश्य निर्धन कर देता है।

×

किसी नीतिकार ने कहा है कि दुराचार तो दुष्ट करता है और उसका फल साधु को भोगना पड़ता है। सीता का हरण रावण ने किया, लेकिन बँधा बेचारा समुद्र।

×

जैसे जैसे मनुष्य अपना किया अधर्म लोगों से ज्यों का त्यों प्रकट करता है, वैसे वैसे वह अधर्म से उसी प्रकार मुक्त होता है जैसे केंचुली से साँप।

×

मन के बुढ़ापे का नाम ही मोह ममता है।

×

हे पाण्डुपुत्र! आत्मा ही नदी है। संयम का दूसरा नाम तीर्थ है। सत्य पानी है, शील तट है और दयापूर्ण व्यवहार लहरें हैं। ऐसी आत्मा नदी में स्नान करके पुण्यभाग बनें। केवल तीर्थयात्रा से क्या लाभ! अन्तरात्मा पानी से शुद्ध नहीं होता।

×

जो पुरुष उपकारी व्यक्ति के प्रति सज्जनता दिखलाता है, उसकी सज्जनता का कोई मूल्य नहीं। सज्जनता या साधुता तो वही है जो दुर्जन के प्रति सज्जनतापूर्ण व्यवहार दिखलाये और सच्चा साधु भी वही है जो दुष्ट के प्रति भी साधु व्यवहार करे।

×

साधु वही है जो जैसे भाव हृदय में हों, वाणी से प्रकट करे और जैसे वाणी में हों वैसा आचरण करे। मन, वचन और कर्म में एकरूपता रखने वाला ही साधु कहलाता है।

×

स्त्री पर नयी साड़ी का वही प्रभाव होता है जो मदिरा के तीन प्यालों का पुरुष पर होता है।

×

जीवन में सफल और धनी होना पहले तो अपनी पत्नी के हित के लिये ज़रूरी है और फिर इन्कमटैक्स-विभाग के हित के लिये !.

×

याद रखिये झूठी खुशामद हमें ज़रा भी खुश नहीं करती; खुश तो केवल यह कल्पना करती है कि हमें भी कुछ लोग झूठी खुशामद से खुश करने योग्य समझते हैं।

×

जीवन के उत्तरार्ध में आराम पाने के लिए आप पूर्वार्ध में काम करते हैं, यह तो ठीक ही है; लेकिन कल आराम पाने की धुन में आज अपने को इतना न धुन डालिये कि वह कल कभी आये ही नहीं।

×

भूलों का दुख भूल जाइये। भूलों के तृण ही अनुभव की मज़बूत रस्सी को बनाते हैं।

×

जीवन का सबसे महान् रहस्य यह है कि इसका व्यय ऐसी वस्तु पर किया जाये जो जीवन के बाद बनी रहने वाली हो।

×

उस दिन मूड में था। रास्ते में एक अनजान व्यक्ति ने पूछा, "समय क्या है ?"

"भाई, बड़ा गहन तत्त्व का सवाल पूछा है। आओ घर चलकर चाय पर इसके उत्तर का सोच-विचार करेंगे।" मेरा उत्तर था।

×

मैं स्वर्ग और नरक के बारे में बात नहीं करना चाहता क्योंकि दोनों स्थानों में मेरे मित्र मौजूद हैं।

—मार्क ट्वेन

×

जैसे हम वृद्ध होते जाते हैं, सुन्दरता अन्दर की ओर चली जाती है— इमर्सन का सार्थक कथन है।

×

जो आदमी मुझे पसन्द करता है, हो सकता है मैं उसे पसन्द न करूँ, परन्तु यह अवश्य मानता हूँ कि उसकी परख अच्छी है।

×

हर बच्चा कलाकार होता है। जब कलाकार मर जाता है तब जानो वह बड़ा हो गया है।

विचारों का टकराव

सेनेका ने कहा था, "किसी ने कुछ भी बढ़िया ढंग से कहा है, तो वह मेरा है।" और वह बिल्कुल ठीक है। विचारों के टकराव में सत्य हमारे सामने बार-बार कौंधता है, लेकिन उस पर विचार तभी जाता है जब हम वैसा अनुभव न कर लें। फिर वह अपना लगने लगता है।

रेनाल्ड्स प्राइस अपने लेखन के बारे में बताता है, "मैं कभी उन लोगों में जिनके लिए 'लिखना हँसी खेल है', नहीं रहा। मेरे लिए लिखना कभी आनन्द नहीं रहा, लेकिन इस बार मैं बहुत प्रसन्नचित्त लिख रहा हूँ— कथानक और पात्रों के आवागमन के तूफान को सहता हुआ। फिर भी यह स्वचलित लेखन नहीं है।"

वह धीमे लिखता है। "यदि मैं ग़लत मुड़ जाऊँ और कथानक या किसी पात्र को तीन पृष्ठों तक लेजाकर किसी मृत सिरे पर पहुँचा दूँ, तो फिर मेरे लिए वापस लौटना और ठीक राह बनाना असम्भव होता है। सो मैं बहुत संभलकर बढ़ता हूँ, राह के हर इंच को देखता-भालता। यह माना कि धीमे लिखने के भी अनेक ख़तरे हैं। मेरे लिए प्रस्तुत ख़तरा यह है— जैसा कि मैं भी समय के साथ बदलता रहता हूँ, हो सकता है कि मैं एक पुस्तक लिखनी आरम्भ करूँ और दो साल बाद जब समाप्त करूँ तो वह दूसरी पुस्तक हो। मैं तेज़ी नहीं ला सकता जैसा मैं अपने हृदय स्पन्दन को तेज़ नहीं कर सकता। और मैंने प्रयास करना छोड़ दिया है।"

"मैं लिखे को बहुत कम दुहराता हूँ ··· शायद क्योंकि मैं मन्दी और युद्ध के समय में पला हूँ और अपने कपड़ों और भोजन के प्रति बहुत ध्यानवान् रहा हूँ।"

"मैं कैसे लिखता हूँ? मैं पृष्ठ १ लिखता हूँ, और जब वह ठीक हो जाता है— एक दिन या एक सप्ताह या एक वर्ष में— तब मैं पृष्ठ २ लिखता हूँ। माना कि इसका ख़तरा अधिक पकना या जलना हो सकता है। किन्तु इसके सम्भाव्य गुण भी हैं— एक दृष्टि इतनी पैनी और समग्र और विस्तृत और गहरी कि कोई चीज़ सुविचारित हुए बिना नहीं छूट सकती।"

अस्तित्ववाद

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी अपनी शिक्षा-दीक्षा से अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी होता है; आज के समाज में वही सबसे प्रतिभासम्पन्न है! लेकिन सामाजिक सम्बन्धों के वर्तमान ढाँचे में उसकी महत्त्वाकांक्षा और प्रतिभा के लिये या तो अनेक बाधाएँ हैं या सत्ताधारियों के आश्रय में जाने का विकल्प है। श्रम और साधारण वस्तुओं की तरह वह भी अपने को ख़रीद फ़रोख्त की चीज़ बनाने के लिये विवश है। अपनी असाधारणता का बोध और साधारणता में जीवित रहने की विवशता— मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की यही विशिष्टता है। प्रतिकूल सामाजिक परिवेश उसे वह नहीं होने देता

जो वह होना चाहता है। उसकी मुख्य समस्या 'अस्तित्व' की है, अपने निज़त्व की विशिष्टता को सुरक्षित रखने की स्वतन्त्रता प्राप्त करने की है। उस स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाने वाली किसी भी प्रकार की सामाजिक-नैतिक मर्यादा उसके लिये अर्थहीन और अस्वीकार्य है। भीड़ में अपने 'अस्तित्व' को खोने के भय से वह जन-संघर्षों से दूर रहता है और अपने आहत अहं को ही अपना उपजीव्य बनाकर इतिहास के प्रति व्यक्ति के उत्तरदायित्व को नकारता है।

इसी तरह के व्यक्तिवाद का अत्यन्त विकसित रूप 'अस्तित्ववाद' है। सार्त्र के उपन्यास 'एज आफ़ रीज़न' का नायक मैथ्यू कहता है : "मैं स्वयं ही अपना स्वाद हूँ, मैं हूँ। अस्तित्व का अर्थ यही है : प्यास न भी लगी हो लेकिन अपने को आख़िरी बूँद तक पीते जाना और चुक ज़ाना।" व्यक्ति की स्वतन्त्रता के बारे में वह कहता है : "स्वतन्त्रता, वह उसकी गुप्त वाटिका है : नन्हीं-सी एक ऐसी योजना है जिसमें अपना सहायक बस वह खुद है।" यह स्वतन्त्रता मैथ्यू के जीवन में, "निर्वासन के लम्बे क्षण" लानी है। लेकिन यह स्वीकार्य है, क्योंकि 'अस्तित्वलाभ' के लिये हर दण्ड सह्य है। इस निर्वासन और उसके दण्ड का विस्तृत वर्णन अस्तित्ववादी आल्बेर कामू ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'द प्लेग' में किया है। ओरान नगर में भयंकर प्लेग फैला हुआ है। किसी को वहाँ से बाहर जाने या बाहर से वहाँ आने की अनुमति नहीं है। वहाँ के लोगों की मनःस्थिति समाजनिवासियों की है। 'रिक्तता का बोध' उनके भीतर जगह कर गया है, उनमें 'साहस, संकल्प और सहन-शक्ति का ध्वंस' हो गया है। इसलिये उन्होंने 'मुक्ति संदिग्ध के दिन' की बात न सोचने की, भविष्य की ओर न देखने की और 'अपने पैरों पर आँख गड़ाये रखने की' आदत डाल ली है। उनमें से एक व्यक्ति अपनी और अपने साथियों की स्थिति के विषय में कहता है : "अतीत के विरोधी, वर्तमान से असंतुष्ट और भविष्य से वंचित हम बहुत कुछ इन लोगों की तरह थे जिन्हें मनुष्य का न्याय या घृणा, कारा के खींखचों के पीछे रहने के लिये बाध्य करते हैं।"

क्षणवाद

धर्मवीर भारती के शब्दों में "ऐसे भी क्षण होते हैं जब हमें यह लगता है कि यह सब जो बाहर का उद्वेग है— महत्व उसका नहीं है— महत्त्व उसका है जो हमारे अन्दर साक्षात्कृत होता है— चरम तन्मयता का क्षण जो एक स्तर पर सारे बाह्य इतिहास की प्रक्रिया से ज़्यादा मूल्यवान् सिद्ध हुआ है।" *(कनुप्रिया, भूमिका, पृ० ६)*

इतिहास की कसौटी को अमान्य कर देने का अर्थ होता है सामाजिक विकास की नियमित प्रक्रिया को अमान्य कर देना। उसका एक रूप क्षणवाद है। क्षणवाद अर्थ-निरपेक्ष अनुभव का दर्शन है।......

कोई भी क्षण दुहराया नहीं जाता, वह विशिष्ट होता है, इसलिये क्षणों के अनुभवों का साधारणीकरण नहीं हो सकता— यही क्षणवादियों का तर्क है और इसी

के आधार पर वे सामाजिक विकास की नियमबद्ध प्रकृति को अस्वीकार करते हैं। अज्ञेय ने जीवन की गति को धारा या लड़ी मानते हुए भी क्षण की जो कल्पना की है उसके अनुसार क्षण किसी एक बिन्दु पर स्थिर हो गया जीवन है। हर क्षण अद्वितीय है, भिन्न है, क्योंकि उसमें 'अविरल अन्तःसत्य' का एक अंश भर कर अमर हो गया है।

नव-निश्चयवाद (Neo-Positivism)

नव-निश्चयवादियों ने औपचारिक रूप से जगत और जीवन की वस्तुगत सत्ता को मान्यता देते हुए किन्तु वास्तव में उन्हें व्यक्तियों की भावात्मक रचनाएँ कह कर वर्तमान युग में दोनों के बारे में बहुत सी भ्रांतियों को जन्म दिया है। इस विचारधारा के प्रवर्त्तकों में प्रसिद्ध बर्ट्रण्ड रसैल का कहना है : "हम गुणों का अनुभव करते हैं, उस वस्तु का नहीं जिसमें ये गुण निहित माने जाते हैं।" उनके अनुसार वस्तु 'अज्ञेय' है और "जब व्यक्ति सोचता है कि वह बाह्य जगत् का निरीक्षण कर रहा है, उस समय वास्तव में वह अपने भीतर जो हो रहा है उसी का निरीक्षण करता होता है। इसलिये वस्तुगत सत्य के साक्षात्कार की बात अनावश्यक और निरर्थक है।" 'तथ्य' यानी वह अनुभव जो हमारे लिये निश्चयात्मक है और जिसके संचय के आधार पर हम सत्य का साक्षात्कार करते हैं, वस्तु जगत् का अनुभव नहीं, बल्कि हमारे इन्द्रिय-बोध या संवेदन, भाव और प्रतिपत्तियाँ हैं।......"

×

"मैंने अपने जीवन में यह बहुत देर से जाना कि 'मैं नहीं जानता' कहना कितना अच्छा है।" —*समरसेट मॉहम*

×

मार्च 1966 में डोनलेवी के दिये गये अभिनन्दन में इधर-उधर की बातें चल रही थीं। वहाँ बातों बातों में पता चला कि जॉन क्रेसी, जो छः उपनामों से लिखता है, अब तक 453 पुस्तकें लिख चुका है और इस समय लगभग बारह पुस्तकें हाथ में हैं। जॉन क्रेसी ने कई जासूस प्रसिद्ध किये हैं जैसे इन्स्पेक्टर वैस्ट, टॉफ।

×

अमेरिका की लेखकीय लीग (Authors League of America) ने लेखकों की एक प्रातः सभा बुलाई जिसमें विषय 'लेखकों की दुनिया' (The Writer's World) था। यह विषय मुख्यतया इस प्रश्न पर केन्द्रित हो गया कि क्या लेखक होना आनन्ददायक है। रिचार्ड ह्वेलन ने कहा, "जिज्ञासा को शान्त करने का लाइसेंस लेखकीय जीवन का सबसे अधिक पुरस्कृत भाग है।" जीन स्टैफ़र्ड ने बताया कि वह लिखना पसन्द करती है किन्तु इससे वह आसान नहीं बन जाता। लियों एडल (Leon Edel) का विचार था कि लेखन एक प्रकार के अव्यक्त दानव से संग्राम के समान है; फिर "तुम उसे जीत लेते हो और बैठ जाते हो और 1,000 शब्द लिखते हो और सुखी होते हो।" जॉन गुन्थर ने कहा, "लेखन किसी के भी द्वारा आविष्कृत सबसे दर्दीली यन्त्रणा है, लेकिन मैं उसके बिना नहीं रह सकता।"

×

एक बार सत्य की खोज में निकले कुछ जिज्ञासुओं को एक मन्दिर की पुजारिन ने एक पेय पदार्थ देते हुए कहा— "सत्य के विषय में अगर तुम कुछ जानना चाहते हो, तो इसे पी लो।"

जिज्ञासुओं ने एक ही साँस में अपना-अपना प्याला खाली कर दिया और फिर उनमें से एक बोला— "वाह! सत्य तो बहुत मीठा है।" पर दूसरे ने आपत्ति प्रकट की— "नहीं यह बड़ा कड़वा है!" और तीसरे का मत था कि, "सत्य मीठा, कड़वा कुछ नहीं; वरन् कसैला है।"

कला के साथ भी यही बात है— उसके उपासकों में आरम्भ से ही मतभेद रहा है। *—कलाकार रैफ़ेल*

×

मैं अपने आप को आस्तिक मानता हूँ और यह भी समझता हूँ कि आस्था जीवन के लिए एक कुतुबनुमा है।

×

युधिष्ठिर बोले, "पितामह, दैव और पुरुषार्थ— इन दोनों में कौन श्रेष्ठ है ?"

भीष्म बोले, "इस सम्बन्ध में पितामह ब्रह्मा ने कहा : कृषक अपने खेत में जैसा बीज डालता है वैसा ही फल उत्पन्न होता है। मनुष्य भी अपने सत्कर्म और असत्कर्म के अनुसार विभिन्न फल प्राप्त करता है। जैसे खेल के बाहर फल पैदा नहीं होता, पुरुषार्थ के बिना वैसे ही दैव भी सिद्ध नहीं होता।"

भीष्म बोले, "पण्डित लोग पुरुषार्थ की खेत से और दैव की बीज से तुलना करते हैं। जिस प्रकार खेत और बीज का संयोग है, उसी प्रकार पुरुषार्थ और दैव के संयोग से फल उत्पन्न होता है। कर्म का त्याग कर दैव पर निर्भर करना उसी प्रकार है।".

×

अगर कोई लिखने की तकनीक में दिलचस्पी रखता है तो बेहतर है वह लोहार या मकान बनाने वाले मिस्त्री का काम करे। लेखन मशीनी ढंग से नहीं हो सकता। नया लेखक अगर गढ़े गढ़ाये फ़ार्मूलों पर चलकर काम करना चाहता है तो वह मूर्ख है। खुद अपनी ग़ल्तियों से सबक लीजिए। सीखने का सिर्फ यही एक तरीक़ा है। समर्थ रचनाकार यह मानकर चलता है कि कोई भी इतना ज़्यादा नहीं जानता कि उसे सिखा सके। वह पुराने लेखकों की चाहे जितनी प्रशंसा करे सच्चाई यह है कि वह उन्हें पछाड़ देना चाहता है। *—विलियम फ़ॉकनर*

×

"पीड़ा एक लम्बी सड़क की तरह थी जिस पर उसकी चेतनता अपने पैरों के साथ चल रही थी।" *—हावर्ड फास्ट (स्पार्टकस)*

×

"जो कोई किसी को गुलाब के फूल देता है, थोड़ी सी खुशबू उसके अपने हाथों में लगी रह जाती है।" —*चीनी लोकोक्ति*

×

स्टीफन स्पैंडर तीव्रता और एकाग्रता पर विचार करते हुए एक स्थान पर लिखता है, "मौलिक लेखन के लिए मन की एकाग्रता एक लेखक की सबसे बड़ी समस्या है और कवियों की मानी गई तीव्रता तथा आम तौर से उनकी मशीनी आदतें अथवा परम्पराएँ उनकी इसी एकाग्रता को लाने के लिए होती हैं।"

शिलर को गले-सड़े सेबों की गन्ध पास रखना या वाल्टर ड ला मेयर का लिखते समय सिगरेट पीना या ऑडेन का चाय के अगणित प्याले पीना, सब इसी एकाग्रता के लिए थे। स्टीफन स्पैंडर आगे लिखता है, "......मेरी इच्छा होती है कि मैं दो अथवा तीन सिगरेट एक साथ पी लूँ, इसलिए कि बाहर की कोई आवाज़ एकाग्रता की उस दीवार को पार न कर सके जो कि मैंने अपने आसपास निर्माण कर ली होती है।"

×

कहते हैं कि बालज़क जब बीमार पड़ा, किसी डाक्टर का इलाज उसे माफिक नहीं आता था। उसकी बीमारी दिन-दिन बढ़ती जाती थी। और जब बालज़क मर रहा था, वह कहने लगा, "बिऐनचन को बुलवा दो, वह मुझे बचा लेगा।" यह विऐनचन बालज़क के बहुत से उपन्यासों का एक समझदार और ईमानदार डाक्टर पात्र है। तभी तो कहा जाता है कि अपने पात्रों के साथ हर समय जीने से ही पात्रों में जीवन आता है।

×

बेल्जियन उपन्यासकार जॉर्ज सिमेनों लिखते हैं—

मैं अपने समय में जीवन बिताने में खुश हूँ और उसकी कमज़ोरियों के बावजूद मैं उस पर गर्वित भी हूँ क्योंकि—

माना कि अब भी प्रतिदिन जुल्म होते हैं, लेकिन अधिकतर आदमी उन्हें गर्हित ठहराते हैं; माना कि आदमी उतने स्वतन्त्र नहीं है जितना वे समझते हैं फिर भी आज कोई दास नहीं है।

माना कि आज भी राजनीतिक लाभ के लिए प्रजाति और वर्ण का प्रश्न उपयोग में लाया जाता है, फिर भी करोड़ों व्यक्ति हैं जो वास्तव में हरेक को मानव प्राणी के समान जीवन बिताने का अधिकार मानते हैं।

माना कि पर्याप्त पशु-पक्षियों को आनन्द या दंभ के लिए मारते रहते हैं पर अधिकतर अब कैमरे से शिकार करना पसन्द करते हैं और पशु जगत को नष्ट करने के स्थान पर अध्ययन करते हैं।

सामान्यतः जनता ने अपना अहंकार और दम्भ छोड़ दिया है और यह जान लिया है कि मानव भगवान् का प्रतिरूप सृष्टि का शीर्ष नहीं है बल्कि एक पूर्ण जिसके वह केवल अंश जानता है, का एक छोटा संघटक है।

×

जो व्यक्ति कलाकारिता के स्वप्न देखता है, फिर भी सोचता है कि उसे दूसरा कोई कलाकार बना देगा, उसकी कला निश्चय ही अति सामान्य स्तर को प्राप्त कर रह जायेगी। आपको सफलता अपने बूते पर प्राप्त होगी। चलो, आगे बढ़ो, क्षेत्र में कूद पड़ो। चीं चीं मत करो। मुझे या किसी से मत पूछो कि हम तुम्हारी चीज़ को कैसी समझते हैं। अपने मन में एक विश्वास बना लो कि तुम्हारी रचना अन्य किसी भी लेखक के टक्कर की है। उसे श्रेष्ठतम बनाने में इतने तल्लीन हो जाओ कि दूसरे की रचना से तुलना करने का अवकाश ही नहीं मिले,— विचार ही तुम्हारे दिमाग़ में न आ पाये। —*जैक लण्डन*

×

दुनिया एक दर्पण है इसमें अगर तुम हँस कर देखोगे तो सारा संसार हँसता नज़र आयेगा और अगर रोते देखोगे तो जग रोता दिखाई देगा।

×

विलियम फ़ॉकनर ने कहा है, "इसकी चिन्ता मत करो कि तुम अपने समकालीनों या अपने पहले के लेखकों से अपने को बेहतर कर रहे हो, कोशिश इस बात की करनी चाहिये कि तुम अपने से अपने को बेहतर करते जा रहे हो।"

×

"सुरक्षा, सुख, और सम्मान का कलाकार की रचनात्मकता के लिये कोई मूल्य नहीं है। इनका मूल्य केवल शान्ति और सन्तोष के लिये है जिसका कला से कोई सम्बन्ध नहीं।"

×

समय की गहराई से
एक और, एक तीसरी क्रान्ति
उगेगी—
आत्मा की क्रान्ति! —*मायकोवस्की*

×

सात वर्ष के संन्यास को भंग करने वाले सॉल बैलो का यह बहुप्रतीक्षित उपन्यास 'हर्जोग'— इसका प्रति-नायक हर्जोग पंडिताऊ मज़ाक़ करने वाला बुद्धिजीवी अध्यापक है जिससे उसकी पत्नी पौरुष-प्यासी मेडेलीन कुछ निहायत ही सिरखाऊ मज़ाक़ करने पर आमादा रहती है। अपने घरेलू जीवन के मलबे में जीवन का रहस्य खोजते हुए हर्जोग के हाथ यही 'सच्चाई' लगती है कि यह हाड़-माँस का विचित्र पुतला एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा और इसके भीतर वह, वह कुछ है ना जो कि आह्लाद, किसी तीव्र भावना, किसी धार्मिक बोध को जन्म देता है, वह फिर कहाँ जायेगा? "मैं कुछ नहीं जानता, मैं मात्र होने से ही सन्तुष्ट हूँ जैसा उसने चाहा है वैसा ही मैं बना रहूँ, बस यही पर्याप्त है।"

×

गाँधी जी ने 'विनोद' के बारे में लिखा है, "आज तो मैं महात्मा बन बैठा हूँ; लेकिन ज़िन्दगी में हमेशा कठिनाइयों से लड़ना पड़ा है। क़दम क़दम पर निराश होना पड़ा है। उस वक्त अगर मुझमें विनोद न होता, तो मैंने कब की आत्म-हत्या कर ली होती। मेरी विनोद शक्ति ने ही तो मुझे निराशा से बचाया है।"

गाँधी जी ने सेवाग्राम की अपनी कुटी में लिख रखा था— "जब आप ठीक हैं तब तो मिज़ाज़ सँभालना आपके लिये आसान भी है, और जब आपकी बात ही ठीक नहीं है, तब मिज़ाज़ खोने से कैसे काम चलेगा।"

×

फ़्लबर्ट का कथन है, "कोई महान् जीनियस अन्तिम निष्कर्षों पर पहुँचा है, न किसी महान् पुस्तक ने यह किया है, क्योंकि मानवता स्वयं लगातार प्रयास पर है और किसी लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकी है......एक घूमते चक्र के अरें कैसे गिने जा सकते हैं?"

×

लॉर्ड बायरन 'डॉन जुआन' में— "हम कितना कम जानते हैं जो हम हैं।"

×

"मेरे अनेक मित्र," स्टीफ़ेन लीकॉक ने कहा था, "इस भ्रान्ति में हैं कि जब मेरा थकित मस्तिष्क अर्थशास्त्री के गम्भीर श्रम को करने में असमर्थ होता है तब उन खाली क्षणों में मैं हास्य नगण्यताएँ लिखता हूँ। मेरा अनुभव इससे बिल्कुल उलटा है। तथ्य और आँकड़ों से निबद्ध, ठोस, निर्देशात्मक सामग्री लिखनी पर्याप्त सरल है। लेकिन अपने दिमाग़ से कोई चीज़ पढ़ने लायक उतारनी एक दुःसाध्य योजन है, जो दूर-दूर फैले कतिपय भाग्यवान् क्षणों में किया जा सकता है। व्यक्तिगत रूप से पूरी एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका लिखने के बजाय में 'एलिस इन वंडरलैंड' लिखना पसन्द करूँगा।"

×

"मैं केवल यह ध्यान रखता हूँ कि मेरे (फोटोग्राफी के) विषय बहुत विकल हों, क्योंकि जब व्यक्ति आराम में होते हैं, बड़े नीरस होते हैं।" *—कार्श*

×

गोर्की ने बुनिन (नोबल प्राइज़ विजेता) से कहा था, "तुम समझे— जो तुम्हें एक सचमुच का लेखक बनाता है, वह प्रथम और प्रमुखतम यह है कि तुम्हारे रक्त में संस्कृति हो। तुमने रूसी साहित्य के महान् कलात्मक आदर्शों को विरासत में पाया है। हमें, नए पाठक के लेखकों को, अथक इस संस्कृति का पारायण करना चाहिए, हमें तहे-दिल से इसका मूल्य समझना चाहिये— केवल तभी हमारे से कोई अच्छाई प्रसूत होगी।"

×

स्कॉट फ़िट्ज़गैरल्ड की युवा लेखक को सलाह थी, "एक लेखक जो अपनी आत्मा में या दूसरों की आत्माओं में गहराई से झाँककर, अपनी दैवी देन से, ऐसी

चीज़ें पाता है जो किसी ने नहीं देखीं या कहने का साहस किया, वह मानव जीवन की पहुँच बढ़ाता है।"

"तुम्हें अपना हृदय बेचना होता है तीव्रतम अनुभूतियों को, न कि हल्की-फुलकी चीज़ों को जो तुम्हें आहिस्ते से छूती हैं।"

×

अनिश्चयता का सुख बड़ा स्वाभाविक होता है। निश्चयता के पीछे दौड़ने से क्या मिलता है? अनिश्चयता को मान लेने से वह मिट जाती है, पर नहीं मानने से वह बराबर उलझाये रखती है।

×

"यहाँ केवल एक ईसाई था और वह क्रॉस पर मर गया था।" नीत्शे ने कहा।

×

"......साम्राज्य तो दुनिया में बहुत से थे। उनका दुख और सुख भी दोनों ने भोगा होगा। किसी पर शासन किया होगा, किसी की ग़ुलामी की होगी, पर मैं एक ऐसा साम्राज्य चाहता था, जिसमें मैं खुद अपना मालिक रहूँ और खुद अपना गुलाम। कला का क्षेत्र मुझे ऐसा ही साम्राज्य लगा।" —*हेनरी मिलर*

×

"......कितना अच्छा लिखा है स्टैंडहॅल ने, कितनी बड़ी दुनिया का नक्शा उभारा है उन्होंने। उनकी कहानियों को मैंने हमेशा चाव से पढ़ा है...... उन्होंने अपनी कहानियों में बड़े ही कठोर और हिंसक लोगों का वर्णन किया है, लेकिन पढ़ते समय मुझे ऐसा लगा मानो मैं संतों की कथाएँ पढ़ रहा हूँ।" —*मैक्सिम गोर्की*

×

"......जिस तरह किसी खराब नाटक या किताब की आलोचना करना आसान है, उसी तरह उन लोगों के बारे में लिखना आसान है, जिनसे हम नफ़रत करते हैं।"

—*डोरोथी पार्कर*

×

"......जो लेखक बनना चाहते हैं, वे आलोचना पढ़ते हैं, जो लिखना चाहते हैं, उनके पास आलोचना पढ़ने के लिये समय नहीं होता।" —*विलियम फ़ॉकनर*

×

—कुछ ही समय बाद हम आम लोगों की भाषा को समझने के एकदम नाकाबिल हो जायेंगे। आज हम 'प्रगति के सिद्धान्त' आदि की बात करते हैं, लेकिन आम आदमी कहता है : 'भूसे के ढेर में से सुई खोजने से क्या फायदा!' सिद्धान्त, इतिहास और विकास ग़ैरजरूरी और भौंडे हो जाते हैं; क्योंकि आम आदमी न उन्हें समझता है और न ही उनकी ज़रूरत महसूस करता है। आम आदमी हमसे ज्यादा मज़बूत होता है और उसमें अधिक जीवनी शक्ति होती है। कौन जाने हमारा भविष्य वही हो जो अत्सूरी कौम का हुआ। इस कौम के बारे में एक विचारक ने कहा है : सब अत्सूरी खत्म हो गये, मगर अब भी एक तोता ऐसा है जो उनकी भाषा के कुछ शब्द जानता है।

—*टॉल्सटाय*

×

'I think therefore I am.' —*Descartes*

×

"आलोचना कभी विज्ञान का रूप नहीं ले सकती। एक तो इसलिए कि वह नितान्त व्यक्तिगत प्रक्रिया है, और दूसरे इसलिये कि उसका सम्बन्ध उन्हीं मूल्यों से है जिनकी कि विज्ञान उपेक्षा करता है। उसकी कसौटी भावना की है, तर्क की नहीं।...... शिल्प और शैली को लेकर आलोचना के नाम पर की जाने वाली सारी ऐंठन मरोड़, तथा वनस्पति शास्त्र की नकल में किया जाने वाले पुस्तकों का तथाकथित वर्गीकरण और विश्लेषण हठधर्मी है— केवल जड़ और अनर्गल शब्द संचय।"

—*डी० एच० लारेन्स*

×

तुम तोते की तरह एक ही शब्द रटते रहते हो— स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता! आखिर स्वतन्त्रता का मतलब क्या है? इस शब्द का जो मतलब तुम्हारे दिमाग़ में है, अगर वही स्वतन्त्रता तुम्हें दे दी जाय तो क्या होगा? उसे पाकर तुम जीवन और व्यवहार में एकदम निकम्मे और आलसी बन जाओगे। अगर तुम स्वयं अपनी धारणा के अनुसार स्वतन्त्र हो जाओ, तो कौन सी चीज़ तुम्हें जिन्दगी और इन्सानियत से बाँध रख सकेगी?......सिर्फ थोड़ी देर के लिये तुम गम्भीरता से सोचो, तो महसूस करोगे कि अन्ततः स्वतन्त्रता जो भाव देती है, वह निरी शून्यता, रिक्तता और ऐसा रिक्त स्थान है जिसका कोई आकार मस्तिष्क में नहीं उभर सकता।

×

ईसा और बुद्ध दोनों स्वतन्त्र थे लेकिन उन्होंने खुद दुनियावी ज़िन्दगी की क़ैद में गिरफ्तार होना पसन्द किया और ज़माने भर के गुनाह अपने ऊपर लाद लिए। दुनिया में कोई भी व्यक्ति इतना महत्त्वपूर्ण काम न कर सका। जहाँ तक हमारा तुम्हारा सवाल है, हमने किया ही क्या है? हम सब पड़ोसी के प्रति अपने कर्त्तव्य से बचने की स्वतन्त्रता की तलाश में रहते हैं; जबकि सच्चाई यह है कि इस कर्त्तव्यबोध ने ही हमें मनुष्य बनाया है।

स्वतन्त्र होने का मतलब है कि हर कोई हर किसी विषय पर हमसे सहमत रहे, लेकिन ऐसी स्थिति में हमारा अस्तित्व बहुत देर सुरक्षित नहीं रह सकता; क्योंकि असहमति और विरोध ही हमें अपने प्रति सजग बनाये रखते हैं। —*टॉल्स्टाय*

×

मुझे कहानी के असर का पता चल जाता है। अगर वे बहुत प्रभावित मालूम हों और खूब सिर धुनें, तो मैं उस कहानी को सिरे से लिखता ही नहीं। हाँ, ऐसी कहानी लिखने का फायदा ही क्या फ़ादर, जिसे छूटते ही हर नत्थू-खैरा समझ जाये? अगर उनके चेहरों पर नासमझी, लेकिन ईमानदारी के चिह्न देखता हूँ तो मुझे विश्वास

हो जाता है कि मियाँ, अब बात बनी। तब मैं उसी समय लिखने बैठ जाता हूँ। वह कहानी होती भी बेहद कामयाब है, क्योंकि वह अपनी मेरी समझ में नहीं आती, जो कि मेरे नज़दीक कला की उच्चता है। देखिए तो, दुनिया भर का आर्ट— क्या उपन्यास, क्या चित्रकला, क्या वास्तुकला— सब किधर जा रहे हैं और हम अभी तक अर्थ के चक्कर में पड़े हुए हैं। मैं अर्थ की परवाह ही नहीं करता और अगर करता भी हूँ तो बहुत बाद में। मैं लोगों को कहानी के बारे में ले-दे करने देता हूँ। नासमझी के आरोप में डरते हुए वे खुद ही इसमें अर्थ पैदा करने में सफल हो जाते हैं। तब मैं फौरन उनकी दाद देता हूँ और उनके साथ स्वर मिलाकर कह उठता हूँ— बिल्कुल मेरा भी यही मतलब था। मगर अफसोस, बौद्धिकता के इस उजड़े-बसे देश हिन्दुस्तान में समझने वाले कितने लोग हैं। दरअसल कहानी हरएक के लिए लिखी भी नहीं जाती।

—राजेन्द्रसिंह बेदी

×

लेखक बनना मेरे लिए मजबूरी की बात थी। मैं कुछ बन सकता था तो केवल लेखक। इसका मतलब यह नहीं कि लेखन मेरे लिए पलायन— जीवन की कटुताओं से बचने का रास्ता— बना। सच तो यह है कि लेखन जीवन की झील में और भी गहरी डुबकी लगाना और उस स्रोत को जानना था, जो हर समय झील में पानी को बदलता रहता है और उसमें कोलाहल मचाये रखता है।

—हेनरी मिलर

×

फिर एक क्षण ठहरकर बोला, "बड़ा विचित्र प्रोसेस होता है यह भी। जिन स्थितियों में हम पूरी तरह इनवॉल्व्ड होते हैं, वहाँ कभी कभी बड़ी निर्ममता से काटकर हमें अपने को तटस्थ रखना पड़ता है और कहीं-कहीं बिना किसी लगाव के भी पूरी तरह इनवॉल्व्ड होने का अभिनय करना पड़ता है।"

—मन्नू भण्डारी

×

कविता लिखना मेरे लिए आसान था लेकिन गद्य लिखना बहुत कठिन पड़ता। गद्य-लेखक बनने के लिए बहुत तेज़ नज़र की आवश्यकता होती है। इस नज़र में उन चीज़ों को देखने की क्षमता है, जिन्हें और लोग नहीं देख पाते। अच्छा गद्य लिखने के लिये लेखक की अपनी शैली होना भी आवश्यक है; और इसके लिए शब्दों का चुनाव करना आसान नहीं है।

—मैक्सिम गोर्की

×

याद नहीं आता कि मुझे ज़िन्दगी से कभी शिकायत रही हो। जिन लोगों के बीच मेरा जीवन आरम्भ हुआ, वे बहुत शिकायत करते थे। उनकी शिकायतों के पीछे, एक दूसरे की मदद न करने की इच्छा छिपी रहती थी। जल्द ही मेरी समझ में आ गया कि जो जितनी शिकायत करता है उसमें काम करने की उतनी ही कम क्षमता है।

—मैक्सिम गोर्की

×

"मैं महसूस करता हूँ कि
मेरा 'मैं' मेरे लिए बहुत छोटा है।
कोई है जो मेरे भीतर से हठपूर्वक टूटकर बाहर आ रहा है।
हलो !
कौन ? माँ !
माँ ! तुम्हारे बेटे को अद्‌भुत बीमारी है।
माँ ! उसका हृदय आग की लपटों पर है।
उसकी ल्युदिया और ओल्गा बहनों से कह दो,
उसे कहीं भी जाने की जगह नहीं है।" —*मायकोवस्की*

×

वाल्टेयर मानता था कि कई बातों में पशु आदमी से अधिक अच्छे हैं। वे कभी घण्टे की ध्वनि नहीं सुनते। वे मृत्यु को बिना जाने मर जाते हैं। वे कोई धर्मशास्त्री नहीं रखते जो उन्हें सीख दें। उनकी मौत पर उनका कोई खर्च नहीं होता। और न उनकी मौत के बाद वसीयतों पर कोई मुक़दमे लड़ता है।

×

अल्डुअस हक्सले की अदमनीय आत्मा अन्धा होने के उपरान्त भी नए समाधान ढूँढती रही। ब्रेल से पढ़ना सीखने के बाद, उन्होंने चचेरे भाई को बताया, आदमी किताब रजाइयों के अन्दर भी रखकर पढ़ सकता है और इस प्रकार ठण्डे से ठण्डे मौसम में भी हाथ गरम रख सकता है।

×

मैथ्यू आर्नल्ड जो स्वयं एक महान् शैलीकार था, कहता है, "लोग सोचते हैं कि मैं उन्हें शैली सिखा सकता हूँ। यह सब क्या बकवास है ! कुछ कहने के लिए हो और वह जितना तुम कह सको स्पष्ट कहो। यही शैली का केवलमात्र रहस्य है।"

×

"जब भगवान् भी भविष्य को छिपा रखता है, तब वह कह रहा है कि बिना दुविधा के चीज़ें बहुत नीरस होंगी।" —*अलफ्रेड हिचकॉक*

कुछ सत्य अचम्भे

रबड़ की गेंद से स्टील की गेंद अधिक ऊँचा टिप्पा खायेगी।

छींक की स्पीड 160 किलोमीटर प्रति घण्टा तक होती है।

कोड़े को फटकारने पर उसका अगला सिरा आवाज़ करता है क्योंकि वह ध्वनि की गति से तेज़ चलता है।

आम आदमी एक साल में एक टन भोजन और पानी हज़म करता है।

आदमी एक मिनट में साढ़े सात लिटर वायु साँस लेता है।

मुस्कराने में 17 और भौंह चढ़ाने में 43 मांसपेशियाँ काम करती हैं।

72 साल के जीवन में हमारा दिल 30,000 लाख बार से अधिक धड़कता है।

चींटी अपने वज़न से पचास गुना बोझ उठा सकती है।

मच्छर ठण्डी जलवायु में भी जीवित रह सकते हैं, वे उत्तरी ध्रुव के पास पाए गए हैं।

भेड़ बहते पानी को नहीं पीती।

आपरेशन=शरीर विधान में एक संशोधन।

संसार में बत्तख की तरह रहिये जो सतह पर स्थिर और शान्त रहती है, किन्तु अन्दर ही अन्दर निरन्तर पैर मार कर उथल पुथल मचाया करती है।

×

मितव्ययी पत्नी वह है जो आपकी सब अपरिहार्य आवश्यकताओं में मितव्यय कर दे।

×

प्रतिष्ठा वह आड़ है, जिसका सहारा मूर्ख व्यक्ति अपनी मूर्खता छिपाने के लिये लेते हैं।

×

"दूसरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करो" यह एक अच्छा सिद्धान्त— अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये— है।

×

पैसा हाथ में आया, तो आदमी 'भला' बन ही जाता है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि 'भले' आदमी के हाथ में पैसा आये ही।

×

सबसे अधिक स्थायी प्रेम वही होता है जो अन्त तक अस्वीकृत रहता है।

×

अगर आप पीछे की ओर बहुत देखेंगे तो किसी दिन पीछे की ओर चल भी पड़ेंगे।

×

मार्कण्डेय मुनि ने त्रिकालदर्शी होने का दावा किया था। एक दिन वह अपनी कुटिया में बैठे थे कि नारदजी ने आकर उनका दरवाज़ा खटखटाया। मुनि ने पूछा : कौन है?

नारद जी ने कहा— "धिक्कार है, तुझ जैसे त्रिकालदर्शी होने का दावा करने वाले पर, जो इतना भी नहीं जनता कि दरवाज़े पर कौन खड़ा है?"

×

हज़रत दाऊद ने एक दिन प्रार्थना में कहा : "परमात्मन्, मैं तेरा किस प्रकार धन्यवाद करूँ, धन्यवाद भी तो तेरी ही दी हुई विभूति है।"

×

एक होटल का विज्ञापन : "सर्वथा एकान्त चाहने वाले हज़ारों व्यक्ति चारों ओर से इस होटल में रोज़ आते हैं।"

×

पतियों के लिये : पहले पत्नी को आश्वासित कर दीजिये कि वह संसार की अन्य स्त्रियों से भिन्न— अद्वितीय— है। जब उसे इस बात पर पूरा विश्वास हो जाये तब आप बेखटके उसे संसार की अन्य स्त्रियों के समान ही मानकर व्यवहार कर सकते हैं।

×

मुस्कराहट आपके मुख के वातायन पर फैला वह प्रकाश है, जिसे देखकर जाना जा सकता है कि आपका मन अपने स्थान पर है, कहीं भटक नहीं रहा।

×

आयु मस्तिष्क का गुण है। यदि आप अपने सपनों को पीछे छोड़ आये हैं, यदि आपकी आशाएँ सो गई हैं, यदि आप भविष्य के प्रति लालायित नहीं हैं, यदि आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ ठण्डी पड़ गई हैं, तो आप जान लीजिए कि आप बूढ़े हो गये हैं।

×

यह एक भयंकर भूल है कि हम दूसरे की बात ज़बरदस्ती मान लेते हैं। यह उससे भी भयंकर भूल है कि हम अपनी बात ज़बरदस्ती दूसरे पर लादना चाहते हैं।

×

क्या जाने उसे वहम है क्या मेरी तरफ से।
जो ख़्वाब में भी रात को तनहा नहीं आता।

×

कहीं वह आके मिटा न दें इन्तज़ार का लुत्फ़,
कहीं क़बूल न हो जाए इल्तज़ा मेरी।

×

जीवन नाटक में खेलने के लिए हम अपना पार्ट स्वयं नहीं चुनते, न ही उसके चुनाव से हमें कोई वास्ता है। हमारा कर्त्तव्य तो बस अपने पार्ट को अच्छी तरह निभाने में है।

×

'मीर' बन्दों से काम कब निकला ?
माँगना है तो कुछ ख़ुदा से माँग।

×

अपनी बुराइयों और कमज़ोरियों को जितना हम जानते हैं उतना और कोई नहीं जानता। फिर भी कोई और हमें इतना महान् नहीं समझता जितना हम स्वयं अपने को समझते हैं।

×

घमण्ड बिजली की क्षणिक चमक के समान है, जबकि प्रसन्नता मन में सूर्य के समान प्रकाश करती है।

×

संसार की जनसंख्या का पचास प्रतिशत भाग स्त्रियाँ हैं, फिर भी उनके प्रति पुरुषों का कौतुक बना ही रहता है।

×

पुरुष को शिक्षित करना ऐसे व्यक्ति की रचना करना है जो अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ जाता; लेकिन नारी को शिक्षित करने का अर्थ है आने वाली पीढ़ियों का निर्माण करना।

×

"अन्त भला सो जग भला"— किसने कहा है ? शेक्सपियर ने।

"हर व्यक्ति को शक का फायदा हो।" —*सिसरो*

"एक सपना बिना परीक्षण किये एक लिफाफा बिना खोले के बराबर है।"

—*फ्रायड*

पर हमें जानकर आश्चर्य होगा कि ये तथा अन्य प्रसिद्ध सूक्तियाँ इन विद्वानों से पहले 'तालमुद' में कही गई हैं।

'तालमुद' यहूदियों की धर्म-पुस्तक है जिनमें ईसा-जन्म के पूर्व से लेकर आठवीं शताब्दी तक के यहूदी विद्वानों के निष्कर्ष ग्रंथित हैं। [इ]नमें अनेक स्वर्ण वाक्य जड़े हैं। मुलाहज़ा हो—

"जो तुम्हें बुरा लगता है वह दूसरे के प्रति मत करो : यही पूरा नियम है बाकी सब कमेन्ट्री।"

"भगवान् ने केवल एक आदमी से सृष्टि क्यों बनाई ? जिससे किसी को कहने का अवसर न मिले कि 'मेरे पूर्वज तुम्हारे पूर्वजों से भले थे' या पाप और पुण्य पैतृक देन है या अमुक प्रजाति दूसरी से बढ़िया है।......"

"भगवान् ने नारी को पुरुष के सिर से नहीं बनाया जिससे वह उस पर आदेश चला सके; न पुरुष के पैर से बनाया जो उसे अपना दास समझे। भगवान् ने ईव को आदम की पसली से बनाया जिससे पुरुष निरन्तर उसे हृदय के पास रखे।...... नारी को कभी न रुलाने की सावधानी रखो, भगवान् उसके आँसू गिनता है।"

"कभी बच्चे को डराओ मत : या उसे दण्ड दो या क्षमा कर दो।"

"भीषण अपराध के लिए, एक का बहुमत छोड़ने के लिए काफ़ी है, पर अपराधी ठहराने के लिए दो का बहुमत होना चाहिए। ...... जज जो एक अपराधी को मृत्युदण्ड दें उन्हें २४ घण्टे तक न खाना चाहिए न पीना।"

इस पुस्तक में करुणा और दया पर भी बहुत ज़ोर है। एक उद्धरण देखें— "जब मेरा मरने का समय आयेगा," मेंढक ने कहा, "मैं सागर की ओर चला जाऊंगा जहाँ रहने वाला एक प्राणी मुझे निगल जाएगा। इस प्रकार मेरी मृत्यु भी एक दया का काम होगी।"

इस पुस्तक को मध्य शताब्दियों में ईसाई पादरियों और सम्राटों ने तथा आधुनिक काल में नाज़ियों और फ़ासिस्टों ने जगह-जगह जलाया और नष्ट किया, लेकिन यह अब भी जीवित है। यह शिक्षा का केन्द्र है, यह दृष्टान्तों, नीति-कथाओं और उपाख्यानों का कोश है।

×

तालमुद शक्ति पर—

दस शक्तिशाली चीज़ें हैं। लोहा बहुत मज़बूत है परन्तु आग उसे पिघला देती है। आग बड़ी बलशाली है पर पानी उसे बुझा देता है। पानी शक्ति से पूर्ण है किन्तु मेघ उसे सोख लेते हैं। मेघ बलशाली हैं, लेकिन हवा उन्हें बहाकर ले जाती है। आदमी शक्तिशाली है किन्तु भय उसे कँपा देते हैं। भय बलवान् है, पर नींद उन पर हावी है। नींद बलशाली है पर मृत्यु उससे अधिक बलवान है। लेकिन प्रेम-भरी दयालुता मृत्यु से बची रहती है।

×

१९५० ई० के बाद से मानव मस्तिष्क उलझ गया है कि हमारा चतुर, खोजी, अधीर और अति-पर्यटित समाज एक धुंधली गोधूलि में निरुद्देश्य बहा जा रहा है। पढ़ा-लिखा मध्यवर्ग विश्राम और मानव समागम की अनेक सुविधाओं से वंचित हो गया है। —*स्कॉट-जेम्स*

×

एक पात्र के बारे में सत्य उसके कुल भावुक अनुभवों का योग है और यह योग सर्वदा वहाँ रहता है, उसकी अन्तरात्मा को आप्लावित किए तथा हिस्सा बने। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि एक पात्र का पूर्ण मानव सत्य दिखाने के लिए उसे परीक्षात्मक परिस्थितियों के क्रम से गुजारा जाय। उसकी अन्तरात्मा की उपयुक्त गवेषणा किसी दिए पल या एक बहुत छोटे समय (मानलो, एक दिन) में की जाकर उसका पूरा इतिहास और पूरी सम्भावनाएँ बता सकती हैं। इस दृष्टिकोण से एक व्यक्ति स्वयं अपना इतिहास है; कोई चीज़ नहीं खोती, और हर नई घटना के प्रति उसकी प्रतिक्रिया पहली समस्त घटनाओं के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं के योग से प्रभावित होती है।

×

अधिकतर दर्शन जीवन के विभिन्न हितों को अलग-अलग और विशेषीकरण करते हैं और उनमें से एक शुभ या शुभों के एक क्रम को महत्तम बना देते हैं। इस प्रकार जीवन को स्पष्ट बुद्धिवादी संगत ढाँचे में बदलना जीवन के, उसकी जटिल जैविक आवश्यकताओं तथा हर समय विकासमान प्रयोजनों के कारण, विभिन्न कारकों की अवहेलना करना है। —*लुई ममफ़र्ड*

×

विशेषीकरण और श्रम का विभाजीकरण सभ्यता की मृत्यु या रुद्धता है।

×

अल्बर्ट श्विट्ज़र कहते हैं कि आज की दुनिया में सोच विचार की अवहेलना के अतिरिक्त उसके प्रति अविश्वास भी है। संस्थाओं ने मानव के लिए विचार करने का अधिकार ले लिया है। दूसरे ज्ञान के अत्यधिक प्रसार के कारण मानव का आत्म-विश्वास जाता रहा। सोचने की शक्ति के ह्रास से हम ईमानदारी और सत्य की भावनाएँ खो बैठे।

×

ये तीन शुभ बताते हैं— (१) मुझे केवल अपने लिए नहीं रहना चाहिए। (२) संसार और अन्य जीवन भी बिल्कुल मेरे जैसे हैं। (३) सारा जीवन पवित्र है। सब प्राणों को सुरक्षित रखना चाहिए।

×

"मेरा ज्ञान निराशावीद है किन्तु मेरी इच्छा और मनोरथ आशावादी हैं।"

×

पृथिव्यां त्रीणि-रत्नानि जलमन्नम् सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥

×

सूर्य इव गतः रामः, दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्य दिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता॥

×

"तू किसी का इम्त्हान मत ले।"

×

"जिसको जानो उसको माफ़ करो।" —*फ्रांसीसी कहावत*

×

जीवन प्याज़ के समान है। जितना इसके छिलके उतारोगे उतना ही आँखों में पानी भरोगे।

×

मेरे उपन्यास का कोई प्लॉट नहीं है। यह बात चाहे कितनी ही बेढंगी और मूर्खतापूर्ण हो, पर मैं कह सकता हूँ कि मेरे उपन्यास का कोई विशेष प्लॉट नहीं होगा, जीवन का एक विस्तृत प्रदर्शन होगा। कुछ लोगों ने भूल यह की कि जीवन के टुकड़े को सदा एक ही रुख से काटा, सदा चौड़ाई की ओर से। और समय के अनुसार क्यों न इसे ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर की ओर काटा जाय या फिर बिल्कुल आर-पार। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं इसे काटना ही नहीं चाहता। मैं इसमें वह सब कुछ सम्मिलित करना चाहता हूँ जो मैंने देखा है और लोगों के जीवन से प्राप्त किया है।

×

पश्चिमी जीवन ईसाइयत से कट गया है यही उसके आन्तरिक तनाव और संघर्ष का कारण है। अन्तःसंघर्ष और अनिश्चय-जन्य आशंका से उसे मुक्त कर सके, ऐसी किसी आस्था से उसका सम्बन्ध टूट गया है।

अस्तित्ववादी कहते हैं कि मनुष्य अनुभूतियों को ही प्राथमिकता देने लगता है क्योंकि वह मानता या पाता है कि यह अस्तित्व ही सब कुछ है— *(यास्पर्स)*— क्योंकि मानव अनुभव करता है कि उसको नगण्य बना दिया गया है।

क्या वास्तव में आधुनिक परिस्थिति में मानव व्यक्ति को अपनी पसन्द को व्यवहारिक रूप देने की छूट है? क्या वह किसी महत्त्व के प्रश्न पर इसका या उसका वरण कर सकते हैं? वे समझ गये हैं कि उनकी पसन्द का कोई मूल्य नहीं है।

×

मैं तो समझता हूँ कि संस्कार एक ऊपरी आवरण है जिसे मनुष्य तब तक धारण किये रहता है जब तक मौलिक आवश्यकताओं का सामना उसे न करना पड़े। मौलिक आवश्यकताओं की प्रताड़ना पर वह अपने प्रकृत, आदिम रूप में निकल आता है। संस्कार कुछ भी काम नहीं आते। जन-साधारण के जीवन में यही पाया जाता है।

—*शरत् बाबू*

×

हमारी सभ्यता विगत पीढ़ियों द्वारा एकत्र ज्ञान एवं स्मृतियों का योग है। हम तभी उसके भागीदार हो सकते हैं जबकि हम इन बीती हुई संततियों के विचारों से सम्पर्क रखने योग्य बनें। इसका एकमात्र उपाय यही है कि हम अध्ययन द्वारा अपने को सुसंस्कृत बनायें।

—*आंद्रे मोरिआ*

×

मैं स्वीकार करता हूँ कि जीवन ने मुझे जो कुछ दिया है उसमें सबसे स्थायी महत्त्व अध्ययन का रहा है। —*सोमरसेट मॉहम*

×

"अपने पड़ौसी का हृदय खोलो— वह भी तुम्हारा ही हृदय है। वहाँ बिखरे मैल से चौंको मत— मैल ही तो हर हृदय की जतन से जुटाई सम्पत्ति है। खोदते जाओ, जब तक उसके भीतर दबी हुई निर्दोषता और आवश्यकता को न पा लो, रुको नहीं।" —*कवि पाल वैलरी*

×

नारी को अबला कहना उसका अपमान करना है।

मैं तो केवल उसे बला कहता हूँ।

×

चिता और चिन्ता में क्या अन्तर है?

एक मृत को जीवन की ओर ले जाती है, दूसरी जीवित को मृत करती है।

×

पैसा कमाने के लिए जो भी काम मुझे मिला, मैंने वही किया। थोड़ा थोड़ा ही सही, मैंने हर तरह का काम किया; नावें चलाईं, मकानों पर रंग किया, हवाई जहाज़ उड़ाये। मुझे अधिक पैसों की ज़रूरत नहीं हुई, क्योंकि उन दिनों 'न्यू ऑर्लिएन्स' में रहने-सहने का खर्च कम पड़ता था; और मुझे सोने के लिये कैसी भी जगह, थोड़ा सा खाना, तम्बाकू, और व्हिस्की के अलावा किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं थी। कितने की ऐसे काम थे, जिन्हें दो-तीन दिन करके ही मुझे महीने भर के खर्च के लिये पैसे मिल जाते थे। लगता है, स्वभाव से ही मैं आवारा और घुमक्कड़ हूँ। मैं पैसा कमाने के लिये मेहनत करना पसन्द नहीं करता हूँ। मेरे विचार से यह लज्जा का विषय है कि संसार में इतने तरह के काम हैं, व्यस्तता है। संसार में यही सबसे दुखद बात है कि आदमी प्रत्येक दिन आठ-आठ दस-दस घंटे तक काम करता रहता है। हम लगातार आठ घंटों तक न खाना खा सकते हैं, न शराब पी सकते हैं, न प्यार कर सकते हैं— आठ घंटों तक सिर्फ़ काम कर सकते हैं। और यही काम इस बात का कारण है कि आदमी स्वयं को और दूसरों को इतना दुखी और विवश बनाये हुये है।

—*विलियम फ़ॉकनर*

×

ससार के प्रधान दार्शनिक सोरोकिन कहते हैं, "समाकलन मेरा दर्शन है।..... सर्वोच्च समाकलित मूल्य सत्य, शिव और सुन्दर का अविभाज्य योग है।"

×

नास्तिवाद (निहिलिज्म) जैसा नीत्शे उसे रूप देता है, शुभ, न्याय और सत्य का स्वार्थ से तादात्मीकरण है। नास्तिवाद का यह विश्वास है कि आस्थाएँ और सिद्धान्त

वास्तव में केवल परदा है जिसके पीछे कुछ भी नहीं है, ओर फलस्वरूप एक चीज़ है जो सचमुच महत्त्व रखती है : सफलता।

×

हमारे चारों ओर समस्त चीज़ों का लगातार बहाव और विशृंखलीकरण प्रसिद्ध फ्रैंच लेखक मार्सल प्राउस का भय था। "जैसे शून्य में रेखागणित है, उसी प्रकार काल में मनोविज्ञान है। एक मानव प्राणी का समस्त जीवन काल के विरुद्ध युद्ध है। वह प्रेम से, मैत्री से, आस्थाओं से चिपकना चाहता है; लेकिन गहराई से विस्मृति धीरे-धीरे ऊपर आती है और सब सुन्दरतम और प्रियतम स्मृतियों को ढक लेती है।"

×

एक परिभाषा है कि पुरुष आधा-जंगली और आधा-बच्चा है और यह स्त्री का कार्य है कि पहले को पालतू बनाए और दूसरे को पाले।

×

"ख़तरा दूर से बड़ा भयानक लगता है; वह इतना बुरा नहीं यदि हम पास से देखें भालें। और अक्सर वह एक प्यारा साथी निकलता है जो जीवन में उत्साह और आनन्द भरता है।" —*जवाहरलाल नेहरू*

×

"मैं अपने लिए संयमता से वता रहा हूँ। मुझे संग्राम में आनन्द आता है। इससे मुझे लगता है कि मैं जीवित हूँ।" —*जवाहरलाल नेहरू*

×

जर्मन लेखक मैक्स क्रिश का दर्शन है— हम जो हैं वह नहीं बल्कि वह हैं जो दूसरे हमें समझते हैं।

×

उसका प्रसिद्ध उपन्यास 'मैं स्टिलर नहीं हूँ' इसी मिश्रित पहचान पर आधारित है। स्टिलर एक दिन सोचता है कि मैं स्टिलर नहीं बनना चाहता और एक नया जीवन आरम्भ करूँगा। लेकिन सब व्यर्थ। पुलिस, जज, पत्नी, मित्र आदि के रूप में संसार उसे पकड़ लेता है, जकड़ लेता है। इस प्रकार व्यक्ति अपनी पहचान का क़ैदी बनकर रह जाता है।

×

प्रसिद्ध फ्रैंच लेखक वैलेरी कहता है कि जो मुझसे पाँच मिनट पहले गुज़रा है, वह भूत बन गया है और मैं उसे एक काल्पनिक श्रम से दुबारा दुहरा सकता हूँ। इस प्रकार जीवन का मुख्य भाग कल्पना में गुज़रता है। हम वर्तमान में नहीं रह सकते, क्योंकि वर्तमान परिभाषा में वह समय है जिसके बारे में हम कुछ नहीं सोच सकते क्योंकि वह तत्क्षण है। हम केवल भूत और भविष्य के बारे में सोच सकते हैं और वह भी एक दूसरे से सम्बन्धित जहाँ तक हम सोच सकते हैं।

×

बर्ट्रण्ड रसल ने नोबल पुरस्कार स्वीकार करते समय भाषण में कहा था, "अहंमन्यता की एक कठिनाई है कि जो इसका भोजन है उस पर वह विकसित होती

है। जितनी आपके बारे में बातें की जायेंगी, उतना ही अधिक आप अपने बारे में बातें होनी चाहेंगे। दण्डित अपराधी, मुझसे कहा गया है— मेरा कोई निजी अनुभव नहीं है— जिसे अपने मुक़दमे का अखबारों में वर्णन देखने की अनुमति मिल जाती है, उस अखबार से बहुत क्रुद्ध होता है जिसमें वह अनुपयुक्त वर्णित पाता है। और जितना वह अपना वर्णन अन्य अखबारों में पाता है उतना ही वह उस अखबार से नाराज़ होता है जिसमें वह बहुत थोड़ा है। राजनीतिज्ञ और लेखक भी इसी श्रेणी में आते हैं। जितने प्रसिद्ध वे होते जाते हैं, उतना ही प्रेम उन्हें सन्तुष्ट करने में अपने को असमर्थ पाता है।"

×

चेखोव लिखता है, "लेखक को अपना लिखा हुआ दुबारा नहीं पढ़ना चाहिये जब तक वह छप न जाये। न उसे दूसरे व्यक्तियों की सलाह लेनी चाहिये। माना कि तुमसे कहीं गलती हो गई है— पर वह गलती उसकी अपनी होगी। कार्य में साहस करना बहुत जरूरी है। बड़े कुत्ते भी होते हैं, छोटे भी। बड़े कुत्तों के होने से छोटों को दूर नहीं भगाया जा सकता। हरेक को भौंकने का कर्त्तव्य है— भगवान् ने जो आवाज़ दी है उसके अनुसार।"

×

एक लेखक ने चेखोव से दुखड़ा रोया था, "जब मैं अपनी प्रारम्भिक रचनाओं की बुराई, कमज़ोरियाँ याद करता हूँ, तो शर्म से गरदन झुका लेता हूँ।"

"यह तुम कैसे कहते हो!" चेखोव बोले, "घटिया से शुरू करना अत्युत्तम है। यदि शुरू में ही चीज़ बढ़िया आने लगे, तो समझ लो तुम ख़त्म हो गये।"

×

"हम जो हैं वे अपने अनुभवों के कारण हैं।" —*एथिल मैनिन*

×

"चीज़े मुझे नहीं घटी हैं, मैं चीज़ों को घटा हूँ।" —*शॉ*

×

"सर्वोत्तम आत्मकथाएँ स्वीकृति हैं; लेकिन यदि व्यक्ति एक गहन लेखक है तो उसकी सारी रचनाएँ स्वीकृति हैं।"

×

"उस आदमी से सावधान रहो जो तुम्हारा आघात नहीं लौटाता है।"

×

"कुछ दिन पहले एक आलोचक ने बताया कि मुझे साथी मानवों से एक सदय अरुचि है। अरुचि से अधिक निकट का शब्द त्रास हो सकता है; क्योंकि मानव ही वह प्राणी है जिससे मैं बहुत भय खाता हूँ।...... एक भरपेट शेर से कोई डर नहीं। उसके कोई आदर्श नहीं, सम्प्रदाय नहीं, पार्टी नहीं, राष्ट्र नहीं, वर्ग नहीं : थोड़े में कोई कारण नहीं जिससे वह दूसरों को नष्ट करना चाहे।" —*शॉ*

×

..... आपके बनाये मेरे पोर्ट्रेट और मेरे बारे में आपके कृपापूर्ण और सुन्दर शब्दों के लिये धन्यवाद। मैं यह तो नहीं जानता कि मैं अपनी किताबों से बेहतर हूँ या नहीं, मगर इतना ज़रूर जानता हूँ कि हर लेखक को, जो कुछ वह लिखता है, उससे ऊपर और बेहतर होना चाहिये। क्योंकि— आखिर किताब है क्या? एक महान् किताब भी शब्दों की महज़ काली और मृत छाया है और सत्य के प्रति एक इंगित-मात्र है, जबकि आदमी जीवित ईश्वर का मन्दिर है। और मैं समझता हूँ कि पूर्णता, सत्य और न्याय-प्राप्ति की अखण्ड साधना का नाम ही ईश्वर है। इसीलिये बुरा आदमी भी अच्छी किताब से बेहतर है।

मैं इस बात का पूरी तरह कायल हो चुका हूँ कि समूची धरती पर आदमी से बेहतर कोई दूसरी चीज़े नहीं है और मैं यह कहना चाहता हूँ कि जीवित सिर्फ आदमी रहता है, बाकी सारी चीज़े महज़ ख्याल हैं। मैं हमेशा से आदमी का पुजारी रहा हूँ और रहूँगा, सिर्फ इतना नहीं जानता कि इस आस्था की अधिक से अधिक समर्थ अभिव्यक्ति कैसे करूँ? —*मैक्सिम गोर्की*

×

लोग भगवान् से प्रार्थना करते समय कहते हैं— 'तू ही भक्त कल्पतरु।' हे भगवान्, आप भक्तों के लिए कल्पतरु हैं। लेकिन लोग समझते नहीं हैं कि कल्पतरु एक भयानक वृक्ष है। उससे तो आम और कटहल का पेड़ अच्छा है। आम आम ही देगा और कटहल कटहल ही देगा। लेकिन कल्पवृक्ष तो हम जो-जो कल्पना करेंगे, वही सब देगा। हमारी कल्पना बुरी होगी तो बुरा फल देगा। चाहे कितनी भी बुरी कल्पना करें तो भी आम का वृक्ष आम ही देगा, कडुवा फल नहीं देगा, लेकिन कल्पतरु कडुवा फल देगा।

एक था मुसाफिर। गर्मी के दिनों में घूमते-घूमते थक गया, तो एक कल्पतरु के नीचे बैठ गया। सोचने लगा कि बहुत भूख लगी है, खाना मिल जाता तो अच्छा होता। तत्काल थाली भरकर खाना आ गया, प्यास लगी तो पानी आ गया। फिर उसने सोचा कि नींद आ रही है, अब पलंग मिल जाये तो अच्छा है। पलंग भी मिल गया। उसको लगा कि जो-जो चीज़ चाहे, वे सब मिल रही हैं, तो क्या यहाँ कोई भूत है? इतने में भूत हाज़िर। वह डर कर सोचने लगा कि क्या मुझे खायेगा? तो भूत ने उसे खा लिया। —*विनोबा भावे*

×

किशोरलाल मशरूवाला गांधीजी से कहते थे— मैं आपका अनुयायी नहीं हूँ, आपके साथ-साथ चलने का प्रयत्न करता हूँ। आपने जिस सत्य को पहचानां है, लोगों को समझाते हैं, उसे समझने की मैं भी कोशिश करता हूँ। क्योंकि सत्य की शोध में निकला हूँ।

पर उन्होंने ऐसा क्यों कहा? क्या गांधीजी के पीछे चलने में उन्हें अपमान अनुभव होता था? परन्तु ऐसी बात नहीं थी। उनका आशय यह था कि अनुयायी

बनकर पीछे-पीछे चलने से वे स्वतन्त्र चिंतन न कर सकेंगे। भगवान् बुद्ध हमेशा अपने शिष्यों से कहा करते थे— "कोई बात मैं कहता हूँ— इसीलिए तुम उसे स्वीकार लो, ऐसा नहीं होना चाहिए। जो बात तुम्हें सच्ची लगती हो, उसे ही स्वीकारना है।"

वस्तुतः किसी महापुरुष के पीछे-पीछे बिना समझे-बूझे चलने के बजाय उसके साथ-साथ चलना चाहिए। पीछे-पीछे चलने के कारण हम उस महापुरुष की पीठ भर देख पाएंगे, मुँह नहीं, जिससे उसके चले जाने के बाद ग़लत दिशा की ओर मुड़ जाने का ख़तरा हमेशा बना रहेगा।

साथ-साथ चलने से उसके जाने के बाद हम अपने को असहाय या अपंग अनुभव नहीं करेंगे; क्योंकि उसका सत्य हमारा भी सत्य बन चुका होगा।

—रविशंकर महाराज

जिसने शैलेश मटियानी की कहानियाँ पढ़ीं, वही उसकी शैली का भक्त हो गया। उनकी भाषा में जो उषा-पन, पहाड़ी नदियों की तीव्रता, और दयार की बहार मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। वह गद्य पद्य में लिखते हैं। जिसने नई उपमायें, नए रूपक हिन्दी को दिये हैं।

"बूढ़ा सूरज, अस्ताचल का आईना सामने रखे, अपनी सफ़ेद दाढ़ी में सिन्दूरी ख़िजाब लगा रहा था।" ..... "अब तो ज़िन्दगी संयोगों की चौड़ी हथेली पर विक्टोरिया के रुपये-सी पड़ी है। परिस्थितियों के नाखून-नटौरों पर जो खनकता-टनकता है— खरा है या खोटा।" ...... "पर उनकी स्मृति के भार से मन की कमर जो लचक जाती है, उन्मुक्त साँस लेना जो दूभर हो जाता है।" ...... "आँसुओं का बोझ न सँभाला गया पलकों की मजूरिनों से।" ...... "मन-मस्तिष्क में सास-बहू का सम्बन्ध है।"

×

हम सब रेडियो सैट हैं, कोई अधिक शक्तिशाली, कोई कम। उसी हिसाब से हम संसार का अनुभव करने वाले हैं।

×

छान्दोग्य उपनिषद् में कुशलता (योगः कर्मसु कौशलम्) के विषय में कहा है—

यदेव विद्यया करोति श्रद्धया उपनिषदात्
तदेव वीर्यवत्तरं भवतिं।

कौशल का पहला भाग **विद्या** है— वस्तुओं का ज्ञान। फिर आती है **श्रद्धा**— अपने में विकास और जिस हेतु पर कार्य कर रहे हो उस पर विश्वास। अन्तिम है *उपनिषद्*— किसी विषय पर गम्भीर चिन्तन जिससे तुम उसका सुन्दरतम उपयोग कर सको। इनसे कुशलता बढ़ती है।

×

आज का नवीनतम आविष्कार।

दिल में इलास्टिक लगाना जिससे कितनी दूर ही फेंको वह वापस लौट आता है।

×

क्रोधित मनुष्य को नरक नहीं जाना होता। वह जहाँ होता है वहीं नरक बना लेता है।

×

श्री रामकृष्ण परमहंस ने एक बार एक क़िस्सा सुनाया।

एक योगी अपने गुरु के पास गया और कहने लगा— "मैंने चौदह वर्ष जंगल में रहकर योगाभ्यास किया। फलस्वरूप मैंने पानी के ऊपर चलने की दैवी शक्ति पा ली है— मेरी योग-साधना सफल हुई।"

गुरू ने उत्तर दिया— "तुमने चौदह वर्ष का व्यर्थ कष्ट झेला? डेढ़ पैसे में मांझी तुम्हें पार पहुँचा सकता है। तुमने जो सिद्धि पाई है, वह तो सिर्फ डेढ़ पैसे की है।"

×

समस्त जीवन में, जो कुछ भी भयानक है, उसका हमें सामना करना पड़ेगा, साहसपूर्वक उसके सामने खड़ा होना पड़ेगा। यदि हमें मुक्ति या स्वाधीनता का अर्जन करना हो, तो प्रकृति को जीतने पर ही हम उसे पाएंगे, प्रकृति से भागकर नहीं। कापुरुष कभी विजय नहीं पा सकता। हमें भय, कष्ट और अज्ञान के साथ संग्राम करना होगा, तभी वे हमारे सामने से भागेंगे। —*विवेकानन्द*

×

दूसरी दुनिया का तो पता नहीं किन्तु इस दुनिया में अपना स्वर्ग और नरक आदमी स्वयं बनाता है।

×

'लोगों' से कभी मत डरना।

×

बेजान चीज़ों का कभी संग्रह मत करना। नहीं तो तुम भी बेजान हो जाओगे।

×

हमेशा सबसे पहले अपने पर खुद हँसना चाहिए।

×

देह धरन को दण्ड सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख भुगतै रोय॥ —*कबीर*

×

अपने मन में डूबकर पा जा सुराग़े ज़िन्दगी।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन॥ —*इक़बाल*

×

परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे
मा प्राणेषु दयां कुरु।
दुर्लभानि परान्नानि
प्राणा जन्मनि जन्मनि॥

दूसरे का अन्न मिलने पर अरे मूर्ख, प्राणों पर दया मत कर। दूसरे का अन्न सदा दुर्लभ होता है, प्राण तो हर जन्म में मिल जाते हैं।

×

असारे खलुसंसारे सारं श्वसुरमन्दिरम्।
हरो हिमालय शेते हरि शेते महादधौ॥

इस असार संसार में ससुराल ही सार है। इसी से तो शिव हिमालय पर (पार्वती के पिता का घर) और विष्णु सागर में (लक्ष्मी के पिता का घर) शयन करते हैं।

कमले कमला शेते हरः शेते हिमालये।
क्षीराब्धौ च हरि शेते मन्ये मत्कुणं शंकया॥

लक्ष्मी कमल में सोती हैं, शिव हिमालय पर और विष्णु क्षीर सागर पर। मेरी धारणा है कि ये ऐसा खटमलों के डर से करते हैं।

×

स्वयं पंचमुखः पुत्रौ गजानन षडाननौ।
दिगम्बरः कथं जीवेदन्नपूर्णा न चेद्गृहे॥

शिव के स्वयं के पाँच मुख खाने को हैं। एक पुत्र हाथी के मुख वाला है, दूसरे के छः मुख है। बेचारा दिगम्बर कैसे जीता यदि उसके घर में पार्वती न होती।

×

उदरद्वयभरणभयादर्धांगाहित दारः।
यदि नैवं तस्य सुतः कथं अद्यापि कुमारः॥

दो पेट भरने में अपने को असमर्थ पाकर शिव ने पार्वती से मिलकर अर्धनारीश्वर का रूप धारण करके एक पेट बना लिया। फिर भी घर में बहू के लिए नहीं जुटा तभी उनका पुत्र (कार्तिकेय) आज तक कुँआरा है।

×

पाठक-आलोचक ने तीखे स्वर में कहा, "सभ्यता के आरम्भ से मानव कहानी कहता और लिखता चला आ रहा है। आज भी प्रति वर्ष समस्त संसार में लगभग एक लाख कहानी लिखी जाती हैं। जीवन के हर पहलू को कहानीकार छू चुका है। फिर तुम कहानी लिखकर किसी न किसी कहानी की नकल ही कर रहे हो, ऐसा मान लो।"

साहित्यिक ने हँसकर उत्तर दिया, "ईश्वर एक और संसार में ज्ञान एक है। तथा जीवन का आचरण भी एक है। फिर भी समय-समय पर अवतार होते रहे हैं। कहने की बात उनकी एक ही है, पर अपने समय में उनकी आवश्यकता थी। कोई यह नहीं कहता कि उन्होंने बात दुहराई है, ग़लत काम किया है।"

×

एक बार एक स्त्री एडिसन के सामने एक काग़ज रखकर बोली, "मेरे बेटे के लिए इस पर कोई नसीहत लिख दीजिए।"

एडिसन ने लिखा— "काम के समय कभी घड़ी न देखो।"

×

विख्यात आविष्कारक टामस आल्वा एडिसन काम करते हुए भी थकावट या उकताहट महसूस नहीं करते थे।

उनके अस्सीवें जन्मदिन पर एक मित्र ने उन्हें सलाह दी— "अब तो आपको काम की रफ्तार कम कर देनी चाहिए और मन-बहलाव के लिए कोई 'हॉबी' अपनानी चाहिए। भला आप 'गोल्फ' खेलना शुरू क्यों नहीं करते?"

"मैं अभी इतना बूढ़ा नहीं हुआ हूँ।" एडिसन ने सहज भाव से उत्तर दिया।

×

अत्तुं वांछति वाहने गणपतेराखुं क्षुधार्तः फणी।
तं च क्रौंचपतेः शिखी च गिरिजा सिंहोऽपि नागाजनम्।
गौरी जह्नुसुतामसूयति कलानाथं कपालानलो।
निर्विण्णः स पपौ कलहादीशोऽपि हालाहलम्॥

गणेश के वाहन चूहे को शिव के गले में लिपटा भूखा नाग खाना चाहता है, नाग को कार्तिकेय का वाहन मोर। गिरिजा माँ का वाहन सिंह हाथी के मुख वाले गणेश को खाने को दौड़ता है। पार्वती जटा से बहने वाली गंगा से ईर्ष्या करती हैं और तीसरे नेत्र के अग्नि मस्तक पर रहने वाले चन्द्र से। घर के इन कलहों से घबराकर बेचारे शिव ने विष पी लिया।

×

सदा वक्रः सदा क्रूरः सदा पूजामपेक्षते।
कन्याणशिस्यितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः॥

हमेशा कन्या राशि में स्थित रहने वाला दामाद दसवाँ ग्रह है जो सदा तिरछा रहता है, सदा क्रूर होता है और सदा पूजा करानी चाहता है।

×

नपुंसमितिज्ञात्वा प्रियाये प्रेषित मनः।
ततु तत्रैव रमते, हता पाणिनिना वयम्।

(पाणिनी ने अष्टाध्यायी में मन को नपुंसक लिंग लिखा है।) मन को नपुंसक जानकर मैंने उसे अपनी प्रिया के पास भेज दिया। वह तो वहीं रम गया, पाणिनि के कारण मुझे धोखा हो गया।

×

आपाण्डुरा शिरमिजास्त्रिवली कपोले
दन्तावली विगलिता न च मे विषादः।
एणीदृशी युवतयः पथि माँ विलोक्य
तातेति भाषणपराः खलु वज्रपातः॥

केश सफेद हो गए, गालों पर झुर्रियाँ पड़ गईं और दाँतों की पंक्तियाँ झड़ गईं पर इनका मुझे कोई खेद नहीं है। वज्रपात तो मुझ पर तब होता है जब राह में मुझे देखकर मृगनयनी युवतियाँ 'तात' कहकर बुलाती हैं।

×

साहित्य् का नोबल पुरस्कार स्वीकारते समय हेमिग्वे ने यह वक्तव्य दिया :

"सच कह दूँ, नोबल पुरस्कार के रूप में जो सम्मान मुझे दिया जा रहा है, उसका उपयुक्त पात्र अभी मैं नहीं बन पाया हूँ। किन्तु फिर भी, पूरी श्रद्धा से इस सम्मान को नमस्कार करके, मैं अपने इस संकल्प को और भी सक्रिय बनाने की प्रतिज्ञा करता हूँ और मैं अपनी लेखनी के द्वारा मानव-जाति को और भी अधिक आत्म-शौर्य, आत्म-सौंदर्य एवं आत्म-श्रेय की ओर ले जाने की कोशिश करूँगा। मेरे जैसे अयोग्य-अपात्र व्यक्ति को नियति ने यह प्रतिष्ठा देकर मुझे भी बलात् उन स्वयंप्रकाशी मनीषी प्रहरियों की कतार में ला खड़ा कर दिया है, जो सदैव मानव-गौरव के रक्षक हैं और जिन्होंने अपराजित मनुष्य को कभी पराजित नहीं होने दिया है। मुझे डर है कि नियति की यह भूल कहीं दुनिया पर स्पष्ट न हो जाए।"

तीन सरल, किन्तु प्रबल आवेगों ने मेरे जीवन का शासन किया है— प्रेम की साध, ज्ञान की खोज और मानव-जाति के दुःख-दर्द के लिए असहनीय करुणा। इन आवेगों ने ज़बर्दस्त आँधियों की तरह मुझे अनिश्चित राहों पर, वेदना के गहरे सागर पर इधर से उधर भटकाया है, बहुधा निराशा के ठेठ कगार तक पहुँचाया है।

मैंने प्रेम को ढूंढा है। प्रथमतः इसलिए कि वह आह्लाद देता है— ऐसा परम आह्लाद कि बहुधा मैं चंद घंटों के उस आनन्द के लिए शेष सारे जीवन की कुर्बानी चढ़ाने को तैयार हो गया हूँ। दूसरे, मैंने प्रेम को इसलिए ढूँढा है कि वह एकाकीपन से राहत देता है— उस भयंकर एकाकीपन से जिसमें अकेली काँपती हुई चेतना विश्व के कगार पर से ठंडे, अथाह, निष्प्राण गर्त को ताका करती है। और अंततः मैंने उसे इसलिए ढूंढा है कि प्रेम-मिलन में मुझे, मानो रहस्यमय मिनिएचर में, उस स्वर्ग का पूर्वाभास मिला है जिसकी कल्पना संत और कवि करते आए हैं।

तो यह है जो मैंने ढूंढा, और यद्यपि मनुष्य-जीवन में यह अविश्वसनीय सौभाग्य प्रतीत हो सकता है, यह है जो आखिरकार मैंने पाया।

उतने ही आवेग के साथ मैंने ज्ञान को ढूंढा है। मैंने चाहा है कि मनुष्यों के हृदयों को समझूँ। मैंने जानना चाहा है कि तारे क्यों चमकते हैं? मैंने उस

पीथागोरीय शक्ति को पाने का यत्न किया है जिसके द्वारा संख्या सततपरिवर्ती सृष्टि-प्रवाह पर शासन करती है। इसका कुछ अंश, ज्यादा नहीं, मैंने हस्तगत किया है।

प्रेम और ज्ञान, जितना भी मिल गए, मुझे ऊपर स्वर्ग की ओर ले गए। किन्तु करुणा हर बार मुझे पृथ्वी पर लौटा लाई। अकाल-ग्रस्त बच्चे, आततायियों की यंत्रणाओं से कुचले गए मानव, अपने ही बेटों द्वारा बेकार का बोझ समझे जाने वाले बेबस बूढ़े और तमाम तन्हाई, ग़रीबी और दर्द— इनसे जीवन विद्रूप बन गया है। मैं बुराई को हलका करना चाहता हूँ, किन्तु कर नहीं पाता हूँ, और दर्द भोगता हूँ।

यह रहा मेरा जीवन। मैंने इसे जीने योग्य पाया है। अगर मुझे अवसर दिया जाये तो मैं बड़ी प्रसन्नता से इसे फिर से जीऊँगा।

×

एक बार पांडिचेरी के अरविंदाश्रम के संगीतज्ञ श्री दिलीपकुमार राय ने बर्ट्रेंड रसल से भेंट की। राय ने उन्हें अपना परिचय देते हुए, अपनी कई पीढ़ियों का गौरव से भरपूर इतिहास सुनाया। यह बात रसल को अच्छी नहीं लगी, तो उन्होंने कहा— "हमें अपने पूर्वजों की प्रशंसा एक सीमा तक ही करनी चाहिए— यह ठीक भी लगता है। यदि हम प्रशंसा करते चले जाएँगे, तो अन्त में वहीं पहुँच जाएंगे जहाँ हमारे वानर पूर्वज थे।"

×

वैद्यराज नमस्तुभ्य यमराज सहोदर !
यमस्तु हरति प्राणात् वैद्यो प्राणान्धनानि च ॥

यम के भाई वैद्यराज, मैं तुझे दूर से ही नमस्कार करता हूँ। यम तो केवल प्राण लेता है किन्तु वैद्य प्राण और धन दोनों।

×

चिंतां प्रज्वलितां दृष्ट्वा वैद्यो विस्मयमागतः।
नाहं गतो न मे भ्राता कस्येदं हस्तलाघवम् ॥

जलती चिता को देखकर वैद्य आश्चर्यचकित रह गया— न तो मैं यहाँ आया न मेरा भाई, फिर यह किसके हाथ की सफाई है ?

×

"यदि आपका रास्ता सातवीं मंज़िल से होकर जाता हो तो क्या आप मुझे वहाँ पहुँचाने की कृपा करेंगे।" एक भला आदमी लिफ्टमैन से सर्वदा कहता था।

×

सत्य यही है कि सैक्स-जीवन में पवित्रता एक विलासिता नहीं, सुखी और भले जीवन के लिये आवश्यक है, बच्चों, कल के नागरिक, के मानसिक सन्तुलन के लिये आवश्यक है, सभ्य समाज के लिये आवश्यक है।

×

मेरा ७५-वाँ वर्ष चल रहा है। सुहृदों का तकाजा है मैं अब अपना वसीयतनामा लिख दूँ। लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि आखिर मेरी वसीयत हो ही क्या सकती है? दैनिक जीवन प्रवाह देखता हूँ, तो मेरा अंतःकरण यही कहता है कि इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतरण, वास्तव में, दूसरों के ही लिये है— मुख्यतः उन लोगों के लिये जिनकी हँसी-खुशी पर हमारी अपनी हँसी-खुशी निर्भर है। कोटि-कोटि रूपों में बिखरा हमारा यह मानव समाज एक अखण्ड आत्मीयता के ही धागे में तो बंधा हुआ है।

स्वयं अपने को लेकर, मैं तो प्रतिदिन यही अनुभव करता हूँ कि मेरे भीतरी और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियों के श्रम का हाथ रहा है। इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अन्तःकरण कितना छटपटाता है कि मैं कम से कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूँ जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है। *—आइंस्टीन*

×

ज़िन्दगी को मैं छोटी-सी टिमटिमाती हुई मोमबत्ती नहीं मानता। मेरी निगाह में वह एक बड़ी मशाल है, जिसे मैं एक निश्चित काल के लिये अपने हाथों में लिये हुए हूँ। आने वाली पीढ़ी को वह मशाल सौंपने से पहले, मैं चाहता हूँ कि वह अच्छी तरह जले और खूब तेज़ प्रकाश फैलाये। *—जार्ज बर्नार्ड शॉ*

×

गरज़ कि काट दिये ज़िन्दगी के दिन, ऐ दोस्त
वो तेरी याद में हों, या तुझे भुलाने में। *—फ़िराक़ गोरखपुरी*

×

आंद्रे मौरोए का विचार है— दुखान्त नाटक में नायक को दुनिया से बड़ी बड़ी शिकायतें होती हैं जिन्हें वह स्टेज पर प्रकट भी करता है।

लेकिन जब हम जीवन में भी इस प्रकार का अभिनय करना शुरू कर देते हैं (क्योंकि सभी के वैयक्तिक और राष्ट्रीय जीवन में निराशाएँ आती हैं और हम सब में नाटकीय प्रवृत्ति है) तो गहन समस्या उठ खड़ी होती है।

हम अपनी भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं। फिर भावनाओं को भी अतिरंजित कर लेते हैं। फिर उसे अभिनय नहीं, यथार्थ समझने लगते हैं तथा अपने ऊपर तरस खाते हैं।

×

समालोचना एक सीढ़ी के समान है जिससे हम लेखक के उद्देश्य तक पहुँच सकते हैं। लेखक के आन्तरिक भावों को पहचानने का एक जरिया है। लेकिन होता यह है कि समालोचना लेखक को ऊपर से घसीटकर नीचे पटकने की सीढ़ी बन जाती है। चेखव ने समालोचक की तुलना घोड़े से चिपटी मक्खी से की है जो उसे हल नहीं जोतने देती। एक समालोचक के डंक से अंग्रेज महान् कवि कीट्स को इतना दुःख हुआ कि उसकी मृत्यु हो गई।

×

"आचरण गणित में शून्य के समान होता है। वह अपने में कुछ नहीं होता, पर दूसरी चीज़ों के मूल्य में अत्यन्त बढ़ावा कर देता है।" —फ़्रेया स्टार्क

×

शॉ की हास्य की परिभाषा है— वह जो तुम्हें हँसने को मजबूर करे, लेकिन सर्वोत्तम वह है जो हँसी के साथ आँख के आँसू खींचने में भी सफल हो।

×

फ़्रांसीसी राज्यक्रान्ति के एक सूत्रधार रॉब्सपिये (Robespierre) ने एक बुद्धि की देवी की प्रतिमा स्थापित की थी जनता द्वारा पूजने के लिए। किन्तु थोड़े दिनों में उसे पता चल गया कि बुद्धि तो केवल सोचने की मशीन है। और उसे वॉल्टेयर के सामन मानना पड़ा कि यदि भगवान् नहीं है तब भी हमें उसे ईजाद करना पड़ेगा।

×

जिसने कभी आशा नहीं की है वह निराश नहीं होगा।

×

आज रोमांसवाद के विषय में वार्ता करना कठिन हो गया है क्योंकि वह पिछड़ा हुआ है और फ़ैशन के प्रतिकूल हो गया है। यह तीन मूल संघटकों का मिश्रण है— भावना, कल्पना और आदर्श।

भावना एक समय अच्छा शब्द समझा जाता था पर आज पागलपने का। जैसे आज प्रेम का अर्थ हो गया है लैंगिक समागम। यही कल्पना और आदर्श के साथ हाल है। यह भौतिकवाद का नतीजा है।

×

सुविधा से, कल्पनाशील लेखन का जमाना बीत गया। कुछ कहते हैं जनता यथार्थवाद चाहती है। और जनता यथार्थवाद से भी कुछ अधिक पाती है। वह होता है सैक्स, सैडिज़्म, धक्का और पतन; अश्लील, अपवित्र और ह्रास। हमारा स्वाद ऐसा बदल जाता है कि साधारण मानव-व्यवहार की अर्थच्छाया हमें नहीं भाती।

×

रोमांसवादी यह नहीं कहते कि आदमी पेट न भरे लेकिन पेट भरने के बाद वह अन्य दिशा में भी कार्य करता है। मानव काया केवल पेट नहीं है।

×

क्या कला, क्या जीवन— सब विरोध से उत्पन्न होता है।

×

"मेरा महान् धर्म, रक्त और देह में विश्वास है जो प्रज्ञा से अधिक बुद्धिमान् है। हम अपने मस्तिष्क में ग़लत जा सकते हैं, परन्तु जो हमारा रक्त अनुभव करेगा, विश्वास करेगा और कहेगा, वह हमेशा सत्य है।

प्रज्ञा केवल अनी है, लगाम है। मैं ज्ञान की क्या परवाह करता हूँ? जो मैं चाहता हूँ वह अपने रक्त की पुकार का उत्तर देना है बिना मस्तिष्क या क्या-नहीं के

छिछोरे हस्तक्षेप के। मैं एक मनुष्य की काया को लौ के समान समझता हूँ मोमबत्ती के समान हमेशा सीधी खड़ी और बहती हुई ......।"

—डी० एच० लारेन्स

×

मार्सल प्राउस्ट (Marcel Proust) दो प्रकार की दुनिया बताता है— एक वह जिसके बारे में सुनकर हम कल्पना करते हैं और दूसरी वह जिसके हम सम्पर्क में आते हैं और जो निर्दयी रंगहीन होती है।

इस प्रकार प्रेम भी एक भावना है। हम स्वप्न-सुन्दरियों से प्रेम करते हैं। समाज प्रेम के समान अज्ञात, गुप्त और लुभावनी दुनिया है। हम एक ऊँचे समाज को पाना चाहते हैं और उसे पाने के बाद उसे निर्दयी और रंगहीन देखते हैं जो हमारे सामने से खंड-खंड हो जाती है।

×

समय विनाशक है और स्मृति रक्षक। स्मृति सबसे महान् सपने बनाती है।

×

सी०ई०एम० जोड कान्ट के बारे में लिखता है, "जैसे कोई आदमी जो अपनी नाक पर नीली चश्मों की ऐनक चढ़ाए पैदा होता है, ज़ोर देता है कि हर चीज़ नीली है और जैसी वह नीलापन, प्रत्यक्ष है, उन चीज़ों में नहीं है जिन्हें वह देखता है बल्कि जिस दशा के अन्तर्गत वह उन्हें देखता है उसके कारण उन पर आरोपित है, उसी प्रकार कांट का मत है कि हर चीज़ जिसे हम जानते हैं हमारे मस्तिष्क द्वारा आरोपित गुण रखती है। ये गुण मानव मस्तिष्क उन्हें जानने के क्रम में उन पर आरोपित करता है...... उसके फलस्वरूप, हम कोई वस्तु वैसी उस रूप में नहीं जानते जैसी वह होती है; हम उसे वैसी जानते हैं जैसी वह दिखलाई देती है।"

×

डेनिस गेबोर आज को अवकाश का गुण या उकताहट का युग बतलाता है जिसके लिये मानव मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार नहीं है और इसीलिए उसके भले के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

प्रौद्योगिकी ने मनुष्य के लिये जीवन सरल बना दिया है— हद से ज्यादा सरल जो शुभ के लिये ठीक नहीं। स्वचलन उसे श्रम के महाकाव्य को जिस पर हमारी सभ्यता बनी है समाप्त करने का डर बन गया है क्योंकि मुट्ठी भर वैज्ञानिक और तकनीकज्ञ काफ़ी होंगे भविष्य में संसार को चलाने के लिए। बाकी 'सामाजिक बेकार' व्यक्तियों के लिए श्रम एक व्यावसायिक चिकित्सा के लिए काम देगा। पार्किन्सन का आवश्यक काम और निरर्थक काम का नियम इसका नया नाम है।

×

"कई हरे भरे द्वीप अवश्य ही होंगे
व्यथा के गहरे और फैले सागर में
नहीं तो थका-हारा सागरिक
कभी ऐसे यात्रा करता न रह सकता।"

—अज्ञेय, नदी के द्वीप

×

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
रे गन्धी, मति अन्ध तू, अतर दिखावत काहि॥ —*बिहारी*

×

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्,
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुतः॥ —*चार्वाक*

×

प्रसिद्ध अमेरिकन नाटककार एडवर्ड एल्बी "श्रोताओं की मस्तिष्कहीन तानाशाही के बारे में बताता है। वह तुलना करता है कि रूस की 'ऊपर की तानाशाही' से अमेरिका की 'नीचे की तानाशाही' से।"

×

वाल्ट व्हिटमैन कहता है, "महान् कवि पैदा होने के लिए विशाल श्रोतागण चाहिये।" इसी प्रकार एक अंग्रेज़ जज ने कहा है, "हर युग वह साहित्य पाता है जिसके वह योग्य होता है।"

×

जासूसी-लेखक मिकी स्पिलेन का विचार है, "जनता केवल मात्र समालोचक होती है। केवल वही साहित्य है जिसे जनता पढ़ती है। मेरी नवीनतम पुस्तक (द गर्ल-हंटर्स) का पहला संस्करण बीस लाख प्रतियों का छपा है— इसी राय में मैं रुचि रखता हूँ।"

×

"साहित्य बाहर झाँकता है— वह एक दुनिया को अंकित करता है। साहित्य अन्दर झाँकता है— वह एक मानव को अंकित करता है।" —*वारेन*

×

"एक समय ऐसा था जब कुछ व्यक्तियों को देखकर तुम संसार को जान सकते थे और ब्यौरा भर सकते थे। बाल्ज़क और ज़ोला यह कर सकते थे। लेकिन आज भीड़-मानव उभर कर आया है और असली मानव छिप गया है। जीवन बड़ा पेचीदा हो गया है। एक पहाड़ के पीछे अनेक पहाड़ हैं और उच्चतम पहाड़ के सामने खाई है।" —*नॉर्मन मेलर*

×

यह एकाकीपन और मृत्यु की भावना है, अपने दिनों की अल्पता का ज्ञान और अपने दुःख का विशाल आसन्न भार, जो हमेशा बढ़ता है कभी कम नहीं होता, जो मनुष्य के लिये हर्ष को शानदार, त्रासिक और अकथ मूल्यवान् बना देता है। —*टॉमस वुल्फ़*

×

"प्राउस्ट अपने को स्मृत अन्तःकरण के काँपते जाले के केन्द्र की एक नग्न नस बना देता है।अपने पास-पड़ोस का कोई ध्वनि या गन्ध का कायिक ब्योरा उससे नहीं छूट सकता; ......" —*ज़ैक्विटा हॉक्स (प्रीस्टले की पत्नी)*

×

"तथ्य यह है, स्वतन्त्रता के लिये निरर्थक रोना नहीं बल्कि जो हम पर बन्धनों का बोझ है उसे किस तरह हँसी-खुशी उठाएँ यह ढूँढना। यहाँ तक कि आकाश में तारे भी स्वतन्त्र नहीं हैं।" *—पर्ल बक (फादर एन्ड्रिआ)*

×

आनन्द और हर्ष में अन्तर है। "हर्ष तो केवल हर्ष के लिए खोजना वास्तविकता को नकारना है— दूसरे प्राणियों की वास्तविकता और अपनी वास्तविकता। लेकिन केवल हम जो वास्तव में हैं उसे पा लेना आनन्द पहुँचाने वाला है।...... आनन्द हर्ष से अधिक है; और वह सुख से अधिक है। (उसमें दुख सम्मिलित है।)" *—पॉल टिलिख*

×

दिन नहीं, रात नहीं, सुब्ह नहीं, शाम नहीं,
वक्त मिलने का मगर दाख़िले अय्याम नहीं। *—मीर*

×

दिन नहीं, रात नहीं, सुबह नहीं, शाम नहीं,
रह गई एक 'नहीं', 'हाँ' का कोई नाम नहीं। *—अमीर*

×

आप करते हैं बार बार 'नहीं'
हमको 'हाँ' का भी एतबार नहीं। *—रविश सिद्दीकी*

×

इस 'नहीं' का कोई इलाज नहीं,
रोज़ कहते हैं आप 'आज नहीं'। *—दाग़*

×

दिल-जलों से दिल्लगी अच्छी नहीं
रोने वालों से हँसी अच्छी नहीं। *—रियाज़*

×

जीवन का सौन्दर्य, फ्रे लुइ द लियों कहता है, कुछ नहीं बस यह है प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति और अपने व्यवसाय के अनुरूप कार्य करे।

×

इस दुस्साहस के रास्ते पर एक भी क़दम आगे बढ़ूँ, उससे पले यह बता देना ज़रूरी समझता हूँ कि गणित शास्त्र मेरा सर्वत्र है। जो भी मैं सोचता हूँ और करता हूँ उस सबके मूल में गणित का अंकुश रहता है। जब मैंने लिखने का संकल्प किया, तो गणित का यह नियंत्रण भी मेरे साथ था। मैं प्रत्येक बात को थोड़े से गिने-चुने शब्दों में कहना चाहता था। अस्पष्टता और दुविधा मुझे पसन्द नहीं थी — मेरा आग्रह था कि सरल और सूत्र रूप से बात कह दी जाये, चाहे उसमें साहित्यिक रसार्द्रता न आ पाये।

इक्कीस बरस की उम्र हुई, तो अपने बहनोई लोगन स्मिथ से मैंने लिखना सीखना शुरू किया। उन्होंने मुझे बताया कि एक बार लिखे को बार बार दोहराना चाहिये। मगर यह तो मेरे लिये सरदर्द हो गया— हालत यह हो गई कि मैं महीनों तक लिख लिख कर काग़ज़ ही फाड़ता रहा, कुछ लिख न सका। बाद में मुझे इसका कारण मालूम हुआ कि, मैं पढ़ता कुछ नहीं था, ज्ञान के मेरुदंड के बिना ही लिखने बैठ जाता था। मगर इस अनुभूति ने भी मुझे कम परेशान नहीं किया— अब मेरे लिए पढ़ना ही सब कुछ हो गया; लिखने का तक़ाज़ा ही नहीं होता था। पढ़ने में मेरा चित इतना लीन रहने लगा कि, प्रायः मैं शरीर की सुध ही भूल जाता था। अगर एक पुस्तक लिखने की मजबूरी न आती, तो मैं स्वाध्याय की स्वर्ग-वीथियों में ऐसे ही विचरता रहता। जब मैंने यह किताब अपने स्टेनो को लिखवाई और मेरे मित्रों ने उसे पढ़ा, तो मेरे गद्य पर सबको आश्चर्य हुआ— प्रकाशकों में होड़ लग गयी।

शैली लेखक की आत्मा; और यह आत्मा तभी अक्षरों में अंकित होने को आतुर होती है, जबकि व्यक्ति का अर्जित ज्ञान उसे अव्यक्त बैठने नहीं देता— अपनी पहली पुस्तक से मैंने यही सबक सीखा और आज भी यह सबक मेरे सामने वैसा सी तरोताज़ा है— केवल मेरे लिये ही क्यों; मेरे जैसे ऐसे कई लोगों के लिये जो अच्छा गद्य लिखना चाहते हों। पद्य की शक्ति और प्रभावोत्पादकता से मैं परिचित हूँ; मगर गद्य के संयम संयत प्रवाह में अर्थ की जो यथार्थता होती है, आज के युग की तो यही रसात्मकता है।

—बर्ट्रेन्ड रसल

×

इटैलियन उपन्यासकार गबराइल द' एन्नुनजिओ ने ५६० पृष्ठ की पुस्तक 'जीवन की चिनगारी' एक कमरे में बन्द होकर पाँच रात-दिन तक बिना आराम किये और बिना कुछ खाये पिये लगातार लिखकर पूरी की।

×

बलवन्त गार्गी (अमृता प्रीतम को लिखा)— "तुम लोगों की भूख और ग़रीबी को देखकर परेशान हो, मैं इंसान के अकेलेपन से परेशान हूँ। इंसान कितना अकेला है। यह अकेलापन अटूट है। क़ाश कोई इसे तोड़ सकता। मन चाहता है इस अकेलेपन का परमाणु एटम बम की तरह फट जाय, बिखर जाय और इसके सैकड़ों कण दूसरे कणों में मिल जायें।"

×

शुनो रे मानुष भाई।
सबार उपरे मानुष सत्य, ता हार उपरे नाई॥ *—चण्डीदास*

×

हर आत्मा अपना घर बनाती है, परन्तु बाद में वह घर उसे क़ैद कर लेता है।

—इमर्सन

×

"पलायनवादी ? सामयिक साहित्य के गुलाम ख्याल की छूत, देखता हूँ आपके मन पर भी छा गई है। ज़िन्दगी के कुत्सिक कलंक को जो एकमात्र यथार्थ मानने से

नाक-भौं सिकोड़ता है, वही आप लोगों के लिये 'पलायनवादी' है। जिंदगी के नंगे, कुत्सित यथार्थ के बीच भी जिसमें स्वप्न-सौन्दर्य देखने का साहस है, वह केवल क्या निरा ढपोरशंख है।" *—प्रेमेन्द्र मित्र, मयूराक्षी*

×

क्या वर्तमान केवल कुरूप ही है? और यदि है ही, तो भी सुनहरे भविष्य के सपने देखना क्या पाप है? क्या पलायनवाद है? जीवन की धारा से दूर चले जाना है?

×

ऑप कला— कला को इश्तहार ठहराने वाली 'पॉप' कला के बाद दर्शक को अपनी ही नज़र में अपराधी— दृष्टि-दोषी— ठहराने वाली 'ऑप' कला।

बच्चों के खेल की तरह कैनवस पर आड़ी, तिरछी रंगीन धारियों पर, जिन्हें गौर से देख सकना असम्भव है, दृष्टि ठहर नहीं पाती, झिलमिलाती है। अमेरिका का नया नारा। अब तक कला थी जो दर्शक को आकर्षित करे, उसका मन रमाये और अब कला वह जो दर्शक को विमुख करे, दृष्टि हटाने के लिये विवश करे।

उसके प्रवर्तकों के शब्दों में ऑप कला का उद्देश्य 'सुखकर प्रभाव उत्पन्न करना नहीं बल्कि अपनी भ्रान्तियों के ज़रिये झुंझलाना और चकराना है'।

ऑप कला वही समझिये जो टॉपलैस— दोनों चकाचौंध करते हैं।

×

मंच पर दो पिंजरे हैं, एक में मार्क्सवादी, दूसरे में मसीही आस्था का आदमी। दोनों अपने-अपने पिंजरे में भूखे मर रहे हैं। विदूषक की भाँति काम करते हैं। उन्हें शोरबा और स्वतन्त्रता का अवसर देने का वचन दैत्य सेवकों द्वारा जो साधुओं के वेश में हैं दिया जाता है बशर्ते वे अपना-अपना मत त्यागने की कसम खायें।

"तुम हमारे कैदी नहीं हो, तुम अपने ही विचारों में क़ैद हो।"

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा क़ैदखाना तुम्हारी अपनी ही पसन्द है।"

"तुम स्वाधीनता चाहते हो ताकि तुम कहीं और स्वयं को क़ैदी बना सको।"

—इयोनेस्को

×

"कला वह कर्म है जिसके अनुसार एक व्यक्ति जो अनूभूति का अनुभव करता है उसे जानबूझकर दूसरों तक पहुँचाता है।" *—लियो टॉल्स्टाय*

×

"...... कला अपनी सामग्री चुका नहीं सकती क्योंकि कला का सार सामग्री नहीं है, बोध है। कलाकार पदार्थ को उत्पन्न नहीं करता, यह प्रतीकों का उपयोग अनुभव दिखाने को करता है।" *—जॉयसकेरी*

×

"ठोस शैली का अर्थ है ठीक चीज़ को ठीक प्रकार ठीक समय पर करना। वह विषय सामग्री चुनो जो तुम्हें सबसे अधिक अपील करती है, फिर वह शैली और तकनीक चुनो जो उस विषय-सामग्री को जनता तक आकर्षक रूप में पहुँचा दे।"

—वाल्टर एस० कैम्पबेल

×

"अच्छा लेखन वह लेखन है जिस पर पूर्ण अधिकार हो— लेखक वही कहे जो वह कहना चाहता है। वह पूरी स्पष्टता और सरलता से उसे कहे।"*—इज़रा पाउण्ड*

आत्म-कथा

चार बहनों पर एक भाई, जिसकी माँ जन्म के उपरान्त मर गई। बिल्कुल गोरा रंग, बड़ी बड़ी काली आँखें और काले बाल, बिल्कुल स्पेनिश समझो। बचपन सहारनपुर में नाना नानी के दुलार में कटा। ऊँची शिक्षा मेरठ में प्राप्त की सब में सर्वप्रथम रहकर। सो लाड़ प्यार उस इकलौते का बढ़ता गया। मध्यम श्रेणी का परिवार था; उसे आई. सी. एस. के लिये इंगलैंड भेज दिया गया। पहले साल वह आई. सी. एस. में रह गया किन्तु बार-एट-ला प्रथम प्रयास में हो गया। इंगलैंड में जाकर विशेष अनुभव हुआ कि भारतीय और अंग्रेज़ में गोरी चमड़ी वालों की दृष्टि में क्या अन्तर है। साथियों ने बढ़ावा दिया। इण्डिया हाउस में भाषण दिये। पुलिस पीछे पड़ी तो जर्मनी भाग गया। इसी कारण बैरिस्ट्री के डिनर भी पूरे न हो सके। जर्मनी में लिप्ज़िग में तथा लौटकर इंगलैंड में लंदन में मुद्रण तथा सम्बन्धित कलाओं में शिक्षा ली। विदेश में तीन वर्ष रहकर केवल सपने बटोरे तथा जब लौटा तब सम्बन्धियों से सुना कि "अरब में घोड़े मिलते हैं। लेकिन हिन्दुस्तान से गधे भेज दो तो वह घोड़े नहीं बन जायँगे।" इतने में बाप की ज़मीन, बाग सब बिक गये थे। लौटने पर क़ानून पढ़ना शूरू किया, स्कूल में मास्टरी की तथा एक प्रेस खोल लिया।

इंगलैंड जाने से पहले एक लड़की हो चुकी थी। ३ जनवरी, १९२८ को जिस दिन अरुण का जन्म हुआ उस दिन मास्टरी मिली थी, इसलिये लड़का भाग्यवान् पैदा हुआ, का शोर मच गया। लड़के को इतना पता है कि घर खानदानी था किन्तु गरीब हो चुका था। और दोनों चीज़ें साथ रखने में दिक्कतें बढ़ जाती हैं।

एक साल बाद छोटा भाई हुआ जो जल्दी मर गया।

कुछ जन्मजात क्रान्तिकारी पैतृकता मिली थी। बाकी पिता को जो दुनिया से शिकायत थी उसका सुनने वाला बनने के कारण भावुकता और बढ़ गई। और भी कई कारण थे।

पिता का दिमाग इकलौतेपन से चढ़ा हुआ था। सो अम्मा से बहुधा गम्भीर लड़ाई हो जाती थी। और अम्मा को मनोविज्ञान का अ ब स भी नहीं आता था, इसलिए अरुण पर मार खूब पड़ती थी तथा डाट अगणित। फिर वह मन में विद्रोह भरे बैठा सोचता रहता था।

दूसरे, खेल खिलौने लकड़ी की पीपनी, तीर कमान, आदि मिलते थे। सो उनको लेकर कल्पना में विचरता था। कभीं रावण को मारने जा रहा है, कभी शिवाजी बना है। खड़ी खाट किले होते थे, पट्ठे की तलवारें।

तीसरे, घर पर पुस्तकों का ढेर था। हर समय उनमें डूबा रहता था। यह शौक बढ़ता चला गया, अब वह शर्त लगाता है कि उसकी अवस्था के किसी व्यक्ति ने इतना साहित्य नहीं पढ़ा होगा जितना उसने।

साथ ही उसने धार्मिक साहित्य भी बहुत पढ़ा। आठ साल की अवस्था में महाभारत, रामायण आदि। बुआओं ने राजकुमारियों और परियों की कहानी सुनाईं। अलिफ लैला, बृहत्कथा के भाग भी हिज्जे लगे। फिर राबर्ट ब्लेक, सेक्सटन ब्लेक और शरलक होम्स के खेल खेले जाने लगे। कल्पना का खिंचाव और वास्तविक जगत कम।

धीरे-धीरे प्रवृत्ति अन्तर्मुखी होती चली गई। तीन चार मित्र बने, उनके अतिरिक्त नये से बात करने में हिचक, झिझक। माता-पिता का प्यार बहुत मिला पर वह था थानाशाही। गली के बच्चों से नहीं खेलना, बिगड़ जायेगा। वैसे भी ढील दी तो बिगड़ जायेगा। सो सब चिन्ता उन पर छोड़कर अरुण दूधपीता बच्चा-सम रहा। दुनिया में चलना बहुत देर में आया।

अम्मा की डाट का वह आदी हो चुका था, लेकिन पिता की डाट उसका रोम रोम कंपा जाती थी। एक बार गणित में ५० में १ नम्बर लाने पर, दूसरी बार पैंठ से २ पैसे की चार फिल्मी गानों की पुस्तकें खरीदने पर। हर बार खानदान का नाम डुबोने का उत्तरदायित्व उसका होता था।

छोटी अवस्था में वह पढ़ने बैठ गया था। आरम्भ से ही पढ़ रहा था और केवल ६ वर्ष का चौथी में था। प्रतिभा पूरी प्रस्फुटित नहीं हो सकी क्योंकि ज़ोर ज़्यादा पड़ रहा था। (समझ आने पर वह समझ गया था कि वह प्रतिभाशाली है। और यह होना भी ख़तरनाक है। तेजस्वी दुनिया से अधिक मांगता है और दुनिया को अधिक देना चाहता है। दोनों में यह निष्फल रहता है।)

जब वह आठ वर्ष का छठी में था, तब से उसे 'लेखक का रोग' भी आरम्भ हो गया। पाँच छः मास से लेकर साल भर बाद तक कभी ही ऐपिलैप्सी का दौरा पड़ जाता था। रात को सोने के बीस तीस मिनट बाद। उसे कुछ पता नहीं चलता। केवल बाद में जब होश आता तो निर्वाण जैसी अकथनीय शान्ति मिलती। परन्तु कुछ देर बाद सारा शरीर चीसने लगता— हाथ पैर पटकता था न। जीभ आधी कटी होती— रक्त भीगी। पाँच छः दिन तक बोल नहीं पाता। पहले वह झेंपता था, किन्तु बाद में योगी की निर्व्याजता से इस रोग को लिया। बड़े होकर जब पढ़ा कि मोपासाँ, डास्टायवस्की, सिकन्दर, जूलियस सीज़र, मुहम्मद आदि सबको यह रोग था तो अपने को बढ़िया मण्डली में पाकर प्रसन्नता हुई।

१९३९ में एक दुर्घटना हो गई। लोगों. की बातें सुन-सह कर पिता ने अमानवीय परिश्रम करके प्रेस में सफलता प्राप्त की थी और निष्काम प्रेस को इने गिने प्रेसों में गिना जाने वाला बना दिया था। बाहर प्रेस की कोठी बन रही थी और वह प्रतिदिन सन्ध्या में वहाँ खेलने जाता था। बारिश के दिन थे। महिला पार्क के सामने पानी भर रहा था, काफी चौड़ा नाला बन गया था। उस पर लम्बी छलांग मारी। पार की घास के नीचे काई छिपी थी। बाईं टाँग फिसलकर आगे गई और दायीं टाँग

बदन के नीचे आ गई। सीधी करनी चाही सीधी न हो। और दर्द के मारे रुआस छूट पड़ी। बच्चा रोता रहा ग्यारह साल का। आदमी गुज़रते रहे। स्त्रियाँ जाती रहीं। हरेक को आशा से देखता, फिर मूक सिसकियाँ भरता। पहली बार दुनिया से साबका पड़ा।

आखिर एक सज्जन सामने के चौराहे पर जाते हुए रुककर सौ कदम इधर आए। घोड़ा ताँगा रोका, दो व्यक्तियों के सहारे संभालकर उठाया और पिता के पास ले गए। डाक्टर को दिखाया। टाँग की हड्डी टूट गई थी। प्लास्टर में जकड़ दिया गया।

डेढ़ मास पड़े रहने वाले लड़के का हर समय साथ होना असम्भव है ! पिता ने तीन चार कापियाँ मोटी और सुन्दर बनवा दीं। बोले, "अब तक इतना पढ़ा है, लिखना आज से शुरू कर दे।" अलीबाबा का 'खुल जा सीसम' था। पहली पढ़ी परियों की कहानियाँ नया रूप लेकर काग़ज़ पर थिरकने लगीं। जी भी लग गया। तीन कापी भर गईं। इस प्रकार लिखने का रोग भी लग गया ग्यारह वर्ष की अवस्था में। अवस्था बढ़ती गई। लिखना ऐपिलैप्सी की तरह कभी कभी था, परन्तु पढ़ना तो दूध मलाई हो रहा था। पढ़ने की दर एक घण्टे में दो सौ पृष्ठ तक पहुँच चुकी थी। कोई छांट नहीं, अल्लम गल्लम सब। भावुकता मौजूद थी, इसलिए शरत, प्रेमचन्द, मुन्शी का 'बैर का बदला', आदि खूब रुलाते थे।

१९४२ के आन्दोलन में कॉलिज छोड़ दिया। उसी वर्ष बहन का विवाह हुआ और उनके साथ तीन मास कश्मीर रह आया। इस घटना का प्रभाव था. पहली बार वट वृक्ष की छाया से दूर रहा था।

अगले वर्ष चिकन पॉक्स निकलने से परीक्षा अधूरी छोड़नी पड़ी। दो वर्ष की हानि हो गई, किन्तु अवस्था-कक्षा-सन्तुलन हो गया तथा पढ़ाई में पुरस्कार लेने आरम्भ किए। एम. ए. में युनिवर्सिटी में भी स्थान पाया। साथ ही क्रिकेट चालू कर दी। राजनीति में भाग लेना आरम्भ किया। दो वर्ष मेरठ विद्यार्थी कांग्रेस का प्रधान मन्त्री रहा। राजनीति में रुचि ली तो ढेरों तत्सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ डालीं। युवावस्था प्रश्नों का जीवन बन गई। पढ़ने और व्यावहारिक अनुभव दोनों ने एक सीख अवश्य दी कि नेता नामक बीमारी सबसे खतरनाक है। वादों पर आस्था न जम़ पाई, केवल यही निष्कर्ष निकला।

लिखने का. रोग शराब के चस्के की तरह लग चुका था। अगले दिन परीक्षा होनी होती., वह मेज़ पर किताब फैला दराज़ खोलकर कापी में कहानी लिखता रहता। कहानी की प्रेरणा अनेक प्रकार से मिलती। घर मुख्य सड़क पर बना हुआ था, जिस पर दो सिनेमा भी स्थित थे। रात होती, सिनेमा छूटते और भीड़ शोर करती घर को लौटती। एक रात नींद नहीं आई, रात का बारह बजे का शो छूटा और कुछ चवन्नी वाले गाली बकते आपस में मखोल करते सड़क से गुज़रे और 'नरक का कीड़ा' का

कथानक बन गया जो अगले दिन लिखी गई। सहपाठिनी से प्रेम हो गया, कुछ कहानियाँ लिखी गईं।

सन्तोष नारायन नौटियाल मित्र था। दोनों नई कहानियाँ लिखते और परस्पर सुनाते। फिर दोनों के कहानी-संग्रह निष्काम प्रकाशन से निकले। 'नरक का कीड़ा' जगह जगह आलोचना के लिए भेजा गया और सब जगह उसका स्वागत किया गया। इसने आग में घी का काम किया। लिखने को और प्रोत्साहन मिला जब कि पुस्तक की कुछ भी प्रति नहीं बेच पाये थे।

इधर घर में तनातनी बढ़ रही थी। परिश्रम से पिता के हाड़ गल चुके थे। वे चाहते थे कि अरुण पढ़ाई छोड़कर उनके साथ काम देखे। वह एम. ए. पास करना चाहता था। काफी प्रूफ पढ़वाता था किन्तु वे अधिक से अधिक समय चाहते थे। १९४७ में आखिरी भाई पैदा हुआ। सो छोटे भाइयों को भी थोड़ी बहुत देखभाल चाही जाती थी। तीनों भाई डेढ़ साल की छोट-बड़ाई पर थे। दिल फटे। उसे बहुत कुछ सुनना पड़ा। यहाँ तक कि 'कीड़े पड़कर मरेगा'। किन्तु जीवन गधे का जीवन बनकर चलता रहा। लेखक बनने की ट्रेनिंग होती रही।

क्रिकेट ने, विद्यार्थी कांग्रेस के काम ने (१५ अगस्त, १९४७ को रात के बारह बजे से सवेरे पांच बजे तक मशालों का जलूस उसके नेतृत्व में निकला था) और १९४७ के रक्तपात के बाद प्रान्तीय रक्षा दल की सैनिक शिक्षा ने शरीर बना दिया था। तभी इतना मानसिक दुख-द्रन्द्व होने पर भी एक चमत्कार हो गया। १९४५ से कोई दौरा नहीं पड़ा। छः साल देखने के बाद उसने १९५० के अन्त में विवाह कर लिया।

अगला मोड़ आत्माराम एण्ड सन्स जो विभाजन से पहले पंजाब के सबसे बड़े पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशकों में से एक थे, के दिल्ली उठ आने पर आया। यहाँ उन्होंने हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकें निकालने की योजना बनाई और निष्काम प्रकाशन की सब पुस्तकें खरीद डालीं। उनसे, भारत में हिन्दी के सर्वोत्तम प्रकाशकों में से एक से, कुछ ऐसा सम्बन्ध जुड़ा कि अरुण की अधिकतर पुस्तकें उनके प्रकाशन से निकलीं। बल्कि कुछ तो उन्होंने विशेषतया लिखवाईं जैसे सचित्र गृह विनोद, सचित्र व्यंग विनोद।

पिता के लन्दन के साथी और अनुगामी स्वतन्त्रता के बाद ऊँचे चढ़ चुके थे। उस समय वे जोशीली बातें करते थे, पिता को नेता बनाते थे पर अपना चरित भी बनाने में लगे थे। कोई युनियन पब्लिक सर्विस कमीशन का चेयरमैन था, कोई राजदूत; कोई सेक्रेटरी हो गया था, तो कोई कमिश्नर। तभी देश को बड़े अफसरों की ज़रूरत पड़ी और पचास वर्ष तक के व्यक्तियों से प्रार्थनापत्र मांगे गए। पिता ने भी भेजा। लेकिन वापिस लौट आया।

१९४९ में अरुण ने प्राचीन भारतीय इतिहास में एम. ए. कर लिया। तथा राजनीति शास्त्र में दूसरा एम. ए. तथा लॉ जायन किया। फिर अधूरा छोड़कर प्रेस में लग गया। गृह युद्ध भयानक हो चुका था।

लिखने को बहुत जी चाहता था। बड़ी बड़ी योजनाएँ बनती थीं। १९४७ में उपन्यास लिखना आरम्भ किया। सोचा था 'आदम का बेटा' नाम से कई भाग लिखेगा। हिन्दू-मुस्लिम दंगे, बंगाल का अकाल, १९४२ की क्रान्ति, आदि सब उसमें आ जायँगे। अलग भागों के नाम तैयार थे, नोट तैयार थे। अप्टन सिन्कलेयर के उपन्यास पढ़े थे, उनका प्रभाव था। एलेक्सी टाल्सटाय तथा इलिया एहरनबुर्ग का प्रभाव था। पर उपन्यास लिखने में साधना की, समय की आवश्यकता थी जिसकी कमी के कारण ४०, ५० पृष्ठ लिखकर 'आदम का बेटा' पड़ा रहा। हर साल तीन चार पृष्ठ उसमें जुड़ते रहे। लेकिन लगकर उसे १९६२ में समाप्त किया। पहला लिखा बेकार लगने लगा था, कुछ 'विद्रोही नवयुवक' जैसा। पर फिर वैसा ही छोड़ दिया। उपन्यास समाज के साथ साथ लेखक का भी प्रतिबिम्ब होता है। 'बुलबुला, तूफ़ान, विस्फोट' जो १९६३ में आत्माराम एण्ड सन्स से छपा है, का 'बुलबुला' भाग एक अठारह वर्षीय लेखक के मन की आग भी दिखाता है। वह कई भाग की योजना ढह गई क्योंकि १९६२ में अरुण पन्द्रह साल बड़ा हो गया था और नई योजनाओं व कथानकों के संकेतों से पांच डायरियाँ भर चुकी थीं।

लिखने का समय कम मिलता था। और आदत एक कहानी को एक बार बैठकर समाप्त करने की पड़ गई थी। इसलिये छोटे छोटे और कहानी से काम रखने वाले वाक्य लिखने का ढंग आ गया। एक भी शब्द अधिक नहीं। यही शैली बन गई। अपनी अलग थलग। जिसे प्रशंसक प्यार करते हैं। किन्तु यह शैली कहानी की ठीक थी। अधिक बल देती थी। उपन्यास अधिक फैलाव चाहता है, इधर उधर की बातें भी। उसे लिखने में यह कमज़ोरी है। तभी पांच पांच सौ पृष्ठों के भागों की तीन योजना ३०० पृष्ठों में समाप्त हो गई।

इतिहास का अध्ययन किया था। कल्पना में ऐसा लगता था जैसे वह भी उन महान् घटनाओं में भाग ले रहा हो। तभी के. एम. मुन्शी के उपन्यास और राखाल दास बनर्जी के 'करुणा', 'शशांक' पढ़े। इतिहास पर उपन्यास लिखने की मन में समाई। नतीजा 'भोर की किरणें' थीं जो ३५,००० वर्ष पूर्व का भारत दिखाता था। दूसरी कड़ी 'सिन्धु का तट' था जो प्राचीन सब सभ्यताओं को दर्शायेगा। वह अधूरा पड़ा है। इतिहासज्ञ का उपन्यासकार होना? नई पुस्तकें, नवीनतम खोजें पढ़ता रहता है और कथानक बदलता रहता है।

जो जीवन का सम्बल बना, वह था हँसना आना। कालिज में तीन चार मित्र बन गये थे— दिनेशचन्द्र जोशी, छत्रपाल सिंह, लाजपतराय, देवेन्द्र कुमार जैन। सब एक नम्बर के अलमस्त और हँसोड़। शेर है कि दुख का हद से बढ़ जाना उसकी

दवा हो जाता है। यहाँ हँसने से सब रोगों का छुटकारा हो गया था। दिन भर बुद्धि पैनाते रहते थे। हास्य, व्यंग, तुरत-उत्तर, प्रत्युत्तर सब पर हाथ साफ किया जाता था। इसका भी नतीजा निकलना था। हास्य के कथानक मिले। कुछ दोस्त काग़ज़ पर उतर आये। बाकी चलते फिरते सैंकड़ों घटनायें, सैंकड़ों पात्र ऐसे मिलते रहते हैं जो हमें हँसा सकते हैं। 'हास-परिहास', 'फक्कड़ की फाइल', 'बटन टूट जाते हैं' तैयार होते चले गये। और अभी ढाई सौ के लगभग कथानक अन्य पड़े समय की माँग कर रहे हैं।

इन्हीं के साथ चुटकुले एकत्र करने आरम्भ किये। एक बड़ा संग्रह ४५० पृष्ठ का निकल चुका है। दस १००, १०० पृष्ठ के प्रेस में हैं। साथ ही 'गप्पों का ख़जाना' भी लुटाया गया।

हास्य की कहानियों के २५० कथानक हैं तो गम्भीर भी, इनमें दस पन्द्रह कम ही होंगे जो कापियों में मुँह छिपाये पड़े हैं। अफसोस इस बात का है कि साल में दस पन्द्रह लिखे जाते हैं तो बीस तीस और मिल जाते हैं और यह हनूमान की पूँछ समाप्त होने में नहीं आती।

विवाह हुआ। पत्नी अच्छी मिली। बाकी अच्छी बना ली गई (कुछ अपने ऊपर मुगालता है शायद मुझे)। उसने हर तरह की सहायता दी। यहाँ तक कि लिखा हुआ भी टाइप करती थी। बस एक ही कमी थी। घर में जब कभी खटपट होती तो वह दूसरी ओर रहकर मुझे सीख दिया करती थी। शायद इस डर से कि कोई यह न कहे बहू ने आकर लड़ाई करवा दी।

१९५२ से पुराना एपिलैप्सी फिर रंग लाया। वही रात को सोने के बाद— साल छः मास में। सवेरे कुछ नहीं। अच्छा स्वास्थ्य, हँसी मज़ाक़, खाता कमाता परिवार— कई की ईर्ष्या का कारण।

विवाह के ग्यारह वर्ष आराम से कट गये। घर में खटपट होती थी पर कुछ नहीं कहता था। पिता उससे सलाह माँगते, वह उनकी राय के विरुद्ध अपनी राय बताता तो गाली खाता। धीरे-धीरे उसने सलाह देनी भी बन्द कर दी, चुप रह जाता। यह कहे जाने पर भी कि 'मेरी बात पर लाट साहब की तरह चुप रहता है जवाब नहीं देता'। अजनबी की तरह रहता पर प्रशंसा की बात यह थी कि किसी का मुँह-दर-मुँह जवाब नहीं दिया।

लेकिन पत्नी का रक्त गरम था। अम्मा के बीमार पड़ने पर उसने गधे की तरह सास की सवेरे से रात तक सात मास सेवा की। और इसके उपलक्ष्य में उनके झूठा आक्षेप लगाने पर वह बिगड़ खड़ी हुई। उसका मन पूरे परिवार से विमुख हो उठा। वह भी उसे कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि ग़लती पत्नी की नहीं थी। दोनों के मन में आकाश की शून्यता भर गई।

उसने फिर से साहित्यिक वादों को पढ़ना शुरू किया— अस्तित्ववाद, दादावाद, अतियथार्थवाद, आदि, आदि। कई उपन्यासों के कथानक मन में उमड़े। एक काग़ज़ पर उतर आया— 'सीढ़ियों के ऊपर अंधेरा'। एक प्रोफेसर-कवि के चौबीस घण्टे का जीवन।

पहले विचार था कि परानुभूति यदि सब करने लगें तो संसार के सब दुख-द्वन्द्व दूर हो जायँ। इसलिये स्वयं आरम्भ करो। और जब वह आदत बन गई, तब अनुभव हुआ कि दूसरों के दूख-दर्द का विचार करके काम करना अपने को बड़ा कष्ट पहुँचाता है।

एक अन्य सत्य सामने आया। जो तुम असल में हो, वह तुम नहीं हो, जो दुनिया तुम्हें बताती है, तुम वह हो। इस तुम से नहीं भागा जा सकता। इससे टकराकर क्षत-विक्षत हुआ जा सकता है, पर इस प्रतिमूर्ति को चूर-चूर नहीं किया जा सकता।

यह भी विचार पनप रहा है कि जैसे-जैसे सभ्यता बढ़ी, मनुष्य पुरजा बनता चला गया। यदि संसार छोटा होता जा रहा है तो मनुष्य रेत का कण। सबसे अधिक खतरनाक यह हुआ कि मनुष्य को यह अनुभव करा देना कि वह छोटा है, उसका कोई मूल्य नहीं।

बाकी अभी अधूरा है। प्रेय प्राप्त है, श्रेय की इच्छा है।

कभी मन में शंका उठती है— छोड़ो, क्यों दीपक को दोनों ओर से जला रहे हो? किन्तु फिर गुस्ताव फ्लाबर्ट के शब्दों में, "मैं अनाम मोतियों की तलाश में डुबकी लगाने वाले मछुए की तरह हूँ जो गोता लगाकर बार-बार खाली हाथ लौट आता है फिर भी उसके चेहरे पर धैर्य और सन्तोष है। कोई प्राणलेवा आकर्षण मुझे अपने विचारों की इन अतल गहराइयों की ओर खींचता है जिनके गहनतम अन्तिम छोर अन्तर की आतुरता के कारण कभी अपना सम्मोहन नहीं खोते।" मन की गहराइयों में, जीवन की गहराइयों में सीप, शंख, छोटे-छोटे मोती हाथ लग रहे हैं, शायद किसी दिन नायाब मोती भी हाथ लग जाय। छिपा वह ज़रूर है। वहीं।

(१९६२)

सुभाषित कोश

हर बूँद में सागर

उपनिषदों में तेरह महावाक्य हैं— अहम् ब्रह्मास्मि, सोऽहम्, तत्त्वमसि, आदि। इनमें आत्मा और परमात्मा का ऐकात्म्य बताया गया है। "मैं ब्रह्म हूँ।" "वही मैं हूँ।" "तू वही है।" इसी अर्थ का शेर एक शायर ने लिखा है :—

जो अपनी खुदी से जुदा हो गया।
ख़ुदा की क़सम, वह ख़ुदा हो गया॥

पढ़िये और सिर धुनते रह जाइए। एक सी अनुभूति, एक सा अनुभव। जीव माध्यम है जिससे आत्मा बोलती है। तभी ऋषि कहते थे— मैंने नहीं लिखा, भगवान् ने लिखा है।

इसी प्रकार वेद में बड़ी सूक्ष्म बात कही है— जो कहता है मैं सब जानता हूँ वह कुछ नहीं जानता, जो कहता है मैं कुछ नहीं जानता वह किसी दिन जान जायेगा। इसी को शायर ने शब्द दिए हैं :—

हम जानते थे इल्म से कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी॥

ये अनुभूति, ये ईश्वरीय प्रेरणा, ये इल्हाम प्राचीन काल से आज तक शब्दों में बाँधे गए हैं। प्राचीन ऋषियों से लेकर गोरख, कबीर, तुलसी, सूर, रहीम, रसखान आदि अनेक कवियों और शायरों ने जो जीवन का निचोड़ था अपने शब्दों में बाँध दिया, जो अनुभवों का ढेर था उन्हें लड़ी में पिरो दिया।

गाँधी जी कहते थे कि स्कूल, कॉलिज की शिक्षा ग्रहण करने पर पढ़े लिखे मूर्खों की जमात खड़ी हो गई है। इससे पहले हमारे यहाँ गाँव-गाँव में चौपालों में रामकथा कही जाती थी, कबीर वाणी, नानक वाणी, सूर के भजन, रहीम के दोहे गाए जाते थे। वे जन-जन की जुबान पर होते थे और आदमी को जीवन की शिक्षा देते थे, उसे संसार में रहने के लिए तैयार करते थे। वे दिन आज़ादी के बाद से तो हवा होते नज़र आ रहे हैं। शहर पहले बदल गए थे, अब गाँव भी वे नहीं रहे।

मेरी बचपन से आदत थी कि जो वाक्य सत्य और तथ्य की घंटी बजाने लगे उसे फौरन याद कर लिया। और यह अनुभव हुआ कि जीवन के हर क्षण में इन वाक्यों ने मुझे प्रकाश दिया, राह दिखाई, ढाढस बँधाया, आत्मा तक पहुँचाया।

मैं जानता हूँ कि यह साहित्य-निधि का बूँद-मात्र है। परन्तु हर बूँद में समुद्र भरा है। उन लेखकों को अनेक धन्यवाद जिन्होंने ये अमृत-बिन्दु टपकाए और जिन्हें पीकर मैंने आनन्द के क्षण जिए। आनन्द को बाँटने से वह दूना होता है, इस कारण इनको पाठकों के साथ बाँटकर मेरे हर्ष और उल्लास को आप अनुभव कर सकते हैं।

अपने स्वरों में आपसे अनुरोध करता हूँ—

हे आत्मा
हृदय-स्नेह-सिंचित लौ
देह में प्रकाशित कर
परमात्मा के समक्ष आ।

×

अपनी बांसुरी का मल दूर करो
फिर कृष्ण की अनुपम रागिनी से
तुम तृप्त होगे, समाज तृप्त होगा
और जग तृप्त होगा।

—अरुण

निष्काम भवन
मेरठ।

सुभाषित कोश

"हे कालामो, किसी बात को तुम इसलिए मत मानो कि यह श्रुति परम्परा से चली आ रही है या लोक व्यवहार से आ रही है या किसी ग्रन्थ में लिखी है.......। किन्तु जब तुम स्वयं अपनी बुद्धि से उसे समझ लो, वह तुम्हें जँच जाय, तभी उसे मानो।" —बुद्ध

×

नर करनी करे तो नारायण हो जाए।

×

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च। —*केन उपनिषद्*

मैं नहीं जानता कि मैं उसे ठीक से जानता हूँ, न यही कह सकता हूँ कि मैं नहीं जानता। जो हम में से यह समझता है कि उसे थोड़ा बहुत (तद्वेद) भी नहीं जानता वह जानता, वह थोड़ा बहुत जानता है। वह पूरे (पूर्ण ब्रह्म) को नहीं जानता।

×

हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी॥

×

जो अपनी ख़ुदी से जुदा हो गया।
ख़ुदा की क़सम वह ख़ुदा हो गया॥

×

ईश्वर भयभीत मानव का मानस-पुत्र है। —*राहुल सांस्कृत्यायन*

×

तुकाराम को स्वप्न में कृष्ण ने मंत्र दिया—
—राम कृष्ण हरी

×

जो तमाशा नज़र आया उसे देखा समझा।
जब समझ आ गई दुनिया को तमाशा समझा॥ —*'बेखुद' देहलवी*

×

सो जानै जेहि देहु बनाई। जानत तुम्हहि तुम्हहि होइ जाई॥ —*तुलसी*

×

पैदा हुआ वकील तो शैतान ने कहा।
लो आज हम भी साहिबे-औलाद हो गए।

×

सैर कर दुनियां की गाफ़िल, ज़िन्दगानी फिर कहाँ ?
ज़िन्दगी ग़र कुछ रही, तो नौजवानी फिर कहाँ ?

×

जब से ये दिल गया है तब से मीर
चीज़ रखते हैं भूल जाते हैं। —मीर

×

मौत एक मांदगी का वक़्फ़ा है।
यानी आगे चलेंगे दम लेकर॥ —मीर

×

फ़रिश्ता मौत का छूता है गो बदन तेरा।
तेरे वजूद के मर्क़ज से दूर रहता है॥ —इकबाल
(आत्मा के अजर अमर होने के दो शेर)

×

दोनों आलम कहीं टकरा न जायें
मौत ने साज़े-ज़िन्दगी छेड़ा है। —फ़िराक

×

अक्स चेहरे के कई दिखते हैं
आइना टूट गया लगता है।

×

किसी के बज़्मे-तख में हयात बाँटती थी
उम्मीदवारों में कल मौत भी नज़र आई। —फ़िराक़

×

रुदन का हंसना भी तो गान। —जयशंकर 'प्रसाद'

×

दौड़ सके तो दौड़ ले, जब लागि तेरी दौड़।
दौड़ थक्या धोखा मिट्या, वस्तु ठौड़-की-ठौड़॥

×

बुझ गया है तुम्हारे हुस्न का हुक्का
फिर भी मैं उसको गुड़गुड़ा रहा हूँ।

×

अच्छी सूरत को सँवरने की ज़रूरत क्या है
सादगी भी तो क़यामत की अदा होती है।

×

न सुनो ग़र बुरा कहे कोई।
न कहो ग़र बुरा करे कोई॥
रोक लो ग़र गलत चले कोई।
बख़्श दो ग़र ख़ता करे कोई॥

×

कुछ इस अदा से वो आज पहलूनशीं रहे।
जब तक हमारे पास रहे हम नहीं रहे॥

×

तेरी इस बेवफ़ाई पर फ़िदा होती है जां मेरी।
खुदा जाने अगर तुझ में वफ़ा होती तो क्या होता॥

×

रोते-रोते मेरे हँसने पर ताज्जुब न करो।
है वही जिक्र मगर दूसरे अन्दाज़ में है॥

×

तुमने किया ना याद कभी भूल कर हमें।
हमने तुम्हारी याद में सब कुछ भुला दिया॥

×

काबे में भी गया, न गया बुतों का इश्क।
इस दर्द की खुदा के घर भी दवा नहीं॥

×

जो दहलीज़ तक मौत की जा चुका है,
वही क़ीमते ज़िन्दगी जानता है। —*शहंशाह भवर*

×

ये यथां मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। —*गीता*

×

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। —*तुलसीदास*

×

मस्जिद में उसने हमको आँखें दिखा के मारा
काफिर की देखो शोखी घर में खुदा के मारा। —*ज़ौक*

×

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बद्ध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोति यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्॥

काया, वाक्, मनस्, इन्द्रियों, बुद्धि या अपने स्वभाव का अनुसरण करते हुए जो काम भी किये जायें वे सब नारायण को समर्पण करते हुए किये जायें।

×

यस्मिं सर्वं यतः सर्वम्
यः सर्वं सर्वतश्च यः
यश्च सर्व-मयो नित्यम्
तस्मै सर्वात्मने नमः।

जिसमें सब रहते हैं, जिससे सब उत्पन्न होते हैं, जो सब हैं, जो सब में विद्यमान है, जो सब में भरा है और जो अनन्त है, उस सर्वात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ।

×

यं शैवाः समुपासते शिव इत ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांच्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

×

अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात् कुरु॥

×

स्वे स्वे कर्मण्येभिरतः समसिद्धिः लभते नरः। *—गीता*

×

रक़ीबों ने लिखाई है रपट जाके थाने में।
कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में।

—अकबर इलाहाबादी

×

मौत एक गीत गाती थी,
ज़िन्दगी झूम-झूम जाती थी।
ज़िन्दगी को वफा की राहों में
मौत खुद रोशनी दिखाती थी। *—फ़िराक़*

×

हमारी हर सेवा प्रभु की सेवा है। *—स्वामी रामदास*

×

शुभ

अविरलमदधाराधौतकुम्भः शरण्यः
फणिवरवृतगात्रः सिद्धसाध्यादिवंद्यः।
त्रिभुवनजनविघ्नध्वांतविध्वंसदक्षो
वितरतु गजववत्रः संततं मंगलं वः॥

घने मद्जल से जिनके कुंभस्थल धुले हुए हैं, जो शरण गहने योग्य हैं, जिनके शरीर पर नाग लिपटा हुआ है, जो सिद्धों और साध्यों के वांदनीय हैं, जो तीनों लोकों के निवासियों के विघ्नरूपी अन्धकार विनाश करने में दक्ष हैं, वे गजवदन गणेश आप सब का मंगल करें।

लाभ

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांकुशगंध माल्यशोभे।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

कमल पर आसीन, कमल युक्त हाथों वाली, नितान्त धवल वस्त्र, चंदन और माला से शोभित, अति मनोहर रूप वाली, तीनों लोकों का कल्याण करने वाली, हे भगवती विष्णुवल्लभा लक्ष्मी, आप मुझ पर प्रसन्न हों।

×

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यम् धनसंपदा।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥
दीपज्योति परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

×

रत्नाकरस्तव गृहम् गृहिणी च पद्मा
किं देहमस्ति भवते जगदीश्वराय।
आभरिवामनयनाहत मानसाय-
दत्तम् मया मम मनो कृपाय गृहाण ॥

×

उलझी थी कभी जो आदम के हाथों से
वो गुत्थी आज तक सुलझा रहा हूँ मैं। —फ़िराक़

×

सेवा से भीतर की आत्मा रोशन होती है। —शेख सादी

×

सुख के दिन आने में समय लगेगा,
तब तक आओ हम मेहनत से निबटा लें गाते गाते। —रघुबीर सहाय

×

जिस भी फनकार का शाहकार हो तुम
उसने सदियों तुम्हें सोचा होगा। —अहमद नदीम क़ासमी

×

गुंचों के मुस्कराने पे कहते हैं हँस के फूल
अपना करें ख्याल हमारी तो कट गई। —'शाद' अज़ीमाबादी

×

बड़े अजीब हैं दर्देगम के रिश्ते भी।
कि जिसको देखिए, अपना दिखाई देता है ॥—खुर्शीद अहमद 'जामी'

×

आग भी उन घरों में लगती है
जिन घरों में चिराग जलते हैं। —इक़बाल सफ़ीपुरी

×

कूचा ए जानां कि मिलती थी न राह।
बन्द की आँखें तो रास्ता खुल गया॥ —*नसीम लखनवी*

×

जब तक था अपना होश वो रहते थे दूर-दूर।
अब आ गए करीब तो अपना पता नहीं॥ —*शहरयार 'परवाज़'*

×

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः। —*चाणक्य-नीति*

×

हम हैं उसी में राज़ी जिसमें तेरी रज़ा है।
या यूँ भी वाहवा है, और वूँ भी वाहवा है॥ —*इक़बाल*

×

यूं तो मुँह देखे की बात करते हैं जहाँ में सभी कोई।
बात तब है, जब मेरे बाद भी, मेरी बात रहे।

×

मनुष्य जो स्वयं करे उसे भूल जाये और दूसरों से ले उसे सदा याद रखे। यही मित्रता की जड़ है। —*ड्यूमाज़*

×

संत कबीर

घर में जोग भोग घर ही में
घर तज बन नहिं जावै।

×

मेरा तेरा मनुआं कैसे एक होई रे!
मैं कहता हूं आँखन देखी
तू कहता कागद की लेखी।

×

माला फेरत जुग भया फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डारी दे मन का मनका फेर।

×

माला तो कर में फिरे जीभ फिरे मुँह माहिं,
मनवा तो दहुं दिसि फिरे यह तो सुमिरन नाहिं।

×

मूंड़ मुंड़ाये हरि मिले सब कोई लेओ मुंड़ाय,
बार-बार के मुंड़ाते भेड़ न बैकुण्ठ जाय।

×

काल्ह करे सो आज कर आज करे सो अब्ब,
पल में परलै होयगी बहुरि करेगा कब्ब!

×

रूखी-सूखी खाय के ठंडा पानी पीव,
देख बिरानी चूपड़ी मत ललचावे जीव।

×

वृक्ष कबहुं नहिं फल भखे नदी न संचय नीर,
परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर।

×

खुल खेलो संसार में बांधि न सक्के कोय,
जाको राखे सांइयां मारि न सक्के कोय।

×

तेरा सांई तुज्झ में ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिग ज्यों फिर फिर ढूंढे घास।

×

पर उपकार वचन-मन-काया। संत सहज सुभाव खगराया।

—तुलसीदास

×

मर्यादा—

कोष के अनुसार लोक में प्रचलित व्यवहार और उसके नियम, सदाचार, गौरव, प्रतिष्ठा, मान, धर्म। इसका वास्तविक अर्थ है धर्म के अनुसार काम करना— वही अपने लिये और दूसरों के लिये कल्याणकारी है। यह ग़लत काम न करने का बन्धन है और नैसर्गिक नियमों का पालन करने की स्वतन्त्रता है। पानी की मर्यादा है तटों के बन्धन में रहकर बहना। तट तोड़ दिए तो आपत्ति आई। यः जीवन धारयेत, जिससे जीवन जिया जाये वह धर्म है। धर्म के, जीने के, नैसर्गिक नियम हैं जो सब सम्प्रदायों (religions) में एक हैं, वे मर्यादा स्थिर करते हैं।

×

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणां तमाहुः पंडित बुधाः॥ *—गीता, ४/१९*

जिसके सब कार्य काम और संकल्प से रहित होते हैं और जिसके सब कर्म ज्ञान की अग्नि से जल चुके हों उसे पंडित बुद्धिमान कहते हैं।

×

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति॥ *—गीता, १४/२२*

कृष्ण गुणातीत मन को बताते हैं— "अर्जुन, वह जो प्रकाश (सत्त्व से उत्पन्न) और कर्म (रजस् से उत्पन्न) और मोह (तमस् से उत्पन्न) से जब वे उपस्थित हों द्वेष नहीं करता और जब वे अनुपस्थित हों उनकी आकांक्षा नहीं करता।"

×

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्वेदः
सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः.
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

×

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पात्रमुर्वी ।
लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति ॥

×

उस स्त्री का विश्वास मत करो जो अपनी उम्र सही बता दे ।

×

कागा काको धन हरे, कोयल काको देत ।
मीठे शब्द सुनाय के, जग अपनो कर लेत ॥

×

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुहाय ।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥

×

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय ॥

×

ज्यों नैनों में पूतली, त्यों मालिक घट मांय ।
मूर्ख लोग न जानिए, बाहर ढूंढन जांय ॥

×

तरवर सरवर सन्त जन, चौथे बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे, चारों धारें देह ॥

×

करता था सो क्यों किया, अब कर क्यों पछताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से खाय ॥

×

तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र दिये दान ।
मन पवित्र हरि भजन से, इस विधि हो कल्याण ॥

×

ज्यों तिल मांही तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा मालिक तुझी में, जाग सके तो जाग ॥

×

जहां आपा तहां आपदा, जहां संशय तहां रोग।
कह कबीर यह क्यों मिटे, चारों दीरघ रोग॥

×

आया था किस काम को, सोया चादर तान।
सुरत संभाल ऐ गाफिला, अपना आप पहचान।

×

काशी काबा एक हैं, एकै राम रहीम।
मैदा इक पकवान बहु, बैठ कबीरा जीम।

×

अच्छे दिन पीछे गए, हरि से किया न हेत।
अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

×

चलती चाकी देखि के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय॥

×

रात गंवाई सोय कर दिवस गंवाया खाय।
हीरा जन्म अनमोल ये जैसे रहा बहाय॥

×

क्या खूब रंग लाया है माशूक का बुढ़ापा।
कि अंगूर के सब मज़े किशमिश में आ गए।

×

मैं उसको सोच तो सकता हूँ छू नहीं सकता।
जो मेरे सामने मौजूद है ख़ुदा की तरह। —*अहमद नदीम 'कासमी'*

×

मेरी क़िस्मत की लकीरें मेरे हाथों में न थीं।
तेरे माथे पर कोई मेरा मुक़द्दर देखता॥

×

बिनु पद चलइ सुनई बिनु काना।
कर बिनु करम करइ विधि नाना॥
आननरहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥

×

शान्तं तुष्टं पवित्रं च सानन्दमिति तत्त्वतः।
जीवनं जीवनं प्राहुर्भारतीयसुसंस्कृतौ॥

भारतीय संस्कृति में उस जीवन को प्रशस्त जीवन माना गया है जो शान्त हो, सन्तुष्ट हो, पवित्र हो और सानन्द हो।

×

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।

×

संयमाज्जायते शान्तिस्तोषहेतुः स्वतन्त्रता।
हेतुशुद्धया पवित्रत्वं स्वस्थ आनन्दमर्हति॥

शान्ति का उत्स संयम है। स्वतन्त्रता (इच्छाओं से, परतन्त्रता चाहे भीतर की हो या बाहर की, इन्द्रियों से स्वतन्त्रता) से संतोष की प्राप्ति होती है। आनन्द का अनुभव स्वस्थ रहने पर होता है। स्वस्थ जो अपने में स्थित रहता है।

×

मैं अरु मोर तोर की माया।
जेहिं बस कीन्हें जीव निकाया॥ —*रामचरितमानस*, 3|5|1

×

मैं मेरे की जेवरी, गल बँध्यो संसार।
दास कबीरा क्यों बँधे, जाके राम अधार॥

×

चाह गई चिन्ता गई मनुआ बेपरवाह।
जिसको कछू न चाहिये सो जग शाहनशाह॥

×

सब को पहचान लिया देख लिया जान लिया।
एक दिन खुद को भी आइने में देखा जाये॥

×

मौत से क्यों इतनी दहशत जान क्यूँ इतनी अजीज़।
मौत आने के लिये है जान जाने के लिये॥

×

माता मे पार्वती गौरी
पिता देवो महेश्वरः।
भ्रातरो मानवाः सर्वाः
स्वदेशो भुवनत्रयम्॥ —*शंकराचार्य*

×

मुझको कहां ढूंढे बन्दे,
मैं तो तेरे पास रे!

×

घूंघट का पट खोल री
तोहे पीय मिलेंगे।

घट घट रमता राम रमैया
कटुक बचन मत बोल रे ॥ तोहे०
रंग महल में दीप बरत है
आसन से मत डोल रे ॥ तोहे०
कहत कबीर सुनो भई साधो
अनहद बाजत ढोल रे ॥ तोहे०

×

पानी में मीन प्यासी मोय सुन-सुन आवे हांसी रे ॥

×

अजपा जाप जपो भाई साधो,
श्वासों की कर लो माला मोरे रामा ॥

×

बने जो कुछ घर करले यही एक साथ जावेगा।
गया अवसर यह न तेरे फिर हरगिज हाथ आवेगा ॥

×

साहिब तेरी साहिबी, सब घट रही समाय।
ज्यों मेहंदी के पात में, लाली लखी न जाय ॥

×

जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी खोजन चली, गई किनारे पैठ।

×

लोभ सरस अवगुण नहीं, तप नहीं सत्य समान।
तीरथ नहीं मन शुद्धि सम, विद्या सम धनवान ॥

×

विवाह हरेक का सुखमय होता है, और उसके बाद—

×

आईनाये जमीर पै जब भी नज़र गई
अपना ही अक्स देख के शर्मा गया हूँ मैं। —*सागर पालमपुरी*

×

मुहब्बत की दुनियां में सब कुछ हसीन है
मुहब्बत नहीं है तो कुछ भी नहीं है। —*हफ़ीज़ जालन्धरी*

×

शाम होते ही चरागों को बुझा देता हूँ।
दिल ही काफी है तेरी याद में जलने के लिए ॥

×

एक हँसती हुई परेशानी
वाह क्या जिन्दग़ानी हमारी है।

×

सरहदे होश से गुज़रता हूँ
डुबता हूँ कभी उभरता हूँ
देखकर तेरी मदभरी आँखें
मैं खुद अपनी तलाश करता हूँ। —नरेश कुमार शाद

×

कमसिनी है तो ज़िदें भी हैं निराली उनकी।
इसपे मचले हैं कि हम दर्दे ज़िगर देखेंगे ॥

×

साज़ के दिल में सोज़ पलता है
मुस्कराहट में दर्द ढलता है
हुस्न है ऐसे इक चराग़ की लौ
इश्क का जिसमें खून जलता है ॥ —नरेश कुमार शाद

×

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

×

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

×

बिगरी बात बने नहीं, लाख करे किन कोय
रहिमन फारे दूध को, मथै न माखन होय।

×

रहिमन तब लगि ठहरिये, दान मान सनमान
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान।

×

साईं, अपने चित्त की भूलि न कहिए कोय
तब लग मन में राखिए, जब लग काज न होय।
जब लग काज न होय, भूल कबहूँ नहीं कहिए
दुर्जन हंसे न कोय, आप सियरे रहिये ॥
कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं
करतूती कहि देती, आप कहिए नहीं साईं।

×

ए रहीम दर-दर फिरहिं, मांगि मधुकरी खांहीं
यारों यारी छाड़ि दो, वे रहीम अब नाहिं।

×

खैर, खून, खाँसी, खुशी, बैर, प्रीति, मदपान
रहिमन दाबै न दबै जानत सकल जहान।

×

तबही लौं जीवौ भलौ, दीवो होय न धीम
जग में रहियो कुचितगति, उचित न होय रहीम।

×

पानी बाढ़ौ नाव में, घर में बाढ़ौ दाम
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजे
परस्वारथ के काज, सीस आगे धर दीजै
कह गिरिधर कविराय बड़ेन की यही बानी
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी।

×

रहिए लटपटि काटि दिन, वरु धामें में सोय
छांह न बाकी बैठिए, जो तरु पतरो होय
जो ती पतरो होय, एक दिन धोखा दैहैं
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहैं
कह गिरिधर कविराय, छांह मोटे की गहिए
पाता सब झर जांहि, तऊ छाहैं में गहिए।

×

बेडा तू, दरियाव तू, तूही वार, तूरी पार
तूही तरावे, तरे तू, तूही मध डूबनहार
तूही मध डूबनहार, सर्व लीला है तेरी
तूही घंटा, तूही शंख, तूही रणसिंहा भेरी
कह गिरिधर कविराय, तूही बस्ती तूही खेड़ा
तूही नावक, तूही नीर, तूही पतवारी बेड़ा।

×

भाव सरस समझत सबै, भले लगैं यह भाय
जैसे अवसर की कही, बानी सुनत सुहाय।

×

किए वृंद प्रस्ताव के, दोहा सुगम बनाय
उक्ति अर्थ दृष्टान्त कीर, दृढ़ करि दिए बताय।

×

नीकी पै फीकी लगे, बिन अवसर की बात
जैसे बरनत जुद्ध में, नहीं सिंगार सुहात।

×

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय बिचारि
सब को मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि।

×

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन,
बिना डुलाए न मिलै, ज्यों पंखा की पौन।

×

नैना देत बताय सब, हित को हेत अहेत
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत।

×

मूरख को पोथी दई, वांचन को गुन गाथ
जैसे निरमल आरसी, दई अंध के हाथ।

×

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।

×

सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत,
दिवस गये निसि उदित, निसिगत दिवस उदोत।

×

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात तैं, सिल पर परत निसान।

×

छोटे नर के पेट में, रहे न मोटी बात
आध सेर के पाय में, कैसे सेर समात।

×

या ठगाए भोगी या ठगाए रोगी।

×

रहिमन चुप हो बैठिये देखि दिनन के फेर।

×

भूख न देखे सूखे टुकरे, नींद न देखे टूटी खटिया।

×

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजिआत
भरे भौन में करत हैं नैनन ही सों बात।

—*बिहारी*

×

बात बोलेगी, मैं नहीं
भेद खोलेगी बात ही।

—*शमशेर बहादुर सिंह*

×

रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब बांटि न लैहै कोय॥

×

चुपचाप बदल गई है दुनिया
मिलती हैं कुछ इसकी भी मिसालें। —फ़िराक़

×

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥

×

कमाल ने वहीं दूसरी तरफ कहा—

चलती चक्की देखकर हँसा कमाल ठठाय।
जो कीली से जा लगा, सोइ धन्य बच जाय॥

×

मौत उसकी है करे जिसका ज़माना अफ़सोस
यूँ तो दुनिया में सभी आये हैं मरने के लिए। —महमूद 'रामपुरी'

×

नहीं मानूस लब जिनसे कुछ ऐसी भी हैं फ़रियादें
कुछ आँसू हैं जो पलकों पर नज़र आया नहीं करते।
—मुबारक़ 'मुंगेरी'

×

इश्क करते हैं इन हसीनों से
मीर साहब भी क्या दीवाने हैं। —मीर तकी 'मीर'

×

महफिल उनकी, साकी उनका
आँखें अपनी, बाकी उनका। —अकबर 'इलाहाबादी'

×

ज़मीं को बाखुदा वो ज़लज़ला दे
निशां तक सरहदों के जो मिटा दे। —परवीन कुमार 'अश्क'

×

हम अपनी आँख से देखेंगे ज़िन्दगी क्या है।
भला बुरा तो ज़माने से सुनते आए हैं। —इरशाद बारी

×

फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़्यादा। —हाली

×

शुक्र कर खुदाया, मैंने तुझे बनाया।
तुझे कौन जानता था, मेरी बंदगी से पहले।

×

सारी दुनिया से दूर हो जाए
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे। —फ़ैज़

×

जब आँख मिली होश खो बैठे
कितने हाज़िरजवाब हैं हम लोग। —ज़िगर मुरादाबादी

×

तू नहीं मैं हूँ, मैं नहीं तू है,
अब कुछ ऐसा गुमान है प्यारे। —ज़िगर मुरादाबादी

×

हमने सीने से लगाया दिल न अपना बन सका
मुस्कराकर तुमने देखा दिल तुम्हारा हो गया। —ज़िगर मुरादाबादी

×

हमको मिटा सके यह ज़माने में दम नहीं,
हमसे ज़माना खुद है, ज़माने से हम नहीं। —ज़िगर मुरादाबादी

×

तौबा तो कर चुका था मगर इसका क्या इलाज
वाइज़ के ज़िद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया। —ज़िगर मुरादाबादी

×

कमाले तश्नगी से बुझा लेते हैं प्यास अपनी
इसी तपते हुए सेहरा को हम दरिया समझते हैं। —ज़िगर मुरादाबादी

×

गुलशनपरस्त हूँ मुझे गुल ही नहीं अज़ीज़,
काँटों से भी निबाह किए जा रहा हूँ मैं। —ज़िगर मुरादाबादी

×

यूँ जिन्दगी गुज़ार रहा हूँ तेरे बग़ैर
जैसे कोई गुनाह किए जा रहा हूँ मैं। —ज़िगर मुरादाबादी

×

दुनिया में सबसे कम मांगी जाने वाली चीज़ सलाह है
और सबसे ज्यादा दी जाने वाली चीज़ सलाह है।

×

आजकल दो ही चीज़ों के दाम आसमान छू रहे हैं— ज़मीन और कमीन के।

×

ये ज़िन्दगी के कड़े कोस याद आता है
तेरी निगाहे करम का घना-घना साया॥ —फ़िराक़ गोरखपुरी

×

हम हैं कि कभी ज़ब्त का दमन नहीं छोड़ा
दिल है कि धड़कने पै कमर बांधे हुए है। —मुनव्वर राना

×

तू एक रेल-सी गुज़रती है
मैं एक पुल-सा थरथराता हूँ।

×

यही जाना कि कुछ न जाना हाय
सो भी इक उम्र में हुआ मालूम।

×

भोजन आधा पेट कर, दुगना पानी पीउ।
तिगना सब्र, चौगुन हँसी, वर्ष सवा सौ जीउ॥

×

जाओ जो जानते हो उसे जीओ।

×

हारिए न हिम्मत बिसारिए न राम।

×

अन्धकार को क्यों धिक्कारें
अच्छा हो एक दीप जलायें।

×

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय॥ —कबीर

×

बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो मन चीन्हा आपना, मुझसे बुरा न कोय। —कबीर

×

अमल से ज़िन्दगी बनती है, जन्नत भी, जहन्नुम भी
ये खाकी[1] अपनी फिरारत[2] में नूरी[3] है न नारी[4] है। —इक़बाल

1. खाक से बनी हुई 2. प्रकृति 3. दैवी 4. नारकीय

×

लज़्ज़त कभी थी, अब तो मुसीबत हो गई
मुझको गुनाह करने की आदत सी हो गई। —बेख़ुद देहलवी

×

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नहीं हूँ। —अकबर इलाहाबादी

×

अय्याम मुसीबत के तो काटे नहीं कटते
दिन ऐश की घड़ियों में गुज़र जाते हैं कैसे।

×

कल शबे वस्ल में क्या जल्द कटी थीं घड़ियाँ
आज क्या मर गए घड़ियाल बजाने वाले। —*महाकवि नज़ीर*

×

नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रात उसकी है
तेरी जुल्फ़े जिसके बाज़ू पर परेशान* हो गईं। —*ग़ालिब*

* बिखर गईं

×

ना था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता। —*ग़ालिब*

×

इक निगाह करके उसने मोल लिया
बिक गये आह, हम भी क्या सस्ते। —*मीर*

×

जग में आकर इधर-उधर देखा
तू ही आया नज़र जिधर देखा। —*दर्द*

×

ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का नाम है
मुर्दा दिल ख़ाक जिया करते हैं। —*नासिख़*

×

तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता। —*मोमिन*

×

हम तालिबे शोहरत१ हैं, हमें नंगर से क्या काम
बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा। —*वहीदुद्दीन 'वहीद'*

1. ख्याति के इच्छुक, 2. बदनामी।

×

मक़तबे इश्क का 'मोमिन' है निराला दस्तूर
उसको छुट्टी न मिली जिसको सबक याद हुआ। —*मोमिन*

×

मुझे सहल हो गई मंज़िलें, कि हवा के रुख़ भी बदल गए
तेरा हाथ हाथ में आ गया, कि चिराग राह में जल गए। —*मजरूह*

×

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंज़िल मगर
लोग साथ आते गए कारवाँ बनता गया। —*मजरूह*

×

तहकीको महरो माह मुबारक तुझे मगर
दिल में अगर नहीं तो कहीं रोशनी नहीं। —*जिगर मुरादाबादी*

×

राह तू, रहबर भी तू, रहजन भी तू, मंज़िल भी तू। —*इक़बाल*

×

दुनिया जिसे कहते हैं, बच्चे का खिलौना है।

×

ग़म का ख़जाना तेरा भी है मेरा भी है।
ये नज़राना तेरा भी है मेरा भी है॥

×

आदमी आदमी को क्या देगा।
जो भी देगा वो खुदा देगा॥

×

ये दौलत भी ले, ये शौहरत भी ले,
वो काग़ज़ की किस्ती, वो बारिश का पानी।

×

अल्लाह शबे-हिज्र दोबारा न दिखाए
पहरों तो मुझे याद तेरा नाम न आया।

×

तुलसीदास

साधू ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय
सार वस्तु गहि लेत है थोथा देय उड़ाय।

×

सकल पदारथ हैं जग माहीं,
करमहीन नर पावत नाहीं॥

×

कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।
पराधीन सपनेहुं सुखु नाहीं॥

×

बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं।
गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं॥
जलधि अगाध मौलि बह फेनू।
संतन धरनि धरत सिर रेनू॥

×

जिन्ह के रही भावन जैसी।
प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी॥

×

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु सन्देहू।

×

का बरषा जब कृषि सुखानें।
समय चुकें पुनि का पछितानें॥

×

काह न पावकु जारि सकै का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ॥

×

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत करमु भोग सबु भ्राता॥

×

करम प्रधान बिस्व कर राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥

×

उसे भूलिए भी तो क्या भूलिए
हज़ारों तरह याद आ जाये है।

—फ़िराक़ गोरखपुरी

×

हमने रो-रोके रात काटी है
आँसुओं पर यह रंग तब आया।

—असर लखनवी

×

थमते-थमते थमेंगे आँसू
रोना है कुछ हँसी नहीं है।

—मीर

×

कहके यह कुछ और कह न गया
कि "हमें आपसे शिकायत है"।

—आर्ज़ू लखनवी

×

खुदपरस्ती का जो सौदा हो गया।
आप मैं अपना तमाशा हो गया। *—मीर वज़ीर अली 'सबा' लखनवी*

×

हस्ती अपनी हुबाब[1] की सी है
ये नुमायश सराब[2] की सी है।

....

नाज़ुकी उनके लब की क्या कहिये
पांखुरी गुलाब की सी है॥

—मीर

१. बुलबुला, २. मृगतृष्णा

×

तुझसे माँगू मैं तुझी को कि सब कुछ मिल जाए
सौ सवालों से यही सवाल अच्छा है। —*'अमीर' मीनाई*

×

हर चन्द फ़लसफ़ी में चना और चुनी रही
लेकिन खुदा की बात जहाँ थी वहीं रही। —*अकबर इलाहाबादी*

×

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ
वरना क्या बात कर नहीं आती। —*ग़ालिब*

×

रैन को भूषन इंदु है, दिवस का भूषण भानु।
दास को भूषन भक्ति है, भक्ति को भूषन ग्यानु॥
ग्यान को भूषन ध्यान है, ध्यान को भूषन त्याग।
त्याग को भूषन शांति पद तुलसी अमल अदाग॥

×

सात दीप नवखंड लौ, तीन लोक जग माहिं
तुलसी सांति समान सुख, अपर दूसरौ नाहि॥

×

आप आप कहँ सब भलो, अपने कहँ कोइ कोइ।
'तुलसी' सब-कहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ॥

×

राकापति षोड़स उवहिं, तारागन-समुदाइ।
सकल गिरिन दव लाइये, बिनु रवि राति न जाइ॥

×

आपन छोड़े साथ जब, ता दिन हितू न कोइ।
'तुलसी' अंबुज अंबु-बिनु, तरनि तासु रिपु होइ॥

×

दुरजन दरपन सम सदा, करि देखो हिय दौर।
सनमुख की गति और है, बिमुख भये कछु और॥

×

'तुलसी' संत सुअंब तरु, फूलि फरहिं परहेत।
इततें ये पाहन हनैं, उततें वे फल देत॥

×

'तुलसी' मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु बचन कठोर॥

×

गो-धन, गज-धन, बाजि-धन, और रतन-धन-खानि।
जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान॥

×

सकुचउं तात कहत एक बाता।
अरध तजहि बुध सरबस जाता॥

×

अनुचित उचित काजु कछु होऊ।
समझि करिअ भल कह सबु कोऊ॥

×

सहसा करिं पाछें पछिताहीं।
कहहि बेद बुध ते बुध नाहीं॥

×

परहित बस जिन्ह के मन माहीं
तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

×

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहिं चारी॥

×

जहाँ सुमति तहं संपति नाना।
जहाँ कुमति तहं बिपति निदाना॥

×

कादर मन कहुं एक अधारा।
दैव दैव आलसी पुकारा॥

×

पर उपदेश कुसल बहुतेरे।
जे आचरहिं तेवरन घनेरे॥

×

ईश्वर अंस जीव अबिनासी।
चेतन अमल सहज सुख रासी॥

×

तुलसी सो समरथ सुमति सुकृति साधु सयान।
जो बिचारि ब्यवहरइ जग खरच लाभ अनुमान।

×

जो ज़हर हलाहल है अमृत भी वही लेकिन
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ ही पीने का।

×

बे तुम्हारे मैं जी गई अब तक
तुमको क्या ख़ुद मुझे यकीन नहीं।

×

जिग़र के दाग़ जब सीने पै हमरंगे चिरागां हो
यही अहदे गुलामी में गुलामों की है दीवाली।

×

तरीक़े अहले दुनिया है गिला शिकवा ज़माने का
नहीं है जख्म खा कर आह करना शाने दुरवेशी
अपनी दुनिया आप पैदा कर अगर ज़िन्दों में है।

×

दोस्तों से इस कदर सदमे उठाए जान पर
दिल से दुश्मन की अदावत का ग़िला जाता रहा।

×

दुनिया जिसे कहते हैं मिट्टी का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है॥

×

वह नहीं बदनाम जिसने दिल को है पैदा किया
दिल से जो पैदा हुई वह आरजू बदनाम है। —चकबस्त

×

मुझसे जो पूछिए तो बहरहाल शुक्र है।
यूँ भी गुज़र गई मेरी और यूँ भी गुज़र गई॥

×

ज़ाहिदे-गुमराह के मैं किस तरह हमराह हूँ।
वह कहे अल्लाह हू और मैं कहूँ अल्लाह हूँ। —मन्सूर

×

"मैं वही हूँ जिसे मैं चाहता हूँ और जिसे मैं चाहता हूँ वह मैं ही हूँ।"
हक ह्क्क अनलहक— ब्रह्म ब्रह्म मैं ब्रह्म।

हमने सोचा था कि हाकिम से करेंगे फरियाद।
पर वह कम्बख़्त भी तेरा चाहने वाला निकला।

×

मौत इक ज़िन्दगी का वक्फ़ा है।
यानि आगे चलेंगे दम लेकर। —मीर तक़ी 'मीर'

×

ज़िन्दगी से तो ख़ैर शिकवा था
मुद्दतों मौत ने भी तरसाया। —नरेश कुमार 'शाद'

×

ग़मे ज़माना जिसे आम मौत कहते हैं
अगर ये मौत न मिलती तो मर गए होते । —*मौहम्मद अली 'ताज़'*

×

कौन रोता है किसी और कि खातिर ऐ दोस्त।
सबको अपनी ही किसी बात पर रोना आया॥

×

अब तो जाते हैं बुतक़दे से मीर
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

×

मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरज़ू रहे ॥ —*रामप्रसाद 'बिस्मिल'*

×

अब न पिछले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़।
एक मिट जाने की हसरत, बस दिले-बिस्मिल में है।

×

ऐ ज़ौक़, तकल्लुफ में है तकलीफ सरासर।

×

हम नाम भी लेते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

×

खत में मुझे अव्वल तो सुनाई हैं हज़ारों
आखिर में यही लिखता है कि मैं कुछ नहीं कहता। —*दाग़*

×

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुनः जगा देना चाहिए।

मौन का फल प्रार्थना है
प्रार्थना का फल विश्वास है
विश्वास का फल प्रेम है
प्रेम का फल सेवा है
सेवा का फल शान्ति है। —*मदर टेरेसा के विज़िटिंग कार्ड पर छपा*

×

सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं। —*मीर 'हसन'*

×

खूबसूरती भी क्या बुरी शै है,
जिसने डाली बुरी नज़र डाली।

×

सब मुझसे ही कहते हैं, रख नीची नज़र अपनी।
कोई उनसे नहीं कहता, न निकले अयां होकर॥

×

रंज से खूगर[1] हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसां हो गईं। —*मिर्जा ग़ालिब*

1. अभ्यस्त

×

ये जुनूं भी क्या जुनूं ये हाल भी क्या हाल है,
हम कहे जाते हैं कोई सुन रहा हो, या न हो।
दिल है क़दमों पर किसी के सर झुका हो या न हो,
बन्दगी तो अपनी फितरत है, खुदा हो या न हो॥

×

महफिले यार से उठने को उठे तो लेकिन
दर्द की तरह उठे, गिर पड़े आँसू की तरह।

×

इन्तहाये लागरी[1] से जब नज़र आया न मैं
हँस के वो कहने लगे बिस्तर को झाड़ा चाहिए।

1. विरहावस्था

×

बन्द हो जाती हैं सैयारों की आँखे खौफ़ से
फेंकता हूँ ज़ब मैं दिल से आहे आतिशवार

×

काली मिर्च (pepper) रोम में इतनी पसन्द की जाती थी कि उसका नाम ही यवनप्रिया हो गया। वहाँ इतना स्टॉक इकट्ठा हो गया था कि अलरिक द गॉथ ने रोम को बचाने करने के लिए 3000 पौंड काली मिर्च मांगी थी।

×

अब रहीम मुश्किल परी, टेढ़े दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम॥

×

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, तीरथ सारे पानी।
जब लग घट में दया ना व्यापी, चारों वेद कहानी॥

×

कामदेव के प्रसिद्ध पंचवाण हैं— सम्मोहन, उन्मादन, शोषण, तापन और स्तम्भन।

×

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार : पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ —*वेदव्यास*

अट्ठारह पुराणों में वेदव्यास के दो वचन हैं—परोपकार पुण्य है और परपीड़न पाप होता है।

×

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पर दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमाँ लेकिन फिर भी कम निकले ॥—*ग़ालिब*

×

आ रही थी हँसी मुझको हालात पर
उनको दीवानगी का गुमां हो गया। —*नज़ीर अली अदील*

×

दोस्तों से वफ़ा की उम्मीदें
किस ज़माने के आदमी हो तुम? —*बशीर बद्र*

×

वही तो सबसे ज़्यादा है नुक्ताचीं मेरा
जो मुस्कुरा के हमेशा गले लगाये मुझे। —*कतील शिफ़ाई*

×

हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी,
जिसको भी देखना हो कई बार देखना।

×

हर ज़र्रा चमकता है अनवारे-इलाही से
हर साँस ये कहती है, हम हैं तो खुदा भी है। —*अकबर इलाहाबादी*

×

अब्रू[1] न सँवारो कहीं कट जाये न उंगली
नादान हो, तलवार से खेला नहीं करते। —*निज़ाम रामपुरी*

1. भौं

×

ज़िन्दगी को संभाल कर रखिये
ज़िन्दगी मौत की अमानत है। —*बिस्मिल सईदी*

×

शर्त सलीका है हर इक अम्र[1] में
ऐब भी करने को हुनर चाहिए। —*मीर*

1. काम

×

किसी को अपने अलम[1] का हिसाब क्या देते?
सवाल सारे ग़लत थे, जवाब क्या देते? —*मुनीर नियाज़ी*

1. दुख

×

मुहब्बत की हकीक़त कम नहीं असारे हस्ती से
समझ लेता हूँ लेकिन मुझसे समझाई नहीं जाती।

×

ऐ बुतो, इस क़दर ज़फ़ा[1] हम पर
हम भी आखिर खुदा के बन्दे हैं। —*मीर*

1. अत्याचार

×

हमने नाकामियों को ढूँढ लिया
आखिरशः कामयाब होना था। —*जिगर*

×

करवटें क्यों बदल रहे हैं हुज़ूर
अभी आग़ाज़[1] है कहानी का। —*असर लखनवी*

1. आरम्भ

तारे तो ये नहीं मेरी आहों से रात की
सूराख पड़ गए हैं तमाम आसमान में।

×

समुन्दर कर दिया नाम उसका नाहक सबने कह कह कर
हुए थे जमा कुछ आँसु मेरी आँखों से बह बह कर।

×

न करता ज़ाब्ता मैं नाला तो फिर ऐसा धुँआ होता
कि नीचे आस्माँ के यक नया और आस्माँ होता।

×

मुझ जुल्फ के मारे को न ज़ंजीर पहनाओ।
काफ़ी है मेरी क़ैद को एक मकड़ी का जाला।

×

क्या नज़ाक़त है कि आरिज़ उनके नीले पड़ गए
हमने तो बोसा लिया था ख्वाब में तस्वीर का।

×

शब[1] को किसी के ख्वाब में आया न हो कही
दुखते हैं आज उस बुते-नाजुकबदन के पाँव। —*ग़ालिब*

1. रात

×

Education comes but wisdom lingers. — *Wordsworth*

शिक्षा आती है लेकिन बुद्धिमत्ता ठहर ठहर कर आती है।

बाँट लेने से सुख दूना होता है और दुःख आधा। —*स्वीडिश कहावत*

×

आज जो आपके सामने दूसरों का मज़ाक़ उड़ाता है, वह कल (दूसरों के सामने) आपका भी मज़ाक़ उड़ा सकता है। —*तुर्की कहावत*

×

विवेक जूते में निकल आई कील के समान है जो बाहर से दिखाई नहीं पड़ती लेकिन हर पग पर चुभती रहती है। —*ऋग्वेद से*

×

अथर्ववेद में (3/12/9) वैश्य को ऋग्वेद से, क्षत्रिय को यजुर्वेद से और ब्राह्मण को सामवेद से उत्पन्न बताया है।

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है, पल की खबर नहीं।

×

खत्म होगा न कभी ज़िन्दगी का सफ़र।
मौत तो बस सिर्फ़ रास्ता बदलती है॥

×

आज तू दौरे मुसीबत से गुज़र जा ऐ दोस्त।
बस यह मुसीबत ही तेरे ऐश का सामां होगी।

×

तमाशा इसके समझे, खेल समझे, दिल्लगी समझे।
बस उसकी ज़िन्दगी है, मौत को जो ज़िन्दगी समझे॥

—*बिस्मिल इलाहाबादी*

×

यह किसने कह दिया कि ज़माने से वैर कर।
दुनिया में आ गया है तो दुनिया की सैर कर॥—*बिस्मिल इलाहाबादी*

×

रिश्वत जिसे कहते हैं इसके भी हैं दो पहलू
लोगे तो फँसा देगी, दोगे तो छुड़ा देगी। —*शाहिद अदेली*

×

एक हेलिकोप्टर मुझे दे दे खुदा
उनके घर का रास्ता कर्फ्यू में है। —*मिर्ज़ा मुस्तफ़ा अली बेग*

×

दिल की हसरत थी कि हम होते लिफाफा
हलके से होठों पर फिरा तुम सील करते।

×

क्रोध वह वायु है जो बुद्धि के दिए को बुझा देता है।

×

कुत्ता अपने दिल को दुम में बांधकर हिलाता है॥

×

खूब देखा तो खुशामद की बड़ी खेती है,
ग़ैर क्या अपने ही घर बीच यह सुख देती है। —नजीर

×

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥

×

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताके हिरदै आप॥

×

व्यवहार

जो तोकौं काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥

×

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न पाया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न होय॥

×

जो चाहै हित सीखिबो तो तरु तें सिख लेय।
पाहन हनें सुमधुर फल बिटप सहज ही देय॥

×

संतोष

रूखा सूखा खाइ कै, ठंडा पानी पीव।
देखि बिरानी चोपड़ी मत ललचावे जीव॥

×

लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन सुद्धि सम विद्या सम धन आन॥

×

रहिमन यहि संसार में सब सो मिलिये धाइ॥
ना जानै केहि रूप में, नारायण मिलि जाइ॥

×

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी।
कपटी मित्र सूल सम चारी॥

×

अनुज बधू भगिनी सुत नारी।
सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥

×

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

×

शरणागति

एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास॥

×

जिनहिं भरोसो राम को, तिनहिं न व्यापहि क्लेश।
राम सदा रच्छा करैं, धरि धरि नित नव वेश॥

×

भयनासन दुर्मतिहरन कलिमहँ हरि को नाम।
निसिदिन नानक जो जपे सफल होइ तेहि काम।

×

राम-नाम को अंक है सब साधन हैं सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं अंक रहे दसगून॥

×

नीति

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब॥

×

या दुनिया में आइ कै, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना हो सो लेइ लै, उठी जात है पैंठ।

×

जिन ढूँढ़ तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ॥

×

अपनी पहुँच विचारि कै, करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर॥

×

बुरे लगत हित के बचन, हियैं बिचारो आप।
करुई भेषज बिन पिये, मिटै न तन को ताप॥

×

विद्या

विद्या धन उद्यम बिना कहौ जु पावै कौन ।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यौं पंखा को पौन ॥

×

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान ॥

×

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरव बात।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै बिन खरचे घटि जात ॥

×

विद्या धन सब धनन तें, अति उत्तम ठहराइ।
छीन न कोऊ सकत है, चोर न सकत चुराइ ॥

×

व्यवहार

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस से, लोह भसम होइ जाय ॥

×

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर ॥

×

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियत न पानि।
कह रहीम परकाज हित, संपति संचहिं सुजान ॥

×

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

×

क्षमा

जो मूरख निंदा करैं, पंडित की नहिं हानि।
रवि पर धूरि उड़ाइये, परै अपुन पर आनि ॥

×

क्षमा बड़ेन को होत है, छोटन कौ उतपात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात ॥

×

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।

×

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि।
सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहि॥

×

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझकौं सौंपता, क्या लागै है मोर॥

×

'कबीर' एक न जाण्यां, तो बहु जांण्यां क्या होइ।
एक तैं सब होत है, सब तै एक न होइ॥

×

पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय।
एकै आखर पीव का, पढ़ै सो पंडित होइ॥

×

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिस हिरदै में सांच है, ता हिरदै हरि आप।

×

'कबीर' नौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाइ।
ए पुर पाटन, ए गली, बहुरि न देखै आइ॥

×

जाति न पूछौ साध की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करौ तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

×

आपा मेट्या हरि मिलै, हरि मेट्या सब जाइ।
अकथ कहाणी प्रेम की, कह्यां न कोउ पत्याइ॥

×

जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होइ।
या आपा को डारिदे, दया करै सब कोइ॥

×

आवत गारी एक है, उलटत होई अनेक
कह 'कबीर' नहिं उलटिए, वही एक की एक॥

×

निंक नेड़ा राखिये, आंगणि कुटी बंधाइ।
बिन साबण पाणी बिना, निरमल करै सुभाइ॥

×

खूंदन तौ धरती सहै, बाढ़ सहै बनराइ।
कुसबद तौ हरिजन सहै, दूजै सह्या न जाइ॥

×

क्या गेहूँ चावल, मोठ, मटर, क्या आग धुआं क्या अंगारा।
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा। —*नज़ीर*

×

भूख में और प्यास में तर माल में खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं॥ —*नज़ीर*

×

जिस हाल में रक्खा वे उसी हाल में खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं। —*नज़ीर*

×

कभी कहा न किसी से तेरे फ़साने को।
न जाने कैसे खबर हो गई ज़माने को॥

×

लाज़िम है दिल के साथ रहे पासवाने अक़्ल
लेकिन कभी-कभी उसे तनहा भी छोड़ दे।

×

उनकी तसवीर सामने रखकर
अपना अन्जाम सोचता हूँ मैं।

×

जिसे दर्दे दिल की खबर भी नहीं है
वही दर्दे दिल की दवा जानता है।

×

खुदा ऐसी ग़मगशतगी से बचाए
तेरी विज़्म में हम तुझे भूल आए।

×

आँखों में नमी सी है, चुपचाप से बैठे हैं,
खामोश निगाहों में खामोश फ़साना है।

×

गुज़रते वक्त के बुझते हुए चिराग़ों से।
नये चिराग़ जलाओ तो कोई बात बने॥

—*'माहिर इकबाल इलाहाबादी*

×

कौन रोता है किसी और की खातिर ऐ दोस्त!
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया॥ —*साहिर लुधियानवी*

×

साधो सहज समाधि भली॥
गुरु-प्रताप जा दिन तैं उपजी, दिन-दिन अधिक चली।

जहँ-जहँ डोलों सोइ परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा ॥
जब सोवों तब करौं दण्डवत, पूजों और न देवा ।
कहों सो नाम, सुनो सो सुमिरन, खाँव-पियों सो पूजा ॥
गिरह उजाड़ एक सम लेखों, भाव न राखों दूजा ।
आँख न मूँदों, कान न रूँधों, तनिक कष्ट नहिं धारौं ॥
खुले नैन पहिचानो हँसि-हँसि, सुन्दर रूप निहारौं ।
सबद निरंतर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी ॥
ऊठत-बैठत कबहूँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ।
कह कबीर यह उनमनि रहनी, सो परगट करि भाई ॥
दुख-सुख से कोई परे परम पद, तेहि पद रहा समाई । *—कबीर*

×

ज़िन्दगी के लिए हँसना भी ज़रूरी है मगर
दिल बुझा हो तो लतीफ़े अच्छे नहीं लगते । *—वाली आसी*

×

हिन्दू चला गया न मुसलमां चला गया
इंसां की जस्तजू में इक इंसां चला गया । *—इन्सारुल हक़ मज़ाज़*

×

न लुटा दिन को तो क्यूं रात को यूं बेखबर सोता
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूँ रहज़न को । *—ग़ालिब*

×

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय ।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय ॥

×

जाको राखै साँइयाँ, मारि सकै नहिं कोय ।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय ॥

×

तेरे भावें कछु करौ, भलो बुरो संसार ।
नारायन तू बैठिके अपनो भवन बुहार ॥

×

बहुत गयी थोरी रही, नारायन अब चेत ।
काल चिरैया चुगि रही, निसिदिन आयू खेत ॥

×

गिरधरदास

बिना विचारै जो करै, सो पाछे पछताय ।
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय ॥

×

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज मैं, ताही में चित देइ॥

×

भक्त कबीर

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपणे, जिन गोविन्द दिया दिखाय॥

×

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखैं तित तूं॥

×

दोस्त मरने पे मेरे दादे वफ़ा देते हैं,
हाय किस वक्त मुहब्बत का सिला देते हैं। —*चकबस्त*

×

खुशी के साथ रंज़ोग़म का भी एहसास लाज़िम है,
गुलों की शाख पर पत्ते नहीं, कांटे भी होते हैं। —*शीला सुरिन्दर*

×

सीख वा को दीजिए, जा को सीख सुहाय।
सीख न दीजे बन्दरा, घर बया को जाय॥

×

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्य चिद्रिपुः।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा॥ —*हितोपदेश*

न कोई किसी का मित्र है और न कोई किसी का शत्रु होता है। यह हमारा व्यवहार ही है जो मित्र या शत्रु बनाता है अर्थात् मित्रता या शत्रुता का कारण हम ही होते हैं।

×

आपत्सु मित्रं जानीयाद् युद्धे शूरमृणे शुचिम्।
भार्यां क्षीणेषु वित्तेषु व्यसनेषु च बान्धवान्॥ —*हितोपदेश*

आपत्ति के समय मित्र की परीक्षा होती है, युद्ध में शूरवीर की परीक्षा होती है, कर्ज़ होने पर ईमानदारी की परीक्षा होती है, धन-सम्पदा नष्ट होने पर स्त्री की और दुःख में बान्धवों की परीक्षा होती है।

×

अयं निजः परोवेत्ति गणनालघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ —*हितोपदेश*

यह मेरा है, वह दूसरे का है ऐसा विचार ओछी चित्त वृत्ति वालों का होता है। उदार चरित वाले सारी पृथ्वी को अपना ही परिवार समझते हैं।

×

जो तो को कांटा बुवे, बोहि ताहि तू फूल।
तो को फूल के फूल हैं, वा को हैं त्रिशूल ॥

×

शमां ने जान ली इस वहम में परवाने की
सुबह को आम न हो जाए कहीं रात की बात।

×

दौलत वो है जो अक्ल-ओ-मेहनत[1] से मिले
लज़्ज़त[2] वो है जो कि जोशे-सेहत[3] से मिले
ईमाँ[4] का नूर[5] दिल में हो तो राहत[6] है
इज़्ज़त वो है जो अपनी मिल्लत[7] से मिले
क्या तुमसे कहें जहाँ[8] को कैसा पाया
ग़फ़लत[9] ही में आदमी को डूबा पाया
आँखें तो बेशुमार[10] देखी लेकिन
कम थी बखुदा,[11] कि जिनको बीना[12] पाया। —*अकबर इलाहाबादी*

×

दुनिया से जा रहा हूँ कफन में छुपा के मुँह
अफसोस बाद मरने के आई हया मुझे।

×

खुदा जाने यह किसकी जलवा गाहे नाज़ है दुनिया
हज़ारों चल बसे लेकिन वही रौनक है महफिल की।

×

हम खुदा के तो कभी कायल न थे
तुमको देखा तो खुदा याद आया।

×

तू सभी तरह से जालिम मेरा सबर आजमा ले
तेरे हर सितम से मुझको नये हौसले मिले हैं।

×

यह भी इक जमहुरियत की देन है
कोई अपने काम से वाक़िफ नहीं।

×

मेरे अल्ला को इक सजदा है काफी वह भी दूरी से
दरे इन्सा पे सौ-सौ बार दस्तक देनी पड़ती है।

×

नज़र जिसकी तरफ करके निगाहें फेर लेते हो
क़यामत तक फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती।

—आनन्द नारायण

×

हमारे शीशाए दिल को सम्भल कर हाथ में लेना
नज़ाकत इसमें इतनी है नज़र से जब गिरा, टूटा।

×

खुशामद भी हमने अजब चीज़ पाई
जो कहिये तो झूठी जो सूनिये तो सच्ची।

×

सब कुछ खुदा से मांग लिया तुझको मांगकर
उठते नहीं हैं हाथ मेरे इस दुआ के बाद।

×

मय अंगूर का देखिये तो कमाल
जब पुरानी हुई तो जवां हो गई।

×

जो लोग जान बुझकर नादान बन गये
मेरी नज़र में वो ही इन्सान बन गये।

×

पड़ा रहने दे मुझको भी किसी कोने में ए माली
मैं कांटा ही सही लेकिन मिला तो हूँ गुलिस्तान में।

×

मेरे गुनाह ज़्यादा हैं या तेरी रहमत
करीम तू ही बता दे हिसाब करके मुझे।

×

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के ज़माने में
मगर यह क्या गज़ब है आदमी इन्सां नहीं होता। *—खुमार बारबंकवी*

×

बुढ़ापा नाम है जिसका वह हैं अफसर्दगी दिल की
जवानी कहते हैं जिसको तबीयत की जवानी है।

×

सब को पहचान लिया, देख लिया, जान लिया
एक दिन खुद को भी आइने में देखा जाये। *—राही कुरैशी*

×

गुनहगारों में शामिल है गुनाहों से नहीं वाक़िफ़
सज़ा को जानते हैं हम खुदा जाने खता क्या है। —*चकबस्त*

×

ज़िन्दगी शमा की मानिंद जलाता हूँ नदीम
बुझ तो जाऊंगा मगर सुबह तो कर जाऊंगा।—*अहमद नदीम क़ासमी*

×

वह दिल कि जिस पे मेरा खुद ही बस कभी न चला
अजीब बात कि वह भी तेरे असर में रहा। —*अज़ीम अमरोही*

×

मौहब्बत को समझना है तो नासेह खुद मौहब्बत कर
किनारे से कभी अंदाज़ा-ए-तूफ़ां नहीं होता। —*शक़ील*

×

इन्हें काली घटाओं को पहचानना नहीं आता।
नशेमन से धुँआ उठता है ये सावन कहते हैं॥

×

जो जलाते हैं दूसरों को वे खुद भी जलते हैं।
शमा जलती रहती है फरवाने के जल जाने के बाद॥

×

खूब मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के बहलाने को ग़लिब ये ख़्याल अच्छा है।

×

जब कि तुझ बिन कोई नहीं मौजूद
फिर यह हंगामए खुदा क्या है।

×

ग़ालिब बुरा न मान जो वाइज़ बुरा कहे,
ऐसा भी कोई है कि़ सब अच्छा कहें जिसे। —*ग़ालिब*

×

सिर्फ़ बहाने बना सकते हैं और 'मन हरामी तां हुज्जतां ढेर के अनुसार अगर हमारा मन ही सही आचरण करना न चाहे तो वह अनेक बहाने बना सकता है।

×

जमहूरियत[1] इक तर्जे हुकूमत[2] है कि जिसमें।
बन्दों[3] को गिना करते हैं तोला[4] नहीं करते। —*इकबाल*

1. लोकतन्त्र, 2. शासन पद्धति, 3. नागरिक, 4. मूल्यांकन।

×

जनाबे शेख यह क्या माजरा हुआ आख़िर
सुना है आपको काबा में भी ख़ुदा न मिला। —*अदाम*

×

मेरी आज़ाद रूह को फिर से क़ैदे जिस्म मत देना
बड़ी मुश्किल से काटी है सज़ाए ज़िन्दगी मैंने। —*बख़्शी दर्द*

×

मुहब्बत के लिए कुछ खास दिल मखसूस होते हैं
यह वो नग़मा है जो हर साज़ पर गाया नहीं जाता।

×

लुटते अगर खिज़ा में तो कुछ बात ही ना थी
हमको तो रंज है कि लुटे हैं बहार में। —चाँद

×

वह हादसा भी खूब था जब आंसुओं का तीर
निकला किसी की आँख से आकर लगा मुझे। —*अरमान शहाबी*

×

इश्क का जौक़े नज़ारा मुफ्त में बदनाम है
हूस्न खुद बेताब है जलवा दिखाने के लिए। —*मजाज*

×

खुदा के डर से हम तुमको खुदा तो कह नहीं सकते
मगर लुत्फे ख़ुदा, कहरे ख़ुदा, शाने ख़ुदा तुम हो।

×

हमारे शहर में बेचेहरा लोग रहते हैं,
कभी-कभी कोई चेहरा दिखाई देता है। —*जॉं निसार अख़्तर*

×

चंद बेचेहरा आहटों के सिवा,
सासी बस्ती मजार जैसी है। —*निदा फ़ाजली*

×

उस शख़्स के ग़म का कोई अन्दाज़ा लगाए
जिसको कभी रोते हुए देखा न किसी ने। —*वकील 'अख़्तर'*

×

शबनम ने रोके जी ज़रा हल्का तो कर लिया
गम उसका पूछिए जो न आंसू बहा सके। —*'सलाम' संदेलवी*

×

रही न ताक़ते गुफ़्तार और अगर हो भी
तो किस उमीद पे कहिये कि आरज़ू क्या है।

×

न गुले नग़मा हूँ न परदए साज़
मैं हूँ अपने शिकस्त की आवाज़।

×

आईना देख अपनासा मुँह लेके रह गवे
साहब को दिल न देने पै कितना ग़रूर था।

×

जान दी, दी हुयी उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ।

×

मिलना तेरा अगर नहीं आसां तो सहल है
दुशवार तो यह है कि दुशवार भी नहीं।

×

बात पर वां ज़बान फटती है
वह कहैं और सुना करै कोई

×

बक रहा हूँ जनू में क्या-क्या कुछ
कुछ न समझे ख़ुदा करै कोई।

×

काफ़ी है निशानी तेरे छल्ले का न देना
खाली मुझे दिख़ला के बवक्ते सफ़र अंगुश्त।

×

मैंने माना कि कुछ नहीं ग़ालिब
मुफ्त हाथ आये तो बुरा क्या है।

×

इस सादगी पे कौन न मर जाये ए खूदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

×

लाखों लगाव, एक चुराना निगाह का
लाखों बनाव एक बिगड़ना इताब में।

×

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे आगे
तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे।

×

मैं भी मुँह में जबान रखता हूँ
काश पूछो कि मुद्दआ क्या है।

×

उन्हें मंजूर अपने ज़खमियों को देख आना था
उठे थे सैरे गुल को, देखना शोखी बहाने की।

×

यह कह सकते हो हम दिल में नही हैं पर यह बतलाओ
कि जब दिल में तुम्हीं तुम हो आँखों से निहाँ क्यों हो।

×

क्यों जल न गया ताबे रुखे यार देख कर
जलता हूँ अपनी ताक़ते दीदार देख कर।

×

क़हर हो या बला हो, जो कुछ हो
काश के तुम मेरे लिए होते।

×

वफ़ा कैसी, कहाँ का इश्क जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संगदिल तेरा ही संगे आस्तां क्यों हो।

×

जब मैकदा छुटा तो फिर अब क्या जगह की क़ैद
मसाजिद हो, मदरसा हो, कोई खानक़ाह हो।

×

कोई वीरानी सी वीरानी है
दश्त को देख के घर याद आया।

×

उलझते हो तुम अगर देखते हो आईना
जो तुमसे शहर में हों एक-दो तो क्यों कर हो।

×

मैं नामुराद दिल की तसल्ली को क्या करूँ
माना कि तेरे रुख से निगह कामयाब है।

×

अगर अपना कहा तुम आप ही समझे तो क्या समझे,
मज़ा कहने का जब है एक कहे और दूसरा समझे।
कलामें मीर समझे औ ज़बाने मीरज़ा समझे,
मगर इनका कहा यह, आप समझें या खुदा समझे।

×

ग़ालिब

हम वहा हैं जहाँ से हमको भी,
कुछ हमारी खबर नहीं आती।

×

खूं होके जिगर आँख से टपका नहीं ए मर्ग,
रहने दे मुझे या कि अभी काम बहुत है।

×

खूब था पहले से होते जो हम अपने बद-ख्वाह,
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है।

×

इश्क से तबीयत ने जीस्त का मज़ा पाया
दर्द की दवा पायी, दर्द बेदवा पाया।

×

कहते हो न देंगे हम दिल अगर पड़ा पाया
दिल कहाँ कि गुम कीजिये हमने मुद्दआ पाया।

×

क़ैदे हया तो बन्दे ग़म असल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी ग़म से निजात पाये क्यों।

×

हर क़दम दूरिये मंजिल है नुमायां मुझसे
मेरी रफ़्तार से भागे है बयाबां मुझसे।

×

यार से छेड़ चली जाय असद
न वस्ल तो हसरत ही सही।

×

मरता हूँ आरज़ू में मरने की
मौत आती है पर नहीं आती॥

×

कोई दिन की जिदगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है।

×

मुझसे मत कह तू हमें कहता था अपनी ज़िंदगी
ज़िंदगी से भी मेरा जी इन दिनों बेज़ार है।

×

मुझ तक कब उनकी बज़्म में आना था दौरे जाम
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।

×

कहा तुमने कि क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुसवाई
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो 'कि हां क्यों हो।

×

गदा समझ के वह चुप था मेरी जो शामत आई
उठा और उठके कदम मैंने पासबां के लिये।

×

बुलबुल के कारोबार पे हैं खंदाहाए गुल
कहते हैं जिसको इश्क खलल है दिमाग़ का।

×

जल्लाद से डरते हैं न वाइज़ से झगड़ते
हम समझे हुए हैं उसे जिस भेस में आये।

×

हस्ती के मत फ़रेब में आजाइयो असद
आलम तमाम हलक़ए दामे ख्याल है।

×

वह निगाहें क्यों हुई जाती हैं या रब दिल के पार
जो मेरी कोताहिए किसमत से मिज़गां हो गयी।

×

यह न थी हमारी किस्मत कि विसाले यार होता
अगर और जीते रहते यही इंतिजार होता।

×

दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गयी
दोनों को एक अदा में रजामंद कर गयी।

×

जान तुम पर निसार करता हूँ
यह नहीं जानता वफ़ा क्या है।

×

हम इश्क को अपने भी गवारा नहीं करते
मरते हैं मगर उनकी तमन्ना नहीं करते।

×

ग़ैर को या रब वो क्योंकर मना गुस्ताख़ी करे
ग़र हया भी उसको आती है तो शरमा जाय है।

×

कभी नेकी भी उसके जीमें गर आ जाये हैं मुझसे
जफ़ाएँ करके अपनी याद, शरमा जाये है मुझसे।

×

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के।

×

इस नज़ाकत का बुरा हो, वो भले हैं तो क्या
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।

×

पूछते हैं वह कि ग़ालिब कौन हैं
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या ?

×

था ज़िंदगी में मौत का खटका लगा हुआ,
उड़ने से पेशतर भी मेरा रंग जर्द था।

×

किया आईना खाने का वह नक्शा तेरे जलवः ने
करे जो परतवे ख़ुरशीदे आलस शबनमिस्तां का।

×

तेरी नाजुकी से जाना कि बंधा था अहद बोदा
कभी तू न तोड़ सकता अगर इस्तवार होता।

×

इन आबलों[1] से पांव के घबरा गया था मैं,
जी खुश हुआ है राह को पुरखार[2] देखकर।

1. छलो 2. कँटीली

×

पच आ पड़ी है वादए दिलदार की मुझे।
वह आये या न आये मुझे इंतिजार है॥

×

हरचंद हर एक शै में तू है
पर तुझसी तो कोई शै नहीं है।

×

इश्क पर ज़ोर नहीं, है यह वह आतिश ग़ालिब
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने।

×

सबको मक़बूल है दावा तेरी यकताई का
रूबरू कोई बुत आईनए सीमा न हुआ।

×

लो वह भी कहते है कि यह बे नंगों नाम है
यह जानता अगर तो लुटाता न घर को मैं।

×

ज़हर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर वरना
क्या क़सम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूँ ?

×

वाए दीवानगिए शौक़ कि हरदम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैरां होना।

×

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती
मौत का एक दिन मुऐयन है
नींद क्यों रातभर नहीं आती।

×

आगे आती थी हाले दिलपे हंसी
अब किसी बातपर नहीं आती।

×

दिले नादां तुझे हुआ क्या है ?
आखिर इस दर्द की दवा क्या है ?

×

साथ भी छोड़ा तो कब. जब सब बुरे दिन कट गए।
ज़िन्दगी तूने यहाँ आकर दिया धोखा मुझे। —'नातिक़' गुलावठी

×

मेरी तदबीर ने मुझको मेरी तक़दीर पै टाला।
मगर अब देखिए तक़दीर क्या तदबीर करती है। —'नूह' नारवी

×

Smile in pleasure, smile in pain,
Smile when sorrows strike again,
Smile when someone hurts your feeling,
Smiles are always very healing.

मुस्काओ सुख में, मुसकाओ दुख में,
मुस्काओ जब कष्ट दुबारा करें आघात।
मुस्काओ जब कोई तुम्हारी भावनाएँ घायल करे
मुसकानें सर्वदा होती हैं बड़ी कल्याणकारी।

×

×

इन्सान की बदबख़्ती अन्दाज़ से बाहर है।
कम्बख़्त खुदा होकर बन्दा नज़र आता है। —आज़ाद अन्सारी

×

इन्सान की बदबख़्ती अन्दाज़ से बाहर है।
कम्बख़्त खुदा होकर बन्दा नज़र आता है॥ —आज़ाद अन्सारी

×

यदि अपना मुखड़ा आकर्षक और खिला-खिला रखना हो तो मन से निश्चिन्त और प्रसन्न रहने की आदत डालें और मुस्करा कर बातें किया करें। खूब खिलखिलाकर हँसा करें।

×

किसी एक ही बात को लम्बे समय तक मन में न घोटते रहें, मन में गांठ बांध कर न रखें, किसी समस्या को सुलझाने के लिए चिन्ता न करें, चिन्तन करें और विवेक से काम लें।

×

मेहरबाँ होके बुलालो मुझे चाहे जिस वक्त,
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि आ भी न सकूँ। —ग़ालिब

×

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो जुल्म भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती। —*अकबर*

×

नहीं भूलता उसकी रुखसत का वक्त।
वह रह-रह के मिलना बला हो गया॥ —*हाली*

×

मुहब्बत में नहीं है फर्क़ जीने और मरने का।
उसी को देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर पै दम निकले॥ —*ग़ालिब*

×

इलाही तर्क मुहब्बत भी क्या मुहब्बत है।
भुलाते हैं उन्हें वह याद आए जाते हैं। —*आरज़ू*

×

मुहब्बत नहीं, आग खेलना है।
लगाना पड़ेगा, बुझाना पड़ेगा॥ —*ज़िगर*

×

यह इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजै।
एक आग का दरिया है और डूब के जाना है॥ —*ज़िगर*

×

बालस्तावत् क्रीडासक्तः
तरुणास्तावत् तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावत् चिन्तामग्नः
परे च ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः॥

मानव जब तक बच्चा रहता है उसकी आसक्ति खेल-कूद में रहती है। तरुण होने पर तरुणी में लगा रहता है। जब बुढ़ापा आता है तो मन चिन्तामय हो जाता है। और ब्रह्म की शरण कोई नहीं जाता।

×

घृणा घाव नित करती,
प्रीति घाव शत भरती,
स्नेह-स्पर्श से ही रे
हरी-भरी यह धरती।

—*सुमित्रानन्दन पन्त*

×

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः
तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे
वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥

मनुष्य जब तक कमाने योग्य होता है तब तक परिवार वालों का प्रिय होता हैं। जब बुढ़ापा उसकी देह जर्जर कर देता है, तब कोई उसकी बात नहीं पूछता।

×

यावज्जीवो निवसति देहे
कुशलं तावत् पृच्छति गेहे।
गतवति वायौ देहापाये
भार्या बिभ्यति तस्मिन् काये ॥

जब तक देह में जीव रहता है तब तक घर में कुशल पूछी जाती है। देह से प्राण निकलने पर भार्या भी उससे घबराती है।

×

न्हाइ धोइ क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोए बास न जाय। —*कबीर*

×

यों रहीम सुख होत है उपकारी के अंग।
बाँटवारे के लगै, ज्यों मेंहदी के रंग ॥ —*रहीम*

×

कहते नहीं महत्‌जन पहले करके ही दिखलाते हैं।
कार्यसिद्धि करने से पहले बातें नहीं बनाते हैं ॥ —*मैथिलीशरण गुप्त*

×

शृंग है केवल सार, काम करना अच्छा है।
चिन्ता है दुःखभार, सोचना पागलपन है। —*रामधारीसिंह 'दिनकर'*

×

यह मनुष्य आकार चेतना का है विकसित।
एक विश्व अपने आवरणों में है निर्मित ॥ —*जयशंकर 'प्रसाद'*

×

किन्तु हमारा लक्ष्य एक अम्बर है, भू सागर,
एक नगर-सा बने विश्व हम उसके नागर। —*मैथिलीशरण गुप्त*

×

वह थकते हैं और चैन पाती है दुनिया।
कमाते हैं वह और खाती है दुनिया ॥ —*हाली*

×

वह शरीर क्या जिससे जग का कोई भी उपकार न हो।
वृथा जन्म उस नर का जिसके मन में दया-विचार न हो॥

—आरसी प्रसाद सिंह

×

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं
विश्वं व्यक्त्वा स्वप्नविकारम्॥

×

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इहि संसारे खलु दुस्तारे
कृपयाऽवारे पाहि मुरारे॥

×

होता नहीं है कोई बुरे वक्त में शरीक[1]।
पत्ते भी भागते हैं, खिज़ा[2] में शजर[3] से दूर॥
पुतलियां तक भी फिर जाती हैं देखो दमे नज़ा[4]।
वक्त पड़ता है, तो सब अंख चुरा जाते हैं॥ *—महाकवि दाग़*

1. साथ 2. पतझड़ 3. वृक्ष 4. मौट का समय

×

है जान के साथ काम, इन्सां के लिए।
बनती नहीं है ज़िन्दगी में, बेकाम किये।
जीते हो तो कुछ कीजिए ज़िन्दों की तरह,
मुर्दों की तरह जिए तो क्या खाक़ जिए। *—हाली*

×

अगर बेफ़िक्र, सुखी और स्वस्थ बने रहना चाहें तो बेईमानी से धन न कमाएं। ईमानदारी से कमाया हुआ धन थोड़ा हो सकता है पर वह चित्त को स्थिर, उत्साहपूर्ण और निडर रखता है इससे व्यक्ति प्रसन्न और स्वस्थ बना रह सकता है। अन्यायपूर्वक कमाया हुआ धन तत्काल तो हर्षित कर देता है पर बाद में कई प्रकार के कष्ट देने वाला सिद्ध होता है।

×

जो चीज़ मानव की शक्ति का विस्तार करती है वह सत्य पर अधिकार नहीं है, बल्कि सत्य की खोज है। "यदि ईश्वर अपने दाहिने हाथ में समस्त सत्य लिए हो और बायें हाथ में सत्य के लिए मूल्यवान् निरन्तर सक्रिय प्रेरणा लिए हो, तो "चुनो'

कहने पर मैं विनयपूर्वक उसका बायाँ हाथ पकड़ लूँगा और कहूंगा : "पिता, यही मुझे दो ; शुद्ध सत्य केवल तुम्हारे लिए है।" —*ले सिंग*

×

महात्मा गाँधी ने एक अमरीकी मिशनरी को, जिसका दावा था कि ईसाई मार्ग ही सब के लिए सर्वोत्तम है, लिखा था, "आप सब लोगों के विषय में जानने की जो कल्पना करते हैं, वह आप तभी कर सकते हैं जब खुद ईश्वर हों। मैं चाहता हूँ कि आप समझ लें कि आप दोहरे भ्रम के नीचे पल रहे हैं। आप अपने लिए जिसे सर्वोत्तम समझते हैं, वह अवश्य वैसा ही है, और जिसे आप आपने लिए सर्वोत्तम समझते है, वही समस्त जगत के लिए सर्वोत्तम है, यह मान्यता सर्वद्रष्टापन और अच्युतता की है। मैं थोड़ी विनम्रता का अनुरोध करूंगा।"

×

इश्क सुनते थे जिसे हम वह यही है शायद।
खुद बखुद दिल में एक शख्स समाया जाता॥ —*हाली*

×

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फ़ायदा देखा इसी नुक़सान में॥ —*दाग़*

×

नेह लगाने का जग में परिणाम यही होता है।
एक भूल के लिए आदमी जीवन भर रोता है॥ —*'दिनकर'*

×

जो दीन में पूरे हैं वह हर हाल में खुश हैं।
हर काम में, हर दाम में, हर हाल में खुश है।
गर माल दिया यार ने तो माल में खुश हैं।
बरबादी के भी हाल और अहवाल में खुश हैं।
भूख में और प्यास में, तर माल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं।
जीने की नहीं पर्वाह, मरने का नहीं ग़म।
यकसां है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम।
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वो इक दम।
ना रात की मुसीबत ना दिल का कभी मातम।
दिन रात घड़ी पहर माहो साल में खुश हैं।
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं। —*नज़ीर अकबराबादी*

×

जब तक रोटी का टुकड़ा हो न दस्तरखान पर।
न नमाज़ों में दिल लगे और न कुरआन पर।

रात दिन रोटी चढ़ी रहती है सबके ध्यान पर।
क्या खुदा का नूर बरसे है पड़ा हर नान पर।
दो चपाती के वरक में, सब वरक रोशन हुए।
इक रकाबी में हमें चौदह तबक रोशन हूए।
रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो।
मेले की सैर ख्वाहिशों बाग़ ओ चमन न हो।
भूखे ग़रीब दिल की खुदा से लगन न हो।
सब ही कहा किसी ने कि भूखे भजन न हो।
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां। —*नज़ीर अकबराबादी*

×

जब एक रोज़ जान का जाना ज़रूर है,
फिर फ़र्क क्या, वह आज गई, ख्वाह कल गई। —*सफ़ी लखनवी*

×

लोग जिस हाल में मरने की दुआ करते हैं,
मैंने उस हाल में जीने की कसम खाई है। —*अमीर क़ज़लबाश*

×

खौफ आता है जिसको मरने से,
उनका जीना हराम होता है। —*मेलाराम 'वफ़ा'*

×

होता नहीं है कोई, बुरे वक्त में शरीक[1]।
पत्ते भी भागते हे खिजां[2] में शजर[3] से दूर॥

×

पुतलियां भी तो फिर जाती है देखो दमे-निज़ा[4]
वक्त पड़ता है तो सब आँख चुरा जाते हैं॥

1. भागीदार, 2. पतझड़, 3. वृक्ष, 4. अन्तिम सांस

×

मुद्दत[1] के बाद उसने जो की लुत्फ़ की निगाह[2]
जी खुश तो हो गया मगर आंसू निकल पड़े।
जिस तरह हँस रहा हूं मैं पी-पी के अश्के-गर्म[3]
यूं दूसरा हूंसे तो कलेजा निकला पड़े॥ —*कैफ़ी आज़मी*

1. एक अवधि 2. प्यार भरी नजर 3. गर्म आँसू

×

ये और बात है कि तआरुफ़[1] न हो सका।

हम ज़िन्दगी के साथ बहुत दूर तक गये ॥ —चुर्शीद अहमद 'जामी'

1. परिचय

×

मुख्तसर[1] ये है हमारी ज़िन्दगी।
इक सुकूनेदिल[2] की खातिर उम्र भर तड़पा किये[3] ॥

—'शमीम' करहानी

1. संक्षेप में 2. मन को शान्ति 3. तरसते रहे

×

संसार में केवल दो शक्तिशाली शक्ति हैं— भय और भक्ति।

हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं।
कि जिनको पढ़ के लड़के बाप को खब्ती समझते हैं ॥

—अकबर इलाहाबाद

×

बड़े अजीब हैं ये दर्देग़म के रिश्ते भी।
कि जिसको देखिए, अपना दिखाई देता है ॥

—खुर्शीद अहमद 'जामी'

×

आग भी उन घरों में लगती है।
जिन घरों में चिराग़ जलते हैं ॥ —'इक़बाल' सफ़ीपुरी

×

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंज़िल मगर
लोग साथ आते गये और कारवां बनता गया। —मजरूह सुल्तानपुरी

×

क़िस्मत तो देखिए कि कहां टूटी जां कमन्द
दो चार हाथ जबकि लबे बाम रह गया। —क़ाइम

×

यही है ज़िन्दगी अपनी यही है बन्दगी अपनी
कि उनका नाम आया और गर्दन झुक गई अपनी।

—'माहिर' उल क़ाबिरी

×

मरीज़े इश्क़ पर रहमत खुदा की
मर्ज़ बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवा की।

×

न थी हाल[1] की जब हमें अपनी खबर
रहे देखते औरों के ऐबो-हुनर[2]
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा। —*बहादुरशाह 'ज़फर'*

1. स्थिति, 2. गुण-दोष

×

अब इत्र भी मलो तो मोहब्बत की बू नहीं
वो दिन हवा हुए कि जब पसीना गुलाब था। —*माधोराम 'जौहर'*

×

बस कि दुश्वार[1] है हर काम का आसां[2] होना
आदमी को भी मयस्सर[3] नहीं इन्सां होना। —*ग़ालिब*

1. कठिन, 2. सरल, 3. उपलब्ध होना।

×

इरादे बांधता हूं सोचता हूं तोड़ देता हूं
कहीं ऐसा न हो जाए, कहीं ऐसा न हो जाए। —*हफ़ीज़ जालन्धरी*

×

किस तरह जवानी में चलूं राह पे[1] नासेह[2]
ये उम्र ही ऐसी है कि सुझाई नहीं देता। —*आग़ा शायर क़ज़लबाश*

1. सच्चरित्रता की राह पर, 2. उपदेशक।

×

मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की। —*जोसेफ एडीसन*

×

बिना अनुभव के कोरा शाब्दिक ज्ञान अन्धा है। —*विवेकानन्द*

×

अन्याय को मिटाओ लेकिन अपने आप को मिटा कर नहीं। —*प्रेमचन्द*

×

शोहरत की आरज़ू ने किया बदचलन उन्हें
इतनी बढ़ी ग़रज़ कि उसूलों से हट गये।

×

ये माना राहतें सारी मयस्सर हैं वहां लेकिन
गर इज़्ज़त न रहे बाक़ी तो जन्नत भी जहन्नुम है।

×

हमने ज़माने का वह दौर भी देखा है।
जब लम्हों ने खता की है सदियों ने सज़ा पाई है।

×

उम्र फ़ानी है तो फिर मौत से डरना कैसा,
इक न इक रोज़ यह हंगामा हुआ रखखा है। —आसी

×

ग़मे ज़माना जिसे आप मौत कहते हैं।
अगर ये मौत न मिलती तो मर गये होते। —मोहम्मद अली 'ताज'

×

मूर्खस्य पंचचिह्नानि गर्वोदुर्वचनं तथा।
हठश्चैव विषादश्च परोक्तं नैव मन्यते॥ —चाणक्य नीति

अभिमान करना और अपने सामने किसी को कुछ न समझना, कठोर और अभ्रद शब्द बोलना यानी गाली गलौच की भाषा में बात करना, जिद्दी होना और अपनी ग़लत बात पर भी अड़े रहना, ज़रा ज़रा सी बात पर दुःखी हो जाना, किसी की बात न सुनना और न मानना— ये पांचों चिह्न मूर्ख में ही पाये जाते हैं।

×

अमी पियावत मान बिनु, रहिमन मोहि न सुहाय।
मान सहित मरिबौ भलो, बरुँ बिष देय बुलाय॥ —रहीम

यदि अपमानपूर्वक कोई अमृत भी पिलाए तो वह मुझे अच्छा नहीं लगता। इससे अच्छा तो यह है कि सम्मानपूर्वक मुझे विष दे दे और मैं मर जाऊं।

×

यो हि संहरते क्रोधं भावस्तस्य सुशोभने।
यः पुनः पुरुषः क्रोधं नित्यं न सहते शुभे।
तस्याभावाय भवति क्रोधः परमदारुणः॥ —महाभारत वन पर्व

हे सुशोभने! जो पुरुष क्रोध का नाश करता है उसका कल्याण होता है। जो पुरुष क्रोध के वेग को सहन नहीं कर पाता, हे शुभे! उसका नाश का कारण वही अति दुःखदाई क्रोध हो जाता है।

×

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुधा धेनुः सन्तोषी नन्दनं वनम्॥ —चाणक्य नीति

क्रोध साक्षात् यमराज के समान है, तृष्णा वैतरणी की तरह विशाल नदी है, विद्या कामधेनु के समान है और सन्तोष नन्दन वन के समान सुखदाई है।

×

जिसने गर्व किया उसका पतन अवश्य हुआ। —महर्षि दयानन्द

×

एकमात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरू है। —रामकृष्ण परमहंस

×

वरक वरक पर मौहब्बत की दास्ताँ लिखकर
सोच रहा है सरोश कि इसे पढ़ेगा कौन।

×

समय, मौत और ग्राहक
किसी का इन्तज़ार नहीं करते।
माता, पिता और यौवन
जीवन में एक ही बार मिलते हैं।
तीर, कमान से, बात जबान से, जान शरीर से
निकल कर वापिस नहीं लौटते।
कुसंगति, निन्दा और स्वार्थ
इनसे हमेशा बचना चाहिए।
ईश्वर, उद्योग और विद्या
इनमें मन लगाने से उन्नति होती है।
क़र्ज़, फ़र्ज़ और मर्ज़
इनके प्रति लापरवाही ठीक नहीं।
माता, पिता और गुरू
इनका सदा सम्मान करना चाहिए।
मन, काम और लोभ
इनको सदा वश में रखना चाहिए।
बालक, भूखे और अपाहिज
इन पर सदा दया करना चाहिए।

×

सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं। —*मीर 'हसन'*

×

कामों को हाथों-हाथ कर ही डालना चाहिए, वरना जो काम पीछे रह जाता है, वह हो नहीं पाता। —*समर्थ रामदास*

×

क्रोध एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है। —*महात्मा गांधी*

×

चिन्ता ने आज तक कभी किसी कमी को पूरा नहीं किया। —*स्वेट मार्डेन*

×

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। —*ऋषि दयानन्द*

×

बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति सम्भव नहीं। —*रामकृष्ण परमहंस*

×

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है और ईश्वर उसको ब्याज सहित वापस करने को बाध्य होता है। —*स्वामी रामतीर्थ*

×

अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी होती है, जितना बुरा अपवित्र कर्म होता है।

—*स्वामी विवेकानन्द*

×

जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ देने पर भी नहीं मिलता।

—*चाणक्य*

×

इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि मनुष्य मरता किस प्रकार है, महत्त्व की बात यह है कि वह जीवित किस प्रकार रहता है। —*हज़रत अली*

×

उस मनुष्य से अधिक कोई दरिद्र नहीं, जिसके पास केवल धन है।

—*एडविन पुग*

×

जो भाग्यवान् है वह दानशीलता अपनाता है और दानशीलता से ही आदमी भाग्यवान् बनता है। —*शेख सादी*

×

झूठ बोलना तलवार के घाव की तरह है। घाव तो भर जाएगा लेकिन उसका चिह्न हमेशा बना रहेगा। —*शेख सादी*

×

जो तर्क को सुने नहीं वह कट्टर है। जो तर्क न कर सके वह मूर्ख है। और जो तर्क करने का साहस न कर सके, वह गुलाम है। —*ड्रमण्ड*

×

जिसमें दया नहीं है, उसमें कोई सद्‌गुण नहीं है। —*हज़रत मौहम्मद*

×

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी,
भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा।
धर्मोऽनुकूला क्षमया धरित्री,
भार्या च षडगुणवतीह दुर्लभा॥

×

गुलशन परस्त हूं मुझे गुल ही नहीं अज़ीज़
कांटों से भी निबाह किये जा रहा हूं मैं।

×

मक्खी बैठी शहद पर, पंख लिये लिपटाय।
हाथ पैर और सिर धुने, लालच बुरी बलाय।

×

दिल दे तो इस मिजाज़ का परवरदिगार दे।
जो रंज की घड़ी भी खुशी से गुज़ार दे॥ *—दाग*

×

ये जुनूं[1] भी क्या जुनूं, ये हाल भी क्या हाल है।
हम कहे जाते हैं कोई सुन रहा हो, या न हो।
दिल है क़दमों पर किसी के सर झुका हो या न हो।
बन्दगी[2] तो अपनी फ़ितरत[3] है, खुदा हो, या न हो।

1. उन्माद, 2. उपासना, 3. प्रवृत्ति

×

अच्छा हुआ कि दर्द ने चौंका दिया मुझे
कुछ नींद आ चली थी शबे इन्तज़ार में।

×

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्॥ *—पंचतन्त्र*

×

मौत इक ज़िन्दगी का वक्फ़ा है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर। *—मीर तक़ी 'मीर'*

×

ज़िन्दगी से तो खैर शिकवा था
मुद्दतों मौत ने भी तरसाया। *—नरेश कुमार 'शाद'*

×

नज़ीर अकबराबादी

बत्तखों की लम्बी दुमें, मोर सब लंडूरे हैं,
सफेद कौवे हैं, चीलों के रंग भूरे हैं।
जो साधु संत हैं पूरे सो वो अधूरे हैं,
कपट की नद्दी पे बगले भगत ही पूरे हैं।
ग़रज़ मैं क्या कहूं दुनिया भी क्या तमाशा है।

पैसे ही का अमीर के दिल में ख्याल है,
पैसे ही का फकीर भी करता सवाल है।
पैसा ही फौज, पैसा ही जाहोजलाल है,
पैसे ही का तमाम ये दंगो दवाल है।
पैसा ही रूप रंग है, पैसा ही माल है,
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है।

पैसे का ढेर होने से सब सेठ साठ हैं,
पैसे के जोर शोर हैं पैसे के ठाठ हैं।
पैसे के कोठे कोठियां छः सात आठ हैं,
पैसा न हो तो पैसे के फिर साठ-साठ हैं।
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है,
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है।

पैसा न हो तो बाग कुए फिर कहां से हों,
खाने को पूरी और पूवे फिर कहां से हों?
सामान ऐश के भजन के फिर कहां से हों,
हलवा कचौरी मालपूवे फिर कहां से हों?
पैसा ही रूप रंग है पैसा ही माल है,
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है।

×

जब तलक रोटी का टुकड़ा हो न दस्तरखान पर,
न नमाजों में लगे दिल और न कुरआन पर।
रात दिन रोटी चढ़ी रहती है सबके ध्यान पर,
क्या खुदा का नूर बरसे है पड़ा हर नान पर।

×

खूब देखा तो खुशामद की बड़ी खेती है,
ग़ैर क्या अपने ही घर बीचं यह सुख देती है।
मां खुशामद के सबब छाती लगा लेती है,
नानी-दादी भी खुशामद से दुआ देती है।

×

जीने की नहीं पर्वाह मरने का नहीं ग़म,
यकसां है उन्हें ज़िन्दगी और मौत का आलम।
वाक़िफ़ न बरस से न महीने से वो एकदम,
ना रात की मुसीबत ना दिन का कभी मातम।
दिन रात, घड़ी पहर, माहो साल में खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो हल हाल में खुश हैं।

गर उसने उढ़ाया तो लिया ओढ़ दुशाला,
कंम्बल जो दिया तो वही कांधे पे सम्भाला।
चादर जो उढ़ाई तो वही हो गई बाला,
बंधवाई लंगोटी तो वही हँस के कहे ला।
पोशाक में, रूमाल में, दस्तार में खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो हल हाल में खुश हैं।

कुछ उनको तलब घर की न बाहर से उन्हें काम,
तकिए की न ख्वाहिश है न बिस्तर से उन्हें काम।
मुफ़लिस से न मतलब न रईसों से उन्हें काम,
मस्जिद की हविस दिल में न मन्दिर से उन्हें काम।
मैदान में, बाज़ार में, चौपाल में खुश हैं,
पूरे हैं वही मर्द जो हल हाल में खुश हैं।

×

कहाँ तक खाइए ग़म, अब तो खाया नहीं जाता,
दिले बेताब को बातों से बहलाया नहीं जाता।

×

दिल चाहे दिलदार को तन चाहे आराम,
दुविधा में दोऊ गए, माया मिली न राम।

×

जो मैं ऐसा जानती प्रीत करे दुख होए,
नगर ढंढोरा पीटती, प्रीत न कीजो कोए।

×

कुछ बोलूँ तो जग हँसे, और चुपके लागे घाव,
ऐसे कठिन सनेह का, किस विध करूँ उपाव।

×

आह दई कैसी भई, अन चाहत के संग,
दीपक के भावें नहीं, जल-जल मरे पतंग।

×

बिरह आग तन में लगी, जरन लगे सब गात,
नाड़ी छूवत वैद्य के पड़े फफोला हाथ।

×

वो लड़कपन के थे दिन, और ये जवानी की बहार,
पहले भी रुख़ पर तेरे तिल था मगर क़ातिल न था।

×

"A statesman is a person who is wise before the event."

—*Disraeli*

"एक राजनीतिज्ञ वह है जो घटना से पहले बुद्धिमान है।"

×

"A statesman should take the things as they are and not as he wishes them to be."

—*Machiavelli*

"एक राजनीतिज्ञ चीज़ों को वैसी लेता है जैसी वे हैं, वैसी नहीं जैसी वह उन्हें होनी चाहता है।"

×

"Socialism can be in two places. In heaven where it is not required and in hell where it already exists." —*Churchill*

"समाजवाद दो स्थानों में हो सकता है। स्वर्ग में जहाँ उसकी आवश्यकता नहीं और नरक में जहाँ वह पहले ही मौजूद है।"

×

मीर दर्द

तुहमतें चन्द अपने जिम्मे धर चले,
किसलिए आए थे और क्या कर चले।

×

ज़िन्दगी बढ़ती है उतनी घटती है,
ज़िन्दगी आप ही आप कटती है।

×

बाहर न आ सकी तू क़ैदे ख़ुदी से अपनी,
ऐ अक्ले बे-हक़ीक़त, देखा शऊर तेरा।

×

हरदम बुतों की सूरत, रखता है दिल नज़र में,
होती है बुतपरस्ती अब तो खुदा के घर में।

×

ज़िन्दगी है यां कोई तूफ़ान है,
हम तो इस जीने के हाथों मर चले।

×

दोस्तो! देखो तमाशा यां कि बस,
तुम रहो अब हम तो अपने घर चले।

×

मीर तक़ी मीर

दिल वो नगर नहीं है कि फिर आबाद हो सके,
पछताओगे सुनो हो, यह बस्ती उजार कर।

×

तड़पे है जबकि सीने में उछले है दो दो हाथ,
गर दिल यही है 'मीर' तो आराम हो चुका।

×

'मीर' साहब भी उसके यां थे मगर,
जैसे कोई गुलाम होता है।

×

'मीर' बन्दों से काम कब निकला?
मांगना है जो कुछ खुदा से मांग।

×

"Service is the rent we pay for our room on earth—and I'd like to be a good tenant." —*Eddie Cantor* in Take My Life

"सेवा वह किराया है जो हम पृथ्वी पर अपने कमरे का देते हैं— और मैं एक अच्छा किराएदार होना चाहूँगा।" —*ऐडी क़ैंटर*

×

किस क़दर मुझसे तेरी याद को है हमदर्दी।
देखती है मुझे तन्हा तो चली आती है॥ —*दाग़*

×

खत्री दाता लाख में, कायथ सौ में सूम।
बनिया बूम हज़ार में, बामन बूमा बूम॥

×

Work as if you were to live a hundred years.

Pray as if you were to die tomorrow.

कर्म करो जैसे कि तुम्हें सौ वर्ष जीना है।

प्रार्थना करो जैसे कि तुम्हें कल ही मरना है॥

×

Prepare for the worst,

Expect the best,

And take what comes.

अधमतम के लिए तैयार रहो,
सर्वोत्तम की आशा करो,
और जो आए स्वीकार हो।

×

घोड़े की जात का अन्दाज़ा उसकी लात से और औरत की क़िस्म का अन्दाज़ा उसकी बात से लगाया जाता है।

×

पुराने ज़माने में स्त्री के हुस्न का स्टैंडर्ड चालिस सिफ़्तें थीं जिनमें से शीरीं में उन्तालीस थीं। पर आजकल दो चार मिलनी भी मुश्किल हैं इसलिये मजबूर होकर कुछ बादशाहों को बीवियों की संख्या बढ़ानी पड़ी।

×

रुदन का हँसना ही तो गान। —*जयशंकर 'प्रसाद'*

×

कहीं कहीं शाप भी वरदान बन जाता है। इसका रघुवंश में बड़ा सुन्दर वर्णन है (९, ८०)। दशरथ का बाण लगने पर श्रवणकुमार की मृत्यु हो गई। दशरथ जल लेकर उसके माँ बाप के पास पहुँचे। माता-पिता पहचान जाते हैं कि कोई अन्य व्यक्ति है। तथ्य का पता लगने पर वे पुत्र-शोक में व्याकुल होकर दशरथ को शाप देते हैं कि तुम भी पुत्र-शोक में मरोगे, और प्राण त्याग देते हैं।

दशरथ कहते हैं— महाराज, आपने ये मुझे शाप नहीं वरदान दिया है। मैंने अभी तक पुत्र का मुख नहीं देखा है। भले ही मैं मर जाऊँ और मरना तो हरेक को एक दिन है, मेरे पुत्र तो होगा।

×

पाँच मूल्य

आनन्द	और प्रफुल्ल रहने की क्षमता।
प्रेम	और उसे पोषित करने की क्षमता।
ईमानदारी	और भरोसा पाने का गुण।
साहस	जीवन के दुःखों और विफलताओं से लड़ने का।
आस्था	अपने में, भगवान् में, मानवता में।

×

रहीम

'रहिमन' गली है सांकरी, दूजो नहिं ठहराहिं।
आपु अहै, तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं॥

×

प्रीतम छबि नैननि बसी, पर-छबि कहां समाय।
भरी सराय 'रहीम' लखि, पथिक आप फिर जाय॥

×

बिन्दु में सिन्धु समान, को अचरज कासों कहैं।
हेरनहार हिरान, 'रहिमन' आपुनि आपमें॥

×

'रहमिन' बात अगम्य की, कहनि-सुननि की नाहिं।
जे जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहिं॥

×

खीरा को सिर काटिकै, मलियत लौन लगाय।
'रहिमन' करुवे मुखन की, चहिए यही सजाय॥

×

जो 'रहीम' ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे से फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय॥

×

'रहिमन' अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ॥

×

'रहिमन' जिह्वा बावरी, कहिगी सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥

×

अब 'रहीम' मुसकिल पड़ी, गाढे दोऊ काम।
सांचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम॥

×

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
'रहिमन' मूलहि सींचिबो, फूलहि फलहि अघाय॥

×

कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

×

कमला थिर न 'रहीम' कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होय॥

×

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को उतपात।
का 'रहीम' हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात॥

×

'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार'

×

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
'रहिमन' फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

×

वह व्यक्ति जो कोई भी गलती नहीं करता, वह बहुधा कोई काम नहीं करता है।

×

तुम चार आलिंगन प्रतिदिन जीवित रहने के लिये चाहते हो, आठ आलिंगन प्रतिदिन रख-रखाव के लिये और बारह आलिंगन प्रतिदिन विकास के लिए।

आलिंगन भावात्मक उत्थान के लिए आवश्यक है। उसकी प्रतिक्रिया रोम-रोम तक पहुँचती है।

आलिंगन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसे लिए बिना आप दे नहीं सकते।

×

रुदन भी बड़ी अच्छी दवाई है। रोना शुरू करने पर दमे का दौरा रुकते देखा है। रोना चिन्ता-जनित बीमारियों जैसे उच्च रक्तचाप और अलसर को नहीं होने देता। न रोने के कारण पुरुषों में स्त्रियों से अधिक बीमारी होती हैं।

×

दिल दे तो इस मिज़ाज़ का परवरदिगार दे।
जो रंज की घड़ी भी खुशी से गुज़ार दे॥ —दाग़

×

दिल ने एक चीज़ बड़ी बेसबहा मांगी है
हुस्ने-मग़रूर की फ़ितरत से वफ़ा मांगी है।
मसलहत है कि तवज्जो है कि या साज़िश है
इक दुश्मन ने मेरे हक़ में दुआ मांगी है॥

×

कन्नड़ में एक क़हावत है, "वेद से कहावत श्रेष्ठ है।"

×

"आशा दासत्व है, निराशा (निरपेक्षा) ईशत्व है। दासत्व और ईशत्व की स्थिति जानकर निस्पृहता में स्थिर होना ही ईश्वर है।"

×

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, "मैं नहीं तू है का अनुभव करना ही धर्म है।"

×

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये।

×

जब सब कुछ खो जाता है तब भी भविष्य बच जाता है।

×

'रहिमन' चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर॥

×

'रहिमन' देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि॥

×

'रहिमन' निज मन की बिथा, मनही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

×

'रहिमन' पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

×

'रहिमन' विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥

×

'रहिमन' वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं॥

×

- महाजनो येन गतः सा पन्था

  जिस मार्ग पर श्रेष्ठ जन चले हों वही मार्ग श्रेष्ठ है।

×

- आयादधिकं व्ययं मा कुरु

  आय से अधिक व्यय मत करो।

×

- बुभुक्षितः किं न करोति पापम्

  भूखा कौन सा पाप नहीं क़रता?

×

- साहसे श्रीः प्रतिवसति।

  हिम्मत से सिद्धि-समृद्धि प्राप्त होती है।

×

- धर्म एव हतो हन्ति।

  धर्म विरुद्ध आचरण से नाश होता है।

×

शरीर जल से शुद्ध होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, ज्ञान से बुद्धि तथा तप से आत्मा शुद्ध होती है। —*मनुस्मृति*

×

प्रतिदिन जीव मौत के मुंह में चले जा रहे हैं किन्तु शेष लोग मरना नहीं चाहते, इससे बढ़ कर आश्चर्य क्या होगा? —*महाभारत*

×

अपनी इन्द्रियों को जो वश में रखता है, उसकी बुद्धि स्थिर रहती है।

—*श्रीमद्भगवद्गीता*

×

अपने अन्दर ही अगर शान्ति मिल जाए तो फिर पूरा विश्व शान्तिमय मालूम होता है। —*योगवासिष्ठ*

×

यह मेरा है, यह दूसरे का है ऐसी मान्यता संकीर्ण हृदय के लोग रखते हैं। उदार चित्त वाले तो सारे संसार को ही एक कुटुम्ब समझते हैं। —*हितोपदेश*

×

इस संसार में घृणा से घृणा कभी कम नहीं होती, घृणा प्रेम से ही कम होती है। यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। —*धम्मपद*

×

तपों में सर्वोत्तम तप ब्रह्मचर्य है। एक ब्रह्मचर्य की साधना करने से अनेक गुण स्वयं अधीन हो जाते हैं। —*जिन वाणी*

×

ईश्वर का भय ही ज्ञान का उदय है। —*बाइबिल*

×

तुम्हारा सोता हुआ मन जाग जाए, इतनी योग्यता भी क्या तुममें अभी तक नहीं आई? —*कुरआन*

×

जिसकी भावना जैसी होती है उसे ईश्वर भी उसी रूप में दिखाई देता है।

—*रामचरितमानस*

×

उस दयालु प्रभु ने जो लिख दिया है उसे राज़ी रह कर आचरण करना चाहिए। —*गुरु ग्रन्थ साहब*

×

मिलकर चलो, एक स्वर में मिलकर बोलो और अपने मनों में एक समान विचार रखो। —*ऋग्वेद*

×

अपनी विद्वत्ता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है। —*श्रीमद्‌भगवद्‌गीता*

×

उन्नति चाहने वाले व्यक्ति को अति निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और आज का काम कल पर टालना— इन अवगुणों को त्याग देना चाहिए। —*हितोपदेश*

×

जो सबके लिए हितकर हो और अपने लिए भी सुखकर हो उसी का नित्य आचरण करना चाहिए क्योंकि वही सर्वार्थसिद्धि का मूल मन्त्र है। —*महाभारत*

×

मनुष्य का आचरण ही बताता है कि कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, पवित्र है या अपवित्र।

×

आत्मविश्वासी व्यक्ति समुद्र के बीचों बीच जहाज के नष्ट हो जाने पर भी तैर कर समुद्र पार कर लेता है। —*पंचतन्त्र*

×

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हीं ईश्वर का मन्दिर हो और ईश्वर की आत्मा तुम में रहती है। —*बाइबिल*

×

जो क्रोध पर उचित नियन्त्रण रख सकते हैं वे ही स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं।

—*कुरआन शरीफ*

×

यह हँसना और खुशी मनाना कैसा जबकि चारों तरफ़ नित्य आग लगी है। अन्धकार से घिरे होकर भी तुम प्रकाश को क्यों नहीं खोजते? *—धम्मपद*

×

पापी से घृणा न करो, पाप से घृणा करो क्योंकि पूर्ण निष्पाप तो तुम भी न होगे। *—महावीर वाणी*

×

जिसने मन जीत लिया उसने जग जीत लिया। *—श्री गुरु ग्रन्थ साहिब*

×

- आचारः परमो धर्मः

  सदाचार करना परम धर्म है।

×

- मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे

  सबको मित्र की दृष्टि से देखो।

×

- मनः सत्येन शुध्यति

  सच बोलने से मन शुद्ध रहता है।

×

- तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

  मेरा मन अच्छे विचारों वाला हो।

×

- न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

  धैर्यवान् पुरुष न्याय मार्ग से विचलित नहीं होते।

×

- विद्या ददाति विनयं

  विद्या से विनम्रता प्राप्त होती है।

×

- सत्यमेव जयते नाऽनृतं

  सत्य की ही विजय होती है, झूठ की नहीं।

×

- जो तुधु भावै साई भलीकार

  जो प्रभु को अच्छा लगे वही सही है।

×

- हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि

  जो उस प्रभु ने लिख रखा है वही होगा, उसी की मर्ज़ी चलेगी।

×

- मनि जीतै जगु जीत

मन को जीत लेना, जग को जीत लेना है।

×

उस एक सत्य स्वरूप परमेश्वर को विद्वान-जन अनेक नामों से पुकारते हैं।

—ऋग्वेद

×

शोक धैर्य को नष्ट करता है, शोक शास्त्र-ज्ञान को भी नष्ट कर देता है, शोक सब कुछ नष्ट कर डालता है। अतः शोक के समान कोई शत्रु नहीं।

—वाल्मीकि रामायण

×

दुःख से बचने का एकमात्र उपाय है हर हाल में राज़ी रहने का स्वभाव रखना। सदा मन में यह भावना रखना कि हे परमात्मा! मैं किसी बात पर आपत्ति नहीं करूंगा, तू जिस हाल में रखेगा उसी हाल में तेरी इच्छा मान कर राज़ी रहूंगा। मैं हूँ उसी में राज़ी जिसमें तेरी रज़ा है। मैं अपना काम करता हूँ तू अपना काम कर। तू जब मुझे किसी भी काम को करने से नहीं रोकता और मैं अपनी मनमानी करता हूँ तो तुझे कैसे रोक सकता हूँ। इस प्रकार की भावना ही तुम्हें दुःख से व मानसिक सन्ताप से बचा सकती है। हर हाल में प्रसन्न रहना सीखो। यदि तुम धनवान हो और तुम्हारे धन से दूसरों का उपकार होता है तो ऐसी धनवान्-अवस्था में सुख मानो। यदि तुम धनवान् न होकर दरिद्र हो तो इसीलिए सुखी रहो कि तुम पर धनवानों की तरह हज़ारों चिन्ताओं, ज़िम्मेदारियों, और भयों का बोझ नहीं है। यदि तुम प्रसिद्ध नहीं हो तो इसी बात से प्रसन्न रहो कि तुम लोगों की ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता और स्पर्धा से बचे हुए हो। कहने का मतलब यह है कि यदि तुम चाहो तो हर परिस्थिति से उसकी अच्छाइयाँ ग्रहण कर सुखी रह सकते हो और दुःख से बच सकते हो। महाकवि दाग़ ने क्या खूब कहा है—

आप की जिसमें हो मर्ज़ी, है वह मुसीबत बेहतर।
आपकी जिसमें खुशी हो, वह मलाल अच्छा है।

×

दिन भर कितने ही व्यस्त रहें पर शाम को दो घड़ी पत्नी व बच्चों के साथ ज़रूर बैठें, हँसें बोलें, मनोरंजन करें। इससे काम-काज की थकावट दूर होगी, शरीर स्वस्थ रहेगा और पूरा परिवार प्रसन्न और सुखी रहेगा।

×

सोते हुए को तब तक न जगाएँ जब तक कोई चारा न हो। नीति में कहा है कि घर में आग लग जाए तो ही सोये हुए को उसके प्राण की रक्षा हेतु जगाना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि सोया हुआ व्यक्ति स्वयं ही नींद खुलने पर उठे यह स्वास्थ्य के लिए हितकारी होता है। गहरी नींद में सोये हुए को अचानक जगा देने से दिमाग़ को आघात लगता है।

×

फूली हुई सांस को शीघ्र सामान्य करना ज़रूरी हो तो खूब गहरी सांस खींचे और रोक-रोक कर झटके के साथ बाहर छोड़े। ऐसा ४-५ बार करने से फूली हुई सांस सामान्य गति से चलने लगती है।

×

छींकते समय, जम्भाई लेते समय और खांसते समय मुंह पर हाथ या रूमाल रख लेना चाहिए।

×

हमेशा प्रसन्नमुख रहें। इससे आपकी आंखें रसीली और चमकदार बनी रहेंगी और चेहरा फूल की तरह खिला हुआ। आप आइने में मुस्करा कर देखें, फिर उदास हो कर देखें, फिर रोनी सूरत बना कर देखें और फिर क्रोध से भरी हुआ मुख-मुद्रा बना कर देखें और विचार करें कि किस मुख-मुद्रा में आप मोहक और अच्छे दिखाई देते हैं। मोहक और अच्छी मुख-मुद्रा ही रखने की कोशिश करें।

×

हमेशा मीठे वचन ही बोलें, मीठे ढंग से बोलें और व्यवहार भी मधुर बनाए रखें। सिर्फ तब ही नहीं जब कोई आपसे भी मीठे वचन बोले और मधुर व्यवहार करे, बल्कि तब भी जब कोई आपके साथ इसके विपरीत व्यवहार करे। तभी तो आपकी शालीनता का प्रमाण मिलेगा। इस तरह आप वाद-विवाद, कलह और मानसिक तनाव से बच कर स्वस्थ रह सकेंगे।

×

मन में हीनता की भावना न रखें और न अहंकार का प्रदर्शन करें। ये दोनों काम, एक ही सिक्के के दो पहलुओं की भांति हैं क्योंकि अहंकार वही प्रदर्शित करता है, जो अन्दर हीनभावना रखता है। हीनभावना रखने से अपनी मनोवृत्ति और जीवनशैली भी हीन हो जाती है।

×

सेवा और स्नेह में बड़ी शक्ति होती है बशर्ते सच्चे मन से, धैर्यपूर्वक और आत्मीय भावना से सेवा और स्नेह का पल्ला मज़बूती से पकड़े रहें। सेवा से ही अन्ततः मेवा मिलती है। भण्डार भरती रहती है जिससे आगामी जीवन आनन्दमय होता है।

×

दुनियादारी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य की नज़र उसी पर रहती है जो उसके पास नहीं है। हमें शिक्षा भी ऐसी ही मिलती है कि जो अभी मिला नहीं है उसे पाने की कोशिश करो और हम इस प्रपंच में उसकी तरफ़ से नज़र हटा लेते हैं जो हमें मिला हुआ है। हम भविष्य में खोये रहते हैं और वर्तमान से वंचित रहते हैं। जो मिला हुआ है उससे जल्दी ही ऊब जाते हैं और जो नहीं मिला है उसे पाने के लिए लालायित रहते हैं।

×

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। —*रामायण*

×

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। —*मनुस्मृति*

×

अर्द्धभार्या मनुषस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखाः।
भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः॥
सखायः प्रविविक्तेषु भवन्त्येताः प्रियम्वदाः।
पितरो धर्म कार्येषु भवन्त्यार्त्तस्य मातरः॥ —*महाभारत*

स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी है स्त्री पुरुष का सर्वोत्तम मित्र है, स्त्री धर्म, अर्थ और काम की जड़ है, स्त्री भवसागर से पार होने वाले मुमुक्षु की मूल है। यह मधुरभाषिणी स्त्री संकट के समय मित्र, धर्म-कार्यों में पिता और दुःख आ पड़ने पर माता के समान बन जाती है।

×

यह बड़े मज़े की बात है कि हम हमारे 'मैं' को मूल्य देने के लिए, इसे सम्मानित और बड़ा सिद्ध करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं और कई चीज़ों के आश्रित रहते हैं क्योंकि हम हमारे 'मैं' को तभी मूल्यवान, बड़ा सम्मानित मानते हैं जब दूसरे कहें, दूसरे मानें। हम हमेशा यही जुगाड़ किया करते हैं कि दूसरे लोग किस तरह हमें यानी हमारे 'मैं' को बड़ा मान लें, कैसे हमारी प्रशंसा करें। हमारा बड़प्पन दूसरे के 'प्रमाणपत्र' पर निर्भर रहता है, दूसरों की वाहवाही पर निर्भर रहता है और हम ऐसे प्रमाण, ऐसी प्रशंसा और वाहवाही प्राप्त करने के लिए न सिर्फ उत्सुक ही रहते हैं बल्कि प्रयत्नशील भी रहते हैं।

×

यदि आप सप्ताह के छः दिन तक नियमित समय पर, सन्तुलित मात्रा में उचित आहार करने के आदी हैं तो सातवें दिन (रविवार को) मनमाने व्यंजन खा सकते हैं और हज़म भी कर सकते हैं। अगर छः दिन आप परहेज़ नहीं रख पाते और मनमर्ज़ी के मुताबिक खाते-पीते रहते हैं तो रविवार को आपको उपवास रख कर सिर्फ फल और दूध ही लेना चाहिए ताकि पाचन-संस्थान को विश्राम मिल सके।

×

आप कोई भी बात तभी गुप्त रख सकते हैं जब उसकी चर्चा किसी से भी न करें, अपने परम मित्र या विश्वसनीय व्यक्ति से भी नहीं। कहा भी है— हलक़ से निकली, खलक़ में गई। याद रखें, जो आज प्रिय और विश्वसनीय है वह कल को बदल भी सकता है।

×

हम जो भी देते हैं, देर सबेर वही लौट कर हमें मिलता है। हम दूसरों को सुख देकर ही सुखी रह सकते हैं, दुःख देकर नहीं, इसलिए किसी को दुःख नहीं देना चाहिए। खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और अकेले भोगने से घटती हैं इसीलिए खुशियां मिल बांट कर भोगनी चाहिए।

×

सुखी वही नहीं होता जिसके पास बहुत कुछ होता है। जिसके पास जो कुछ हो, उससे सन्तुष्ट रहने वाला ही सुखी रहता है। सन्तोष का ही दूसरा नाम सुख है। हमारे पास क्या-क्या है इसका सुख से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि हमारे पास जो-जो है उससे राजी रहने और सन्तुष्ट रहने से सम्बन्ध है।

×

सिंहादेकं बकादेकं शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात्।
वायसात्पञ्च शिक्षेच्च षट शुनस्त्रीणि गर्दभात्॥ —*चाणक्य नीति*

शेर से और बगुले से एक-एक, गधे से तीन, मुर्गे से चार, कौए से पांच और कुत्ते से छह— ऐसे कुल २० गुण हम पशु-पक्षियों से सीख सकते हैं।

शेर का स्वभाव होता है कि कोई भी काम, छोटा हो या बड़ा, वह अपने ही बल-बूते पर करता है और कार्य पूरा किये बिना छोड़ता नहीं— यह एक गुण शेर से सीखना चाहिए। बगुला एकाग्रचित्त होकर पानी में खड़ा धैर्यपूर्वक मछली की राह देखता रहता है। धैर्य, एकाग्रता रखना— यह एक गुण बगुले से सीखना चाहिए। गधा काम करने में सदा तत्पर रहता है, गर्मी-सर्दी को सम्यक् भाव से सहता है और सदा मस्त रहता है— ये तीन गुण गधे से सीखना चाहिए। प्रातः काल ठीक समय पर सूर्योदय से पहले जग जाना, शत्रु से डट कर मुकाबला करना, मिल बांट कर खाना और कचरे में से भी अपना भक्ष्य खोज लेना— ये चार गुण मुर्गे से सीखना चाहिए। कौआ एकान्त में छिप कर भोग करता है, बहुत धैर्यवान् होता है, सदा सतर्क रहता है, किसी का विश्वास नहीं करता और दूर से अपने लक्ष्य को पहचान कर तुरन्त झपट पड़ता है— ये पांच गुण कौए से सीखना चाहिए। कुत्ता कितना भी भूखा हो पर थोड़ा सा खाकर भी सन्तुष्ट हो जाता है, गहरी नींद सोया हो तो भी ज़रा सा खटका सुन कर ही चटपट जाग जाता है, अपने मालिक को बहुत चाहता है। गन्ध सूंघ कर कभी भूलता नहीं, समय पड़ने पर बहादुरी दिखाता है। बिना झोली के फ़कीर की तरह भिक्षा मांगने यानी रोटी के लिए घर-घर जाता है— ये छः गुण कुत्ते से सीखना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य चाहे तो पशु-पक्षियों से ये २० गुण सीख सकता है। चाणक्य नीति में कहा है—

'य एतान् विंशतिगुणानाचरिष्यति मानवः।
कार्याऽवस्थासु सर्वासु अजेयः स भविष्यति।'

अर्थात् जो मनुष्य इन २० गुणों को अपने आचरण में धारण करेगा वह सब कार्यों में और सभी अवस्थाओं में सफल और विजेता रहेगा।

×

चार मन्त्र	**चार सूत्र**
समझदारी	व्यस्त रहें, मस्त रहें।
ईमानदारी	सुख बाँटें, दुःख बटायें।
ज़िम्मेदारी	मिल-बाँट कर खायें।
बहादुरी	सलाह लें, सम्मान दें।

×

जर्मन दार्शनिक गेटे ने लिखा है इतिहास को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है— विश्वास का युग और दूसरा अविश्वास का। विश्वास का युग देदीप्यमान, सफल और गतिशील होता है, अविश्वास का मलिन और बांझ। यही आदमी का जीवन है। विश्वास के युग में मान-सम्मान अर्जित होता है अविश्वास में गर्त में जाना।

×

चिन्तामणि के शवदेह के सहारे नदी पार करने की बात सुनकर बिल्व-मंगल का स्वगत-कथन—

"यह नर-देह
बह जाता जल में
नोच-नोचकर खाते कुत्ते और शृगाल
या चिता-भस्म की तरह
उड़ाता पवन इसे है।
यह नारी
इसका भी परिणाम यही
नश्वर इस जग में,
हाय, तब प्राण दे रहा किसे हूँ
किसके हित शव का करता आलिंगन।
बाँध सुदृढ़ बंधन में रहता हूँ छाया में।
वह उषा, वह जो छाया
मिथ्या, हाँ मिथ्या है यह सब
देख रहा हूँ आज मैं निबिड़ अंधेरा
मैं हूँ किसका, कौन है मेरा? —*गिरीश चन्द्र घोष का 'बिल्व-मंगल'*

×

इतिहास से हम यह जानते हैं कि हम इतिहास से कुछ नहीं जान पाते।

×

If day should part us— night will mend division
And sleep parts us— we will meet in vision.
And if life parts us— we will meet in death
Yielding our mite of unreluctant breath.
Death cannot part us— we must meet again
In all in nothing in delight in pain
How, why, when or where— it matters not

So that we share an undivided lot.

यदि दिन हमें अलग करेगा— रात्रि उस विभाज़न को दूर करेगी
और यदि नींद हमें अलग करेगी— हम स्वप्न में मिलेंगे
और यदि जीवन हमें अलग करेगा— हम मृत्यु में मिलेंगे
अनिच्छारहित श्वासों के अपने देयांश को सौंपते हुए।
मृत्यु हमें अलग नहीं कर सकती—हम फिर अवश्य मिलेंगे
समस्त में शून्य में उल्लास में क्लेश में
कैसे, क्यों, कब और कहाँ— इससे क्या अन्तर
क्योंकि हम एक अविभाजित भाग्य के समभागी हैं।

×

They never taste who always drink.
They always talk who never think.

वे कभी स्वाद नहीं लेते, जो हमेशा पीते हैं।
जो हमेशा बोलते हैं, वे कभी नहीं विचारते हैं॥

×

"Talent is developed in retirement; character is formed in the rush of the world." —*Goethe*

"प्रतिभा एकान्त में प्रस्फुटित होती है, चरित्र दुनिया की भीड़भाड़ में बनता है।" —*गेटे*

×

"No torture is worse than the torture of law."

—*Francis Bacon*

"क़ानून के उत्पीड़न से कोई उत्पीड़न अधिक बुरा नहीं है।"

—*फ्रांसिस बेकन*

×

"Lawyer's profession is a liar's profession." —*Gandhi*

"लायर (वकील) का पेशा लायर (झूठे) का पेशा है।" —*गाँधी*

×

What is man ? A foolish baby
Daily strives, and fights and frets,
Demanding all, deserving nothing
One small grave is what he gets. —*Thomas Carlyle*

मानव क्या है ? एक मूरख बालक
प्रयास करे, संघर्ष करे, खीजे,
माँगता सब, पात्र शून्यता का
एक छोटी कब्र जो वह पाता है। —टॉमस कार्लाइल

×

For what is life if full of care
We have no time to stand and stare.

यह जीवन क्या है यदि चिन्ता में व्यग्र
न समय मिले रहने का शान्त और समग्र।

×

धन से हम बिस्तर खरीद सकते हैं नींद नहीं।
धन से हम पुस्तकें खरीद सकते हैं बुद्धि नहीं।
धन से हम भोजन खरीद सकते हैं भूख नहीं।
धन से हम शृंगार खरीद सकते हैं सौन्दर्य नहीं।
धन से हम मकान खरीद सकते हैं घर नहीं।
धन से हम दवाई खरीद सकते हैं स्वास्थ्य नहीं।
धन से हम ऐश्वर्य खरीद सकते हैं संस्कृति नहीं।
धन से हम मनोरंजन खरीद सकते हैं सुख नहीं।
धन से हम धर्म खरीद सकते हैं मुक्ति नहीं।

×

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ, यानी
हमारे दोस्तों के बेवफ़ा होने का वक्त आया। —ज़फ़र

×

इंसां वही इंसां है कि इस दौर में जिसने
देखा है हक़ीक़त को हक़ीक़त की नज़र से। —चाँद कलवी

×

उम्मीद वक्त का सबसे बड़ा सहारा है,
जो हौसला हो तो मौज़ों में भी किनारा है। —नसीर अफ़सर

×

हज़ार ग़म सही दिल में खुशी मग़र यह है,
हमारे होंठों पर माँगी हुई हँसी तो नहीं। —कृष्ण बिहारी 'नूर'

×

जाको राखे साइयां मार सके न कोय,
बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय॥

×

हिम्मते मरदाँ मददे खुदा।
हिम्मत से काम लेने पर खुदा मदद करता है।

×

मेरे मन कुछ और है, कर्ता के कुछ और।

×

आत्मा को इन्द्रधनुष नहीं दिखाई देगा यदि आँखों में आँसू न झिलमिलाएँ।

×

आलोचना के हर टुकड़े को प्रशंसा की दो परतों के सैंडविच में रखो।

×

अपनी ग़लती को फौरन मान लो इससे पहले कि कोई उनका तिल का ताड़ बनाए।

×

मूर्ख ही पानी की गहराई दोनों पैरों से नापता है। *—अफ्रीकी कहावत*

×

पुस्तक उधार देने वाले मूर्ख हैं तथा उनको वापस करने वाले उनसे भी बड़े मूर्ख हैं। *—जॉर्ज बर्नर्ड शॉ*

×

मैं असंयम से भयभीत नहीं होता: असंयम कभी-कभी उत्तेजना देता है। यह संयम को आदत के निश्चेष्ट करने वाले प्रभाव को अर्जित करने से रोकता है।

—सोमरसैट मॉहम

×

कल्पना शक्ति का ज्ञान से अधिक महत्त्व है। *—अलबर्ट आइन्सटीन*

×

अव्यवस्थित होने का एक लाभ यह है कि वह लगातार उत्तेजक आविष्कार करता रहता है।

—ए॰ ए॰ मिलने

×

स्वनिर्मित लोगों के साथ यह कठिनाई है कि वे सबको अपना ही नुस्खा देते रहते हैं।

—मौरिस सिटर

×

बैंक खाते टूथपेस्ट की तरह हैं— निकालने में आसान लेकिन वापस रखने में मुश्किल।

×

मितव्ययिता एक आश्चर्यजनक वस्तु है कौन नहीं चाहता उसके पूर्वजों ने इस पर अधिक आचरण किया होता।

×

यह नहीं कि कौन सही है लेकिन क्या सही है यह महत्त्वपूर्ण है।

—टामस हक्स्ले

×

यदि आप क्रोध का इलाज चाहते हो तो इसे हवा मत दो। —*एपिक्टेटस*

×

विवाह एक कैंची के समान है। उसके दोनों भाग ऐसे जुड़े होते हैं कि अलग नहीं हो सकते। बहुधा वे विपरीत दिशाओं में चलते हैं, किन्तु यदि कोई चीज़ बीच में आ जाती है तो फौरन उसे काटने को लपकते हैं।

×

अनुभव : गलतियों के लिए चुना गया एक नाम। —*ऑस्कर वाइल्ड*

×

दूसरी शादी : अनुभव के ऊपर आशा की विजय। —*सैम्युएल जॉन्सन*

×

जीवन दर्शन क्या है ? पहले दर्शन से जीवन को समझने का प्रयत्न करता था, अब जीवन में ही सारा दर्शन पा जाता हूँ।

×

प्रशंसा के भूखे यह साबित कर देते हैं कि वे योग्यता में कंगाल हैं।

—*प्लूटार्क*

×

"नारी के साथ शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के दो ही तरीके हैं— चापलूसी या चाँटा (flatter them or flatten them)." —*अज्ञात*

×

"इंसान, ऐतिहासिक और सामाजिक शक्तियों के हाथों का खिलौना नहीं है, बल्कि वह खुद इन सब का निर्माता है; वह विवेक और सिद्धान्त का गुलाम नहीं है, बल्कि स्वयं उनका सृष्टा है; वह पूर्णतः स्वतन्त्र है। हेगेल का यह कथन कि '— सत्य ही विवेक है और विवेक ही सत्य है—' कि 'यह विश्व एक विवेकयुक्त प्रणाली है'— एक बड़ी हिमाकत और हठधर्मी ही नहीं, एक मखौल है। अपने निरपेक्ष संकल्प के अनुसार हर इन्सान स्वतन्त्र है अपना रास्ता, कर्तव्य— अपना सत्य निर्धारित करे।" —*अस्तित्ववाद का जनक, सारेन किर्केगार्ड*

×

प्रकृति माता की एक मोहक विशेषता यह है कि जब वह अपना सौन्दर्य दिखाती है तो लाज से कितना लाल हो उठती है।

×

आज का आकाश इतना सुन्दर था कि शरद का पवन भी उसे देखकर सीटी बजा रहा था।

×

दुर्बल सैक्स अधिक शक्तिशाली होता है, अधिक शक्तिशाली सैक्स की दुर्बल सैक्स के लिए दुर्बलता के कारण।

×

तीन चीज़ों के पीछे कभी नहीं भागना चाहिए— नारी, बस और नई आर्थिक रामबाण औषधि ; ज़रा सी देर रुकेंगे तो दूसरी आती दिखाई देगी।

×

राजनीतिज्ञों की कल की प्रतिज्ञाएँ आज के करों में बदल जाती हैं।

×

एक स्त्री होना कुछ इतना अजीब है, कुछ इतना गड्डमड्ड है, कुछ इतना पेचीदा है कि एक स्त्री ही इसे सँभाल सकती है। *—कीर्केगार्ड*

×

आपको कुछ अलग हट कर होना होगा यदि आप दूसरों का ध्यान आकर्षित करना चाहें। बात यह है कि क्या कोई पीसा की मीनार पर दूसरी दृष्टि डालता यदि वह सीधी खड़ी होती?

×

मैं बुढ़िया होने में घबराती थी क्योंकि मैं सोचती थी कि तब मैं वे सब काम नहीं कर सकूंगी जो मैं करना चाहती थी। अब जब मैं बूढ़ी हो गई हूँ तो मुझे पता चला कि मैं उन्हें करना ही नहीं चाहती। *—८० वीं वर्षगाँठ पर लेडी ऐस्टर*

×

हमें सुख का उपभोग करने का अधिकार नहीं है जब तक हम उसका उत्पादन न करें, जैसे सम्पत्ति भोगने का बिना उसके उत्पादन किए। *—शॉ : कैंडिडा*

×

अधिक श्रद्धास्पद न बनो। कुछ चारित्रिक कमज़ोरियाँ अपने में रखो। लोग तुम्हारी कमियों के बारे में बात करना चाहते हैं। यदि तुम अपने को सम्मान्य समझते हो तो उसे अपने तक सीमित रखो।

×

मैं दिन में सौ बार अपने को याद दिलाता हूँ कि मेरा आन्तरिक और बाह्य जीवन दूसरे व्यक्तियों, जीवित या मृत, के परिश्रमों पर निर्भर करता है और मुझे पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि मैं उसी मात्रा में दूँ जिस मात्रा में मैंने पाया और मैं पा रहा हूँ। *—अल्बर्ट आइन्सटीन*

×

संसार एक दर्पण के समान है और वह हर मनुष्य को उसके मुख का प्रतिबिम्ब दिखाता है। तुम उसे भौंह चढ़ाकर देखो, वह भी तुम्हें कड़वा-कड़वा देखेगा। उसकी ओर हँसो तो तुम पाओगे कि वह एक हँसमुख दयालु साथी है।

—थैकरे : वेनिटी फेयर

×

आत्मकथा लिखना वह बेजोड़ माध्यम है जिसमें दूसरों के बारे में सत्य बताया जा सकता है। *—फिलिप गुइडेला*

×

मैं भगवान् से इसलिए प्रेम करता हूँ क्योंकि उसने मुझे ठुकराने की स्वाधीनता दे रखी है।

×

बोर हमेशा अपने बारे में बातें करता है, बातूनी दूसरों के बारे में और कुशल संभाषण-पटु तुम्हारे बारे में।

×

शोक अकेले में अपने को संभाल सकता है परन्तु हर्ष का पूरा आनन्द लेने के लिए तुम्हें उसे किसी के साथ बाँटना पड़ेगा। *—मार्क ट्वेन*

×

जब मैं जवान था तो मैंने पाया कि मेरे दस में से नौ काम विफल हो जाते हैं। मैं जीवन में विफल नहीं होना चाहता था इसलिए मैंने दस गुना ज़्यादा काम किया।

—जॉर्ज बर्नर्ड शॉ

×

कुछ यक़ीन अकल पर नहीं है मुझे
ऐतमादे नज़र नहीं है मुझे।
यह ख़बर है कि तुम हो मेरे क़रीब
मैं कहाँ हूँ खबर नहीं है मुझे॥ *—नरेश कुमार 'शाद'*

×

If I am not for myself,
Who will be for me ?
And if I am not for others,
What am I ?
And if not now, when ?

यदि मैं अपने लिए नहीं हूँ
तो मेरे लिए कौन होगा ?
और यदि मैं दूसरों के लिए नहीं हूँ
तो मैं कौन हूँ ?
और यदि अब नहीं, तो कब ?

×

More things are wrought by prayer
Than this world dreams off. *—Tennyson*

प्रार्थना से बहुत सी वस्तुएँ रची जा सकती हैं जिनकी संसार कल्पना भी नहीं कर सकता।

×

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" —*कणाद*

जिससे इस लोक में अभ्युदय हो और परमकल्याणरूप मोक्ष की प्राप्ति हो, वही धर्म है।

×

'स यो ह वै तत् परंब्रह्म वेद स ब्रह्मैव भवति।'

—*मुण्डकोपनिषद् ३, २९*

×

जो उस परब्रह्म को जानता है वह भी ब्रह्म हो जाता है।

×

'ॐ ब्रह्मविदाप्नोति परम्।' —*तैत्तिरीय उपनिषद्*

ब्रह्म को जानने वाला परब्रह्म को प्राप्त होता है।

×

"जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होइ जाई।"

×

श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि
यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः,
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या
जीवो ब्रह्मैव नापरः। —*शंकराचार्य*

"आधे श्लोक में ही करोड़ों ग्रन्थों का सार बताता हूँ कि ब्रह्म सत्य है, संसार मिथ्या है और जीव ब्रह्म से अलग नहीं है।"

×

तस्माद् ब्राह्मणः पाण्डित्य निर्विद्य बाल्येन तिष्ठेत्।

पांडित्य का गर्व छोड़ो और बच्चे की तरह जीयो। —*बृहदारण्यक उपनिषद्*

×

बालस्वभाव असंगो निरवद्यः। —*बृहदारण्यक उपनिषद्*

बच्चे का स्वभाव है असंगता (अनासक्ति) और निर्दोषता।

×

जगत तरैया भोर की, 'सहजो' ठहरत नाहिं।
जैसे मोती ओस की, पानी अंजुलि माहिं॥

×

यूनान में डेल्फी के मन्दिर पर लिखा था—

अपने को जानो

×

"नाम-महिमा बुद्धिवाद से सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धा से अनुभवसाध्य है।"

—*महात्मा गांधी*

कबीरा क्यों गर्व्यो फिरै, काल गहे कर केस।
न जाने कहाँ मारसी, कै घर कै परदेस॥

×

पानी केरा बुलबुला, अस मानुस की जात।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात॥

×

"सियाराममय सब जग जानी।"

×

"ईशावास्यमिदं सर्वम्।"

×

"उसे कौन दुख दे सकता है जिसके देह नहीं है।" —*लाओत्से*

×

"त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।"
"ग्राम जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्॥" —*महाभारत*

"परिवार के लिए एक व्यक्ति का त्याग कर देना चाहिए, ग्राम के लिए परिवार का, इसी प्रकार जनपद (देश) के लिए ग्राम का और आत्मा के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी का त्याग करना उचित है।"

×

ईश्वर नाम अमोल है, दामन बिना बिकाय।
तुलसी अचरज देखिये, कोइ गाहक न आय।

×

अमेरिकन बहुविज्ञ, बेंजामिन फ्रैंकलिन ने मानव के लिये तेरह गुण बताये हैं— संयम, मौन, व्यवस्था, निश्चय, मितव्ययिता, परिश्रम, प्रामाणिकता, न्याय, संतुलन, स्वच्छता, शान्ति, चारित्र्य-शुद्धि और नम्रता।

×

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थात् 'धैर्य, क्षमा, मन का दमन, चोरी न करना, बाहर-भीतर की शुद्धि, इन्द्रियों का संयम, सात्विक बुद्धि, अध्यात्मविद्या, सत्य बोलना और क्रोध न करना— ये धर्म के दस लक्षण हैं।'— मनु ने बताए हैं। (२, १२)

यम-नियम भी धर्म के ही अङ्ग हैं। योगशास्त्र (२, ३०) ने यम को यह परिभाषा दी है :—

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।

'अहिंसा, सत्यभाषण, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य का पालन, और भोग-सामग्रियों का संग्रह न करना— ये पाँच प्रकार के यम है।'

नियम के लक्षण वहीं (२, ३२ में) ये हैं :—

शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।

'बाहर-भीतर की पवित्रता, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और सर्वस्व ईश्वर को अर्पण करना— ये पाँच प्रकार के नियम हैं।

इन सब का निष्काम भाव से पालन करना ही सच्चा धर्माचरण है।

×

असतो मा सदगमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय॥

×

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद दुःखभाग भवेत्॥

×

दया धर्म नहीं मन में।
मुखड़ा क्या देखे दर्पण में॥

×

जात हमारी ब्रह्म है, मात-पिता हैं राम।
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम। —*दरिया*

×

दो दिन की ज़िन्दगी पे न इतना उछल कर चल।
दुनिया है चल-चलाव का रस्ता संभल के चल॥

×

लेने को हरि नाम है, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान॥

×

कबिरा काजर रेख हि अब तो दई न जाय।
नैनन प्रीतम बसि रहा, दूजा कहां समाय॥

×

मैं वो गुम-गुस्ता मुसाफिर हूँ,
कि आप अपनी मंज़िल हूँ,
मुझे हस्ती से क्या हासिल,
मैं खुद हस्ती का हासिल हूँ॥

×

रास्ता भूल गया या वही मंज़िल है मेरी।
कोई लाया है कि खुद आया हूँ, मालूम नहीं॥
कहते हैं: हुस्न की नज़रें भी हसीं होती हैं।
मैं भी कुछ लाया हूँ क्या लाया हूँ मालूम नहीं।

×

"प्रीतम छबि नैनन बसी परछबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि पथिक आय फिर जाय।"

×

जहाँ देखौं वहाँ रामहिं रामा।

×

जो देखूँ वह राम सरीखा॥ —एकनाथ

×

"क्या यह जानना ज़रूरी है कि आप किस गिलास से पानी पी रहे हैं जबकि वह आपकी प्यास बुझाने में समर्थ है।" —*कृष्णमूर्ति* सब धर्मों की निरर्थकता पर

×

"मेरे कोई शिष्य नहीं है। सत्य तुम्हारे स्वयं के अन्दर है। यदि मैं कहता हूँ कि मैं ईसा हूँ तो तुम एक नई सत्ता बना रहे हो। मैं दैवज्ञ नहीं हूँ।"

×

—ईसू

Resist ye not (प्रतिरोध न करो)

×

"बुल्लेआ! रब्ब दा की पावणा।"
एत्थों पुट्टराणा, एत्थे च लावणा॥"

×

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्
तत्त्वं पूषन्न पावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥ —*ईशावास्य, 15*

हिरण्मय पात्र के द्वारा सत्य का मुख ढका हुआ है, इसलिये हे पूषन् तुम मुझ सत्यधर्मा के लिए उस परदे को हटा दो जिससे मैं उसे देख सकूँ।"

×

यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्त पश्यामि,
योऽसावसौ पुरूः सोऽहमस्मि। —*ईशा, 16*

तेरा जो कुछ अतिशय कल्याणमय रूप है उसे देखकर मैं अनुभव कर रहा हूँ वह तो मुझसे भिन्न नहीं है, वह मैं ही हूँ।

×

इन्द्र कहता है :

सुना है कि श्रम करने से जो थकता नहीं है, उसे ही श्री प्राप्त होती है।
हाथ पर हाथ धरे बैठा रहने वाला अच्छा आदमी भी निकम्मा ही है।
श्रम करते रहने वाले की ही सहायता इन्द्र करता है।
अतः निरन्तर श्रम करते ही रहो, श्रम करते ही रहो।

श्रम करने वाले की जंघाओं में स्फूर्ति के फूल खिले रहते हैं:
स्वास्थ्य का फल उसी के बलिष्ठ शरीर में फलता है।
उसके सभी पापों को श्रम निष्क्रिय बना देता है।
अतः निरन्तर श्रम करते ही रहो, श्रम करते ही रहो।

जो बैठा रहता है, उसका सौभाग्य भी बैठ जाता है,
और खड़े रहने वाले का सौभाग्य खड़ा हो जाता है
सोने वाले का सौभाग्य सोता रहता है।
और जो चलता है उसका सौभाग्य प्रगति करता है।
अतः निरन्तर श्रम करते ही रहो, श्रम करते ही रहो।

वह कलि है, जो सो रहा है,
द्वापर है वह, जो नींद से उठ बैठा है,
और वह त्रेता है, जो उठकर खड़ा हो गया।
किन्तु श्रमशील पुरुष तो सत्ययुग ही बन जाता है।
अतः निरन्तर श्रम करते ही रहो, श्रम करते ही रहो।

जीवन का मधु श्रम में निरत रहने वाला मनुष्य ही पाता है,
वही स्वादिष्ट फल चखता है,
देखो न, सूर्यदेव के श्रम को, वह एक क्षण भी आलस्य नहीं करता।
अतः निरन्तर श्रम करते ही रहो, श्रम करते ही रहो। *—ऐतरेय ब्राह्मण*

×

गुल से यह बात ज़रा हँस के बहारों ने कही,
रात से चाँद ने, आकाश से तारों ने कही।
ज़िन्दगी स्वप्न सही स्वप्न बहुत सुन्दर है,
मुझ से कुछ बात यही तेरे इशारों ने कही॥

×

मैं-युक्त आत्मा जीव है।
मैं-मुक्त आत्मा परमात्मा है।

×

'तुलसी' जग में यूँ रहो, ज्यूँ रसना मुख माँहि।
खाती घी औ' तेल नित, फिर भी चिकनी नाँहि॥

×

'यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः' —जैमिनी

(जिससे इस लोक में उन्नति और परलोक में सद्‌गति हो उसे धर्म कहते हैं।)

×

श्रोतव्यः सौगतो धर्मः कर्त्तव्यः पुनरार्हतः।
वैदिको व्यवहर्तव्यो ध्यातव्यः परमः शिवः॥

"बौद्ध धर्म श्रवण-प्रधान है, जैन धर्म कर्त्तव्य-प्रधान, वैदिक धर्म व्यवहार-प्रधान और शैव धर्म ध्यान-प्रधान।"

×

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्तिः।

×

कुर्वन्तेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समा।

×

जो आत्मा को सब भूत-प्राणियों में और सब भूत-प्राणियों को आत्मा में देखता है उससे वह (परमात्मा) नहीं छिपता। *—उपनिषद्*

×

जो सम्पूर्ण भूतों में परमात्मा को और परमात्मा में सम्पूर्ण भूतों को देखता है उससे परमात्मा अदृश्य नहीं होते और वह परमात्मा से अदृश्य नहीं होता।

—श्रीमद्‌भगवद्‌गीता

×

इच्छा का त्याग करने वाले को घर छोड़ने की क्या आवश्यकता है? और इच्छा के बन्धन में रहने वाले को वन-गमन से क्या लाभ है? सच्चे त्यागी का निवासस्थान ही वन तथा भजन ही कन्दरा है। *—महाभारत*

×

प्रत्येक मनुष्य के साथ भलाई करो, किसी के साथ बुराई मत करो। यदि तुम्हारे साथ कोई बुराई करता है तो उसकी ज़िम्मेदारी उस पर है। तुम अपना मन कलुषित कर कर्त्तव्य से न हटो। *—मारकस आरेलियस*

×

"कितने ही मनुष्य माता-पिता की सेवा का अर्थ केवल उनका भरण-पोषण करना समझते हैं, परन्तु भरण-पोषण तो अपने कुत्ते और घोड़े का भी किया जाता है। भक्ति नहीं है तो इन दोनों में अन्तर ही क्या है? भक्ति बिना किया गया भरण-पोषण सच्ची सेवा नहीं है।" *—कनफ्यूशियस*

×

अहो सिद्धार्थता तेषां येषां सन्तीह पाणयः।
अतीव स्पृहये तेषां येषां सन्तीह पाणयः॥
पणिमद्भ्यः स्पृहास्माकं यथा तव धनस्य वै।
न पाणिलाभादधिको लाभः कश्चन विद्यते॥

—*महाभारत, शान्ति पर्व* 18.0.11.12

(अहो, जिनके हाथ हैं वे सिद्धार्थ हो जाते हैं। इसलिये मैं तीव्र कामना करता हूँ ऐसा प्राणी बनने की जिसके हाथ हैं। जैसे तुम धन की स्पृहा करते हो वैसे हम हाथों की कामना करते हैं। हाथों को पाने से अधिक कोई भी लाभदायक उपलब्धि संसार में नहीं है।)

×

न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।

×

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिनैर्गुणः॥ —*गीता*, III, 5

कोई भी एक क्षण के लिये बिना कर्म किए नहीं रह सकता, प्रकृति से उत्पन्न गुणों के कारण हर कोई अवश होकर कार्य करने को बाध्य होता है।

×

आनँद सिन्धु मध्य तव बासा।
बिन जाने कत मरसि पिआसा॥

×

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोक्षाणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥

—*शंकराचार्यः 'परा पूजा स्तोत्रम'* में शिवमानस पूजा

भगवान् शिव आत्मा हैं, मति गिरिजा हैं, शरीर रूपी घर में प्राण सहचर हैं। जो किया जाता है वह तेरी पूजा है, नींद समाधि की स्थिति है। सारा चलन (movement) प्रदक्षिणा है, जो वाणी से बोलते हैं सब स्तोत्र हैं। इस अखिल विश्व में जो-जो कर्म हम करते हैं, वह तेरी आराधना है।

×

पानी विच मीन पियासी रे।
मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी रे॥
आतम ज्ञान बिना सब सूना।
क्या मथुरा, क्या कासी रे॥ —*कबीर*

×

बिसर गई सब बात पराई।
जब ते साधु संगति हम पाई॥
ना कोई बैरी, नाहि बेगाना।
सकल संग हमारी बनि आई॥ *—गुरु नानक*

×

"दुर्लंघ्य मार्गों को लांघो, क्रोध को अक्रोध से, असत्य को सत्य से जीतो।"

—सामवेद, अरण्यगान, अर्कपर्व

×

"सत्य ही जीतता है, झूठ नहीं। सत्य का ही वह मार्ग है, जिस पर देव अर्थात् विद्वान लोग चलते हैं। इसी मार्ग पर चलकर, अपनी सब कामनाओं को पूर्ण कर चुकने वाले ऋषि उस ब्रह्म में लीन होकर मुक्त हो जाते हैं, जो सत्य का परम विधान है।" *—मुण्डकोपनिषद् मुंडक ३, खंड, वाक्य ६*

"वाणी के पाप चार हैं : झूठ बोलना, परनिंदा करना, गाली देना, और निष्प्रयोजन बकवास करना।" *—बौद्ध धर्म की एक शिक्षा*

×

"जब शिष्य यज्ञोपवीत धारण करके वेद पढ़ना आरम्भ करता है, तब आचार्य उसे पहला उपदेश यह देता है : सत्य बोलो। धर्म पर चलो। सत्य से कभी विचलित न हो।" *—तैत्तिरीयोपनिषद्*, शिक्षावल्ली, ग्यारहवां अनुवाक, वाक्य 1

"ब्रह्म सनातन सत्य है, अप्रमेय ज्ञान है।"

—तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मवल्ली, प्रथम अनुवाक, वाक्य 1

"वाणी सत्य में ही प्रतिष्ठित होती है। यह सब सत्य में प्रतिष्ठित है। इसी कारण, विद्वान सत्य को ही सबसे ऊँचा बताते हैं।" *—महानारायणोपनिषद्* २७,१

×

"प्रकृति के नियमों में ही सत्य का प्रकाश होता है। सब सद्‌गुण सत्य के और सब अवगुण असत्य के रूप हैं। भीष्म ने महाभारत में उनका वर्णन इस प्रकार किया है: सत्य-परायणता, न्यायवर्तिता, आत्मसंयम, आडम्बरहीनता, क्षमा, नम्रता, सहिष्णुता, अनुसूया, दाक्षिण्य, परोपकार, आत्मजय, दया और अहिंसा, ये तेरहों सत्य के रूप हैं।"

—शांतिपर्व

×

वो मिलता है, है जुस्तजू जिनको उसकी
जो सब ग़रज अपनी भुलाए हुए हैं।

×

जो वाक़िफ़े-राज़ होता है वो कुछ कह नहीं सकता;
दहाँ पर मोहर लगती है हक़ीक़त की खबर होकर।

×

तू दिल में तो आता है समझ में नहीं आता।
बस जान गया कि तेरी पहचान यही है।

×

वो जब भी ज़रा रूठे, चुप बैठे रहे हम भी।
इक बार मना लेते, वो रोज़ ख़फ़ा होते।

×

मूँह मुँडाये तीन गुण, मिटै मूँड की खाज।
खाने को लड्डुआ मिलैं, लोग कहैं महाराज॥

×

"देह को जो आपा कर माना। ऐसी निश्चय तुच्छ बखाना॥"
जाने सत्य जो अपनी देहा। बन्धन को कारण है ये हा॥

×

जिसका मन दुःखों की प्राप्ति में उद्वेगरहित है, सुखों की प्राप्ति में जिसकी स्पृहा दूर हो गई है दथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गए हैं— ऐसे मुनि को स्थिरबुद्धि कहा जाता है। *—गीता*

×

आगे पीछे हरि खड़े, जब माँगूँ तब देय।

×

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वज पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहूँ रिपु ताकें॥

—रा० च० मा० 6|79|4-11

शौर्य और धैर्य रथ के दो पहिए हैं। सत्य और शील इसके ध्वज और पताका हैं। बल, विवेक, दम और परहित चार घोड़े हैं जिन पर नियन्त्रण क्षमा, कृपा और समता तीन लगामों से होता है। ईश का स्मरण इस रथ का सारथी है। वैराग्य रथी की ढाल है और सन्तोष तलवार है। दान परशु है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति (अस्त्र का नाम) है। बोध कठोर धनुष है। निर्मल और स्थिर मन तूणीर के समान हैं जिसमें शम, यम और नियम विविध बाण हैं। ब्रह्मनिष्ठ गुरू के वचनों पर श्रद्धा अभेद्य कवच है। इनके समान शत्रु पर विजय पाने का अन्य कोई उपाय नहीं है। यह धर्मरूपी रथ जिसके पास है उसे कोई नहीं जीत सकता।

×

"बहु बन्धन से बाँधिया, एक बेचारा जीव।
जीव बेचारा क्या करे, जो न छोड़ावे पीव॥"

×

आपा मेटे हरि भजै, तन-मन तजै विकार।
निर्वैरी सब जीव सों, 'दादू' यह मत सार॥

×

शरीर को मानो खेत,
शुभ कर्मों के बोओ बीज,
ईश्वर-नाम से करो सिंचाई,
हृदय को बनाओ किसान तब
तेरे हृदय में ईश्वर अंकुरित होगा और
फिर तुझे निर्वाण पद की फसल मिलेगी। —नानक

×

वे जो सत्य को व्रत मानते हैं, सन्तोष को तीर्थ; ईश्वरीय ज्ञान और ध्यान को, दया को ईश्वर की प्रतिमा और क्षमा को जपमाला, वे सर्वाधिक ईश्वरीय कृपाप्रसाद पाते हैं। —नानक

×

जब तुम रोते हो अपने दुखों को ढोते हो।
जब तुम मुस्काते हो दुखों को अनुकूल बनाते हो।
जब तुम हँसते-हँसाते हो, दुखों को दूर भगाते हो।

×

प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देय लै जाय॥

×

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तिल ताल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥

×

करूँ मैं दुश्मनी किससे अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी अदावत की॥

×

कूचा ए जानां कि मिलती थी न राह।
बन्द की आँखें तो रास्ता खुल गया॥ —नसीम लखनवी

×

मैं मेरे की जेवरी, गल बँध्यो संसार।
दास कबीरा क्यों बँधे, जाके आप अधार॥

×

अत्तुं वांछति शाम्भवो गणपतेराखुं क्षुधार्तः फणी,
तं च क्रौंचरिपोः शिखी गिरसुतासिंहोऽपि नागाशनम्।
इत्थं यत्र परिग्रहस्य घटना शम्भोरपि स्याद्गृहे,
तत्रान्यस्य कथं न भावि जगतो यस्मात्स्वरूपं हि तत्॥

शिवजी का भूखा साँप गणेश के चूहे को खाना चाहता है, कार्तिकेय का मोर उस साँप को निगल जाना चाहता है, और उधर साँप को खा जाने वाले मोर को पार्वती का सिंह खाना चाहता है।

यदि शिवजी के घर में ही यह हालत है, तो फिर दूसरे के यहाँ का क्या पूछना? संसार का स्वरूप ही ऐसा है।

×

जब तक था अपना होश वो रहते थे दूर-दूर।
अब आ गए करीब तो अपना पता नहीं। —*शहरयार 'परवाज़'*

×

चाह गई चिन्ता गई मनुआ बेपरवाह।
जिसको कछु न चाहिये सो जग शाहनशाह॥

×

विवाह एक कैंची के समान है। उसके दोनों भाग ऐसे जुड़े होते हैं कि अलग नहीं हो सकते।

×

भजन और योग साधन से स्वर्ग, मुक्ति और लाभ मिल सकते हैं पर शान्ति और संतोष पाने के लिये सेवा धर्म अपनाये बिना काम नहीं चलेगा।

×

बूँद बूँद से घड़ा भरता है। सद्गुणों की सम्पदा संग्रह करने के लिए दत्तचित्त और प्रयत्नशील रहने वाले मनुष्य एक दिन महामानवों का स्तर प्राप्त करते हैं।

×

विजेता आतंक जमाता है। ज्ञानी का हम आदर करते हैं। लेकिन उदार हमारा अन्तःकरण छूता है।

×

सम्मान सब का करो किन्तु विश्वास केवल उनका जो प्रामाणिकता की कसौटी पर अनेक बार परखे जा चुके हों।

×

प्रगतिशील जीवन केवल वे ही जी सकते हैं जिनके हृदय में कोमलता, मस्तिष्क में तीक्ष्णता, रक्त में उष्णता और स्वभाव में दृढ़ता का समुचित समावेश कर लिया गया है।

×

बुद्धिमत्ता किसी को भी उत्तराधिकार या उपहार के रूप में नहीं मिली है। उसे प्रयत्नपूर्वक बुद्धिमानों के सहचरत्व से अर्जित करना पड़ता है।

×

आपके क़दम प्रकाश की ओर उठें तो छाया पीछे चलेगी किन्तु यदि छाया को पकड़ने की कोशिश की तो वह हाथ आना तो दूर तेज़ी से और दूर भागती जायेगी।

×

कर्म करो, फल की आशा न करो, फल ज़रूर मिलेगा। कर्म करना तुम्हारा काम है फल और कोई देता है।

×

मूर्ख तथा विद्वान में अंतर स्पष्ट करते हुए उन्होंने इतनी सी बात कही—विद्वान मूर्ख रह चुका है, किंतु मूर्ख को विद्वान रहने का अनुभव नहीं।

×

ज्योति कब तम हुई, ये पता न चला,
कब खुशी ग़म हुई, ये पता न चला।
आप की याद में, इस तरह डूबे हम,
आँख कब नम हुई, पता न चला॥ —*शम्भू सिंह मनहर*

×

वो जब होते हैं नज़रों से दूर,
फिर कहीं रोशनी नहीं होती।
राहें नज़र आती हैं हज़ार
पर कोई मंज़िल नहीं होती॥

×

वह सभा नहीं जिसमें वृद्ध न हों; वे वृद्ध नहीं जो धर्म की बात न कहें; वह धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो; और वह सत्य नहीं जो निश्छल न हो। —*संस्कृत-सूक्ति*

×

बिजली नहीं हूँ जो क्षण में चली जाए,
न हूँ वह कहानी जो ख़त्म हो जाए।
मैं हूँ सागर की वह हल्की सी लहर,
अगर कोई साथ दे तो तूफां बन जाए।.

×

बचपन में लोग
मेरी तस्वीर मांगते थे
घर सजाने के लिये,
दौरे जवानी में
हसीनाओं ने तस्वीरें लीं
दिल बहलाने के लिये,
अब बुढ़ापा है,

लोग तस्वीर मांगते हैं
बच्चों को डराने के लिये ॥ —*सैयद आबिद रज़ा नदीम*

×

प्र० : ज़ाहिद शराब पीने दे मस्ज़िद में बैठ कर
या वो जगह बता दे जहाँ ख़ुदा न हो।
उ० : साक़ी शराब पी मस्ज़िद से दूर बैठकर
एक ही बोतल है कहीं खुदा न मांग ले ॥

×

मैंने खुद आगे बढ़के खंजर दिया,
अपने दुश्मन की ज़िन्दादिली देखकर।
दुश्मनों के तरीके ही अच्छे लगे मुझको,
इस ज़माने की दोस्ती देखकर ॥

×

सत्य के सिवा मुझे किसी और ईश्वर की सेवा नहीं करनी। —*गांधी*

×

'सत्य' शब्द 'सत्' से बना है। सत् का अर्थ है अस्ति। सत्य अर्थात् अस्तित्व। सत्य के बिना दूसरी किसी चीज़ की हस्ती ही नहीं है। परमेश्वर का सच्चा नाम ही 'सत्' अर्थात् 'सत्य' है। —*महात्मा गांधी*

×

पर-भाषा, पर-भाव, पर-भूषन, पर-परिधान,
पराधीन जन की अहै यह पूरी पहिचान ॥
—*वियोगी हरि* (*वीर सतसई*, तृतीय शतक, ७४)

×

संसार में किसका समय है एक सा रहता सदा,
है निशि-दिवा-सी घूमती सर्वत्र विपदा-सम्पदा।
जो आज राजा बन रहा है रंक कल होता वही,
जो आज उत्सव-मग्न है कल शोक से रोता वही ! —
—*मैथिलीशरण गुप्त* (भारत भारती)

×

परिवर्तन है प्राण प्रकृति के अविकल क्रम का।
परिवर्तन-क्रम ज्ञान मर्म है निगमागम का ॥
परिवर्तन है हीर सृष्टि के सौन्दर्यों का।
परिवर्तन है बीज विश्व के आश्चर्यों का ॥
—*श्रीधर पाठक* (भारत गीत)

×

संसार क्या है? शून्य है। और परिवर्तन उस शून्य की चाल है।
—*भगवतीचरण वर्मा* (चित्रलेखा)

×

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअहिं चारी॥
—*तुलसीदास* (रामचरिमानस)

×

खोटा खरा परखिये, दादू कसि कसि लेइ।
साँचा है सो राखिये, झूठा रहण न देइ॥
—*दादूदयाल* (दादूदयाल की वाणी)

×

जग भी अब
प्रसन्न सा लगता
मेरे मन की प्रसन्नता से। —*सुमित्रानंदन पंत* (आस्था)

×

नहीं
प्रार्थना
अभावों की चुगली,
वह
स्वयं तक पहुँचने की
सुनसान गली। —*कन्हैयालाल सेठिया* (वामन-विराट)

×

जब लगि विरह न होइतन, हिये न उपजइ पेम।
तब लगि हाथ न आव तप, करम धरम सतनेम॥
—*जायसी* (चित्ररेखा)

×

अगर यह चाहते हो कि दुख दुबारा न आये, तो फ़ौरन सुनो कि वह क्या सिखा रहा है।
—*बर्ग*

×

जो बाहरी चीज़ों के अधीन है वह सब दुख है और जो अपने अधिकार में है वह सुख है।
—*मनु*

×

धर्म का मूल विनय है; उसका परम रस-फल मोक्ष है, विनय के द्वारा ही मनुष्य बड़ी जल्दी शास्त्रज्ञान तथा कीर्ति प्राप्त करता है और अन्त में निश्रेयस् मोक्ष भी।
—*भ० महावीर*

टालमटूल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा— ये चार उन लोगों के खुशी मनाने के बजड़े हैं जिनके भाग्य में नष्ट होना बदा है। *—तिरुवल्लुवर*

×

विपत्ति वह हीरक रज है जिससे ईश्वर अपने रत्नों की पालिश करता है।

—लेटन

×

आदमी में लक्ष्मी और विवेक शायद ही कभी साथ-साथ मिलते हों।

—लिवी

बुद्धि और भावना का समन्व्य माने 'विवेक'। *—विनोबा*

×

तीव्र काम विश्राम है। हर सच्चा काम विश्राम है। *—स्वामी रामतीर्थ*

×

विश्वास के तीन लक्षण हैं— सब चीज़ों में ईश्वर को देखना, सारे काम ईश्वर की ओर नज़र रखकर ही करना, और हर-एक हालत में हाथ पसारना तो उस सर्वशक्तिमान् के आगे ही। *—जुनुन*

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है; कायरता बुरी से बुरी बुराई है। अहिंसा का मूल प्रेम में है, कायरता का घृणा में। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है; कायर सदा पीड़ा पहुँचाता है। सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है। *—गांधी*

×

सत्य केवल गम्भीर चिन्तन द्वारा आत्मा की गहराइयों में ही मिल सकता है।

—अज्ञात

×

सत्य की हमेशा विजय ही है, ऐसी जिसकी सतत श्रद्धा है उसके शब्दकोश में 'हार' शब्द ही नहीं है। *—गांधी*

×

ईश्वर उसी की सहायता करता है, जो स्वयं अपनी मदद करता है। वह आलसी पुरुष को मरने देना ही अधिक पसन्द करेगा। *—गांधी*

×

आशा को जीवन का लंगर कहा है, उसका सहारा छोड़ने से आदमी भवसागर में बह जाता है, पर बिना हाथ-पैर हिलाये केवल आशा करने से ही काम नहीं सरता।

—लुक़मान

×

कविता की एक खूबी से किसी को इन्कार न होगा। वह गद्य की अपेक्षा थोड़े शब्दों में अधिक कहती है। —*वोल्टेयर*

×

एकान्त मूर्ख के लिए क़ैदखाना है, ज्ञानी के लिए स्वर्ग। —*अज्ञात*

×

यहु ऐसा संसार है, जैसा सेंबल फूल।
दिन दस के व्यौहार को, झूठे रंग न भूलि॥
—*कबीर* (कबीर ग्रंथावली)

×

काजल केरी कोठरी, काजल ही का कोट।
बलिहारी ता दास की, जे रहै राम की ओट॥
—*कबीर* (कबीर ग्रंथावली)

हम देखत जग जात हैं, जग देखत हम जांह।
ऐसा कोई ना मिलै, पकड़ि छुड़ावै बांह॥ —*कबीर* (कबीर ग्रंथावली)

×

देखा देखी करत सब, नाहिंन तत्त्व बिचारि।
याकौ यह अनुमान है, भेड़ चाल संसार। —वृन्द (वृन्द सतसई)

×

यह जग काँचो काँच सो, मैं समुझ्यो निरधार।
प्रतिबिंबित लखिये जहाँ, एकै रूप अपार॥ —*बिहारी* (बिहारी सतसई)

×

आदि में छिप जाता अवसान्,
अन्त में बनता दिव्य विधान,
सूत्र ही है क्या यह संसार,
गुँथ जिस में सुख दुख जय हार? —*महादेवी वर्मा* (रश्मि)

×

यही तो है जग का कम्पन
अचलता में सुस्पन्दित प्राण
अहंकृति में झंकृति-जीवन
सरस अभिराम पतन-उत्थान। —*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* (परिमल)

×

विश्व है असि का?
नहीं, संकल्प का है। —*माखनलाल चतुर्वेदी* (हिमकिरीटिनी)

×

शहद भरी मुस्कान सभी घर रख आते हैं,
बाहर आते हैं लेकर फीकी मुसकानें।
यह शहरी सभ्यता बड़ी अदभुत है भाई,
अनजाने से लगते सब जाने पहचाने।

—*देवराज दिनेश* (भारत मां की लोरी)

×

लोभ पाप का बीज है, रस व्याधि का बाप।
राग कैद का बीज तज, तीन सुखी हो आप।

—*गिरिधर कविराय* (कुंडलिया)

×

कह 'गिरिधर कविराय' सुखी सो कैसे होवै।
तृष्णा राग अरु द्वेष ईर्ष्या मत्सर बोवै॥

—*गिरिधर कविराय* (कुंडलिया)

अश्रु पी-पीकर खिली जो
वह अधर मुसकान हूँ मैं
जानकर अनजान हूँ
भूली हुई पहचान हूँ मैं।

—*सोहनलाल द्विवेदी* (चित्रा)

×

वेदना विकल फिर आई,
मेरी चौदहों भुवन में
सुख कहीं न दिया दिखाई
विश्राम कहाँ जीवन में?

—*जयशंकर प्रसाद* (आँसू)

×

वैर की यथार्थ शुद्धि वैर नहीं प्रेम है,
और इस विश्व का इसी में छिपा क्षेम है।

—*मैथिलीशरण गुप्त* (जयभारत)

ठोकरें खा जो कि मुँह के बल गिरे,
हैं उन्हें उसने समय पर बल दिया।
धर्म ने ही भर रगों में बिजलियाँ,
कायरों का दूर कायरपन किया॥

—*अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'* (चुभते चौपदे)

×

विकसते मुरझाने को फूल
उदय होता छिपने को चन्द,

शून्य होने को मरते मेघ,
दीप जलता होने को मन्द,
यहाँ किसका अनन्त यौवन?
अरे अस्थिर छोटे जीवन! —*महादेवी वर्मा* (नीहार)

×

ज़िन्दगी का नहीं दुनियां में भरोसा इक आन।
आज वह उठ गये करते थे जो कल का सामान॥
—*ब्रजनारायण 'चकबस्त'* (सुबह वतन)

×

हमारी तीन जन्मभूमियाँ हैं और तीनों एक-दूसरे से मिली हुई हैं। पहली जन्म-भूमि है पृथ्वी— मनुष्य का वासस्थान पृथ्वी पर सर्वत्र है। मनुष्य का द्वितीय वासस्थान है स्मृतिजगत्। अतीत से पूर्वजों का इतिहास लेकर वह काल का नीड़ तैयार करता है— यह नीड़ स्मृति की ही रचना है। स्मृतिजगत् में मानव-मात्र का मिलन होता है। उसका तृतीय वास स्थान है आत्मलोक— इसे हम मानवचित्त का महादेश कह सकते हैं। यही चित्त-लोक मनुष्यों के आन्तरिक योग का क्षेत्र है।

—*रवीन्द्रनाथ ठाकुर* (रवीन्द्रनाथ के निबन्ध)

×

तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है!
जा रहे जिस पंथ से युग कल्प उसका छोर क्या है?
—*महादेवी वर्मा* (यामा)

×

स्वयं अपने ही भीतर
विरोधी सृष्टियाँ सोयी हैं। —*नरेश मेहता* (संशय की एक रात)

×

रहस्य से शून्य एक पत्र है।
न विश्व में व्यर्थ बना तृणेक है॥
—*अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'* (प्रिय-प्रवास)

×

उस अजन्मे अमर्त्य महाकाल को
न जन्म से
न मृत्यु से
न सम्बन्धों से
योजित या विभाजित किया जा सकता।
उस महानियम के निकट
हम केवल कर्म के क्षण हैं। —*नरेश मेहता* (संशय की एक रात)

×

शोक के समान हम हर्ष में भी रोते हैं,
अश्रु तीर्थ में ही सुख-दुख एक होते हैं।

—*मैथिलीशरण गुप्त* (यशोधरा)

×

मनुज में शक्ति मनुज में भक्ति,
जनार्दन का जन है अवतार।
वही जन यदि ले मन में ठान,
ध्वस्त हो जाये अत्याचार॥ —*बलदेव प्रसाद मिश्र* (साकेत-सन्त)

×

फ़िर्क़ाबन्दी है कहीं और कई ज़ाते हैं
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं? —*इक़बाल*

×

क्या थे अहले-हिन्द यह चर्खे-कुहन से पूछ लो
या हिमालय की गुफाओं के दहन से पूछ लो
अपना अफ़साना लबे-गंगोजमन से पूछ लो
पूछ लो, हर ज़र्रए-खाक़े-वतन से पूछ लो।
अपने मुँह से क्या बतायें हम कि क्या वे लोग थे
नफ़्शकुश नेकी के पुतले थे, मुजस्सिम योग थे।

—*महाराज बहादुर 'बर्क़' देहलवी*

×

पासबाँ जिनके मौत से भी लड़े
वोह उजड़ जायें बाग़ नामुमकिन
खून जलता हो जिनमें वीरों का
बुझ सकें वोह चिराग़ नामुमकिन। —*नूर कोहिली*

×

आकाश-जाल सब ओर तना।
रवि तन्तुवाय है आज बना॥
करता है पद-प्रहार वही।
मक्खी-सी भिन्ना रही मही॥

×

बिन्दु सिन्धु? बूंदों का वारिधि
बूंदों पर अवलम्बित।
व्यक्ति समाज? व्यक्ति में रहता
अखिल उदधि अन्तर्हित।

सागर की असीमता जड़ है,
जन-समाज की जीवित।
सृजन शक्ति का दूत व्यक्ति
करता समाज को विकसित॥

×

क्या यह सामाजिक संघर्षण केवल रे मानव का जीवन?
सुन्दरता आनन्द प्रेम के स्वप्न चिरन्तन क्या केवल प्रभात
के उडुगण रिक्त शरद् घन?
क्या यह उचित कि यह सामाजिक साधारणता मूल्य
व्यक्ति का करे नियंत्रित ?
जंगम जीवन ज्वर की जड़ता करे मनुज आत्मा मर्यादित?

×

अपने युग को हीन समझना आत्महीनता होगी।
सजग रहो, इससे दुर्बलता और दीनता होगी॥
जिस युग में हम हुए वही तो अपने लिए बड़ा है।
अहा, हमारे आगे कितना कर्म क्षेत्र पड़ा है॥

—*मैथिलीशरण गुप्त* (द्वापर)

×

तुम हो महान्,
तुम सदा हो महान्,
है नश्वर यह दीन भाव,
कायरता, कामपरता,
ब्रह्म हो तुम,
पदरज भर भी है नहीं,
पूरा यह विश्व भार—
जागो फिर एक बार।

—*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* (अपरा)

×

वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान;
उमड़कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान!

—*सुमित्रानन्दन पन्त* (पल्लव, आँसू)

×

जब लिखने के लिये लिखा जाता है तब जो कुछ लिखा जाता है उसका नाम है गद्य, पर जब लिखे बिना न रहा जाए और जो खुद लिख-लिख जाए उसका नाम है कविता। —नीरज (दर्द दिया है)

×

जैसे कर्म, लहौ फल तैसे। —*सूरदास* (सूरसागर)

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय॥

—*रहीम* (दोहावली)

कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराइ जग, या पाये बौराय॥

×

सुना है संगदिल की आँखों से आँसू नहीं बहते,
अगर सच है तो फिर पत्थर से चश्मे क्यों निकलते हैं?

×

दामन बचाके मुश्किले ग़म से गुज़र गया,
उठ उठ के देखती रही ग़र्दे सफ़र मुझे।

×

पाप में फँस जाना मनुष्य का सा काम है,
पाप में रमे रहना शैतान का सा काम है,
पाप के लिये खेद प्रकट करना देवता का सा काम है,
पाप को छोड़ देना ईश्वर का सा काम है।

×

ग्यारह वर्ष, की आयु— मेरे पिता के क्या कहने! वे हर चीज़ को जानते हैं।

सोलह वर्ष की आयु— सचमुच मेरे माता-पिता उतने बुद्धिमान नहीं हैं जितना मैं सोचा करता था। वे हर चीज़ को नहीं जानते।

उन्नीस वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता यह सोचते हैं कि वे हमेशा ठीक कहते हैं, लेकिन जितना मैं अभी तक जान पाया हूँ वे उससे भी कम जानते हैं।

×

बाइस वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता युवक-युवतियों को नहीं समझ सकते। नई पीढ़ी के समान कोई चीज़ उनके पास नहीं।

×

पैंतीस वर्ष की आयु— सच बात यह है कि मेरे माता-पिता कई बातों में ठीक थे।

×

पचास वर्ष की आयु— मेरे माता-पिता कितने शानदार मनुष्य थे। उनका साफ़ दिमाग़ था और वे ठीक समय पर आवश्यक काम करते थे। मेरे प्यारे माता-पिता !

×

जो ज़हर हलाहल है अमृत भी वही लेकिन
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ ही पीने के।

×

हम शैशव के मीठे विचार,
हम यौवन की मीठी खुमार,
हम जीवन के विक्रम अपार।

×

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात॥

×

मेरे मन में यह उठा भाव,
यदि आज सुखों का हुआ अंत।
तो यह पतझड़ भी कभी अन्त
पायेगा, आयेगा बसंत॥

×

"हीरा सबसे कठोर पदार्थ क्यों माना जाता है?"
"क्योंकि वह महिलाओं पर भी छाप डालने में समर्थ होता है।"

×

मनुज जीवन में जय के लिये, प्रथम ही दृढ़ पौरुष चाहिये।
विजय तो पुरुषार्थ बिना कहाँ, कठिन है चिर जीवन भी यहाँ।
भय नहीं भव सिन्धु तरो उठो, पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो॥

×

शील त्याग नर वृथा, धर्म का अभिलाषी है।
अपना अन्तःकरण, सत्य इसका साखी है॥
कपट, क्रोध, अभिमान, न हिय से जिनके छूटा।
पुण्य उन्होंने कौन, जगत् में आकर लूटा॥

×

सुधा-पान तो करते सब ही,
गरल-पान केवल शंकर ही !

×

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये;
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे;
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

×

पौरुष कभी तटस्थ न रहता,
करता वह संग्राम सदा ही।

×

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥

×

क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ॥

×

मेरा दीपक दोनों सिरों से जल रहा है,
वह पूरी रात्रि नहीं जल पायगा।
फिर भी, ओह! मेरे शत्रुओ और मित्रो!
यह कितना सुन्दर प्रकाश दे रहा है!

×

करगस सम दुर्जन वचन
रहे सन्त जन टारि।
बिजुरी परे समुद्र में
कहा सकैगी जारि॥

×

उदये सविता रक्तः रक्तश्चास्तमनेऽपि च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

×

है धर्म बस निःस्वार्थता ही, प्रेम जिसका मूल है,
भूले हुए हैं हम इसे, कैसी हमारी भूल है?

—*मैथिलीशरण गुप्त* (भारत-भारती)

×

हिन्दु ध्यावै देहरा मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावै परम पद जहां देहुरा न मसीत॥

—*गोरखनाथ* (गोरखबानी)

×

मन को मारि मुँदो नव द्वारी, जीतो पाँचों नारी।
परम तत्त निरंकार ध्यान धरि, बहुरि नहीं अवतारी॥
—*बुल्ला साहेब* (बुल्ला साहेब का शब्दसार)

×

बुरो प्रीति को पंथु, बुरो जंगल को बासो।
बुरो नारि को नेह, बुरो मूरख सों हाँसो॥
बुरी सूम की सेब, बुरो भगिनी घर भाई।
बुरी कुलच्छनि नारि, सास घर बुरो जमाई॥
बुरा पेट पप्पाल है, बुरो जुद्ध तें भागनो॥
गंग कहै अकबर सुनो, सबतै बुरो है माँगनो॥ —*गंग* (गंग कवित्त)

×

नर-जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम-संचित सब फल। —*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* (अपरा)

×

श्रद्धा का घृत,
ज्ञान की बाती,
कर्म की ज्योति,
यही है दीक्षा का मंगल दीप,
जिसकी स्वर्णिम आभा से
हो जाता तमसावृत अन्तर,
ज्योतिर्मय अक्षय अजरामर!
—*अमर मुनि* (सागर, नौका और नाविक)

दीक्षा
असत् से सत् की ओर,
तमस से आलोक की ओर
मृत्यु से अमरत्व की ओर
अग्रसर होने वाली
एक अखण्ड ज्योतिर्मय
जीवन यात्रा! —*अमर मुनि* (सागर, नौका और नाविक)

×

दुख सबको माँजता है
और—
चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने,
किन्तु जिनको माँजता है
उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें। —*अज्ञेय* (पूर्वा)

×

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मेरा॥ —*कबीर* (कबीर-ग्रन्थावली)

×

ज़िन्दगी मौत की तैयारी है।

—*महात्मा गाँधी* (महादेव भाई की डायरी)

×

मुझसे यदि कोई पूछे कि जीवन किसे कहते हैं तो मैं उसकी व्याख्या करूँ—संस्कार-संचय।

—*विनोबा* (गीता प्रवचन)

×

हमारा यह जीवन निरन्तर सफर है।
जो मंज़िल पै पहुँचे तो मंज़िल बढ़ा दी।

—*वृन्दावनलाल वर्मा* (अमरबेल)

×

क्षण भर को थोड़ा न समझ
यदि वह है गौरव का क्षण।
व्यर्थ हुआ मुर्दों सा पाया
यदि तुमने लम्बा जीवन। —*आरसीप्रसाद सिंह* (आरसी)

×

सिद्धि से पहले कभी जो बीच में रुकते नहीं,
जो कभी दबकर किसी के सामने झुकते नहीं,
जो हिमालय से अटल हैं सत्य पर, हिलते नहीं,
आग पर चलते हुए भी जो चरण जलते नहीं,
उन पगों के रजकणों का नाम केवल ज़िन्दगी।

—*रामावतार त्यागी* (आज के लोकप्रिय कवि)

×

जब मैं ने प्रेम किया तब मुझे लगा कि जीवन आकर्षण है,
जब मैंने भक्ति की तब मुझे आभास हुआ कि जीवन समर्पण है,
किन्तु जब मैंने सेवा-व्रत लिया तब
मुझे पता चला कि जीवन सबसे पहले सर्जन है।

—*नीरज* (दर्द दिया है)

×

'रहिमन' चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै बेर॥ —*रहीम* (दोहावली)

निर्मोह काल के काले पट पर कुछ अस्फुट लेखा।
सब लिखी पड़ी रह जाती सुख-दुखमय जीवन रेखा॥
—*जयशंकर प्रसाद* (आँसू)

×

हा दैव! अब वे दिन कहाँ हैं और वे रातें कहाँ?
हैं काल की घातें कि कल की आज हैं बातें कहाँ?
क्या थे तथा अब क्या हुए हम जानता बस काल है,
भगवान जाने, काल की कैसी निराली चाल है!
—*मैथिलीशरण गुप्त* (भारत-भारती)

×

डूबे न देखो नाव अपनी है पड़ी मँझधार में,
होगा सहायक कर्म का पतवार ही उद्धार में॥
—*मैथिलीशरण गुप्त* (भारत-भारती)

×

कथनी और करनी में आदि और अन्त का अन्तर है।
—*प्रेमचन्द* (गुप्तधन, भाग-१)

×

कबीर माला काठ की, कहि समझावे तोहि।
मन न फिरावै आपणा, कहा फिरावै मोहि॥
—*कबीर* (कबीर-ग्रन्थावली)

×

जो पहले कीजै जतन, सो पीछे फलदाय।
आग लगे खोदै कुआँ, कैसे आग बुझाय॥
—*वृन्द* (वृन्द सतसई)

×

प्रभु ने दो-दो कर दिये करो कमाई आप;
पराधीनता-सम नहीं और दूसरा पाप।
—*मैथिलीशरण गुप्त* (काबा और कर्बला)

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुँज और वन में।
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में॥
—*रामनरेश त्रिपाठी* (मानसी)

×

ज्ञान, उपासना और कर्म— ईश्वर प्राप्ति के तीन अलग मार्ग नहीं हैं, बल्कि ये तीनों मिलकर एक मार्ग है। उसके तीन भाग सुविधा के लिए कर दिये गए हैं।

—*महात्मा गाँधी* (सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय, खण्ड ४९)

×

करा कर सौ-सौ से उद्योग।
एक ही करता है सब भोग॥
यंत्र जीते हैं मरते लोग।
फैलते हैं नित नूतन रोग॥

×

बड़े वेतन भी आज समेट
नहीं भरते भूखों के पेट।
चाहिये ऊपर की कुछ भेंट
उसी को तो सब चोट-चपेट॥

×

संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया। —*मैथिलीशरण गुप्त*

×

किस तरह इसको निकालूं रूह से,
अकल का कांटा बहुत बारीक है। —*अदम*

×

जिसने इस दौर के इंसान किए हैं पैदा
वही मेरा भी ख़ुदा हो, मुझे मंज़ूर नहीं। —*हफीज जलंधरी*

×

सब कोई को होता है कर्म शुभाशुभ दोय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोय॥

×

मेरी चाही मत करो, मैं मूरख अग्यान।
तेरी चाही में प्रभो, है मेरा कल्यान॥

×

हमें भी आ पड़ा है दोस्तों से काम कुछ यानी
हमारे दोस्तों के बेवफ़ा होने का समय आया।

—*प० हरिचन्द 'अख़्तर'*

×

मौहब्बत के लिये कुछ खास दिल मखसूस होते हैं
ये वो नगमा है जो हर साज़ पर गाया नहीं जाता।

[1] विशिष्ट — 'मखमूर' देहलवी

×

रंज का खूगर हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसां हो गईं।

[1] अभ्यस्त — *—गालिब*

×

अलकिस्सा क्या कहूँ कि ये है
धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का। *—सौदा*

×

सर सूखे पंछी उड़ै और सरन समाय।
दीन मीन बिन पच्छ के कहु रहीम कहं जाए॥

×

चाह गई चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए वे शाहन के शाह॥ —स्वामी रामतीर्थ

×

मेहरबाँ होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि फिर आ भी न सकूँ। *—ग़ालिब*

×

दोस्त मिलते हैं तो कतराकर गुज़र जाते हैं।
हमने क्या आईना हाथों में उठा रखा है। *—अहमद फ़राज़*

×

सुनते हैं कि अपने ही थे घर लूटने वाले
अच्छा हुआ मैंने यह तमाशा नहीं देखा। *—आरिफा शबनम*

×

मुझे फ़िक्रे जहाँ क्यों हो?
जहाँ तेरा है या मेरा? *—इकबाल*

×

बक रहा हूँ जुनूँ में क्या-क्या कुछ
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई। *—ग़ालिब*

×

The end of wisdom is freedom;
The end of culture is perfection;
The end of knowledge is love;
The end of education is character.

—Sathya Sai Baba

When there is righteouness in the heart,
There is beauty in the character
When there is beauty in the character
There is harmony in the home.
When there is harmony in the home,
There is order in the nation.
When there is order in the nation,
There is peace in the world. — *Sathya Sai Baba*

×

दिल नाउम्मीद तो नहीं, नाकाम ही तो है।
लम्बी है गम की शाम, मगर शाम ही तो है॥ —*फ़ैज़*

×

दौलत मिली है इश्क की अब और क्या मिले,
वह चीज़ मिल गई है जिससे खुदा मिले। —*एक सूफी सन्त*

×

आइना देखकर तसल्ली हुई।
हम को इस घर में जानता है कोई। —*गुलज़ार*

×

रहिमन देखि बड़ेन कूँ, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि॥

×

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।

×

खोया कहे सो बावरा, पाया कहे सो कूर।
पाया खोया कुछ नहीं, ज्यों-का-त्यों भरपूर॥

×

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

×

किस्मत था लिखा मुझको मिलेगा मेरे आक़ा
वो दीजिये जो मेरे मुक़द्दर में न हो।

×

आदमी की ज़िन्दगी से उकता कर
एक दिन मुझे परमेश्वर बनने की सूझी
और मैं परमेश्वर बन गया।
लेकिन कौन पहचानता मुझे
जहाँ आदमी आदमी को नहीं पहचानता
वहाँ मुझे कौन पहचानेगा?
—*मराठी कवि रवि कुरसंगे*

अद्भुत किन्तु सत्य

अद्‌भुत किन्तु सत्य

भुलक्कड़ जीनियस

प्रोफेसर आर्नल्ड टॉयनबी के, जिन्हें अपनी अविस्मरणीय पुस्तक 'स्टडी ऑफ हिस्ट्री' लिखने में तीस साल लगे थे, दिमाग में पुराने लोगों के बारे में असंख्य तथ्य याद थे। लेकिन अपने दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में वे बड़े भुलक्कड़ थे। एक बार उन्हें किसी प्रमुख लंच पर जाना था जहाँ वे अच्छे से अच्छा दीखना चाहते थे। लेकिन जब वह चैथम हाउस में पहुँचे तो पतलून दूसरे सूट की थी और जाकेट दूसरे सूट की। उनकी पत्नी ने हाथ मलते हुए कहा, "इनसे मात खाई। मुझे दुबारा इन्हें कपड़े बदलने घर भेजना पड़ा।"

जब वे चाय बनाते थे तो उन्हें यह नहीं मालूम कि पहले पानी डालना चाहिये या चाय की पत्तियाँ— और वे भी कितनी। कुछ दिन हुए उनके गुसलखाने के नल की टोंटी टूट कर उनके हाथ में आ गई। गरम उबलता पानी फर फर गिरता रहा और वे बुद्धू बने ताकते रहे। उनकी समझ में नहीं आया, क्या करूँ।

बहुधा यह हाल सब प्रतिभाशाली व्यक्तियों का होता है। जिस कार्य में वे लगे रहते हैं उस पर उनका ध्यान केन्द्रित होता है। छोटी छोटी बातें उनकी दृष्टि से भागती रहती हैं।

यही हाल डाक्टर जूलियन और अल्डुअस हक्सले के दादा प्रसिद्ध वैज्ञानिक टॉमस हक्सले का था। एक बार वे नाई की दुकान पर बैठे हजामत बनवा रहे थे कि किसी समस्या में खो गये। हजामत बनवाने के बाद भी वे कुर्सी पर बैठे रहे। नाई उनका जानने वाला था। उसने सोचा कि वे ऊंघ गये हैं। पाँच मिनट के बाद उसने उनका कंधा थपथपाया और धीरे से कहा, "सर, सो गये क्या?"

हक्सले ने उत्तर दिया, "नहीं बिल्कुल नहीं। बात यह है मुझे दूर का दिखाई नहीं देता। यहाँ जब मैं चश्मा उतार कर कुर्सी पर बैठा तो सामने के शीशे में मुझे अपना प्रतिबिम्ब नहीं दिखाई दिया और मैंने समझा कि मैं अपने घर पर बैठा हूँ।"

हक्सले बहुधा अपने भेंट के समय और स्थान को भूल जाते थे। एक बार वे यूस्टन में रॉयल सोसायटी में जिसके वे प्रसिद्ध फैलो थे भाषण देने के लिये पहुँचे। क्योंकि ट्रेन लेट थी, इसलिये उन्होंने प्लेटफार्म लपक कर पार किया और घोड़ा गाड़ी में छलांग लगाते हुए बोले, "तेज़ी से चलो।"

कोचवान ने घोड़ों को चाबुक जमाये और बग्घी तेज़ी से भागने लगी। तभी हक्सले को ध्यान आया कि उन्हें यह तो याद ही नहीं रहा कि उन्हें जाना कहाँ है। उन्होंने चिल्लाकर पूछा, "कोचवान, मैंने तुम्हें कहाँ चलने के लिये कहा था?"

"आपने स्थान मुझे नहीं बताया। बस तेज़ चलने को कहा था और वह आप देख लीजिये मैं कितना तेज़ गाड़ी भगा रहा हूँ।"

परन्तु एडीसन जैसा भुलक्कड़ शायद ही कोई हो। वह केवल अपने काम से मतलब रखता था। यहाँ तक कि 1871 के क्रिसमस दिवस पर मिस स्टिलवैल, जो उसकी एक फैक्टरी में काम करती थी, के साथ अपने विवाह के बाद वह अन्य कार्यक्रमों को छोड़कर चला गया, "मुझे कुछ मिनटों का काम है, उसे करके आता हूँ।"

लगभग आधी रात के समय उसका बैस्टमैन उसे ढूँढता हुआ आ पहुँचा और बोला, "टॉम, अब तुम्हें घर चले जाना चाहिये।"

"लेकिन मुझे बहुत सारा काम करना पड़ा है," एडीसन ने प्रतिवाद किया।

"आज सवेरे तुम्हारी शादी हुई है," दोस्त ने बिगड़कर कहा, "और मेरी तुम्हारी बाट देख रही है।"

एडीसन का चेहरा चमक उठा। मेज़ पर मुक्का मारते हुए वह बोला, "तुमने ठीक याद दिलाया, आज सुबह ही तो मेरी शादी हुई है।"

यही हाल अमेरिकन ड्वाइट मॉरो का था। एक दिन वह ट्रेन में पढ़ने में ध्यान-मग्न था इतने में टिकट चैकर वहाँ आया और उसने टिकट मांगा। मॉरो ने सारी जेबें उलट-पलट कर डालीं पर टिकट न मिला।

चैकर मॉरो को जानता था। उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि आपके पास टिकट है; जब आपको मिल जाये हमें दे दीजियेगा।"

"यह तो मैं जानता हूँ," घबराये हुए मॉरो ने कहा, "लेकिन मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि बिना टिकट के मुझे यह कैसे मालूम चलेगा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।"

अधिकतर विद्वान पुरुष इस बीमारी के शिकार थे। जर्मन लेखक लैसिंग सड़कों पर घन्टों तक घूमता रहा था कि वह घर से किस काम के लिये चला था। एक अंधेरी रात वह सड़कों पर घूम रहा था दिमाग में अपने काम की उधेड़बुन लिये। सहसा वह अपने घर के द्वार पर आ पहुँचा। उसने चाबी खोजी पर नहीं मिली, तब द्वार खटखटाये।

ऊपर से नये रखे गये नौकर ने नीचे झांककर देखा और अपने मालिक को न पहिचानकर बोला, "प्रोफेसर साहब घर पर नहीं हैं।"

"कोई बात नहीं," लैसिंग ने नम्रता से कहा, "मैं फिर उनसे मिलने आऊँगा।"

भुलक्कड़पने से परेशानी

न्यूयार्क पोस्ट का प्रकाशक जे० डेविड स्टर्न अक्सर टाई पहनना भूल जाता था, या घर पर घड़ी भूल जाता था, या बिना जेब में पैसे रखे टैक्सी में बैठ जाता था।

एक से अधिक बार वह पुलिस स्टेशन ले जाया गया जहाँ उसका सेक्रेटरी उसकी पहचान के लिये बुलाया जाता था। एक बार वह सड़क पर जा रहा था जब उसका एक मित्र मिल गया। मित्र ने हाथ स्टर्न की बाँह में डालकर कहा, "आओ स्टर्न, आज मेरे साथ लंच खाओ।"

"मैं तैयार हूँ पर शर्त पर कि पांस के किसी स्थान पर चलो। मैं बहुत लेट हो गया हूँ।"

वे पास के एक रेस्ट्राँ में घुसे और मेज़ पर बैठ गये। मित्र ने वेटर को इशारा करके बुलाया।

"मुझे पता नहीं मेरे साथ क्या गड़बड़ है," स्टर्न ने कहा, "मुझे बिल्कुल भूख नहीं लग रही।"

इसका कारण वेटर के आने पर पता चल गया। वह स्टर्न से बोला, "माफ करें, श्रीमान्। अभी पाँच मिनट हुए तो आप अपना भोजन निमटा कर गये थे।"

भुलक्कड़ जनरल

सेना के व्यक्ति भुलक्कड़ नहीं होते, लेकिन यूनान के जनरल मेटक्सास एक अपवाद थे। भूमध्य सागर में एक नई हवाई पट्टी का निरीक्षण करने के लिये जाते हुए उन्होंने हवाई जहाज़ स्वयं चलाना आरम्भ किया।

हवाई अड्डा दृष्टिगोचर होते ही चालक ने महसूस किया कि जनरल हवाई जहाज़ हवाई पट्टी पर उतारने वाले हैं। उसने कहा, "माफ करें, सर! हमें सागर में उतरना चाहिये। यह पानी में उतरने वाला हवाई जहाज है।"

"हाँ, हाँ क्यों नहीं," मेटक्सास हँस पड़े, "मैं भी कैसा गधा हूँ।"

उन्होंने जहाज़ बन्दरगाह की ओर मोड़ दिया और बड़ी निपुणता से उसे पानी पर उतार लिया। वे बड़े प्रसन्न हुए और चालक की ओर मुड़कर बोले, "कमाण्डर, जिस प्रकार तुमने मेरा ध्यान इस भयंकर गलती की ओर जो मैं करने जा रहा था खींचा, इसकी मैं दाद देता हूँ। मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा।"

इतना कहकर उन्होंने द्वारा खोला और सागर में पग बढ़ाया।

मकान बदल लिया

कुछ वर्ष हुए लन्दन की एक अदालत में जज ने प्रतिवादी से पूछा, "तुम्हारा कहना यह है कि तुमने भूल से पत्नी को खिड़की से बाहर फेंक दिया।"

"यॉर ऑनर, हाँ," प्रतिवादी ने माना। "पहले हम निचली मंज़िल पर रहा करते थे। और मैं बिल्कुल भूल गया कि हम दूसरे मकान में चले आये हैं।"

पाइप सुलगाया

सर जेम्स बैरी की जेबें खाली लिफाफों से भरी रहती थीं जिन्हें वे रद्दी की टोकरी में फेंकना भूल जाते थे। एक दिन वे घर में आग के सामने बैठे थे। उन्होंने जेब से काग़ज निकाला, एक कोने को आग दिखाई और अपना पाइप सुलगाने लगे।

उनके पास बैठे मित्र ने पुकारा, "हे भगवान् ! बैरी, तुम क्या कर रहे हो ? यह तो चैक है।"

वह ठीक था। काग़ज़ 100 पौंड का चैक था।

अद्‌भुत मेधा-शक्ति

इसका यह अर्थ नहीं कि लेखकों और महापुरुषों की स्मरण-शक्ति खराब होती है। वे जिस कार्य में लगे रहते हैं उसमें उनकी स्मृति देखिये। फिर सब प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्हें अपना जन्मदिवस बताने के लिये दो बार सोचना पड़ता है और कुछ ऐसे होते हैं कि टनों तथ्य स्मृति में संजोए रखते हैं। वे दूसरी दुनिया के आदमी मालूम पड़ते हैं। इसका एक उदाहरण अंग्रेज़, लेसली वैल्व, है जिसने खेलकूद का विशेष अध्ययन किया है। वह ग्रेट ब्रिटेन में पिछले 150 वर्षों में हुई किसी भी खेल कूद की घटना का वर्णन कर सकता है और वह सर्वदा सत्य निकलता है।

जब लेसली 22 वर्ष का नवयुवक था तब उसकी स्मरण शक्ति बहुत दुर्बल थी। उसने स्मरण शक्ति ठीक करने का प्रयत्न किया और नतीजा यह है कि आज वह ब्रिटेन के रेडियो-श्रोताओं तथा टेलीविजन-दर्शकों को अपनी अद्‌भुत स्मरण-शक्ति से चकित करता रहता है। फुटबाल, क्रिकेट, घुड़दौड़, टेनिस, तैराकी आदि समस्त खेलों के किसी भी मैच का वह वर्णन कर सकता है। इसी कारण उसे खेलकूद का चलता फिरता गज़ट कहा जाता है।

ऐसी स्मृति होने के लिये एक विशेष बात है और वह यह है कि किसी चीज़ में विशेष रुचि रखना। जिस तथ्य में रुचि होगी वह स्मृति में घुस बैठता है। जिस ओर ध्यान नहीं दिया जाता वह चाहे कितनी ही विलक्षण मेधा हो कभी याद नहीं रह सकता।

प्रसिद्ध संगीतज्ञ मोज़ार्ट में यह विशेषता थी। जब वह रोम में था तब वह प्रसिद्ध सिस्टीन चैपेल में अलेग्री का 'मिज़रेर' सुनने गया। वैटीकन अधिकारियों ने किसी को भी इसकी प्रतिलिपि करने से मना कर रखा था। लेकिन मोज़ार्ट ने होटल वापस जाकर स्मृति से इस ओपेरा की पूरी स्वरलिपि काग़ज़ पर उतार ली हालांकि उसने पहली बार उसे सुना था।

इसे कहते हैं स्मरण शक्ति

आश्चर्यजनक स्मृति वाले एक अन्य व्यक्ति थे दक्षिण अफ्रीका के फील्ड मार्शल स्मट्स। उनके पास निजी पुस्तकालय में पाँच हजार पुस्तकें थीं और उस पूरे संग्रह का उन्हें एक-एक शब्द याद था। जब चाहते थे कोई भी वाक्य प्रस्तुत कर देते थे, साथ में पुस्तक का नाम, पृष्ठ-संख्या और पंक्ति-संख्या। ये सब पुस्तकें क्लासिकल साहित्य पर थीं और उसमें विशेष रुचि होने के कारण स्मट्स को सब कण्ठस्थ था।

जीनियस किन्तु भुलक्कड़

महान प्यानोवादक रुबिन्सटीन की बड़ी विलक्षण स्मृति थी लेकिन केवल संगीत में। एक बार उसने कहा कि विश्व के समस्त महान संगीतज्ञों की अगर स्वरलिपि खो भी जाये तो उसे पूरा भरोसा है कि वह उन्हें अपनी याद से दोबारा लिख देगा, केवल दो बार संगीत सुनकर। एक बार वह दूसरे प्रसिद्ध प्यानोवादक लीज़्ट की नवीनतम कृति सुन रहा था जिसकी स्वरलिपि बहुत कठिन थी। उसे केवल एक बार सुनकर उसने वहीं बैठे बैठे उसकी पूरी प्रतिलिपि उतार दी। मगर यह काम निबटा कर जब वह लीज़्ट के घर से बाहर निकला तो दस्ताने और छाता वहीं भूल गया था।

बैंक जल गया

डेनमार्क के नगर कोपेनहेगन में एक बैंक में आग लग गई। उसमें सोने और चांदी के सिक्के तो बच गये लेकिन बैंक के सारे रिकार्ड जल गये। अजीब परिस्थिति पैदा हो गई। अगले दिन बैंक में जमा करने वालों की भीड़ लग गई और सब अपनी जमा वापस मांगने लगे। बैंक की सहायता को एक क्लर्क आया जिसका नाम बर्थोल्ड नीब्हूर था। उसने बताया कि उसे बैंक के 2000 ग्राहकों का हिसाब जबानी याद है। डाइरेक्टरों को उसकी बात का विश्वास करना पड़ा। सब को धन दिया गया और पता चला कि सब को ठीक ठीक मिला है। उसे फौरन बैंक का डायरेक्टर बना दिया गया।

पाण्डुलिपि खो गई

टी० इ० लारेन्स की अमर पुस्तक 'द सिक्स पिलर्स ऑफ विज़डम' की पूरी पाण्डुलिपि खो गई। लेकिन उसने बैठकर पुस्तक को दुबारा याददाश्त से लिख दिया और समय पर प्रकाशक को दे दिया।

अद्भुत बच्चा

1721 में ल्यूबेक, जर्मनी में एक बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम क्रिश्चियन हीनेकर रखा गया और जो पांच वर्ष की अवस्था में मर गया। इन पांच वर्षों में ही

उसने वह कर दिखाया जो आज तक किसी प्राणी ने नहीं किया। ढाई साल की आयु में वह गम्भीर विषयों की पुस्तकें पढ़ रहा था और इतिहास तथा भूगोल के किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकता था। वह बाइबिल की कोई भी उक्ति सुना सकता था और लेटिन, फ्रैंच, ग्रीक और जर्मन पटापट बोल सकता था। यदि वह जीवित रहता, तो संसार का एक अजूबा बन जाता। चार वर्ष की अवस्था में वह स्वीडन के दरबार में बुलाया गया और वहाँ उसने सब को आश्चर्यचकित कर दिया।

अनोखा सम्पादक

अठारहवीं शताब्दी के अन्त में लन्दन के एक अखबार के सम्पादक की स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक थी। पार्लियामेन्ट की प्रतिदिन की कार्यवाही याददाश्त से लिखने के कारण उसका नाम 'मैमरी' पड़ गया। उन दिनों हाउस में चल रही बहस के नोट लेने की मनाही थी। कोई सम्वाददाता नोट नहीं ले सकता था। पर इससे 'मैमरी' वुडफुल को कोई अन्तर नहीं पड़ता था। वह पार्लियामेन्ट में कहा प्रत्येक शब्द अपनी स्मरण शक्ति में रख लेता था और समाप्ति पर दफ्तर में भाग कर उसे शब्द-प्रति-शब्द उतार लेता था। एक बार उसने किसी विशेष बहस के पन्द्रह कालम छाप दिये जिनमें एक भी ग़लती न थी।

मोटों की दुनिया

यदि कोई पतला आदमी केले के छिपलके पर फिसल कर गिर पड़े तो सब आदमी बड़ी सहानुभूति दिखायेंगे और सहारा देकर उठायेंगे। लेकिन यदि कोई मोटा आदमी गिर पड़े तो सहानुभूति दिखाना तो दूर रहा लोग हँसते हँसते लोटपोट हो जायेंगे। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि मोटे आदमियों का दुनिया में निभाव नहीं। मोटे आदमी बहुधा हँसमुख होते हैं और कई खेलकूद में तेज़ होते हैं तो कई बुद्धि में। 1921 में आस्ट्रेलियन टीम का कप्तान आर्मस्ट्रांग मोटा था। इंग्लैण्ड जाते समय उसने अपने को पतला करने के लिये जहाज में प्रतिदिन एक से दो घंटे कोयला झोंका, मगर जब वह इंग्लैंड आकर पहुँचा तो और मोटा हो गया था। इसी प्रकार लंदन में एक मिस्टर लौंग्ले रहते थे। उनका वज़न 40 स्टोन से अधिक था और वे मुक्केबाज़ी में बड़ी रुचि रखते थे। याल्डन शहर में एडविन ब्राइट नाम का सब्ज़ी बेचने वाला रहता था जिसके मशीन पर चढ़ते ही सुई 44 स्टोन पर चढ़ती थी, जबकि उसकी लम्बाई केवल 5' 9" थी। उसका सीना 66", तोंद 83", जांघ 33" और डौले 26" थे। उसे घुड़सवारी का बड़ा शौक़ था (भगवान घोड़े को बचाये !)। उसका कोट इतना बड़ा था कि 7 आदमी बड़ी आसानी से उसमें बन्द किये जा सकते थे।

मोटे बुद्धिमानों की भी कमी नहीं। टॉमस एक्विनास इतना गोल था कि मेज़ में से एक अर्धवृत्ताकार टुकड़ा काट दिया गया था जिससे वह खाना आराम से खा सके। जी.क़े. चेस्टरटन पर एक दृष्टि डालते ही पता पड़ जाता था कि वह कितना

मस्तमौला है। नेपोलियन की तोंद गोल हो गई थी और मेराबो भी खूब मोटा था। बाल्ज़क और ड्यूमा गोश्त के पहाड़ थे। विक्टर ह्यूगो भी गोल और भली भांति पेटभरा दीखता था। रोज़िनी को पतलून में हिप्पोपोटैमस कहा जाता था। डाक्टर जान्सन तो हर प्रकार से पहाड़ का पहाड़ था।

हत्यारा किला

जर्मनी में मैनहीम का किला परिधि में एक मील से अधिक है। उसे दो आनुक्रमिक राजाओं ने बनवाया जिनमें से एक उसमें घुसने से डरता था और दूसरे को उसे पूरा करने का डर था। पहला प्रिंस कार्ल फिलिप (1661-1742) था। जिस दिन उसने किले का शिलान्यास किया उसी दिन उसे भयंकर दिल का दौरा पड़ा। उसे ज्योतिषियों ने चेतावनी दी कि यदि वह कभी भी इस किले में घुसा तो अगले दिन वह मर जायेगा। उसने 30 दिसम्बर 1742 में इस चेतावनी को ठुकरा दिया और चौबीस घण्टे के अन्दर वह मर गया। उसके उत्तराधिकारी कार्ल थियोडोर (1724-1799) को एक ज्योतिषी ने बताया कि जिस दिन उसने इस किले को पूरा बनवा दिया उस दिन वह मर जायेगा। इस चेतावनी को ध्यान में रखकर प्रिंस 57 वर्ष तक इस किले में कुछ न कुछ बढ़ोत्तरी कराता रहा। आखिर नेपोलियन ने उसे इस निर्माण को रोकने पर मजबूर दिया। 16 फरवरी 1799 को किले पर काम रुका और उसी दिन कार्ल मर गया। यह किला आज तक अधूरा पड़ा है।

ट्राय का घोड़ा

शहाबुद्दीन मानिकपुर के राजा को जीतना चाहता था किन्तु उसकी सेना राजा की सेना की तुलना में कुछ भी नहीं थी। उसने चालाकी खेली— स्वयं व्यापारी का भेष बनाया और 2000 ऊंटों का काफला लेकर राज्य में घुसा। हर ऊंट पर दो सन्दूक लदे थे जिनमें एक एक सिपाही छिपा था। वह राजा मानिक चन्द के दरबार में पेश किया गया जहाँ उसने अपना सामान दिखाने की इजाज़त माँगी। राजा की आज्ञा मिलने पर सन्दूक अन्दर लाये गये और उनमें से सिपाहियों ने निकलकर नगर जीत लिया।

नवीन गणेश

जर्मन जोहान जार्ज क्रीनिट्ज़ (1728-1796) ने एक 242 खंडों का विश्वकोश 14 वर्ष मेहनत करके हाथ से लिखा था। इसमें उसने शीघ्रलिपि (Shorthand) की भी सहायता न ली थी। इस पुस्तक को छापने में पचास वर्ष (1782-1831) लगे थे। इस विशाल ग्रन्थ के अतिरिक्त उसने 438 अन्य पुस्तकें लिखी थीं— लगभग 700 पुस्तकें या अपने जीवन काल के प्रति वर्ष में 14 1/2 पुस्तकों का अनुपात— और वे भी बिना किसी भी सहायता के।

दुर्घटनायें सौभाग्य लाती हैं

आज रविवार था। जोकर उदास था क्योंकि आज छुट्टी थी। और काम बहुत होने पर भी वह कुछ नहीं कर पा रहा था। छुट्टी की सुनते ही मन और मस्तिष्क भी छुट्टी ले लेते हैं और देह पर अद्भुत सुस्ती छा जाती है। सुस्ती कहो या शान्ति—जिसमें कोई क्रियात्मक कार्य नहीं हो सकता। तभी जोकर के सिर के पिछले भाग में यह विचार कौंधता है कि संसार जैसा आज है वैसा ही चलता रहे तो ठीक है। मृत्यु की शान्ति से क्या लाभ!

पूरे छः उपन्यास चालू कर रखे हैं। दस वर्ष हो चुके हैं। पता नहीं कब समाप्त होंगे। कथानकों की डायरियाँ बोझ में बढ़ती जा रही हैं। इस समय रद्दी में उनके दाम तीन साढ़े तीन रुपये होंगे। तीन सौ तीन कहानियों, पैंतीस लेखों तथा चौबीस उपन्यासों के प्लाट हैं। वही प्लाट जिन पर मकान या लेखन का ढांचा खड़ा होता है। और अनुवाद की सामग्री से चार अलमारियों के अठारह खाने भरे हुए हैं।

अलसाया भाव मानवों के सिर पर चढ़ने पर बड़े-बड़े पहलवानों को मात दे देता है। जोकर ने मेज़ पर पैर टांग लिये। स्मृति की कार को स्टार्ट कर दिया। और पिकनिक मनाने लगा।

वह लेखक है। उसने कब से लिखना प्रारम्भ किया? जब वह ग्यारह वर्ष का था। एक नाला कूदते समय उसकी टांग की हड्डी टूट गई थी। दुर्घटना के बाद उसे बीस दिन खाट पर पड़े रहना पड़ा था। उन्हीं दिनों जी बहलाने के लिये उसने लिखा था। खूब लिखा था। दो कापियाँ भर दी थीं।

"आकस्मिकता मानव जीवन में क्या क्या पार्ट अदा करती है!" सेनेका ने कहा था। सब को ज्ञात है न्यूटन के महान् सिद्धान्त के पीछे भी एक आकस्मिक घटना है। जब वह कैम्ब्रिज में विद्यार्थी था, तब प्लेग फैलने के कारण गांव चला गया था। एक दिन वह एक सेब के पेड़ के नीचे बैठा पढ़ रहा था कि सहसा एक सेब ऊपर से गिरकर उसके सिर पर आ टपका। सेब छोटा था पर चोट काफी दी थी। इससे उसने गिरते पदार्थों की त्वरण गति का पता चलाया और गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

टांग टूटने से जोकर लेखक बन गया। इसी प्रकार एक अन्य पुरुष को लेखक बनाने में टूटी टांग का हाथ था। काफी सालों की बात है कि एक दिन लन्दन के एक मुहल्ले की सड़क पर कुछ लड़के खेल रहे थे। सहसा वहाँ एक दुर्घटना हो गई। एक बड़े लड़के ने बर्टी वेल्स नाम के छोटे लड़के को गोद में उठाया और हवा में ऊपर उछाल दिया। नीचे आते समय उसने लपकने का कोई प्रयत्न नहीं किया, छोटे लड़के को नीचे गिर जाने दिया और उसकी टांग तोड़ दी। भयंकर दुर्घटना हो गई, पर इसी ने बर्टी का जीवन पलट दिया। बाद में महान् लेखक एच.जी. वेल्स ने स्वयं लिखा है

कि वह टांग टूटना ही उसका महान् सौभाग्य था। इसी के कारण उन्हें एक वर्ष बिस्तर पर रहना पड़ा। जो पुस्तकें उन्हें मिलीं सब उन्होंने पढ़ डालीं। उनमें साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत हुई और ढेरों पुस्तकें लिखीं।

यह उदाहरण केवल मात्र नहीं है। आकस्मिक घटनाएँ बीसियों लेखकों की प्रसिद्धि का कारण बनी हैं। शेक्सपीयर का जीवन भी एक परियों की कहानी है। बचपन में उसे बहुत थोड़ी शिक्षा मिली थी और यदि आकस्मिकता आड़े न आती तो वह कसाई के काम में लग जाता। स्ट्रैट्फर्ड के जमींदार, सर टामस लूसी, की जाग़ीर में चोरी से पशु-पक्षी पकड़ने के कारण वह मुसीबत में फंस गया। बचने के लिये वह लन्दन भाग गया और वहाँ एक नाटक मण्डली में भरती हो गया जो रानी एलिज़ाबेथ के दरबार में नाटक खेला करती थी। लेकिन उसमें अभिनय-कुशलता नहीं था। सो उसने नाटक लिखने आरम्भ किये।

इसी प्रकार फ्रांस का महान् नाटककार मोलियर एक झगड़े के कारण बना। उसके दादा को थियेटर देखना बहुत पसन्द था और वह बहुधा मोलियर को अपने साथ ले जाता था। युवक दुर्व्यसनी और अपव्ययी हो गया। उसके पिता को क्रोध आया और पिता तथा दादा में लड़ाई हो गई। उसी दिन से मोलियर का अपने पैतृक कपड़े के व्यापार से जी खट्टा हो गया और उसने लिखना आरम्भ किया।

यौवन में रूसो चलता-फिरता आवारा था। वह आत्म-नाश से अद्भुत रूप से बचा। एक दिन वह पेड़ पर कंकड़ मार मार कर जी बहलाने का प्रयत्न कर रहा था, कि अपनी निरर्थकता और दुख के भाव ने उसे घेर लिया। आकस्मिक प्रेरणा से उसने कंकड़ उठाया और एक पेड़ की ओर निशाना साधा। उसने सोचा यदि वह पत्थर पेड़ के बीचो-बीच लगा तो वह अपने जीवन का पृष्ठ पलट देगा। उस निशाने ने रूसो का जीवन ही नहीं, इतिहास भी पलट डाला, क्योंकि अन्याय और क्रूरता को मिटाने में रूसो का बड़ा हाथ था।

दुर्घटना ही ने सिडनी पोर्टर को ओ० हैनरी बना दिया। वह टैक्सास राज्य के आस्टिन नगर में एक बैंक का खजान्ची था। वहाँ काउबॉय को अनियमित रूप से वह कर्ज़ दे देता था। एक दिन राज्य बैंक परीक्षक उस नगर में आ पहुँचा। हिसाब की जांच करने पर धन में कमी पाई गई और खजान्ची गिरफ्तार किया गया। अपने लिये बेईमानी का एक धेला न लेने पर भी उसे पांच साल के लिये जेल भेज दिया गया। इस पांच सालों में उसने वे अमर कहानियाँ रचीं जिनसे वह विश्व-विख्यात हो गया। विपत्ति का पहाड़ टूटना उसके लिये चमत्कार सिद्ध हुआ।

एक आकस्मिक घटना के कारण ही मार्क ट्वेन प्रसिद्ध हो गया। एक दिन वह हैनीबाल नगर की सड़क पर जा रहा था कि हवा में उड़ते हुए एक काग़ज़ उसकी राह में आ पड़ा। वह जोन ऑफ आर्क की जीवनी का पृष्ठ था जिसमें उसके बंदी जीवन का करुण वर्णन था। इस अन्याय से युवक उत्तेजित हो उठा। उसमें विस्मय जगा।

उसने पुस्तकें पढ़नी आरम्भ कीं और इसी घटना के पश्चात् मार्क ट्वेन ने अपने भावों को काग़ज़ पर उतारना आरम्भ किया।

मदाम क्यूरी एक दुःखभरी परिस्थिति के कराण वैज्ञानिक बनीं। अपने देश पोलैंड में 19 वर्ष की अवस्था में वे एक धनी और समृद्ध परिवार में गवर्नेस का कार्य करती थीं। क्रिसमस की छुट्टियों में परिवार का बड़ा लड़का कॉलेज से घर वापिस आया। उनके सुन्दर आचरण ने उसे बांध लिया और उनकी प्रतिभा तथा कल्पना से वह आत्मविस्मृत हो गया। वह उनसे प्रेम करने लगा और शादी का प्रस्ताव रखा। जब उसकी मां को यह पता चला तो वह क्रोध में सुधबुध खो बैठी और बाप ने बेचारी युवती को बहुत डाटा फटकारा। भावी मदाम क्यूरी इस घटना से सन्न रह गईं। किन्तु यही उनके लिये वरदान सिद्ध हुई। उन्होंने पेरिस जाकर विज्ञान पढ़ने का निश्चय किया और अपना सारा जीवन खोजों में लगा दिया। यदि वह विवाह हो जाता तो वे रेडियम का आविष्कार कर अमर न हो पातीं।

कहावत है कि परिश्रमी मरे चूहे से भी धनवान बन सकता है। इसे वाल्ट डिस्ने ने सिद्ध कर दिखाया। उसने चूहे से लाखों रुपया पैदा किया। जब युवक डिस्ने कैन्सास नगर में रहता था तब उसने अपने चित्र एक सम्पादक को दिखाये। सम्पादक ने बताया कि चित्रकला उसके वश का कार्य नहीं और उसका दिल तोड़ दिया। अन्त में उसे आकृतियां खींचने का एक सस्ता कार्य मिल गया। अपने बाप के गैराज में पैट्रोल और तेल के बीच वह चित्र बनाया करता था। एक दिन एक चूहा बिल से निकल कर फ़र्श पर खेलने लगा। डिस्ने के काम रोक कर उसकी ओर देखा, अन्दर गया और रोटी के टुकड़े लाकर फर्श पर फैला दिये। कुछ दिनों में दोनों की इतनी दोस्ती हो गई कि चूहा ड्राइंग बोर्ड और काग़ज़ों पर घूमने लगा। एक दिन वह चित्र के लिये नया विचार ढूंढ रहा था कि अपना मित्र चूहा उसे ध्यान हो आया। उसने चूहे का चित्र बनाना आरम्भ किया और उस दिन संसार-प्रसिद्ध मिकी माउस का जन्म हुआ।

जेम्स मिचनर एक आवारा घुमक्कड़ था। वह किस्मत से ही उपन्यासकार बन गया। यतीम होने के कारण उसका बचपन बड़ी ग़रीबी में बीता। वह सुबह विद्यार्थी था तो रात को होटल का चौकीदार। किशोरावस्था में दुनिया भर के इधर-उधर के कार्य करके वह सारे संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका में घूम फिरा। पिछले महायुद्ध में वह एक जलसेना अफ़सर था और दक्षिणी प्रशान्त महासागर के किसी छोटे टापू में भटक गया। वहाँ उसे कुछ काम करने को नहीं था। पर यही उसके लिये वरदान सिद्ध हुआ। जो कुछ उसके दिमाग़ में था उसे उसने कहानियों के कथानक के रूप में उतारा और फिर दनादन टाइपराइटर पर उसकी उंगली नाचले लगीं। यही उसकी प्रथम पुस्तक 'टेल्स ऑफ दी साउथ पैसिफिक' है जिस पर उसे अमेरिका का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार, पुलिट्ज़र पुरस्कार मिला। यही उसकी प्रसिद्धि का प्रथम सोपान था।

आपको शायद पता न हो काउले सहसा कवि बन गया। जब वह छोटा था, तब उसने अपनी माँ के कमरे में स्पेन्सर की 'फेयरी क्वीन' देखी। इसे पढ़कर वह कविताभक्त हो गया और धीरे-धीरे स्वयं कवि बन गया। इसी प्रकार डॉ॰ जानसन बताते हैं कि प्रसिद्ध चित्रकार सर जोशुआ रेनॉल्ड्स में रिचार्डसन की पुस्तक पढ़कर अपनी कला के प्रति रुचि उत्पन्न हुई थी। प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन रोम घूमने गया था जब वहाँ के शानदार खंडहरों को देखकर उसके मस्तिष्क में उस नगर के उत्थान और पतन की कहानी लिखने की इच्छा जाग्रत हुई।

घण्टे ने साथ दिया

1852 में जब ड्यूक ऑफ वैंलिगटन की मृत्यु हुई, तब आयरलैण्ड में ट्रिम के गिरजे के डीन ने, जिस नगर से ड्यूक 1790 से 1795 तक पार्लियामेन्ट का सदस्य रहा था, गिरजे के घण्टे बजाने का आदेश दिया। उसमें पाँच घण्टे थे। बजना आरम्भ होते ही एक में तरेड़ आ गई और वह शान्त हो गया। परीक्षण करने पर पता चला कि वह घण्टा 29 अप्रैल, 1769 को ढाला गया था जिस दिन वैलिंगटन का जन्म हुआ था।

पहला गिलोटीन

गिलोटीन कुल्हाड़ा लगी वह मशीन थी जिसके नीचे फ्रेंच राज्यक्रान्ति में लाखों व्यक्तियों को मार डाला गया। पर वह पहले पहल फ्रांस में नहीं काम में लाई गई बल्कि 251 साल पहले 1538 में इंगलैंड में हैलीफैक्स में काम में लाई गई। वहाँ पशु चुराने वाले इससे कत्ल किये जाते थे। चुराया हुआ पशु और चोर दोनों वध-स्थान पर ले जाये जाते थे। पशु को उस रस्सी से बांध दिया जाता था जिसके पिन पर कुल्हाड़ा टिका होता था। सिगनल मिलते ही नौकर पशु को हांक देता था और कुल्हाड़ा गिरकर चोर का सिर धड़ से अलग कर देता था।

युद्ध का कारण तीतर

1475 में एक राजपूत शिकारी ने किसी तीतर को घायल कर दिया जो उड़कर मुली के राजा की माँ की गोद में जा पड़ा। शिकारी ने कहा कि घायल तीतर उसकी सम्पत्ति है और उसे वापस मिलना चाहिये; माँ ने कहा कि तीतर उसकी शरण में आया है और शरणागत को लौटाने से बड़ा पाप नहीं। इस कारण युद्ध छिड़ गया जिसमें 500 आक्रमणकारी तथा 140 बचाव पक्ष के सैनिक मारे गये। उधर तीतर उड़ गया।

अन्धा जनरल

बोहेमिया का जान ज़िज़का (1360-1424) बचपन में एक आंख खो बैठा था और दूसरी बड़े होने पर एक तीर से जाती रही। अन्धा होने पर भी वह एक महान्

युद्ध नेता था। उसकी युद्धचालन की कुशलता 300 वर्ष आगे की थी। हालांकि वह बिल्कुल अन्धा और युद्धस्थल के चित्र बनाने के लिये दूसरों पर निर्भर रहता था, फिर भी चौदह साल में उसने 50 युद्ध लड़े और कभी एक युद्ध नहीं हारा। उसने आदेश दिया था कि उसके मरने के बाद उसकी खाल से युद्ध नगाड़ा मँढ़वाया जाये जिससे वह मृत्यु के उपरान्त भी शत्रुओं को कँपाता रहे।

झूठी कसम का नतीजा

"सर, मुझे पता चला है कि आपको बताया गया है कि मैं आपके भाई की मृत्यु का कारण हूँ। मैं इस कृत्य के लिये बिल्कुल निर्दोष हूँ अगर मैं अपने हाथ में लिये रोटी के टुकड़े को आराम से खा लूँ।" ये शब्द विन्चेस्टर (इंगलैण्ड) में ईस्टर के दिन 1053 में वैस्ट सैक्सन के शक्तिशाली अर्ल ने राजा एडवर्ड द कन्फैसर के खाने की मेज़ पर कहे थे। राजा ने, जो अर्ल का दामाद था, उसे बताया कि सारे देश में यह सन्देह फैला है कि अर्ल ने राजा के भाई अल्फ्रेड की 1036 में हत्या करा दी है। ये शब्द अर्ल के पृथ्वी पर अन्तिम थे। जो रोटी उसने मुँह में दी उसका एक टुकड़ा सांस की नली में जाने से दम घुटकर वह मर गया।

ठण्डा गरम

इटली में वितरबो के निकट बुलीकेम झील बड़ी अद्भुत है। उसके मध्य में हर समय उबलते पानी का फव्वारा छूटता रहता है। वह उबलता झरना गन्धक का है और उसकी गर्मी 135° है, फिर भी यह झील के पानी पर कोई प्रभाव नहीं डालता। झील का पानी शुद्ध और ठण्डा रहता है और झरने का पानी एक छोटी धारा के रूप में नीली झील के पानी के बीच में से बिना मिले रास्ता बनाता बाहर निकल जाता है।

टूटी कुण्डी का मन्दिर

गोरखपुर जिले में सोहनाग स्थान का वासी प्रसिद्ध जोगी जीवा रामजी वहाँ से चला गया और यह कह गया कि वह अब कभी नहीं लौटेगा। वह अपनी पत्थर की कुण्डी पीछे छोड़ गया और चेलों से कह गया कि विदेश में जिस दिन उसकी मृत्यु होगी उसी दिन वह कुण्डी टुकड़े टुकड़े हो जायेगी। वह कुण्डी 12 वर्ष बाद टूट गई और उस कथन की सत्यता गवाहियों द्वारा सिद्ध हो गई। उस कुण्डी पर एक मन्दिर बनाया गया जिसकी यात्रा करने और श्रद्धा के फूल चढ़ाने आज तक लोग आते हैं।

गलती से छप्पर फटा

कॉवैन्ट्री, इंगलैण्ड के बैब्लेक स्कूल बनने की घटना बड़ी विचित्र है। उसका निर्माता कॉवैन्ट्री का धनी मेयर, टॉमस व्हीटले था जिसने 1556 में एक आदमी इस्पात खरीदने के लिये स्पेन भेजा। जब माल निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा तब पता चला

कि उसमें इस्पात के स्थान पर चांदी की छड़े हैं। व्हीटल ने काफी समय तक उनके वास्तविक स्वामी को ढूंढने के प्रयत्न किये किन्तु निष्फल रहा। अन्त में उसने इस धन से यह स्कूल बनवा दिया।

छीपी खाँ

1636 में बादशाह शाहजहाँ के विरुद्ध एक विद्रोह दबाने के उपलक्ष्य में बादशाह ने उसे बारवार, भुर, धौरारा और निधासन की चार रियासतें इनाम में दीं। बादशाह ने कहा कि खून से भीगी जिस पोशाक में वह बहादुर उसके सामने आया है वही उसके जागीर के अधिकार-पत्र का काम करेगी। अपने जीवन के शेष 32 वर्षों तक छीपी खाँ वह खून से छपी पोशाक पहने रहा। आज तक उसके वंशजों ने उस पोशाक को बहुत संभाल कर रख छोड़ा है।

शान्ति से पूर्व तूफान

अप्रैल 1360 में इंगलैण्ड के राजा एडवर्ड तृतीय के नेतृत्व में अंग्रेज़ सेना फ्रांस में चार्त्र स्थान पर मौजूद थी जब बड़ा भयंकर तूफान आया। पानी और तूफान, गरज और चमक, भीषण ओले जो मनुष्य और पशु दोनों को मार दें— आकाश से बरस रहे थे और सेना में यह विश्वास फैल गया कि संसार का अन्त होने वाला है। राजा स्वयं बहुत भयभीत हो उठा और उसने चार्त्र के गिरजे में जाकर प्रण किया कि वह फ्रांसीसियों की, अब तक ठुकराई गई, सन्धि की शर्तों को मान लेगा। फौरन बातचीत आरम्भ हुई और कुछ दिनों में सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये जिसमें इंगलैण्ड के राजा ने, अपना फ्रांस के राजा कहलाने का अधिकार छोड़ दिया। इसी पर दोनों देशों में युद्ध छिड़ा था।

पुस्तक-विक्रेता

पेरिस में लूव्र में एक पाण्डुलिपि रखी है जिसे कोई कोई दर्शक देख पाता है। यह दो सौ से कुछ अधिक नामों तथा पतों की सूची है जिसे वहाँ का राष्ट्रीय कोष समझा जाता है।

क्यों ? क्योंकि यह नेपोलियन के हाथ से लिखी हुई सूची है। यह उन व्यक्तियों की सूची है जिन्हें उसने पुस्तकें खरीदने को तैयार किया था जब वह एक अनजान निर्धन युवक के रूप में घर घर जाकर पुस्तकें खरीदने की कन्वैसिंग करता था। संसार के महान जनरल ने अपनी युवावस्था में यह काम किया था जिसे उसने बाद में भुलाना चाहा और किसी को इस विषय में नहीं बताया।

लिंकन ने शराबघर चलाया

अब्राहम लिंकन भी अपने महान् जीवन के एक अध्याय के बारे में चुप था। बल्कि वह तो उसे एक प्रकार से झूठा ठहरा चुका था लेकिन आज हम लोगों पर इस

बात की दस्तावेज़ी गवाही है। और वह था एक शराबघर चलाना। लिंकन एक झोंपड़े में पैदा हुआ था, इसकी उसे शर्म नहीं थी। पूर्ण युवा होने से पहले उसने कभी मोज़े नहीं पहने, इस पर वह गर्व करता था। परन्तु वह यह याद नहीं रखना चाहता था कि एक समय उसने बेरी की साझेदारी में शराबघर चलाया था। दुकान के एक कोने में बेरी शराब बेचता था और दूसरे कोने में लिंकन राजनैतिक जानकारी देता था। राष्ट्रपति की सौ से अधिक जीवनियाँ लिखी जा चुकी हैं लेकिन केवल एक में इसका वर्णन है।

क्रान्तिकारी संगीतज्ञ

रिचार्ड वेगनर का नाम प्रसिद्ध संगीत से जुड़ा हुआ है और साथ में एक रोमान्टिक प्रेम-जीवन से। यह कम जानते हैं कि वह क्रान्तिकारी भी था। 1840 में ड्रेसडेन की क्रान्ति के पीछे उसी का हाथ था। पुलिस ने उसके ऊपर एक पुरस्कार रखा था और जर्मनी के प्रत्येक पुलिस स्टेशन पर उसका हुलिया टंगा हुआ था। जेलखाने से या उससे भी अधिक मौत से बचने के लिये वेगनर को भागे भागे फिरना पड़ा।

धर्माचार्य

महान् धर्माचार्य जॉन वेस्ले के बारे में एक मज़ेदार तथ्य यह है कि वह डाक्टर भी था। उसने एक किताब लिखी है जिसका नाम है 'पुरातन भौतिकी या अधिकतर बीमारियों को ठीक करने का सरल और पुरातन ढंग।' वह सवेरे चार बजे उठता था, पांच बजे धर्मोपदेश करता था और घोड़े पर चढ़ आगे निकल जाता था। साल में वह लगभग 4500 मील घोड़े पर यात्रा करता था।

शक्की कंजूस

बीठोवन एक शाही व्यक्तित्व था जिसे बहरेपन ने करुणामय बना दिया था। सारे योरुप में उसका संगीत प्रसिद्ध था। लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि वह आदमी कैसा है। और जानता भी तो विश्वास न कर पाता। वह एक शक्की और कंजूस बुड्ढा कुंवारा था। उसे यह शक था कि हर कोई उसे धोखा देना चाहता है। यहाँ तक कि अपनी वफादार बुड्ढी नौकरानी, जो उसकी हर प्रकार से देखभाल रखती थी, पर भी वह शक करता था। उसने अपने भतीजे को लिखा था, "शुक्रवार केवल ऐसा दिन है जिस दिन वह बुड्ढी डायन खाना ठीक पकाती है। ऐसा लगता है कि इसी दिन शैतान का इस पर ज़ोर नहीं चलता। मुझे पूरा विश्वास है यदि आज से सौ साल पहले यह पैदा होती तो लोग इसे डायन समझ कर जला देते।"

उसकी कंजूसी भयावह थी। उसने अपनी डायरी में नोट किया था, कि कॉफी में भी कैसे बचत की जा सकती है। यदि हर दिन कॉफी के दो बीज बचाये जायें तो

साल में 730 बीज बचेंगे। उसने डायरी में अपने प्रयोगों के बारे में भी लिखा है जो कम से कम कॉफी के बीजों से कॉफी तैयार करने के लिये किये हैं।

लेकिन यह उसके चरित्र का एक पहलू था। जब हमें पता चलता है कि वह इतनी बचत क्यों करता था तो हमें उस पर दया आती है। इस बचत का रुपया वह अपने नालायक व कृतघ्न भतीजे को, जिसे वह बहुत प्यार करता था, चटा देता था।

हरफन मौला

संसार के सर्वोत्तम मेधावियों में से एक लियोनार्डो डा विंची था जो चित्रकार, शिल्पकार, इंजीनियर, भूगर्भशास्त्री, गणितज्ञ था। उसने हर चीज़ एक अद्‌भुत लिपि में लिखी है। वह बायें हाथ से सीधे से बायें की ओर लिखता था मानो किसी लेखन की फोटो कापी हो। साउथ केंसिङ्गटन अजायबघर में प्रसिद्ध फोस्टर संग्रह में उसकी हस्तलिपि का एक उदाहरण रखा है। एक काग़ज़ में उसने अपनी माँ के अन्तिम संस्कार का व्यय लिख रखा है। कुछ मदें ये हैं : टेपर के तीन पौंड के 27 फ्लोरिन, कफन के ८ फ्लोरिन, शव उठाने वालों को 4 फ्लोरिन, आदि। इससे प्रत्यक्ष होता है कि वह माँ के क्रियाक्रम पर होने वाले व्यय को महसूस कर रहा था।

आदम और हव्वा

विलियम ब्लेक की कविता 'येरुशलम' संगीत में बंधकर लाखों व्यक्तियों द्वारा गुनगुनाई गई है। ब्लेक भी एक सनकी मेधावी था। वह महान् कवि था, चित्रकार था और साथ ही धर्म से भी सम्बद्ध था। यह कम जानते हैं कि वह अपनी सरल अनपढ़ पत्नी के साथ शेखचिल्ली की बातें करता रहता था।

एक दिन कोई मित्र उसके घर पर आया। वहाँ कवि और उसकी पत्नी को नग्न बैठे देखकर वह दंग रह गया और लौटने लगा। "आ जाओ, आ जाओ," कवि ने पुकारा। "हम आदम और हव्वा के बारे में पढ़ रहे थे। बिना उनके जैसे बने पढ़ने में क्या आनन्द !"

गुप्त भेद

अमेरिकन राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड की एक राष्ट्रीय संकट के समय तबियत बहुत खराब हो गई। उस समय एक नये राष्ट्रपति का चुनाव दुर्विपाक होता। कांग्रेस की एक आपातकालीन मीटिंग बुलाई गई और उसमें राष्ट्रपति को ठीक दीखना था।

लेकिन आपरेशन होना बहुत आवश्यक था और उसकी किसी को कानोकान खबर न होनी थी। एक छोटी सूचना राष्ट्र को दी गई कि राष्ट्रपति नौका-विहार की छुट्टी पर जा रहे हैं। डाक्टर और नर्सें भी चुपचाप जहाज पर चढ़ा दी गईं और वहीं राष्ट्रपति का आपरेशन हुआ जिसमें उनका जबाड़ा निकाल दिया गया और नकली

लगा दिया गया। जब वे लौटकर आये तो इस कथा का केवल निशान बाकी था। और यह भेद राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड की पन्द्रह वर्ष उपरान्त मृत्यु तक कायम रहा।

नमक का काफला

भूषण के घटनापूर्ण जीवन का आरम्भ नमक की एक चुटकी से हुआ था। कहा जाता है आपने एक बार भोजन के समय अपनी भाभी से नमक मांगा। भाभी ने झल्ला कर कहा, "न काम के न धाम के, स्वाद का कोई ठिकाना नहीं।" एक लम्बे तीखे भाले की भाँति भाभी की बात भूषण के हृदय को बींध गयी। आप तुरन्त उठ कर चल दिये। घूमते फिरते आप दक्षिण पहुँचे और विश्राम करने की इच्छा से दुर्गा देवी के एक मन्दिर के चबूतरे पर बैठ कर कुछ गुनगुनाने लगे। उसी समय देवी का दर्शन करने के लिये छत्रपति महाराज शिवाजी आये थे। भूषण की गुनगुनाहट ने उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। उन्होंने उन्हें अपनी रचनाएँ सुनाने का आदेश दिया। भूषण ने अपने फड़कते हुए छंद सुनाए और छत्रपति रीझ गये। उन्होंने उसी समय कवि को सवा लाख रुपये का दान दिया। कहानी का सबसे अधिक रोचक पहलू उस समय आता है जब भूषण ने इस सारे रुपये से नमक खरीद कर अपनी भाभी के यहाँ भिजवा दिया। कल्पना कीजिये उस स्थिति की जब हज़ारों मन नमक लादे हुए ऊँटों का एक लम्बा काफिला भूषण के घर के सामने पहुँचा होगा।

उदारता

एक बार सुश्री महादेवी वर्मा ने महाकवि निराला को भयंकर शीत में एक कमरी लपेटे हुए देखा और द्रवित होकर उन्होंने उन्हें एक क़ीमती शाल उढ़ा दिया। किन्तु निराले स्वभाव वाले निराला ने वह क़ीमती शाल एकदम निर्विकार भाव सड़क के किनारे बैठे हुए एक भिखारी को दे दिया। उनके सम्बन्ध में यह कहानी भी प्रसिद्ध है कि किसी प्रकाशक से उन्हें दो हज़ार रुपये की चैक प्राप्त हुई। संयोगवश उसी समय एक विधवा अपनी पुत्री की शादी के लिये कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त करने के इरादे से उनके पास गयी। महाकवि ने तुरन्त वह चैक उस विधवा की ओर बढ़ा दी।

सभी कवि और लेखक इतने उदार नहीं देखे जाते। शेक्सपीयर के बारे में प्रसिद्ध है कि वे ब्याज पर रुपया उधार देते थे तो मूल और ब्याज की एक-एक पाई वसूल कर लेने में ज़रा भी न हिचकिचाते थे। उस समय मैक्बेथ की भांति वे जीवन को एक 'मूर्ख की कहानी' अथवा 'क्षणभंगुर दीपक' के रूप में न देख पाते थे। अपने 'शाइलॉक' की भाँति वे रुपये पैसे के मामले में बड़े कट्टर थे।

आरम्भ

बर्नार्ड शॉ जैसे महारथी ने इस बात की दुहाई दी थी कि सन् 1889 में उन्हें अपनी सम्पूर्ण प्रकाशित रचनाओं पर 2 शिलिंग 10 पेन्स की 'रायल्टी' प्राप्त हुई थी

और दो वर्ष बाद वह 7 शिलिंग 10 पेन्स के स्तर पर आई थी तो वे प्रसन्नता से नाच उठे थे !

जोसेफ कोनराड लगातार बीस वर्षों तक लिखते चले गये और उनकी एक भी पंक्ति को प्रकाशित होने का सौभाग्य न प्राप्त हुआ। कहानी प्रसिद्ध है कि जेन आस्टिन का प्रथम उपन्यास लन्दन के प्रत्येक प्रकाशक के यहाँ से घूम आया। कोई भी उसके प्रकाशन के लिये राजी न हुआ। अन्त में एक पुस्तक-विक्रेता सोलह वर्ष बाद, उसके प्रकाशन के लिये राजी हुआ और उसने यह उपन्यास दस पाउण्ड पर ख़रीद लिया। किन्तु हाय री विडम्बना! उपन्यास को दुबारा पढ़ने के बाद उसका विचार बदल गया और उसने उसका प्रकाशन स्थगित कर दिया। हस्तलिखित प्रति तेरह वर्षों तक उसी प्रकार पड़ी रही। अन्त में जेन के भाई ने दुकानदार से वह पुस्तक उसी मूल्य पर खरीद ली जिस पर वह बेची गयी थी। बेचारी जेन को अपनी सफलता देखने का अवसर न मिला क्योंकि उसका प्रथम उपन्यास उसकी मृत्यु के केवल दो वर्ष पूर्व सन् 1811 में प्रकाशित हुआ था।

चार्ल्स डिकेन्स साहित्यिक क्षेत्र की भांति आर्थिक क्षेत्र में भी सफल रहे। किन्तु उन्हें अपवाद ही माना जा सकता है। प्रारम्भिक प्रयासों में ही इस प्रकार की सफलता शायद ही किसी अन्य लेखक को मिली हो। एण्टानी ट्रलोप जैसे प्रतिभासम्पन्न लोकप्रिय लेखक को अपने प्रारम्भिक साहित्यिक जीवन के कई वर्षों के परिश्रम का पुरस्कार केवल बीस पाउण्ड मिला था। ई० फिलिप्स औपेनहेम की कलम-कुल्हाड़ी बड़ी तेज़ी के साथ चली है। उन्हें प्रायः १५० पुस्तकों का श्रेय है। किन्तु उनके साहित्यिक जीवन के प्रथम बीस वर्ष आर्थिक दृष्टिकोण से एकदम वीरान ही रहे थे। सर वाल्टर स्काट उन थोड़े से व्यक्तियों में से हैं जिन्हें साहित्यिक क्षेत्र में नाम के साथ साथ कुछ दाम भी प्राप्त हुआ था। किन्तु जिस समय वे ख्याति के सर्वोच्च शिखर पर थे उस समय अचानक उनके सिर पर 1 लाख 40 हज़ार का कर्ज़ आ गया। कहना न होगा कि इस कर्ज़ को अदा करने के लिये उनके पास एकमात्र साधन उनकी विलक्षण कलम ही थी। उन्होंने अपने इस हथियार को सम्भाला और कमर कस कर जुट गये। किन्तु अमानुषिक परिश्रम उनकी अपार जीवन शक्ति को खा गय। मृत्यु के समय तक वे 90 हजार पाउण्ड ही चुका पाये थे। शेष रक़म बाकी ही रह गयी।

लक्ष्मी का वरदान

एडगर वालेस के बारे में प्रसिद्ध है कि उन्होंने 80 हजार शब्दों का एक लम्बा उपन्यास शुक्रवार की सन्ध्या के समय आरम्भ किया था और सोमवार को प्रातःकाल समाप्त कर दिया था। इससे उन्हें चार हजार पाउण्ड की आकर्षक रक़म प्राप्त हुई थी। पश्चिमी देशों में फ़िल्म संसार भी लेखकों की इस आश्चर्यजनक समृद्धि के लिये उत्तरदायी है। डफ्ने डी मॉरियर को 'फ्रेंचमैन्स क्रीक' नामक फ़िल्म की कहानी

लिखने के लिये 25 हजार पाउण्ड की विशाल रक़म प्राप्त हुई थी। 'फ़ार हूम दि बेल टॉल्स' नामक प्रसिद्ध फ़िल्म की कहानी के लिये अर्नेस्ट हेमिंगवे को 30 हज़ार पाउण्ड प्राप्त हुए थे। किन्तु एडगर राइस बरो सबसे बाजी मार ले गये। उनकी प्रसिद्ध 'टार्जन सीरिज़' पर मेट्रो गोल्डविन मायर ने अब तक प्रायः 100 फ़िल्में बनायी हैं और संसार की भिन्न-भिन्न 56 भाषाओं में उनके इन उपन्यासों की प्रायः 3 करोड़ प्रतियाँ छप चुकी हैं।

हाथी की क़ीमत

बादशाह जहांगीर (1569-1627) को शिकार का बहुत शौक था। एक चीते के शिकार में छलांग लगाते चीते से उसे उसके नौकर अनूपराय ने बचाया और चीते को मार डाला। इस घटना का अनूपराय को अजब पुरस्कार मिला। बादशाह को अपनी जान की नहीं अपने हाथी के बचने का विचार रहा। उसने हाथी को तुलवाया जो 1610 में बड़ा मुश्किल काम था। हाथी का वजन 103 मन निकला। अपने प्राणरक्षक को उसने 103 गांव दान कर दिये जिनमें से कुछ अब भी उनके वंशजों के पास अनूपशहर में हैं।

भतीजी प्रेमिका

यह कुछ हास्यास्पद लगता है, बल्कि घृणास्पद भी, कि एक वृद्धावस्था को जाता हुआ पुरुष अपने से छोटी युवती को प्रेम करे और वह भी अपनी भतीजी को जिसे अपने बच्चे से बड़ा होता देखा हो। यह स्थिति वाल्टेयर के नये पाये गए पत्रों से पता चली है।

हर कोई जानता था कि वाल्टेयर का अपनी साधारण पर विमोहक भतीजी के प्रति अनुराग था, किन्तु यह इन पत्रों से पता चला है कि वह कितना बढ़ा हुआ वासनामय प्रेम था। इनसे यह भी पता चलता है भतीजी उससे प्रेम नहीं करती थी, उसकी निगाह केवल प्रसिद्ध ताऊ के नाम से प्राप्त होने वाले सामाजिक लाभों की ओर थी।

यह न सोचा होगा

सब जानते हैं कि पुस्तकें पढ़ने की चीज़ हैं। उनके पढ़ने से दिमाग़ तेज़ होता है, सामान्य ज्ञान मिलता है, दृष्टिकोण विस्तृत होता है। लेकिन ये अन्य अनेक कामों में भी सहायक हैं।

बस में एक युवती जा रही थी; उसके सामने एक काले बालों वाला सुन्दर नवयुवक बैठा था; युवती उतरते समय अनजान-सी जनाकर पुस्तक बस में भूल गई जिसके पहले पृष्ठ पर उसका पता लिखा था; और वही हुआ जो वह चाहती थी। युवक पुस्तक देने उसके घर पहुँचा और पहला पग पूर्ण हुआ।

इसी प्रकार एक व्यक्ति किताब की खाली जिल्द के अन्दर अपनी शराब की बोतल छिपाकर रखता था। लेकिन उसकी पत्नी उससे भी तेज़ थी, उसने कुत्ते की सहायता से बोतल ढूंढ निकाली।

अन्य उपयोग खाने की मेज़ के नीचे लगाने का है यदि वह पैर ऊँचे नीचे होने के कारण हिलती हो। मैडिकल कॉलेज का एक विद्यार्थी 'ग्रे की अनाटमी' को सिर के नीचे लगाकर सोता था और बड़ाई मारता था कि इतना महंगा तकिया किसी का न होगा। और कॉमन्स सभा में पुस्तकें एक दूसरे की ओर फेंकने के काम में आती थीं, यह हमें 'हैन्सर्ड' की प्रतियों से पता चलता है।

पुस्तकें लिखने का ढंग

लेखकों के लिखने के ढंग जानने के बारे में पाठकों को हमेशा रुचि रही है। और यह है भी ठीक। लेखकों के ढंग विचित्र होते हैं, निराले होते हैं।

सबसे पहले, लेखक इस विषय में बहुत वहमी होते हैं कि वे कहाँ लिखते हैं— कमरे में या बाहर, कमरा कैसा हो, आदि। प्रसिद्ध अंग्रेज़ कवि वर्ड्सवर्थ की दुर्बलता थी कि उसका अधिकतर लेखन बाहर प्रकृति में होता था। मिलने वालों को उसके नौकर बतलाते थे, "यह उनका पुस्तकालय है और लिखने का कमरा बाहर मैदान है।" अधिकतर लेखकों को स्थान की कमी के कारण अन्दर काम करना पड़ता है किन्तु कुछ की कलम नहीं चलती। एच० इ० बेट्स ने कैण्ट के अपने बाग के समर-हाउस में सोफे पर बैठ घुटनों पर पैड रखकर अधिकतर लिखा है। बाल साहित्य की महान् लेखिका एनिड ब्लाइटन ने भी पोर्टेबल टाइपराइटर लेकर बाग में लिखा है।

अन्दर लिखने में भी बड़ी विविधता है । चार्ल्स डिकेन्स एक बड़े कमरे में बैठकर लिखना चाहता था जबकि थैकरे मकान से अलग-थलग एक छोटे से कमरे में जिसके साउण्ड-प्रूफ द्वार हों। रिचार्ड चर्च ने लिखने के लिये एक टूटे-फूटे समुद्रतटीय मकान की छत पर स्टडी बनवाई थी। बर्नार्ड शॉ ने अयोट सैंट लारेन्स के बाग में एक छोटी लकड़ी की झोंपड़ी लेखन के लिये बनवाई थी।

कैसे लिखें यह भी लेखकों की अजीब आदतें दर्शाता है। अधिकतर लेखक अब भी पैन या पेन्सिल से लिखते हैं, वैसे सुन्दर टंके हुए अक्षरों के लिखने के दिन लद गये। आर्नोल्ड बेनेट और टी०इ० लारेन्स इस खोई हुई नस्ल के अन्तिम अवशेष थे। गन्दा लिखने में माहिर हिन्दी में राहुल सांकृत्यायन थे और अंग्रेज़ी में एच० जी० वेल्स। कहा जाता है कि वेल्स का लेखन संसार में केवल दो व्यक्ति पढ़ सकते थे जिनमें एक उनकी सेक्रेटरी थी जो उसे टाइप करती थी। डिकेन्स बेचारा बड़ी मेहनत करके लिखता था लेकिन नतीजा वही गन्दा रहता था। रोज़ मैकाले इतना बड़ा-बड़ा लिखती थी कि एक पृष्ठ पर केवल 50 शब्द आते थे जहाँ एलेक वॉ इतना छोटा-छोटा और साफ लिखता था कि उसके एक पृष्ठ पर 1000 शब्द आते थे।

कुछ लेखक हमेशा टाइपराइटर से लिखते हैं। इनमें अल्डुअस हक्सले और जे॰बी॰ प्रीस्टले प्रसिद्ध हैं। प्रीस्टले ने 1914 के आस पास से जब से लिखना शुरू किया है हमेशा टाइराइटर का प्रयोग किया है। उसने अनेक प्रकार के टाइपराइटर काम में लिये— एक शान्त भी। पर उसे वह पसन्द नहीं आया। सादे टाइपराइटर पर वह लिखता है। उसकी टप-टप प्रीस्टले का ध्यान भंग नहीं करती क्योंकि वह अपने कानों में रूई भर लेता है।

शॉ ने अपना सारा लेखन पिटमैन के शॉर्टहैण्ड में लिखा जिससे उसका समय बच सके। इन सब का राजा एडगर वैलेस था जो डिक्टाफोन में सहस्रों शब्द बोलता जाता था। उसकी स्पीड बीस मिनट में 1200 शब्द थी। मेज़ पर बैठ कर उसके एक हाथ में डिक्टाफोन का माउथपीस होता था और दूसरे में चाय का प्याला। इस प्रकार उसने 80000 शब्दों का उपन्यास 'द डैविल मैन' 60 घन्टे में लिख दिया था। उधर विस्टर ह्यूगो का लेखन-ढंग निराला ही था। वह खड़े रह कर लिख सकता था। कन्धे की बराबर ऊँची डैस्क के सामने खड़े होकर वह लिखता था। अपने अमर विशालकाय उपन्यास 'ल मिज़रेबल' को उसने इसी प्रकार लिखा था, चौदह चौदह घंटे एक बार में। जेम्स जॉयस हमेशा चित लेटकर लिखा करते थे।

बेल्जियन कवि रवलेन दवाओं के प्रभाव में रहकर ही काम कर सकता था। हॉफमैन जिसने प्रसिद्ध भुतहा कहानियाँ लिखी हैं अफसंतीन को पेट में डालकर ही लिख पाता था। बाल्ज़क शराब छूता नहीं था, परन्तु कॉफी का धत्ती था। वह लिखते हुए दर्जनों प्याले पी जाता था और काग़ज़ भर-भर कर फर्श पर फेंकता जाता था।

लिखने का समय क्या हो, यह भी सबका अलग अलग है। एडगर वैलेस को रात का समय पसन्द था। स्कॉट और एण्टनी ट्रौलोप जलपान से पहले प्रातः लिखते थे। बाल्ज़क आधी रात से दोपहर तक लिखा करते थे। उनका नौकर उन्हें लगातार काफी दिया करता था। ड्यूमा जब पुस्तक लिखनी आरम्भ करता था तब दिन रात भूल जाता था और उसे समाप्त करके दम लेता था। वह अपने को कमरे में बन्द कर लेता था, जूते और वस्त्र नौकर को दे देता था जिससे वह कमरे से बाहर ही न निकल सके और एक साथ दिनों तक लिखता चला जाता था।

एमिल ज़ोल ने उसके जितना नहीं लिखा, फिर भी वह लगातार परिश्रम करने का हामी था। अपनी स्टडी के गरदने पर उसने सोने के अक्षरों में लेटिन में लिखवा रखा था— कोई दिवस बिना पंक्ति लिखे नहीं। इसी प्रकार सर वाल्टर स्कॉट भी लिखने की मशीन था और हर समय उसे लिखते हुए देखा जा सकता था।

जहाँ तक लेखकों की पीने की आदतों का सवाल है, तम्बाकू आजकल विशेष रूप से प्रचलित है। जे॰बी॰ प्रीस्टले और रूबी एम॰ एयर्स उन दो प्रसिद्ध लेखकों में से हैं जो लिखते समय बहुत धुआँ छोड़ने के आदी हैं। जान अरविन ने एक बार बताया कि किस प्रकार उसने प्रीस्टले की नकल करनी चाही लेकिन पहली बार धुआँ

उसकी आँखों में घुस गया और उसने उसी क्षण पाइप को तम्बाकू सहित उठाकर बाहर फेंक दिया। एडगर वैलेस चाय का बहुत शौकीन था। अलैक्ज़ेन्डर ड्यूमा लेमन के अतिरिक्त और कोई चीज़ इस्तेमाल नहीं करता था। जर्मन कवि शीलर अपने दराज़ में सेव रख लिया करता था और उनकी सुगन्धि से उसे लिखने की प्रेरणा मिलती थी।

एस्थर मेकक्रेन ऐसे वातावरण में बहुत अच्छा लिखते थे, जब रेडियो खूब जोर से बज रहा हो; घर के आदमी शोर मचा रहे हों। बिल्कुल इससे उल्टे टामस कार्लाइल थे। लिखते समय अगर बिल्ली भी शोर कर दे तो कभी-कभी मानसिक संतुलन खो बैठते थे। ए० डी० डब्ल्यू० मैसन की स्मरण-शक्ति बहुत तेज़ थी। वर्षों की लिखी हुई चीज़ों को वे ज्यों की त्यों लिख देते थे। वाल्टर पैटर काग़ज़ का जो टुकड़ा पाते उसी पर लिखना प्रारम्भ कर देते। रात्रि को जब वे लिखने बैठते तो एक-एक काग़ज़ को टेबिल पर बिछा देते तब लिखते। कॉम्पटन मेकेंज़ी नम्बर लिखे हुए काग़ज़ पर लिखने के आदी हैं ताकि जितनी जरूरत हो उतने ही पृष्ठ लिखे जायें।

चर्चिल सुधारने के लिये लाल स्याही इस्तेमाल करते थे और ई० एम० एस० फोर्स्टर हरी स्याही से लिखते थे। जेम्स ज्वायस काली स्याही अथवा बड़ी नीली पैंसिल से लिखते थे।

रोनाल्ड फ़रबैक वर्गाकार काग़ज़ पर लिखने के आदी थे। डिकेन्स नीले काग़ज़ पर नीली स्याही से लिखा करते थे। लेविस कैरौल अपने हाथ में बहुत सी आलपिन ले लेते थे और बेकार के काग़ज़ में बराबर सूराख करते रहते थे। सामरसैट मौम एक तावीज़ रखते थे जिससे दुष्ट प्रकृति वाली वस्तुओं का उनके मस्तिष्क पर प्रभाव न पड़े। उनका ख्याल था कि ताबीज़ ऐसी खुराफ़ात से उनकी रक्षा करेगा।

लेखक और उनके पुस्तकालय

अधिकतर लेखक अपनी पुस्तकों को पुस्तकालय कहते हैं, चाहे वे कुछ पुस्तकें या एक शैल्फ हो, चाहे अलमारियाँ भरी हुईं। अपने लेखन में वे अपने पुस्तकालय का अवश्य जिक्र करते हैं। इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि ये सब पुस्तकालय विशाल और व्यापक होंगे। मार्टिन लूथर का मित्र विद्वान् जर्मन मैलक्थन पुस्तकालय में केवल चार लेखक रखता था— प्लिनी, प्लूटार्क, प्लेटो और टालेमी। सम्राट सोकवेरेन्स के पुस्तकालय में केवल होरेस, वर्जिल, प्लेटो और सिसरो विराजते थे। जॉन बनयान का पुस्तकालय इससे भी छोटा था, उसमें केवल बाइबिल और उसके द्वारा लिखी कुछ पुस्तकें मय पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस के थीं।

डीन स्विफ़्ट कहता था कि एक बड़े पुस्तकालय से वह विषण्ण हो जाता है और इकत्तीस पुस्तकों के संग्रह पर गर्व करता था। हंट ने लिखा है कि हैज़लिट के

पास हंट-लिखित पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कोई पुस्तक नहीं थी, लेकिन उसे शेक्सपियर और रूसो जबानी याद थे। शेक्सपियर, वाल्टेयर, गेटे और लॉर्ड बर्ले पर बहुत कम पुस्तकें थीं। बेन जानसन ने भी कम पुस्तकें रखी थीं पर वे बहुत भारी भरकम थीं।

टॉमस डी क्विन्से ने वड्र्सवर्थ के पुस्तकालय के विषय में बताया है जिसमें केवल दो या तीन सौ ग्रन्थ थे। वे एक घर के बने बुक-केस में जो बैठक की चिमनी में फिट हुआ था रखे थे। अधिकतर किताबों की जिल्द फटी हुई थी, कुछ पर जिल्द ही नहीं थी, कुछ के भाग गायब थे, तो कुछ के पृष्ठों का पता नहीं था।

वैसे अधिकतर लेखकों को पुस्तकें इकट्ठी करने का शौक होता है। मार्क पैटीसन कहता है कि जिस व्यक्ति के पास 1000 पुस्तकें हैं उसी को अपने को सम्मानित समझना चाहिये। कार्लाइन भी आदमियों का मान उसके पुस्तक-संग्रह से लगाता था। उसकी निगाह में 3000 पुस्तकें रखने वाला सम्मानित था।

इस लिहाज से कुछ प्रमुख लेखकों के पुस्तकालय निम्न प्रकार थे— जॉन फॉस्टर 18,000, रॉबर्ट सदे 14000, मैथियास कॉर्विनस 50000, टोफम व्यूक्लर्क 30,000, जॉन विल्सन प्रोकर 4,000, टॉमस क्विन्से 5000, और एडवर्ड गिबन 7000। मॉन्टेन के पास 1000 पुस्तकें थीं, राबर्ट बर्टन के पास 1700 और सैमुअल पेपिस के पास 2474 पुस्तकें थीं।

अधिकतर व्यक्ति पुस्तकें विषय या लेखक के हिसाब से लगाते हैं। पर कुछ ऐसे भी होते हैं जो पुस्तकें रखते समय साइज का ध्यान रखते हैं। पेपिस को अपने पुस्तकालय में ऊँची-नीची रेखायें पसन्द नहीं थीं इसी कारण वह पुस्तकें साइज के अनुसार लगाता था। और भी कुछ लेखक ऐसे थे।

डाक्टर जॉनसन के पास बहुत सारी पुस्तकें थीं जिससे उनके घर के ऊपर वाले कमरे की सारी दीवालें लदी पड़ी थीं। वे सब खस्ता हालत थीं। वे बहुधा उन्हें करीने से लगाते रहते थे परन्तु उनकी गर्द छुड़ाने के लिये आपस में एक दूसरी को टकराते थे जिससे उनकी जिल्दें बोल जाती थीं। और यह सब काम वे अपने हाथों को बचाने के लिये रबड़ के दस्ताने पहनकर करते थे। उधर रिचर्ड ड बरी के पास भी बहुत पुस्तकें थीं, लेकिन वे सब फ़र्नीचर पर, फ़र्श पर लोटी डोलती थीं। यही हाल सर टामस मूर का था।

मॉन्टेन ने अपना पुस्तकालय अपने बंगले के टावर में बनाया था जहाँ से वह अपने बाग को देख सकता था। उसने अपनी मेज़-कुर्सी इस भाँति लगाई थीं कि नेत्रों के सामने सब पुस्तकें दिखाई देती थीं एक कें ऊपर एक पांच पंक्तियों में लगीं। कार्लाइल दुमंजिले के एक छोटे कमरे में काम करता था जहाँ पुस्तकों का एक छोटा शैल्फ था। उसकी बड़ी लाइब्रेरी नीचे की मंज़िल में बड़े कमरे में थी जहाँ सब

पुस्तकें करीने से सजी थीं, साफसुथरी, ढंग से लगीं। इसी प्रकार क्रोकर ने 3000 पुस्तकें अपने शानदार ड्राइंग-रूम में लगा रखी थीं और 1000 पुस्तकें छोटी कोठरी में जहाँ बैठकर वह काम करता था।

चार्ल्स लैम्ब का विचार था कि पुस्तकें ड्राइंग-रूम में लगानी चाहिये। इस आदत को ली हंट सत्कारशील समझता था। सर वाल्टर स्कॉट की एक विशाल लाइब्रेरी थी जिसमें जलपान से पहले वह घुसा करता था, किताबों को लगाता और उनकी सूची बनाता रहता था। लायनल जानसन के पास पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह था और डब्लू० बी० ईट्स के कथनानुसार वह यह सोचता रहता था कि क्या किसी प्रकार छत से झाड़-फनूस की भाँति, बुक-केस भी लटकाये जा सकते हैं।

हस्ताक्षर

हस्ताक्षरों से चरित्र का पता लगाने के विज्ञान की आधार-भूमि बहुत ठोस है। जिसके हस्ताक्षर सुन्दर और स्पष्ट हों, वह व्यक्ति अच्छा ही हो, यह आवश्यक नहीं है। कई अपराधियों की लिखावट बहुत सुडौल पायी गयी है। हस्ताक्षर-विशेषज्ञ अक्षरों के मोड़ों, झटकों तथा अन्य कई बातों का अध्ययन करता है, अक्षरों की खूबसूरती का नहीं।

गांधी जी के हस्ताक्षर बहुत अस्पष्ट थे। गांधी जी की तरह शेक्सपीयर भी अस्पष्ट हस्ताक्षरों के लिए प्रसिद्ध है। उसकी कुछ कृतियों का प्रकाशन अब तक इसीलिए नहीं हो पाया है कि वे 'आप लिखें, खुदा बाँचे', श्रेणी की हैं। हाथोर्न की भी अनेक रचनाएँ इसीलिए अप्रकाशित पड़ी हैं। इस संदर्भ में सबसे दिलचस्प उदाहरण नेपोलियन का है। उसके कुछ पत्रों को युद्ध-भूमि के नक्शे समझ लिया गया था।

पलक झपकाने से लेखिका

हालैंड के सेंट एलिज़ाबेथ अस्पताल में पक्षाघात के कारण शरीर से असमर्थ हो चुकी एक महिला पलक झपकाते-झपकाते लेखिका बन गयी थी।

उक्त महिला श्रीमती मोएनसोस ने विलक्षण ढंग से लेखन किया। एक नर्स अक्षरमाला का एक-एक अक्षर बोलती जाती थी और जिस अक्षर पर मौएनसेस पलक झपका देती, उस अक्षर को नर्स नोट कर लेती। श्रीमती मोएनसेस ने इस प्रकार छह मास में पूरी पुस्तक लिख डाली।

अपशकुन

थाईलैंड के एक नगर में मेंढकों के दो समूहों में पिछले दिनों भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें हजारों मेंढक मारे गये। थाईलैंड के निवासी इसे अपशकुन मानते हैं।

मानव-पशु

ब्रिटिश कोलंबिया (कनाडा) और तीन अमरीकी राज्यों में लोगों ने 10 फुट लम्बे तथा लगभग 6,000 पौंड वजन के, बड़े-बड़ेबालों वाले एक विचित्र मानव-पशु के बारे में बताया है। मानव-पशु को देखने से लेकर, उसके हमलों और पद-चिह्नों की खोज तक की करीब 120 घटनाएँ सुनी गयी हैं। बताया जाता है कि वह कनाडा से सन फ्राँसिस्को की ओर घूमता हुआ गया है।

कुत्ता-सन्तान

मिसौरी (अमरीका) की एक महिला ने अपनी 50,553 डालर की संपत्ति एक कुत्ते के नाम कर दी थी। महिला की मृत्यु के बाद उसके निकट संबंधियों ने इस विरासत को अदालत में चुनौती दी है।

उत्तरी मित्र

कालिदास के 'मेघदूत' का मंगोलिया की भाषा में सैकड़ों वर्ष पूर्व अनुवाद हो चुका था और वहाँ बहुत-सी भारतीय लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। इस तथ्य का उद्घाटन हाल में नयी दिल्ली स्थित मंगोलियाई राजदूत श्री यूनी गोसबयार ने पत्रकारों के समक्ष किया था। उन्होंने बताया कि मंगोलिया के राष्ट्रपति का नाम 'शंभु' है। वहाँ ऐसे अनेक नाम हैं जो संस्कृत से निकले हैं, किन्तु वहाँ के लोग उनका अर्थ नहीं जानते।

दुनिया तेज़ चल रही है

इस्ताम्बूल के एक 23 वर्षीय युवक ने अपनी भावी वधू, उसके माता-पिता तथा भाई-बहिनों सहित नौ व्यक्तियों को केवल इसी कारण मौत के घाट उतार दिया कि भावी श्वसुर ने मार्च से पूर्व पुत्री का विवाह करने से इन्कार कर दिया था।

जेलवासी

अमरीका में फ्रीमैन नामक व्यक्ति को, जिसने अपने 79 वर्ष के जीवनकाल में 58 वर्ष जेल में बिताये हैं, शीघ्र रिहा किया जायेगा। उसे 1911 में हत्या के अपराध में मृत्यु-दंड मिला था, किन्तु चार हज़ार व्यक्तियों द्वारा आवेदन पत्र दिये जाने पर उसकी सजा आजीवन कारावास में बदल दी गयी थी।

अजूबा

लंदन के एक अस्पताल में 21 वर्षीय युवक क्रिस्टेफल डिर्क सिर्डोम को, जो एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया था, डाक्टरों ने बीचोंबीच से काट दिया है। युवक का कमर से ऊपर का भाग ही रह गया है और वह जीवित है।

अभी तो जवान हैं

उम्र 182 वर्ष ! जी हाँ, यह है एशिया का सबसे बूढ़ा जवान मुंशी उम्मेदअली, जो असम के गोलपाड़ा जिले के किशनबारी ग्राम का निवासी है। अभी उसके अंग मजबूत और उसकी दृष्टि तथा श्रवणशक्ति बिलकुल ठीक है। तभी तो उम्मेदअली को कम से कम दस वर्ष और जीने की उम्मीद है। फिलहाल उसके परिवार में 800 सदस्य बताये जाते हैं, जिनमें अनेक पोते-परपोते शामिल हैं। (1969)

एक असाधारण उपन्यास की साधारण लेखिका

वह कौन-सा उपन्यास है, जिसने प्रकाशित होते ही, पहले वर्ष में बिक्री के सब विश्व-रेकार्ड तोड़ डाले थे?

वह कौन सी फ़िल्म है, जिसने प्रदर्शित होते ही, बॉक्स आफिस के पिछले सब रेकार्ड भंग कर दिये थे, और आज तक भी कोई फ़िल्म उस रेकार्ड को नहीं तोड़ पायी है?

दोनों प्रश्नों का एक ही उत्तर है— 'गौन विद द विण्ड !'

प्रकाशित होते ही इस उपन्यास की, जिसे अनेक प्रतिष्ठित आलोचकों ने 'बीसवीं सदी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास' कहा है, 13,75,000 प्रतियाँ बिक गयी थीं। अब तक इसकी एक करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं, और 26 भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

शायद ही कोई उपन्यास ऐसे विचित्र तरीक़े से लिखा गया हो, जैसे 'गौन विद द विण्ड' लिखा गया। सबसे पहले पेगी ने अंतिम अध्याय लिखा, जिसमें स्कारलैट (हीरोइन) और ऱ्हैट का अलग होना दिखाया गया है। इसके बाद वे, जो भी अध्याय मन में आता, उसे लिख डालतीं, और प्रत्येक अध्याय को अलग-अलग लिफाफे में रखती जातीं। जब सब अध्याय पूरे जो गये, तब उन्हें एक क्रम में जोड़ा गया।

गृह-युद्ध की लड़ाइयों का विवरण तथा उसके स्थलों का भूगोल उन्हें मुंह-जबानी याद था; उसके लिए उन्हें एक बार भी सन्दर्भ-ग्रन्थों को पलटने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

जब उनके मित्र और रिश्तेदार उनसे मिले आते तो पाते कि वे अपने पति की कमीज़ और पैंट पहने उपन्यास टाइप कर रही हैं। इन लोगों को देखकर वे टाइप किये हुए पृष्ठ फौरन सोफे के पीछे छिपा देतीं। पाण्डुलिपि उन्होंने अपने पति को छोड़कर, जिसे प्रसन्न करने के लिए यह उपन्यास लिखा जा रहा था, कभी किसी को नहीं दिखाई।

आरंभ में उन्होंने उपन्यास की रचना बड़ी तेज़ी से की, पर बाद में वे उसे कभी-कभी ही लिखती थीं। उसे प्रकाशित कराने का इरादा तो उनका कतई न था।

1935 में मैकमिलन कम्पनी (पुस्तक-प्रकाशक) का एक प्रतिनिधि, जो नये लेखक-लेखिकाओं की रचनाओं की खोज में था, इस उपन्यास के बारे में सुनकर उनसे मिलने आया। उन्होंने उससे साफ कह दिया— "मेरे पास कोई उपन्यास नहीं है।" अगले दिन, पति के अनुनय-विनय करने पर वे प्रतिनिधि को पाण्डुलिपि दिखाने को तैयार तो हो गयीं, पर कॉफी के निशानों से गंदे हुए लिफाफों को उसके सामने रखते हुए बोलीं, "आप या कोई भी प्रकाशक इस उपन्यास की शक्ल देखे, ऐसा इरादा मेरा कभी नहीं था।"

मैकमिलन के उपन्यास स्वीकृत कर लेने के बाद, उन्होनें छः महीने पाण्डुलिपि को दुबारा लिखने तथा प्रत्येक घटना की ऐतिहासिक शुद्धता की जाँच करने में लगाये। पहला अध्याय ७० बार दोहराया गया। अन्य अध्याय भी कम से कम २० बार दोहराये गये। फिर भी जब अन्तिम पाण्डुलिपि प्रकाशक के पास गई, तो वह शीर्षक विहीन थी। बाद में एक कविता पढ़ने पर इसका शीर्षक रखा गया।

दुखी का दुःख मिटाने वाले

महात्मा गाँधी एक बार चम्पारन से बेतिया जा रहे थे। रात का समय था, ट्रेन खाली थी। वे तीसरे दर्जे में एक सीट पर सो गये। उनके अन्य साथी दूसरी सीटों पर बैठ गये। आधी रात के समय गाड़ी एक स्टेशन पर खड़ी हुई तो एक किसान उसी डिब्बे में चढ़ा। डब्बे में घुसते ही उसने महात्माजी को धक्का देकर उठाया— "उठो, बैठो ! तुम तो ऐसे पसरे पड़े हो जैसे गाड़ी तुम्हारे बाप की ही हो।"

महात्माजी उठकर बैठ गये और उनके पास ही बैठकर वह किसान गाने लगा—

'धन-धन गाँधीजी महाराज, दुखी का दुःख मिटाने वाले।'

वह महात्माजी के दर्शन करने बेतिया जा रहा था। उसे क्या पता था कि जिन्हें उसने धक्का दिया है, वे ही महात्माजी हैं और उसका गीत सुनकर अब मुस्करा रहे हैं।

बेतिया पर हज़ारों व्यक्ति महात्माजी के स्वागत के लिए एकत्र थे। ट्रेन के पहुँचते ही महात्माजी की जय-ध्वनि से आकाश गूँजने लगा। किसान को अपनी भूल का पता चला, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा और महात्माजी के पैरों पर गिर पड़ा। सहृदय महात्माजी ने उसे उठाया और धीरज बँधाया।

महाजन भागा

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसुधारक विद्वान रामतनु लाहिड़ी उन दिनों कृष्णनगर कालिजिएट स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। एक दिन वे सड़क पर कहीं जा रहे

थे। एक मित्र उनके पीछे चल रहे थे। अचानक लाहिड़ी बाबू शीघ्रता से दूसरी पटरी पर चले गये। मित्र ने उनसे इसका कारण पूछा। लाहिड़ी बाबू ने पहली पटरी पर जाते एक व्यक्ति की ओर संकेत करके कहा, "उन सज्जन ने मुझसे कुछ रुपये उधार लिये हैं। जब भी वह मुझे मिलते हैं, तो रुपये लौटाने की कोई न कोई तिथि बताते रहते हैं। सम्भवतः अपनी परिस्थिति से वे विवश हैं। उन्हें देखकर ही मैं इधर चला आया जिससे मेरे कारण किसी को झूठ न बोलना पड़े।"

अद्‌भुत चपरासी

तब सरदार पटेल के बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल केन्द्रीय विधान सभा के अध्यक्ष थे। एक दिन जब वे विधान सभा के बरामदे में खड़े थे तो इंगलैंड से भारत देखने आये एक अंग्रेज दम्पत्ति ने उन्हें साधारण वस्त्रों में देककर विधान सभा का कोई चपरासी समझा और विधान सभा का भवन दिखाने के लिए कहा। श्री पटेल ने एक गाइड की तरह उन्हें विधान सभा के सभी कमरे दिखाये। उस अंग्रेज़ ने इनाम के रूप में एक रुपया पटेलजी को देना चाहा जिसे उन्होनें नहीं लिया। अगले दिन वही दम्पत्ति विधान सभा की कार्यवाही देखने आया। जब श्री पटेल ने हाल में प्रवेश किया तो सभी सदस्यों ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। और जब वे अध्यक्ष की कुसी पर बैठे तो वह दम्पत्ति अपने पिछले दिन के व्यवहार पर बड़ा लज्जित हुआ।

जासूसी कहानियों का जनक

एडगर एलन पो पहला व्यक्ति था जिसने हत्या की, भूत की, भयावह कहानियाँ लिखनी आरम्भ कीं और उन्हें साहित्य का अंग बना दिया। रहस्यमय और संत्रास के कथानक उसे अपनी ओर चुम्बक के समान खींचते थे। उसकी आविष्ट कविता 'द रैवेन' अब जनवरी 1845 में प्रथम बार छपी तब उसने देश में तहलका मचा दिया। वह एक प्रेमी के विषय में है जो अपनी खोई प्रेमिका का दुख मना रहा है, जब एक गिद्ध आकर उसके कमरे में एक मूर्ति के ऊपर बैठ जाता है। कुछ पाठकों ने यहाँ तक बताया है कि कविता पढ़ने के बाद उन्हें रात्रि में भयावह सपने आते रहे जिनमें गिद्ध अवश्य आता था।

पो को इस कविता के दो पौड मिले थे। आज से लगभग तीस वर्ष पूर्ण इसकी पाण्डुलिपि बीस हजार पौंड में बिकी है।

गुण्डों का शिकार

पो के अन्तिम दिन कैसे बीते, यह ठीक नहीं कहा जा सकता। एक विवरण यह है। बाल्टीमोर को जाते हुए 1849 में पो गुण्डों के दल के हाथों में पड़ गया जो अपने काम के लिये शिकार ढूंढ रहे थे। वह कांग्रेस के एक सदस्य के चुनाव का दिन था। उसे एक चुनाव गढ़ में ले जाय़ा गया जहाँ खूब ह्विस्की पिलाई गई। फिर

अन्य शिकारों के साथ मदहोश पो को एक पोलिंग स्टेशन से दूसरे पोलिंग स्टेशन ले जाया गया और एक विशेष उम्मीदवार के लिये उनसे झूठे वोट डलवाये गये।

चुनाव निमटने पर दल उसे सड़क पर मरने के लिये छोड़ गया। किसी भले आदमी ने मद्यासक्त पो को नाली से उठाकर अस्पताल पहुँचा दिया जहाँ वह 7 अक्टूबर, 1849 को मर गया। मरते समय वह कुछ 41 वर्ष का था।

92 वर्ष बाद दुबारा शादी

डेनमार्क के कैप्टन आगे कार्लसन का विवाह 1811 में हुआ था। तभी उसके सागर पर जाना पड़ा और क्योंकि उसकी पत्नी उसके साथ जाना नहीं चाहती थी इसलिये उसने उसे तलाक दे दिया। वह 1903 में वापस लौटा और फिर अपनी पत्नी से शादी कर ली। दोनों की आयु इतनी लम्बी थी कि 1911 में उन्होंने अपने विवाह की सौवीं वर्षगांठ मनाई।

गिनती के लेखक

जब कोई पुस्तक का अन्दर का मुखपृष्ठ पढ़ता है तो उसके उल्टे पृष्ठ पर बहुधा कुछ पुस्तकों की सूची दी जाती है जिस पर लिखा रहता है— लेखक की अन्य पुस्तकें। कभी-कभी पाठक इस सूची की लम्बाई और गहराई देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है। क्या इसका मतलब यह समझा जाये कि पुस्तकों की गिनती से लेखक प्रभाव डालता है? कोई आवश्यक नहीं। कुछ लेखक बहुत प्रसिद्ध और महान् माने जाते हैं पर उनका लेखन गिना चुना है। टी० एस० इलियट को लो, उसने कुछ पुस्तकें ही लिखी हैं। ई० एम० फ़ोर्स्टर को अंग्रेज़ी का वर्तमान सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार माना जाता है। उसकी पुस्तकें इनी-गिनी हैं और उनकी गिनती बढ़ाने का उसका कई साल से कोई विचार नहीं हो रहा।

फिर भी यह मानना पड़ेगा कि बहुत लिखने वाले साहित्यकार हमारी दृष्टि और दिमाग अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ड्यूमा ने संसार में सबसे अधिक पुस्तकें लिखी हैं— लगभग 1200 पुस्तकें जिनमें अधिकतर मोटी हैं। यह मानी हुई बात है कि उनमें से बहुत सारी प्रच्छन्न-लेखकों की लिखी हुई हैं। एक बार ड्यूमा ने बेटे से पूछा, "क्या तुमने मेरा नया उपन्यास पढ़ा है?" "नहीं," बेटे का उत्तर था। "क्या आपने उसे पढ़ा है?"

लोप द वेगा ने कहा जाता है 1800 नाटक लिखे थे लेकिन उनमें से कुछ बहुत छोटे-छोटे थे।

कई उपन्यासकारों ने जिनमें अनेक स्त्रियाँ भी हैं सौ से ऊपर उपन्यास लिखे हैं। मारजोरी बोवन ने 160 से अधिक उपन्यास लिखे थे, कई उपनामों से। मिसेज ओलीफेंट के 120 से अधिक थे। ओपेनहीम ने 200 के लगभग उपन्यास लिखे थे।

इन सब में भी एडगर वैलेस की स्पीड बहुत तेज थी। वह भी इसलिये क्योंकि वह डिक्टेफोन में बोलता था। उसके 150 उपन्यास, 14 नाटक और कई हज़ार कहानियाँ और लेख हैं। वह स्वयं लिखता है कि सन् 1927 में उसने 26 उपन्यास और छः नाटक लिखे थे। एच० जी० वेल्स ने लगभग 180 पुस्तकें लिखी थीं जिनकी विविधता का वर्णन नहीं किया जा सकता। छोटा जीवन पाने पर भी आर्नल्ड बेनट ने 70 पुस्तकें लिखी थीं। अथक वाल्टेयर ने 140 पुस्तकें लिखीं थीं और बाल्ज़क ने 85। वैसे यह कोई विशेष बात नहीं है, यदि लेखक प्रतिदिन दो पृष्ठ लिखे और उसका जीवन लम्बा हो, तो वह यह गिनती आसानी से हासिल कर सकता है।

नया रिकार्ड

यह आवश्यक नहीं कि प्रसिद्ध लेखक ही सबसे अधिक लिखने वाला हो। अणेरिका का सबसे अधिक लिखने वाला एडवर्ड स्ट्रेटमेयर था जिसने लड़कों और लड़कियों के लिये 50-सैन्ट उपन्यास 12 उपनामों से लिखे और और जिसका नाम कोई खास प्रसिद्ध नहीं। 1898 से 1930 में अपनी मृत्यु तक उसने ८०० उपन्यास लिखे।

इतिहास के प्रसिद्ध मूर्ख

यह अजीब बात है कि कुछ व्यक्ति जो स्कूल में माने हुए मूर्ख थे, वे आगे जाकर ऐसे व्यक्ति बन गये जिनका नाम सारे संसार में प्रसिद्ध हो गया। महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ते समय यह बड़ा अद्‌भुत लगता है कि अपने बालपन में वे मूर्ख समझे जाते थे।

शरतचन्द्र चृटर्जी पढ़ने से डरते थे और इधर उधर घूमने में उन्हें मज़ा आता था। हिन्दी के अधिकतर दिग्गजों के माता-पिता के सम्मुख बहुधा यह समस्या रहती है कि बड़े होकर ये 'महानुभाव' क्या करेंगे। यही हाल विन्स्टन चर्चिल का था। स्कूल में वह जड़मति समझे जाते थे और अनेक बार उन्हें 'मूर्खों के कोने' में खड़ा होना पड़ा।

विश्वविश्रुत अर्थशास्त्री, लार्ड कीन्स के मरने पर निधन-समाचार में निकला था कि वे सिविल सर्विस में द्वितीय आये थे, किन्तु उनके अर्थशास्त्र में बहुत कम नम्बर आये थे। इसी विषय के वे बाद में विशेषज्ञ बने।

यही हाल एक अन्य विशेषज्ञ चार्ल्स डार्विन का था जिसके विकास के सिद्धान्त ने दुनिया में तहलका मचा दिया, तब के इतिहास, धर्म और जीव-विज्ञान की धारा पलट दी। डार्विन का जी पढ़ाई में नहीं लगता था, उसे तो प्रकृति और रसायन से प्रेम था। एक बार उसके प्रधानाध्यापक ने उसे बुलाकर बहुत डाटा। स्कूल के सब अध्यापकों की सम्मति थी कि इससे अधिक बेवकूफ़ लड़का उनकी निगाह से आज तक नहीं गुज़रा।

प्रकृति के अन्य प्रेमी प्रसिद्ध स्काटिश कवि राबर्ट बर्न्स थे। उनके अध्यापक भी उन्हें मूर्ख और मूढ़ कहकर पुकारते थे, परन्तु अपने क्षेत्र में उन्होंने अमरता प्राप्त की।

सर आइज़क न्यूटन को कक्षा में सबसे पिछड़ा स्थान दिया जाता था और वही स्थान कक्षा में सर राइडर हैगार्ड का था। उसके साथी और अध्यापक उसे बेवकूफ़ समझते थे।

सर वाल्टर स्कॉट को 'काठ के उल्लुओं के राजा' की उपाधि मिली हुई थी। उसके एक अध्यापक ने क्लास में कहा था, "काठ का उल्लू यह है और काठ का उल्लू यह रहेगा।" भाग्य की बात है जब वह प्रसिद्धि की चरम सीमा पर था, तब एक दिन अपने स्कूल में जा पहुँचा। वहाँ जो लड़का 'मूर्खों के कोने' में खड़ा था उससे उसने परिचय मांगा और एक सिक्का उसके हाथ में थमाता हुआ बोला, "यह मेरे स्थान को गरम रखने का इनाम है।"

यह लेखकों का ही नहीं, लड़नेवालों का भी हाल था। स्कूल में वे जड़मति पाये गये थे, और लड़ाई के मैदान में विलक्षण बुद्धि वाले। यह बात नेपोलियन और वैलिंगटन पर ही नहीं लगती, बल्कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ जमाने वाला रॉबर्ट क्लाइव भी अपने अध्यापकों के लिये बहुत बड़ा सिरदर्द था। अपनी दीखने वाली मूर्खता के कारण ही उसे भारत भेजा गया जहाँ उसने सेना में नौकरी कर ली और ब्रिटेन के सर्वप्रसिद्ध जनरलों में से एक हुआ।

इतिहास के प्रसिद्ध मूर्खों में माइकेल एंजेलो भी था जो संसार का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार और शिल्पकार माना जाता है। कवि टॉमस चैटरटन को स्कूल से घर वापिस कर दिया गया कि यह क्या पढ़ सकेगा। प्रसिद्ध साहित्यकार ओलिवर गोल्डस्मिथ को ट्रिनिटी कॉलिज से बिना डिग्री लिये बाहर जाना पड़ा।

प्रार्थना की शक्ति

बेडफर्डशायर में केसो के गिरजा के टावर से विलियम डिकिन्स नीचे कूद पड़ा, यह दिखाने के लिये कि प्रार्थना में कितनी शक्ति है। टावर भूमि से 114 फीट ऊंची थी। नीचे आते समय वह जोर जोर से दोहरा रहा था, "ईसा मसीह, मेरी सहायता करो।" नीचे पत्थर के खड़ंजे पर गिरने पर भी उसे तनिक खरोंच भी नहीं आई। वह उसके 41 वर्ष बाद तक जीवित रहा और 1759 में 73 वर्ष की आयु में मरा। यह कथा उस टावर के अन्दर शिलालेख में स्मरित की गई है।

मृत्यु का चश्मा

फ्रांस की राज्यक्रान्ति में डोमिनीक-जोसेफ गरात (1749-1833) न्याय मन्त्री था और उसी को वह कठोर कर्तव्य मिला था कि 1793 में राजा लुई सोलहवें को

मृत्युदण्ड सुनाये। उस अवसर पर जो सोने का चश्मा उसने पहन रखा था वह उतार दिया और उसका प्रयोग करने को मना कर दिया। इस घटना के चालीस वर्ष बाद गरात की अनुपस्थिति में वह पादरी उसके घर आया और उस चश्मे को पहन कर देखने लगा। तभी गराज वहाँ आ गया और 'दण्ड के चश्मे' को देखकर उसे इतना धक्का लगा कि तत्क्षण मर गया।

गोगा पीर

मुजफ्फरनगर जिले में दादरेत में गोगा पीर की समाधि है जिसकी आज भी कई जातियों द्वारा पूजा की जाती है। गोगा पीर ने अपने 45 पुत्रों तथा 60 भतीजों के साथ 1010 ईसवी में महमूद ग़ज़नवी का सामना किया और सब मारे गये थे। यह एक ही दिन में हुआ था और उस दिन को आज भी बहुत माना जाता है।

चांदी का महल

कोर्डोबा, स्पेन का खलीफा अल मंसूर (939-1002) बहुत धनवान तथा बड़ी शान शौकत का बादशाह था। उसने कोर्डोबा में अब तक विद्यमान कालाहोरा के रोमन क़िले की नक़ल पर एक चाँदी का किला बनाया था। अफसोस! अल मंसूर की मृत्यु के बाद अराजकता के दिनों में चाँदी के लिये इस किले को तोड़ दिया गया।

नाटकीय शतरंज का खेल

ग्रेनेडा का बादशाह मौहम्मद सातवाँ अपने भाई युसुफ से नाराज़ हो गया और उसने उसे मृत्युदण्ड का आदेश दिया। फांसी की कोठरी में एक अन्तिम शतरंज की बाज़ी खेलने की यूसुफ को अनुमति मिल गई। इधर खेल चल रहा था उधर बादशाह की मौत हो गई और उसका दण्डित भाई यूसुफ तीसरा 1408 में ग्रेनेडा का बादशाह बन गया।

पानी के नीचे भोजन

भारत में हत्ता से 6 मील दूर सोनार नदी में एक पवित्र ताल है। वह इतना गहरा है कि रस्सियों के सात गट्ठे बांधकर लटकाने पर भी उसकी गहराई नहीं पाई जाती। इस कारण उसे सतसुमा कहा जाता है। यहाँ तिल संक्रान्ति के दिन एक वार्षिक मेला लगता है। लगभग 5000 यात्री इस ताल में नहाने आते हैं और यहाँ उन्हें भोजन सिर पानी के अन्दर डुबोकर करना होता है।

न्याय पूरा होगा

यूनान में लौकरी का शासक ज़ैल्यूकस था जिसने किसी अपराध पर अपने पुत्र की आँखें निकालने का आदेश दिया। प्रज़ा ने इस पर दया की अपील की और

ज़ैल्यूकस ने अपने बेटे की एक आँख रहने देना मान लिया, किन्तु कानून की आत्मा की शान्ति के लिये उसने एक आँख अपनी निकलवा दी। यह 660 ईसा पूर्व की घटना है।

जवाहरात बरसे

1596 में अकबर की सेना ने अहमदनगर में घेरा डाल रखा था। नगर में तोपों का गोला-बारूद समाप्त हो गया। तब खजाने से सोना और चाँदी तोपों में भर कर दुश्मन पर वार किया गया और अत में तोप में आठ सेर वज़न के हीरे, मोती, नीलम और पुखराज आदि भर कर छोड़े गये।

सोने की नींव

बीदर के सुल्तान को 1290 ई० में एक सपना दिखाई दिया। उसके अनुसार उसने पुरन्दर में अपने किले के द्वार की नींव शुद्ध सोने की रखवाई। इसमें ठोस सोने की 50,000 ईंटे काम में आईं।

अजीब सनकी

पेरिस के हेनरी काउण्ड द ला़ बेदोयर (1782-1861) को दुर्लभ ग्रन्थ एकत्रित करने का शौक था। उसे इस हॉबी में इतना मज़ा मिलता था कि हर पाँच वर्ष उपरान्त वह अपना संग्रह नीलाम करता था और उसे स्वयं खरीद लेता था। ऐसा उसने पाँच बार किया और हर बार नीलाम करने वाले को 20 प्रतिशत कमीशन दिया।

अमेरिका का प्रथम करोड़पति

जार्ज वाशिंगटन अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति, अमेरिका का प्रथम् करोड़पति था। लेकिन अप्रैल, 1789 में अपने प्रतिष्ठापन के लिये न्यूयार्क जाने के लिये उसे प्रामिसरी नोट लिखकर 1500 डॉलर उधार लेने पड़े थे।

इतिहास की सबसे छोटी वधू

1306 ईसवीं में इंगलैण्ड के राजा एडवर्ड प्रथम की पुत्री इलेनोर 6 दिन की अवस्था में बर्गंडी और अरबॉय के काउण्ट ओथे को ब्याही गई थी।

ग्रीक जीनियस

प्राचीन ग्रीक कवि यूपोलिस (446-411 ई०पू०) ने अपनी सत्रहवीं वर्षगांठ से पूर्व 17 नाटक लिखे थे जिनमें से सात को देश का उच्चतम साहित्यिक पुरस्कार मिला था।

सिरहीन घुड़सवार

1635 में झाझर के युद्ध में शाह गाज़ी कमाल का सिर तलवार के एक वार से कट गया। लेकिन वह जीन पर इस मजबूती से बैठा था कि उसका धड़ घोड़े से लुढ़का नहीं और घोड़ा उस सिरहीन धड़ को उसके 26 मील दूर घर पंजाब में बाहु नगर में ले आया जहाँ उस पर मकबरा बना दिया गया तथा मस्जिद और तालाब भी बना दिये गये। यात्री उसे पीर समझकर पूजने आते हैं।

अद्‌भुत भोज

संसार का अद्‌भुत भोज पूना के नवें पेशवा बाजीराव द्वितीय ने दिया था जिसका शासन-काल 21 वर्ष (1797-1817) का था। अपने शासन-काल में उसे नारायणराव का, जिसे उसके माता-पिता ने १७७३ में मरवा डाला था, भूत तंग करता रहता था। वह स्वयं पश्चात्ताप में तपता रहता था। एक रात मृतक नारायणराव का भूत उसके सामने आया और प्रायश्चित के रूप में एक लाख मृतक ब्राह्मणों को भोज देने के लिये कहा। बाजीराव ने ऐसा ही किया। उसने राज्य के समस्त श्मशानों में न्यौता भेजा और एक लाख आत्माओं को निमन्त्रण दिया कि वे 16 दिसम्बर को दिये जा रहे भोज में सम्मिलित हों। लाखों रुपये खर्च करके विशाल भोज दिया गया। एक बड़े मैदान में एक लाख पत्तल परोसी गईं। दस हजार व्यक्ति परोसने वाले थे। ८ प्रकार के व्यंजन थे। उसमें जीवित खाने वाला केवल बाजीराव था।

नारायणराव की आत्मा चाहे शान्त हो गई हो पर अगले वर्ष अंग्रेज़ों ने बाजीराव को हरा दिया। वह निर्वासन में 1851 में मरा।

पढ़ना और याद रखना

यह विश्वास से नहीं कहा जा सकता कि तेज और अधिक पढ़ने वाला अच्छा याद रखने वाला भी होता है। न ही यह दृढ़ता से कहा जा सकता है कि साहित्यकार की स्मृति अवश्य अच्छी होती है। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि तेज पढ़ने वालों की स्मृति अच्छी होती है। एक समय इस बात का रिकार्ड लार्ड मैकाले का था। वह अथक पढ़ने वाला था और उसकी स्मरण शक्ति अत्युत्तम थी। उसके युग में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसने उसके बराबर संख्या में या विविधता में पुस्तकें पढ़ी हों।

जहाँ तक पढ़ने की शक्ति का सवाल है टी०ई० लारेन्स के बारे में प्रसिद्ध है कि उसने आक्सफर्ड यूनियन लाइब्रेरी की समस्त पुस्तकें, जिनकी संख्या उस समय 50000 थी, लगभग 6 वर्ष में पढ़ डालीं। यदि यह ठीक है तो इसका मतलब हुआ प्रतिदिन 20 पुस्तकों का औसत। यह असम्भव लगता है। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उसे पढ़ने का बहुत शौक था और उसकी गति बहुत तेज़ थी।

आस्कर वाइल्ड की पढ़ने की गति भी बहुत तेज़ थी। वह एक औसत उपन्यास एक घंटे में निमटा देता था। एक बार वह किसी प्रकाशक के दफ्तर में बैठा इन्तजार कर रहा था, जहाँ उसने नये आये उपन्यास की पाण्डुलिपि 35 मिनट में पढ़ डाली और बाद में उसके अनेक वाक्य ज्यों के त्यों सुना दिये।

इस पुस्तक का लेखक भी काफी तेज पढ़ने वाला है और साथ ही पढ़ने का धत्ती भी। वह कोई उपन्यास हाथ में लेकर निमटाकर ही उठता है और घण्टे में 250-300 पृष्ठ पढ़ डालता है। अंग्रेजी भाषा में उसकी गति कुछ ऊपर ही रह जाती है। आज तक पढ़ी पुस्तकें हज़ारों में पहुँच चुकी हैं।

पुस्तकें पढ़ने की तेज़ स्पीड अधिक पढ़ने से आती है। पढ़ते-पढ़ते मनुष्य का दिमाग़ इतना सध जाता है कि हर शब्द पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना पड़ता। वाक्य के कुछ शब्दों से वाक्य पता चलता है और वाक्यों से पैरा पता चल जाता है। इसके लिये उसे शब्दों को मन में जोड़ जोड़ कर नहीं पढ़ना पड़ता। यह मानी हुई बात है कि अच्छे से अच्छा तेज़ पाठक पूरी पुस्तक एक-एक शब्द नहीं पढ़ता। पुस्तक का पूरा विचार वह ग्रहण कर लेता है और जो सूक्ति या भाव उसे प्रभावित करते हैं उन्हें स्मृति में रख लेता है।

विलक्षण स्मृति अलग चीज़ है लेकिन क्या अधिकतर तेज़ पढ़ने वाले लेखकों में यह पाई जाती है। उनकी एक प्रकार की फोटोग्राफिक स्मृति होती है। जो पृष्ठ वे पढ़ते हैं उसकी फोटो कापी उनकी स्मृति में उतर जाती है। इस प्रकार की स्मृति का अन्यतम उदाहरण मैकाले था। यह कहा जाता है कि जो चीज़ वह पढ़ता था उसके भाग, शब्द-प्रति-शब्द, कुछ दिनों बाद नहीं, अनेक वर्षों बाद सुना देता था। इसी प्रकार की स्मृति वाले बातचीत में खूब चमकते हैं। "इस बारे में अमुक पुस्तक में 254 पृष्ठ के नीचे बड़ा अच्छा लिखा है।" "बैकन का विचार यह था जैसा कि उसने निबन्ध में अमुक पृष्ठ के तीसरे पैरे में लिखा है।" यह चौंकाने के लिये ही नहीं, बिल्कुल अक्षरशः सत्य होता है क्योंकि कुछ व्यक्तियों की असाधारण स्मृति होती है। लेखक स्वयं अपने को 'चलता फिरता विश्वकोष' मानता है और मिलने वालों को आश्चर्यचकित करता रहता है।

सिडनी वैब की भी अद्‌भुत स्मृति थी। अपनी युवावस्था में एक दिन जुकाम के कारण वह सोफे पर लेटा 'प्रिंसिपल्स ऑफ इकनॉमिक्स' पुस्तक पढ़ने लगा। दो घण्टे में उसने पुस्तक निपटा ही नहीं ली बल्कि आत्मसात् भी कर ली।

उपन्यासकार मैसन की स्मृति विलक्षण थी। वह अपने कथानकों के नोट्स नहीं रखता था बल्कि पुस्तकों के कथानक, चरित्र, घटनाएँ सब दिमाग़ में बनाता था। फिर वहीं उन्हें कोल्ड स्टोरेज में रख लेता था और कई-कई सालों बाद उन पर कार्य आरम्भ करता था।

स्कूली शिक्षा न ग्रहण करने पर भी सफल

रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे मेधावी व्यक्ति बिरले ही होते हैं। उन्होंने स्कूली शिक्षा ग्रहण नहीं की। जो कुछ विद्या उन्होंने प्राप्त की घर पर रहकर तथा स्वयं के परिश्रम से प्राप्त की। स्कूली शिक्षा की कमी सादे व्यक्तियों के जीवन में रोड़ा बन सकती है किन्तु मेधावी व्यक्तियों का इससे कुछ नहीं बिगड़ता।

कुछ वर्ष पूर्व जॉन स्कीपिंग को रायल स्कूल ऑफ आर्ट में शिल्पशास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त किया गया। स्कीपिंग ने बताया है कि वे आज तक स्कूल नहीं गये। "मुझे नहीं याद कि कभी मुझे पढ़ने की शिक्षा दी गई हो। ...... मैं आज भी सादे सवाल नहीं कर सकता या हिसाब किताब नहीं रख सकता।"

इसी प्रकार का प्राचीन उदाहरण एन्ड्रे एम्पीयर का है जिसे अर्वाचीन भौतिकशास्त्र का जनक माना जाता है और जिसने विद्युतृ-चुम्बकत्व की खोज की है। उसे स्कूल नहीं भेजा गया क्योंकि उसके पिता का विचार था कि अच्छा मस्तिष्क अपना भोजन स्वयं ढूंढ निकालता है। घर पर ही उसे केवल पढ़ना लिखना सिखा दिया गया। 18 वर्ष की आयु में उसने एक सार्वदेशीय भाषा खोज निकाली, अपने को बीजगणित, कैलकुलस और अन्य गणित के विषयों में माहिर कर लिया। फिर उसने जीवशास्त्र, संगीतशास्त्र और काव्य सम्भाला। एक महाकाव्य लिख मारा और होरेस का कविता में अनुवाद किया। ग्रीक पढ़ी और नक्षत्रों को देखने के यन्त्र बनाये।

उसका विचार था कि यदि उसे स्कूली शिक्षा मिलती तो वह भी ढर्रे पर चल जाता और यह सब काम न कर पाता। लेकिन एम्पीयर एक जीनियस था, साधारण व्यक्तियों के लिये उसका उदाहरण उपयुक्त नहीं।

लेखक ने मुक्केबाजी के चैम्पियन को हरा दिया

"बेईमान!" तीसरी दशाब्दी में होने वाली मुक्केबाजी की प्रतियोगिता में उत्तेजित भीड़ चिल्लाई। "साफ बेईमानी है!"

लड़ने वालों में से एक जो बहुत भारी भरकम था अपने प्रतिरोधी को छठी का दूध याद दिला रहा था। उसने फिर अनियमित, पेट के नीचे मुक्का मारा।

एक लम्बा, चौड़े कन्धों वारा अमेरिकन, जो पेरिस घूमने आया हुआ था, यह अन्याय न देख सका। वह अपनी सीट पर से मैदान में कूद कर शुद्ध फ्रेंच में चिल्लाया, "बेईमानी करनी बन्द करो।"

उत्तर में उस भयानक मुक्केबाज ने एक मुक्का उसके सिर की ओर भेजा। अमेरिकन लेखक अर्नेस्ट हैमिंग्वे ने वार बचा लिया। तब उसका बायाँ घूंसा मुक्केबाज के जबाड़े पर हथौड़े के समान पड़ा।

बेचारे चैम्पियन को रिंग में से उठा कर ले जाना पड़ा। भीड़ ने पागलों की तरह हेमिंग्वे का अभिनन्दन किया।

यही लेखक सांड से भी लड़ा

स्पेनिश लोगों का राष्ट्रीय खेल सांड से युद्ध करना है। इसमें भीषण से भीषण सांड को खिला पिला कर शराब आदि में मस्त कर खेल के मैदान में छोड़ दिया जाता है और उसके विरुद्ध एक आदमी उतरता है। वह सांड को खूब खिजाता है और फिर उसे तलवार से मार डालता है। यह संसार का सबसे भयानक खेल है। पहले यह क्रीट की मायोनियन सभ्यता की देन समझा जाता था, किन्तु अब उससे पूर्व की सिन्धु सभ्यता की मुहरों पर भी यह चित्रित पाया गया है।

जब हेमिंग्वे पहली बार स्पेन गया तो उसने सांड से लड़ने का निश्चय किया। लेकिन जब वह उस गोल घेरे में क्रोधित, फुंकारते हुए सांड के सामने आया तो साहस ने उसका साथ नहीं दिया। सांड को दो तीन बार चकमा देने के बाद उसने प्रवेशद्वार की ओर दौड़ लगाई। सांड भी अपने शिकार की ओर लपका लेकिन इस दौड़ में हेमिंग्वे जीता।

संगीत से मरा

उस बड़े हाल में मोहक 'वियना का वाल्ज़' बजाया जा रहा था। श्रोतागण मुग्ध बैठे थे।

तभी दैवपात हुआ। एक लापरवाह वायलिनवादक अपने सामने रखे संगीत के नोट भूल कर गलत बजा गया। एक क्षण को सारा ऑर्केस्ट्रा गड़बड़ा गया।

सबसे अधिक धक्का संगीत निर्देशक को पहुँचा। उसके हाथ से छड़ी नीचे गिर पड़ी और वह फर्श पर ढेर हो गया।

वह यूरोप के प्रसिद्ध संगीतकार जोहन स्ट्रास का भाई जोसेफ स्ट्रास था। अपने बनाये ऑर्केस्ट्रा में गड़बड़ वह महान निर्देशक न सह सका। 1840 में वारसा के उस संगीत-हाल से डाक्टर के ले जाते समय उसकी मृत्यु हो गई।

आग लगने पर क्या करना चाहिये

स्टीवेन मेकीवर जब सोकर उठा तो उसने देखा कि जिस फ्लैट में वह रह रहा था उसमें आग लग गई है। फोन करने के उपरान्त वह भागकर अपने गुसलखाने में घुस गया और टब में बैठकर उसने सारे नल खोल दिये।

फायर ब्रिगेड वालों ने उसे वहाँ सही सलामत पाया। यह घटना हॉलीउड की है।

औसान ही सब कुछ है

अमेरिका में एक दूधवाला दूध बांट कर अपनी ट्रक में लौट रहा था कि राह में बर्फ का तूफान आ गया। वह भी इतना भयानक कि मोटर को एक क़दम भी आगे बढ़ाना असम्भव हो गया। वह ड्राइवर की सीट से उतर कर दूध रखे जाने वाले रेफ्रीजरेटर भाग में घुस गया। वहाँ का जमने वाला तापक्रम था किन्तु बाहर ता ताप जमने वाले तापक्रम से भी 29° नीचे था। बाहर रहता तो वह निश्चय ही मर जाता।

जाको राखे साइयाँ

आत्महत्या करने हेतु एक निराश रूमानियन ने अपने दिल में दो गोलियां मार लीं। बन्दूक की आवाज सुन कर लोग दौड़े आये और उसे फौरन अस्पताल पहुँचाया गया।

उसका आपरेशन करने पर सर्जनों को पता चला कि उसका दिल शरीर के बायें भाग के स्थान पर दायीं ओर है। दोनों गोलियाँ निकाल दी गईं और वह व्यक्ति कुछ दिन लोट पोट कर ठीक हो गया।

उसने अपने भाई को बेच दिया

विल्क्स भाइयों की व्यापार में क़िस्मत ही खराब थी। 1756 में वे दोनों इंगलैण्ड से जमैका पहुँचे। वहाँ उन्होंने लुहारी का काम ढूंढा किन्तु निराश रहे। आखिर उन्होंने दास व्यापार से लाभ उठाने की सोची। लेकिन उन पर कोई पूँजी न थी।

अन्त में बड़े भाई जिम को एक युक्ति सूझ गई। छोटे भाई ज़ैड ने भी वह मान ली। अगले दिन उसका बिल्कुल मूंडन कर तथा सिर से पैर तक काला रंग कर जिम ने बाजार में खड़ा कर दिया। लगे हाथों वह 80 पौंड में बिक गया।

उसी रात वह अपने नये घर से भाग लिया। रात भर बैठकर दोनों भाइयों ने रंग छुड़ाया। फिर वह भागा हुआ दास अपने मालिक की हर कोशिश के बावजूद नहीं मिला। किसी ने उसे सफेद चमड़ी में ढूंढने का प्रयास नहीं किया।

उन 80 पौंड से भाइयों ने व्यापार आरम्भ किया और कुछ सालों के बाद जब वे इंगलैण्ड लौटे तो उनके पास 20,000 पौंड थे।

जमैका से लौटने से पहले उन्होंने उस खरीददार को, जिसे उन्होंने ठगा था, उसके 80 पौंड वापिस कर दिये।

जब न्यागरा जलप्रपात लुप्त हो गया

1848 में घने मेघों के साथ बसन्त आया लेकिन न्यागरा नदी के तटवासियों ने कोई ध्यान नहीं दिया। तूफान पर तूफान ने हरी झील पर जमी बर्फ के टुकड़े कर दिये और उन्होंने पानी के साथ गिरकर प्रपात के भीषण रव को और बढ़ा दिया।

मार्च 30 की रात्रि में सब शान्ति से सोये। लेकिन रात्रि के मध्य में वे जग गये। हवा बन्द थी और सब जगह एक शान्ति थी, अद्‌भुत शान्ति।

घोष से वे परिचित थे, लेकिन इस शान्ति ने उन्हें घबरा दिया। वे कपड़े पहन कर नदी की ओर भागे। पर घोर आश्चर्य ! नदी गायब थी। सूखी धरती पड़ी थी। वह जल-प्रपात जहाँ अधिकतर अमेरिकन अपनी सुहागरात मनाने जाते हैं लुप्त हो गया था। झाँकने पर इधर उधर कीचड़ के सिवाय पानी का नाम निशान न था।

तरह तरह के अन्धविश्वास फैल गये। कुछ लोग समझने लगे कि संसार का अन्त निकट है।

पूरे 24 घन्टे तक जनता प्रार्थना करती रही। 1 अप्रैल की प्रातः रात्रि के झुटपुटे में कुछ गड़गड़ाहट की ध्वनि आई और कुछ क्षण बाद फिर पहले जैसा भयानक शोर फैल गया। न्यागरा नदी में पानी आ गया था, जल-प्रपात लौट आया था।

तभी जनता शान्त हो पाई कि इसका सीधा सादा कारण पहचान सके। टूटा बर्फ हरी झील के पानी निकलने के मार्ग पर इकट्ठा होकर एक दृढ़ दीवार बन गया था। एकत्रित होते पानी को उस दीवार को तोड़ने में पूरे 24 घन्टे लगे।

दस वर्ष के दस डालर

एडगर एलन पो की 'द रेवेन' कविता की पाण्डुलिपि कुछ वर्ष हुए कई सहस्र डालर की बिकी है। परन्तु अपने जीवन काल में, दस वर्ष तक उस कविता को निखारते रहने पर भी, पो को उसके कुल दस डालर मिले थे।

सर्प से अधिक विषैला

पीट गैम्फीस केपटाउन से 70 मील उत्तर-पश्चिम की ओर गन्सबाई शहर में रहता था। 16 जनवरी 1956 को उसने एक विषैला सर्प पकड़ा और उसे अपने मित्रों को दिखाने लगा। तभी सर्प ने अपना मुख छुड़ाकर उसे काट खाया। उसने फौरन चाकू से अपना घाव चारों ओर से काट डाला, मुख से काफी रक्त चूस कर कुल्ला कर दिया और फिर क्रोध में पागल हो साँप के काट खाया। साँप फौरन मर गया।

विश्व की सबसे अधिक भाषाओं का पण्डित

विश्व के भाषाविदों में सबसे महान् इटली के बोलोना नगर के निवासी जोसेफ कस्पार कार्डिनल मेजोफन्टी थे। उन्होंने अपना समस्त जीवन भाषाओं को सीखने में व्यतीत किया था। उन्हें 114 भाषाओं और 7 बोलियों में पाण्डित्य प्राप्त था। अपने समय में वे ही ऐसे विशेषज्ञ थे जो 54 भाषाओं में उतने ही दक्ष थे जितने उन भाषाओं के पण्डित। चीनी भाषा को भली भाँति सीखने में उन्हें चार मास का समय लगा था। चीनी ही एक ऐसी भाषा थी जिसे सीखने में उन्हें सबसे अधिक

समय लगा था। सबसे आश्चर्य की तो यह बात है कि अपने जीवन में किसी भाषा को सीखने के लिये उन्हें अपनी मातृभूमि छोड़कर कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

सास-दामाद

प्राचीन काल की कुछ असभ्य जातियों की एक रीति के अनुसार वर वाग्दान के समय से मृत्यु तक अपनी सास को नहीं देख सकता है। विद्वानों का विचार है कि यह रिवाज़ मातृसत्तात्मक समय से सास और दामाद के बीच अनियमित सम्बन्ध को रोकने के लिये आरम्भ किया गया था। आज भी कई आदिम जातियों में दामाद अपनी सास का नाम नहीं ले सकता।

बन्द खिड़की

स्पेन के शहर ग्रेनेडा के शाही महल में एक खिड़की सन् 1529 से कीलों से जड़ दी गई थी। इस बात को वर्षों गुज़र गये वह खिड़की आज तक बन्द है। घटना यह हुई थी। उस महल के जागीरदार की पुत्री अपने प्रेमी के साथ भागना चाह रही थी। इस काम में महल के एक नौकर ने उसकी सहायता करनी चाही पर भेद खुल गया और वह पकड़ा गया। जिस खिड़की से भागने का प्रोग्राम था जागीरदार ने उसे उस खिड़की से नीचे फिंकवा दिया और खिड़की को बन्द कर कीलें ठुकवा दीं।

सूर्य की गरमी

सर जेम्स जीन्स के अनुसार यदि कोई तोप का गोला सूर्य के मध्य के तापक्रम 50,000,000 डिग्री जितना गरम किया जाये तो उससे निकलने वाले प्रकाश का भार उसके चारों ओर के पचास मील के दायरे में आने वाले मनुष्य को उठा फेंकेगा।

उन्नीसवीं सदी का सर्वप्रसिद्ध चित्र

फ्रांस का प्रसिद्ध चित्रकार मैनेट जिसे अपने अन्त के निकट 'लीज़न आफ ऑनर' (फ्रांस का सर्वोच्च पदक) मिला तथा जिसने चित्रकला में एक नई शैली, इम्प्रैशनिज्म, को जन्म दिया, आरम्भ में अपने चित्रों के कारण बहुत बदनाम हुआ।

आर्ट गैलरी में एक अनजान चित्रकार का चित्र देखकर महारानी यूजेन चौंक उठी और उन्होंने अपने नेत्र नीचे कर लिये। सम्राट नेपोलियन तृतीय क्रोध में भर उठे— "यह लाज पर एक धब्बा है।" चित्र मैनेट का 'दी बाथ' था। कुछ दिनों में चित्र सारे पेरिस में बदनाम हो गया, समाचारपत्रों में उसकी बुराई छपी। किसी ने यह नहीं सोचा कि प्राकृतिक दृश्य में नग्नता क्लासिकल आर्ट है। बस, वह नग्न युवती दो युवकों के साथ बाग में सरोवर के तट पर बैठी सब को चौंका देती थी।

कुछ दिनों बाद मैनेट ने दूसरा चित्र 'ओलिम्पिया' बनाया जिसमें एक नग्न युवती लेटी हुई दिखाई थी। फ्रांस में एक दूसरा तूफान उठ खड़ा हुआ। सब जगह उस पर छींटे छोड़े गये।

लेकिन धीरे धीरे मैनेट की कला का आदर हो रहा था। कुछ प्रसिद्ध चित्रकार, जिनका उस समय कोई नाम भी न जानता था, मैनेट के साथ उसकी शैली सीखने लगे।

अब तो सब यह मानते हैं कि 'दी बाथ' उन्नीसवीं सदी का सर्वोत्तम चित्र है।

तीन सैट

फ्रांस के लियो प्रदेश के गवर्नर मार्शल दा कैस्तीलाने (1788-1862) के पास अपनी सैनिक वर्दी व तमगों के तीन पूरे सैट थे। एक सैट वह दिन में पहनता था, दूसरा रात्रि में सोने के समय काम आता था और तीसरे को पहन कर वह नहाता था।

राजसी उपहार

विजयनगर के एक सम्राट ने अपने सेनाध्यक्ष आपाजी की विजयों से प्रसन्न होकर उसे इतना हीरे जवाहर दान दिये जितने उसको खड़ा कर उसे गरदन तक ढक दें।

जासूसी साहित्य

संसार की सर्वप्रथम जासूसी कहानी एक जासूसी घटना के आधार पर लगभग 125 वर्ष पूर्व अंग्रेजी में लिखी गई थी। आज अंग्रेज़ी में प्रकाशित होने वाले साहित्य के पांचवें भाग से अधिक जासूसी कथानक होते हैं।

ईस्टर द्वीप के देव

डच एडमिरल जेकब रोग्गेवीन ने अपनी आंखें मल मल कर देखा। उसके तीनों जहाज़ दक्षिणी प्रशान्त महासागर के पूर्वी भाग में तथाकथित देवों के सुदृढ़ किलेबन्दी की ओर जा रहे थे। उसने दूरबीन से देखा— द्वीप के तट पर दीवारें खड़ी थीं और उसके ऊपर मनुष्य से कई गुना बड़े देव खड़े थे। यह सन् 1722 ईसवी का ईस्टर का दिन था।

रात्रि के समय रोग्गेवीन ने जहाज़ों को तट से दूर रखा। सवेरे के प्रकाश में वह तट पर उतरा। वहाँ उसने संसार का एक सबसे अद्भुत दृश्य देखा। दीवारें पत्थर के प्लेटफार्म थे जिन पर सैंकड़ों देवों की मूर्तियाँ बनी थीं, कमर से ऊपर सिर पर एक लाल कपड़ा पहने। उसने इसका नाम ईस्टर द्वीप रख दिया।

द्वीप 60 वर्गमील लम्बोतरा है। उसमें बनी विशालकाय मनुष्य-मूर्तियाँ द्वीप के ज्वालामुखी पर्वत की ऊँचाइयों पर बनाकर इन प्लेटफार्म पर लाकर खड़ी की गई हैं। समझ में नहीं आता कि इतनी भारी वस्तुएँ दस मील के फासले तक कैसे ले जाई गईं। अधिकतर 30 टन की हैं। ऊँचाई में वे 12 फीट से लेकर 66 फीट तक (एक देवों के देव जो अधूरा है की ऊँचाई) है।

आज सब मूर्तियाँ गिर पड़ी हैं। उनके साथ ही साँवले रंग के मनुष्य रहते हैं। उनकी चित्र-लिपि तथा विश्वासों से चीन और भारत से उनका सम्बन्ध मालूम होता है।

महान् व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होते

टिटियन ने अपना प्रमुख चित्र 'बैटिल ऑफ लैपाण्टो' 98 वर्ष की अवस्था में बनाया था। बर्डी ने अपने महान् ओपेरा 'ऑथेलो' 74 वर्ष और 'फाल्स्टाफ' 80 वर्ष की अवस्था में लिखे थे। काण्ट 74 का था जब उसने 'एन्थ्रोपोलौजी' पुस्तक लिखी थी। 67 वर्ष का होने के बाद एडीसन ने रासायनिक यन्त्र बनाये थे।

सुकरात ने वृद्धावस्ता में संगीत वाद्यों को बजाना सीखा था। कैटो ने अस्सी की अवस्था में ग्रीक पढ़ी थी और लगभग इसी अवस्था में प्लूटार्क ने लेटिन का अभ्यास किया था।

डा० जॉनसन ने अपनी मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व डच भाषा सीखनी आरम्भ की थी। 73वें वर्ष में लकवे के उस भीषण आक्रमण के समय, जब उनकी बोलने की शक्ति भी मारी गई थी, उन्होंने अपनी मानसिक शक्तियों का परीक्षण लेने के लिये एक लेटिन प्रार्थना बनाई।

चौसर ने कैण्टरबरी टेल्स 54वें वर्ष में लिखनी आरम्भ की थी और 61वें वर्ष में समाप्त की थी।

फ्रैंकलिन ने अपना दार्शनिक अध्ययन 50 वर्ष की अवस्था में आरम्भ किया था।

सर क्रिस्टोफर रेन ने 86 वर्ष की अवस्था में सार्वजनिक जीवन से छुट्टी ली। उसके बाद 5 वर्ष उन्होंने साहित्यिक, ज्योतिष तथा धार्मिक कामों में व्यतीत किये।

हॉब्स को बड़ी प्रसन्नता थी कि वे अपने सब शत्रुओं से अधिक दिन जीवित रहे और अन्त तक वे पहले हॉब्स ही बने रहे। यह सिद्ध करने के लिये उन्होंने 87वें वर्ष में 'द ओडेसी' का अपना अनुवाद प्रकाशित कराया तथा उससे अगले साल 'द इलियड' का।

कंपाने वाला अनुभव

प्रसिद्ध हास्य-अभिनेता बॉब होप को वर्षों पहले एक कंपा देने वाले अनुभव हुआ था। तब वह एक प्रहसन में काम करता था। जिसमें उसका एक मज़ाक यह था। वह कहता था, "मेरे भाई ने एल कैपोन (अमरीका का सबसे बड़ा हत्यारा) के चाँटा मारा।" इस पर उसका सीधा साधा साथी कहता, "ओह ! तब तो वह बड़ा चतुर होगा, मैं उससे मिलना चाहूँगा।" होप का प्रत्युत्तर होता, "खेद है, इसके लिये उसे हमें कब्र से खोदना पड़ेगा।"

शिकागो में जब खेल चल रहा था, तो एक व्यक्ति होप से मिलने उसके ड्रेसिंग रूप में आया और उससे प्रार्थना की कि वह इस चुटकुले को अपने अभिनय में से उड़ा दे क्योंकि इससे उस व्यक्ति को क्रोध आ जाता है। बॉब होप ने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया— बिनबुलाया मेहमान स्वयं एल कैपोन था।

मोरचाल

सेना में भरती होने से पहले एमिल जैटोपेक (मानव एंजिन) उसी कारखाने में काम करता था जिसमें डाना थी। कारखाने में स्पोर्ट्स क्लब के उत्सव में डाना ने जैवलिन थ्रो में एक नया रिकार्ड कायम किया तथा एमिल ने 3000 मीटर की दौड़ में। वहीं इन दोनों की पहले भेंट हुई। फिर साथ ही वे लन्दन के ओलम्पिक खेलों में भाग लेने गये।

किन्तु वापिस लौटने पर डाना के पिता से जो कर्नल था और एमिल का बॉस था जैटोपेक को डाना का हाथ माँगने का साहस नहीं हुआ।

डाना की वर्षगाँठ के उत्सव में भाग लेते समय एमिल ने कर्नल से प्रार्थना की। कर्नल ने सोचा कि वह शराब अधिक पी गया है, उसके होश हवास ठीक नहीं हैं। उसने कहा कि वह एमिल की बात को गम्भीर रूप से तभी लेगा जब वह हाथों के बल पैर ऊपर करके बिना सन्तुलन खोये खड़ा हो जाय। सो भारतीय कहावत के अनुसार एमिल को डाना को पाने के लिये सिर के बल खड़ा होना पड़ा। अक्टूबर 1948 में उनका विवाह हो गया।

ईर्ष्यालु प्रेयसी

कहा जाता है कि एक बार किसी ने माइकेल एंजेलो (विश्व के महानतम चित्रकारों तथा मूर्तिकारों में से एक) से पूछा कि वह इतना एकान्त जीवन क्यों व्यतीत करता है। उसने उत्तर दिया, 'कला बड़ी ईर्ष्यालु प्रेयसी है, वह पूरा पुरुष चाहती है।' गेटे के शब्द भी सब को याद होंगे— 'जीवन में मुख्य वस्तु है एक महान् उद्देश्य रखना और उसे प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा व सहनशीलता होना।' इस विषय में एडम स्मिथ का ध्यान हो आता है जिसने अपनी अमर पुस्तक 'वैल्थ आफ नेशन्स' लिखने

में दस वर्ष व्यतीत किये थे। अमरीकी शब्दवेत्ता, नोह वैब्स्टर, ने अपना कोश तैयार करने में 36 वर्ष लगाये थे। अमरीकी व्यावसायिक साइरस फ़ील्ड केवल तार डालने के लिये महासागर के आरपार पचास बार गया था। महान् इंगलिश इतिहासकार एडवर्ड गिबन ने 'द डिक्लाइन एण्ड फ़ाल ऑफ़ रोमन एम्पायर' पर बारह वर्ष परिश्रम किया था।

विचित्र दण्ड

अमेरिका में एक स्त्री नग्न फिरने के अपराध में पकड़ी गई। इस पर जज ने उसे एक पत्थर की कोठरी में लोहे की कुर्सी पर नग्न बैठने का दण्ड दिया। कुछ देर में जाड़े से ठिठुर कर वह कपड़ों के लिये विनती करने लगी और उसने भविष्य में पूरे कपड़े पहनने का वादा किया।

विचित्र बंटवारा

स्विट्जरलैंड में नोज़ों नामक नदी है। पोमपैप्लस नाम के स्थान पर पहुँचकर यह दो धाराओं में बंट जाती है— एक धारा दक्षिण में जाकर भूमध्य सागर में गिर जाती है, दूसरी उत्तर को बहती हुई नॉर्थ सी (उत्तरी सागर) में जा मिलती है।

विचित्र साझेदारी

गिल्बर्ट और सलीवान के ओपेरा संसार-प्रसिद्ध हैं। इन दोनों ने सन् 1871 से 1896 तक संगीत के इतिहास में 14 सर्वाधिक लोकप्रिय ओपेरा (संगीत नाटक) बनाये। पर इनकी साझेदारी विचित्र थी। शब्दकार गिल्बर्ट और स्वरकार सलीवान एक दूसरे को अत्यन्त घृणित और नीच समझते थे इसलिये आपस में बहुत ही कम मिलते थे। आपसी काम और बातचीत चिट्ठी पत्री से करते थे। तीन बार क्रोध में आकर वे अलग हो गये पर किसी अन्य साथी के साथ वे कोई अच्छा ओपेरा न बना सके।

मृत पत्नी को उपहार

एडगर एलन पो ने अपनी चचेरी बहन वर्जीनिया क्लैम से शादी की थी जिसकी अवस्था से उनकी अवस्था का दुगने का अन्तर था। फिर भी वे उसे बहुत प्यार करते थे।

पो बराबर अर्थाभाव में रहे। अपनी बीमार पत्नी के लिये रोटी तक खरीदने को उनके पास पैसे न थे। बीमारी की अवस्था में उनकी सास वर्जीनिया की देह में गर्मी लाने के लिये उसकी हथेली मला करती थी और पो तलवे सहलाया करते थे। जब वर्जीनिया मर गई तो पो के पास उसे दफनाने के लिये पैसे नहीं थे।

उसकी मृत्यु के कुछ मास बाद बसन्त आया अपनी पूरी सजधज के साथ। पो भी अपनी हृदय-साम्राज्ञी के साथ स्वप्नलोक में विचरने लगे। उस समय उन्होंने जो 'अन्नाबेल ली' कविता लिखी वह जगत्प्रसिद्ध है।

अभिशाप या वरदान

केपटाउन के अन्तर्गत स्टेलेनवर्ग का निवासी हेनरी एडामे स्थानीय मोटर-गैरेज में काम करता था। उसी गैरेज के कम्पाऊंड में एक विषधर सर्प रहता था। कई लोगों ने एडामे को उस साँप के विषय में सावधान किया। लेकिन एडामे कभी नहीं डरा और न उसने साँप की ओर कोई ध्यान दिया।

एक दिन काम करते करते उसे रात हो गई। काम निपटा कर वह अपने घर लौटने लगा था जब साँप उसके पैरों के नीचे आ गया। साँप क्रोध से फूत्कार उठा। उसने दो बार एडामे के पैर में काटा और भाग गया।

पर एडामे के प्राण बच गये। उसकी एक टाँग काठ की थी और उसी पर साँप के जहरीले दाँत गड़े थे।

संगीतकार फव्वारा

इटली के टिवोली नामक स्थान पर एक फव्वारा है। पिछले चार सौ वर्षों से इस फव्वारे से निकलता हुआ जल आर्गन बाजे जैसा संगीत उत्पन्न कर रहा है।

बलपूर्वक आतिथ्य

जनवरी 13, 1952, रविवार का दिन था जब 226 व्यक्तियों के दल को पर्वत देवता के आतिथ्य को मजबूरन स्वीकार करना पड़ा। सदर्न पैसिफिक रेलरोड की ट्रेन 'सिटी ऑफ सन् फ्रांसिस्को' केलिफोर्निया के हाई सियरा पर्वत को पार कर रही थी। कई दिन से बर्फ के तूफान चल रहे थे। 226 यात्री तथा अपने कर्मचारियों को लेकर 'सिटी' ने डोनर समिट का बर्फ से ढका स्टेशन छोड़ा। उसके डीजल इंजिन से लगा हल बर्फ को साफ कर रहा था और वह चींटी की चाल आगे बढ़ रही थी। पर यूबा गैप के बीच में बर्फ इतनी घनी थी कि 'सिटी' को रुकना पड़ा।

'सिटी' अङ्ग्रेज़ी एस का चिह्न बनाये पहाड़ के ढाल पर खड़ी थी। एक ओर पहाड़ की चोटी थी और दूसरी ओर 700 फीट नीचा खड्ड। यदि ऊपर से बर्फ फिसलने लगती तो?

पूरे तीन दिन तक ट्रेन फंसी खड़ी रही। डाइनिंग कार का भोजन निमट गया। लोगों का दम आखिरी लब पर था जब शक्तिशाली रोटरी ने आकर ट्रेन को निकाला।

अपमान का बदला

30 अगस्त, 1640, को स्काटलैंड के इतिहास में एक विचित्र घटना घटी। अर्ल आफ हडिंगटन ने अपने किले में 100 अतिथियों को दावत देते समय हँसी हँसी में एक अंग्रेज़ नौकर की बोलचाल की नकल की।

वह अंग्रेज़ नौकर अपमान से इतना जल उठा कि उसने शस्त्रागार की बारूद में आग लगा दी। किला उड़ गया। उसमें जितने भी लोग थे, सब मर गये।

कल क्या और आज क्या

यह आवश्यक नहीं है कि जो आज सिनेमा जगत के चमकते हुए सितारे हैं उन्होंने बचपन से ही अभिनय की ओर ध्यान दिया हो।

सूसन हेवर्ड को लीजिये। इतने सारे फिल्मों की यह सुन्दर अभिनेत्री एक समय ब्रुकलिन में समाचारपत्र बेचा करती थी।

अनुपम मैरीलिन मनरो युद्धकालीन फैक्ट्री में पैराशूटों को पैक कर रही थी जब एक फोटोग्राफर ने उसे कैलण्डर के लिये नग्न पोज देने के लिये कहा जिस फोटो के कारण वह विश्व की सुन्दरतम अभिनेत्री मानी जाती है।

क्लार्क गैबेल ने भी अभिनय से पहले बीसियों काम किये थे। वह फैक्ट्री टाइमकीपर, बढ़ई, टाई बेचनेवाला और विज्ञापनस्पेस के लिये आर्डर लेने वाला रह चुका था।

जोन क्रॉफ़र्ड एक समय वेट्रेस थी। बॉब होप पेट भरने के लिये बॉक्सिग किया करता था।

जीन कैली समय समय पर कन्क्रीट मिलाने वाला, राज और दवाओं की दुकान पर नौकर रहा था। शैले विन्टर्स ने भी एक डिपार्टमेण्टल स्टोर में नौकरी की थी।

फ्रेड क्लार्क ने जीवन अप्रेण्टिस अण्डरटेकर की हैसियत से आरम्भ किया था। यूल ब्रेनर को पुराने दिन याद हैं जब वह एक लाइफगार्ड था। कैमरे के सामने आने से पहले डाना विन्टर चिकित्सा-शास्त्र पढ़ रही थी और जीन पीटर्स अध्यापिका होना चाहती थी।

नारी टाइपिस्टों का खतरा

आजकल युवती टाइपिस्टों का दफ्तरों में काम करते देखना मामूली बात है। वास्तव में टाइपराइटर ही वह यन्त्र है जिसने मोहक सैक्स के लिये दफ्तरों के द्वार खोल दिये हैं।

लेकिन जब टाइपराइटर का आविष्कार हुआ था तब इन नारी टाइपिस्टों को भारी सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें खतरनाक नारियाँ समझा जाता था जो पति ढूँढने निकली होती थीं या भले आदमियों के घर को बरबाद करने। टाइप

सीखते समय उन्हें अभ्यास के लिये यह वाक्य दिया जाता था— 'पाप का मूल्य मृत्यु है।'

ब्रिटिश सरकार ने सर्वप्रथम सन् 1880 ई० में कुछ नारियों को अपने आन्तरिक कर विभाग में नौकर रखा। उन्हें लम्बे सेलूलायड के कफ और खड़े कालर पहनने पड़ते थे। उन्हें एक कमरे में बन्द कर दिया जाता था और खिड़की से खाना दिया जाता था।

नीले केले

क्या आपने नीले केलों का नाम सुना है? नहीं! वे केप वर्डे द्वीपों में होते हैं। लम्बाई में एक फुट और दो या सवा दो इंच व्यास के होते हैं। लेकिन उनका स्वाद आलू जैसा होता है और द्वीपवासी उन्हें आलू के चिप्स की तरह तल कर खाते हैं।

गर्मी किसे कहते हैं

दक्षिणी केलिफोर्निया की 'मृत घाटी' में जब गर्मी पड़ती है तो तापक्रम 140 से 160 अंश तक होता है।

आस्ट्रेलिया के सबसे गरम शहर मार्बल बार के निवासियों का कहना है कि एक बार गरमी में लगातार 113 दिन तक तापक्रम 100 अंश से ऊपर रहा है। इनमें से लगातार 90 दिन 103 अंश से ऊपर था। वहाँ का रिकार्ड 120·5 अंश का है।

फारस की खाड़ी में कुछ पहाड़ ऐसे हैं जिनकी नंगी चट्टानें इतनी तप उठती हैं कि उन पर चढ़ा नहीं जा सकता; वे दृढ़ से दृढ़ जूते को जला डालती हैं।

घनचक्कर

अफ्रीका के एक कबीले का सरदार लेखोमलो धोती की जगह 18 गज लम्बा कपड़ा पहनने उतारने में एक बार 18 घण्टे तक 58000 चक्कर लगाता रहा।

प्रतिभा आयु नहीं देखती

गेलीलियो केवल अठारह वर्ष का था जब उसने पिसा के गिरजाघर में एक डोलते लैम्प को देखकर पेण्डुलम का सिद्धान्त खोज निकाला था।

ब्रिटेन का प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री, राबर्ट पील, 21 वर्ष की अवस्था में पार्लियामेंट का सदस्य था।

एलिज़ाबेथ बैरेट ब्राउनिंग बारह की उम्र में ग्रीक और लेटिन जानती थी।

महान् ग्लैडस्टन 22 वर्ष का पार्लियामेण्ट में था तथा 24 की अवस्था में लार्ड ऑफ द ब्रिटिश ट्रेज़री था।

20 वर्ष की अवस्था में लाफ़ायात पूरी फ्रेंच सेना का सेनाध्यक्ष था।

नदी में रक्त

स्पेन में रिओ टिंटो नामक एक ऐसी नदी है, जिसके पानी का रंग हवा के स्पर्श मात्र से खून की तरह सुर्ख हो जाता है।

जाको राखे साइयाँ

निक अल्केमेड आजकल एक सेल्समैन। युद्ध के दिनों में वह एक हवाई जहाज में था जो वेस्टफेलिया से साढ़े तीन मील दूर शत्रु के गोले का निशाना हो गया। कप्तान ने उसे जहाज से कूद जाने के लिये कहा लेकिन जलते हवाई जहाज की लपटों ने उसका पैराशूट जला दिया। अब दो में से एक को छांटना था— या तो जलकर धीरे धीरे मरना या साढ़े तीन मील नीचे पृथ्वी पर कूद मरना। आखिर वह पैराशूट फेंक कर कूद पड़ा। 10 सेकिण्ड के बाद वह बेहोश हो गया। बर्फ की ठंडक पाकर उसे होश आया। नीचे फर के पेड़ों तथा ताजे बर्फ ने उसे मौत के मुंह से निकाल लिया। जगह जगह जलने के अतिरिक्त उसके सिर में एक घाव था, काफी घिसट आई थी और घुटने की हड्डी टूट गई थी।

बातचीत

बातचीत में महान् दान्ते व्यंगात्मक था। बटलर रूखा और तीखा था। टॉमस ग्रे कभी कभी बात करता और मुस्कराता था। मिल्टन असामाजिक था, यहाँ तक कि दूसरों की बातों से तंग आकर बिगड़ उठता था। वर्जिल बातों में सूखा था और मोहक कवि के स्थान पर एक साधारण मनुष्य लगता था। ल ब्रूयेर, फ्रेंच लेखक, रूखा, सूखा और मूर्ख प्रतीत होता था, तभी देखी वस्तु का भी वह वर्णन नहीं कर सकता था। पर जब वह लिखने बैठता था तब वह कविता का रूप होता था। अंग्रेज़ कवि ड्राइडन ने लिखा है, 'मेरी बातचीत धीमी और रूखी है।' फ्रेंच दार्शनिक देकार्ते की आदतें एकान्त चिन्तन में बनी थीं— वह मिश्रित समाज में बिल्कुल मौन रहता था।

सच्चा देशभक्त

पुर्तगाल के देशभक्त एन्टोनियो विएरा (1608-1692) ने फटे कपड़े पहन कर अपने देश के लिये जहाजी बेड़ा जुटाने के लिये भीख मांगी और 15 लाख रुपये इकट्ठे कर लिये।

प्राचीन की जीत

नेपोलियन ने राज्याभिषेक के समय जो पोशाक पहनी, उसमें सोने की 300 शहद की मक्खियाँ जड़ी हुई थीं। ये मक्खियाँ 1174 साल से राजा चाइल्डेरिक प्रथम की कब्र में गड़ी थीं।

बेचारा पति

'तुलसी गाय बजाय के दियो काठ में पांव'

विवाह का वर्णन महाकवि ने कितना सुन्दर किया है। महीनें पहले से मनमोदक फूटते हैं। विवाह के दिन खूब रागरंग होता है। और अन्त में दोनों पति पत्नी एक दूसरे के दास बन जाते हैं। यह भारत ही नहीं संसार के समस्त देशों की कहानी है।

पर यह सभ्य जातियों की घटना है। यहाँ 'गाय बजाय के काठ में पाँव' दिया जाता है जब कि प्राचीन जातियों में तो बेचारे वर-वधू को गाने बजाने की भी अनुमति नहीं है।

कुछ जिप्सी कबीलों में विवाह के समय आटे का एक केक तैयार किया जाता है जिसमें जोड़े की कलाइयों से थोड़ा रक्त निकालकर मिला दिया जाता है। विवाह की दावत में जोड़ा इसे बड़े चाव से खाता है। बल्गेरिया में वर के हाथ वधू के हाथों से कसकर बाँध दिये जाते हैं जिससे वह जल्दी उससे अपना पीछा न छुड़ा सके।

कुछ सभ्य समाजों में अब भी ऐसी विवाह-प्रथायें चली आ रही हैं जिनका किसी भी प्रकार समर्थन नहीं किया जा सकता। पंजाब में बारात के आने पर वर की पीठ पर थापा मारा जाता है। इसी प्रकार स्कॉटलैण्ड के भागों में रिवाज है कि विवाह की दावत शुरु होने से पहले सास अपने जमाई के सिर पर नमक की प्लेट मारकर तोड़ती है। यदि वह उसे पसन्द नहीं करती तो बदला लेने का कैसा अच्छा अवसर उसके हाथ होता है। पूर्वी यहूदियों में बहुधा यह होता है कि वधू को मछलियों से भरी परात को छलांगना पड़ता है।

अधिकतर प्राचीन जातियों में बेचारे पति को अपना पौरुष दिखाने के लिये विभिन्न काम करने पड़ते हैं। आस्ट्रेलिया के उत्तरी क्षेत्र में विवाह करने वाले नवयुवक को पन्द्रह दिन तक सूर्य की कड़कड़ाती धूप में बिना खाये-पिये रहना पड़ता है। तभी वह विवाह के योग्य समझा जाता है। कालाहारी के बुशमैन को भी अपने विवाह से पहले पुरुषार्थ के काम करके दिखाने पड़ते हैं। इसका कारण आर्थिक है। विवाह के उपरान्त उसे अपना और पत्नी का पेट भरना होगा इसलिये उसकी शिकार की शक्ति जांची जाती है। यदि वह विवाह करना चाहता है तो उसे अकेले शिकार खेलने जाना होता है और मारे जानवर को अपने भावी ससुर को चुपचाप भेंट करना होता है। इस भेंट को स्वीकार करने के उपरान्त उसकी शक्ति का फिर परीक्षण किया जाता है। अगली बार उसे एक जिराफ मार कर लाना होता है। यदि वह इसमें सफल होता है तो सारा कबीला उसकी आवभगत करने झोपड़ियों के घेरे से बाहर आता है और उसके मन की मुराद पूरी होती है।

दक्षिणी भारत के टोडाओं में यह रिवाज है कि वर अपना सिर अपने भावी ससुर के पैरों के नीचे रख कर वधू के हाथ की प्रार्थना करता है जो प्रसन्न हो 'तश्केन' कहकर आज्ञा दे देता है।

जापान के देहाती इलाकों में आज भी लड़का अपने पसन्द की लड़की विजय कर घर लाता है। कुछ साल बीते जब उकाई मासान नाम की सत्रह वर्षीय कुमारी जन-स्नानागार से अपने घर लौट रही थी तो उसे एक कार में उड़ा ले जाया गया था। उसके भाई ने एक खोज दल बनाकर अपनी बहन को छुड़ा लिया था, लेकिन वर एक सम्भ्रान्त सज्जन होने के नाते फिर लड़ा और अपनी वधू को वापिस ले गया और अब वह आनन्दपूर्वक अपने पति के साथ रह रही है। इस तरह के अन्य भी कई उदाहरण हैं। यहाँ यह बता देना भी आवश्यक है कि इस तरह के झगड़ों में कई नवयुवक घायल हो जाते हैं और वधू के घर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाता है।

सिक्किम में रहने वाले लेपचाओं में यह रिवाज है कि सगाई और विवाह के बीच वर को आधे समय वधू के घर रहना पड़ता है। यहाँ पर उसे सब प्रकार का काम करना पड़ता है और उसके साथ नौकरों की तरह बर्ताव होता है। उसे अपना व्यवहार बहुत नम्र रखना पड़ता है और उसे अपने ससुरालवालों की मज़ाक़ का शिकार बनना होता है। यह सेवा पूरी करने पर ही पत्नी उसके घर आती है।

कुछ इलाकों में वर-वधू के बीच बनावटी युद्ध करवाया जाता है जिसमें वे दोनों कुश्ती करते हैं या बाकायदा लड़ते हैं। जब तक कि लड़की थक नहीं जाती और लड़का उसे उठाकर नहीं ले जाता। मकुआन में बनावटी युद्ध में दोनों व्यक्ति बड़े जोशखरोश से लड़ते हैं। युवती के हारते ही उसके माँ-बाप वर की ओर दौड़ते हैं और विधि-रूप में उसे गदाओं से अच्छी तरह पीटते हैं।

इसी तरह उगाण्डा के लैगोस में वधू का मूल्य आदि तय होने के उपरान्त विवाह के लिये वर को रात के समय अपने मित्रों के साथ वधू के गाँव में जाना पड़ता है और उसे उठाकर लाना होता है। युवती अपनी पूरी शक्ति से विरोध करती है तथा उनको दुनिया भर की गन्दी गालियाँ देती है। अन्त में भयंकर रूप से लड़ती वधू को वे उठाकर कांटों तथा झाड़ियों आदि के बीच से ले जाते हैं और वर के झोंपड़े में पटक देते हैं।

अभी तक तो हम ने छोटी छोटी मुसीबतें बताई थीं जो पति को उठानी तथा सहनी पड़ती हैं। आगे ज़रा तीखे कष्ट दिये जा रहे हैं। बाबर द्वीपवासी लड़की को शादी के दिन एक कमरे में बन्द कर देते हैं जिसमें गड्ढे होते हैं, कीलें बिछी होती हैं, रस्सियां बंधी होती हैं तथा इसी तरह के अनेक फन्दे होते हैं। अंधेरे में गिरता पड़ता वर लड़की को ढूंढता है।

कमचटका के कुछ भागों में इससे भी बुरा हाल होता है। वहाँ लड़की को अगणित कपड़ों में ढक दिया जाता है। वर को एक एक कपड़े को फाड़कर उसे निकालना होता है तभी वह उसकी हो सकती है। उसके सफल होने से पहले ही लड़की की कुछ सहेलियां उस पर टूट पड़ती हैं और उसे मारती, नोचती, खरोंचती हैं। लड़की को छुड़ा कर ले जाती हैं। लड़का कुछ होश संभलने पर उसे बेदम कर वे

फिर लड़की को लेने उनके पीछे भागता है। वहाँ यह कहावत है कि कायर हृदय कभी कमनीय कान्ता नहीं जीत सकते।

मैडागास्कर की एक जाति वर के भाले मारती है और वर को उनसे बचने में अपनी कुशलता प्रदर्शित करनी पड़ती है। न्यू गिनी में उसे चाकुओं से घायल किया जाता है और एक बोरे में बन्द कर दिया जाता है जिसमें भीषण चींटियाँ होती हैं।

पूर्वी द्वीपसमूह के कुछ द्वीपों में वर का स्त्रियों की एक कमेटी निरीक्षण करती है। अगर उसको विवाह के योग्य समझा जाता है तो उसे एक कमरे में मोटा होने के लिये चालिस दिन तक बन्द कर दिया जाता है। और कुछ गांवों में उसे वधू के सम्बन्धियों के सामने उपस्थित होना पड़ता है जो उसका हर तरह से अपमान करते हैं।

लेकिन इन सबसे अधिक कठिन परीक्षा पूर्वी अफ्रीका के वाहेले और वागोगी कबीले के बेचारे पतियों को देनी पड़ती है जहाँ अकेले एक शेर को मार देना भी पौरुष की निशानी नहीं समझा जाता। वहाँ पति को एक रात अपनी सास के साथ सोना पड़ता है।

विचित्र हरजाने

अदालतों में हरजाने अजीब से अजीब होते चले जा रहे हैं। कुछ दिन हुए बरमिंघम में एक पुरुष को मोटर दुर्घटना में 3000 पौंड का हरजाना दिलाया गया क्योंकि वह अपनी पत्नी के चुम्बन का आनन्द नहीं लूट सकता था। उस दुर्घटना में वह अपने निचले होंठ तथा ठोडी में अनुभव करने की शक्ति खो बैठा था।

मैन्चेस्टर की एक सुन्दर युवती ने अनुभव किया कि उसको 7000 पौंड की हानि हो गई है जब एक मशीन में बाल फँस जाने के कारण उसके सिर की ऊपरी परत उतार देनी पड़ी। जज ने उसे 7500 पौंड हरजाने के दिलवाये।

जब एक जिन्जर-बियर की बोतल में से केचुआँ निकला तो पीने वाली लड़की के भय खाने तथा बीमार पड़ जाने के कारण उसे काफी हरजाना मिला। इसी प्रकार एक स्कूल अध्यापक को कार लड़ जाने पर नस पर चोट पहुँचने के कारण नेत्र झपकने की गन्दी आदत पड़ जाने के 1500 पौंड हरजाने में मिले।

किताबी-कीट

उन्नीसवीं सदी के एक अंग्रेज़ किताबी-कीट जैम्स एडवर्ड्स ने जो अपनी पुस्तकों को बहुत प्यार करता था, अपनी वसीयत में यह लिखा कि उसका कफन उसके पुस्तकों से भरे आलमारी के दराज़ों से बनाया जाय।

एक दूसरे अंग्रेज़ आगस्टाइन बिरेल ने अपनी कुछ पुस्तकों को अपने बाग में गाड़े जाने का आदेश दिया था। उसने लिखा था— पुस्तकें आलमारी में बहुत जगह घेरती हैं और उनकी आलमारी में से निकालकर पढ़े जाने की आशा उतनी ही है जितनी कि बाग से खोदकर निकाल कर पढ़े जाने की।

पुस्तकालय में लिंग पार्थक्य

एक अन्य अंग्रेज़ किताबी-कीट लेडी गफ ने अपने को अमर कर लिया। उसने यह ध्यान रखा कि उसके पुस्तकालय में किसी नर-लेखक की पुस्तक किसी नारी-लेखिका की पुस्तक की बगल में न रखी हो जब तक कि वह विवाहित न हो।

दौड़ने वाला

जब डायोनिनीज़ बहुत वृद्ध हो गया तो उसके मित्रों तथा प्रशंसकों ने उससे कहा कि अब वह आराम करे। इस पर दार्शनिक बिगड़कर बोला— "क्या कहा? यदि मैं एक रेस में दौड़ रहा हूँ तो लक्ष्य के पास आने पर मुझे रुक जाना चाहिये? क्या मुझे अपनी रफ्तार नहीं बढ़ानी चाहिये?"

बुद्धि का चमत्कार

टॉमस एडीसन के बाग के द्वार का लोहे का फाटक बहुत भारी था। उससे मिलने आने वालों को उसे खोलने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी। एक दिन किसी मिलने वाले ने इसकी शिकायत की। इस पर एडीसन हँसकर बोला— "जो उस द्वार को खोलता है वह मेरे छत पर बने हौज में ग्यारह गैलन पानी उलीच देता है।"

मृत्यु का एक दूत

मृत्यु का एक रास्ता ऐसा था जिसे हमारे पुरखा हमसे अधिक अच्छी तरह जानते थे। वह था विष का। रोमन उसे फूलों तथा गहनों में लगा देते थे। पारसी उसे जीन, काठी, लगाम, यहाँ तक कि घुड़सवारी के जूतों में भी भर देते थे। पर भारतीयों ने सब को घटा दिया था। उन्होंने विष का प्रयोग करने के लिये विषकन्या पालनी आरम्भ की थीं। चाणक्य द्वारा पर्वतक को मारना सर्वविदित है।

एक अन्य तरीक़ा विष को धूपबत्तियों में मिला देना था। आस्ट्रिया का लियोपोल्ड प्रथम अपने सोने के कमरे में दीपकों की लौ से निकलने वाले विषमय धुएं से मरते मरते बचा। इङ्गलैण्ड के हेनरी चतुर्थ को उसके किसी शत्रु ने नीला कोट पहनने को दिया जिसे पहनते ही उस पर विष का प्रभाव हो गया और वह फिर नहीं बच सका।

एक तरीका घावों का इलाज करते समय विष के प्रयोग करने का था। फ्रांस का राजा फ्रांसिस द्वितीय मारा गया जब उसके नौकर ने उसकी टोपी में विष लगा दिया जो उसके कान के घाव को छूती थी।

पारसी राजा ज़ैरक्सीज़ की बहन ने अपनी बहू को जो विष दिया वह भी अजीब था। उसने भुने मुर्गे को चाकू से काटा। आधा उसमें से स्वयं खाया और आधा अपनी बहू को दिया जिसे खाकर वह मर गई। उसने चाकू पर एक ओर विष लगाया था और शक न उत्पन्न होने देने के लिये अच्छा भाग साथ खाया था।

पर विष देने में एक फ्रांसीसी स्त्री ने हद कर दी थी। उसने अपने पिता को विष दे दिया क्योंकि उसने उसके प्रेमी को बन्दी करा दिया था। अपने प्रेमी को सन्तुष्ट करने के लिये पति को विष दे दिया, अपने प्रेमी को विष दिया क्योंकि वह विश्वासघाती था, अपने भाइयों को विष दिया जिससे वह उनकी सम्पत्ति की उत्तराधिकारी बन सके और अपनी बेटी को विष दिया क्योंकि वह उसे मूर्ख समझती थी। इतने पर भी सन्तुष्ट न होकर उसने अपने नौकरों और मित्रों को भी विष दे दिया। जब उसके कुकृत्यों का पता चला तो वह इङ्गलैंड भाग गई जहाँ उसने यह स्वीकार किया कि अपने विष के परीक्षण के लिये वह पहले उसे एक अस्पताल के मरीज़ों को खिलाया करती थी।

महापुरुषों की अद्‌भुत, मनोरंजक तथा अजीब आदतें

एक बार नेहरूजी आज़मगढ़ के दौरे पर थे। पास के किसी गाँव में उनके भाषण का कार्यक्रम था। अपनी हर रोज़ की आदत के अनुसार सुबह पाँच बजे उठकर वे हजामत बना रहे थे, तभी गाँव के एक नेता पहुंच गये। नेहरूजी ने दाढ़ी बनाते बनाते बिना पीछे मुड़े पूछा— क्या बात है?

प्रश्न कुछ ऐसे ढंग से पूछा गया था कि बेचारे ग्रामीण नेता घबरा गये। कुछ कहते न बना, हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। "जी, सिर्फ दर्शनार्थ चला आया था।"

कोई काम न धाम, केवल दर्शनार्थ। नेहरू के क्रोध का ठिकाना न रहा। चट से साबुन-लगा मुख उनकी ओर घुमाकर कुछ अजीब भावभंगी बनाते हुए वे बोले— "लीजिये, करिये दर्शन।"

फिर उबल पड़े— "चले जाइये, मैं कहता हूँ भागिये यहाँ से।"

यह घटना जवाहरलाल नेहरू की दो पल में ही क्रोधित हो उठने की आदत की अच्छी परिचायक है। नेहरूजी की यह आदत बहुधा रंग लाती रहती थी और भारतीय इससे अपने घर के किसी भेद के समान परिचित हो चुके हैं।

नेहरूजी ही क्या, विश्व के अधिकांश महापुरुषों में कोई न कोई मनोरंजक अजीब आदत थी या है।

इंगलैंड का शासक हेनरी द्वितीय बिल्ली को देखते ही बेहोश हो जाता था। प्रशा के महान शासक फ्रेड्रिक को ठण्डे पानी का अजीब शौक था। वह रात को किसी भी समय उठ बैठता था और अपने नौकरों से अपने ऊपर घड़ों पानी डलवाता रहता था। अच्छी तरह नहा कर वह सुख की नींद सोने का प्रयास करता था। इसी भाँति रूस को सभ्य बनाने वाले पीटर महान् को अपने दरबारियों की दाढ़ी-मूँछ मुँडवाने की आदत थी। कोई उसके दरबार में दाढ़ी बढ़ा कर चला आता था तो कई समय तो गुस्से के मारे वह अपने हाथों से उसके बाल नोंच डालता था।

जनता के प्रबल समर्थक वाल्टेयर को अंधेरे से बहुत डर लगता था। बिना प्रकाश किये रात को वह अपने बिस्तर में भी नहीं घुसते थे। प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक मॉण्टेन किसी भी शुक्रवार को काग़ज़ कलम से नहीं छुआते थे। वे 13 की संख्या से प्लेग के समान भागते थे।

सत्रहवीं शताब्दी के कवि तथा सेन्ट पाल के डीन, जॉन डौने, अपने कमरे में एक कफन का सन्दूक रखते थे, जीवन की अनिश्चितता की याद दिलाने के लिये। वे प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिये उस कफन में लेटा करते थे।

विख्यात अंग्रेज़ विद्वान डॉ० जॉनसन जब कभी घूमने जाते थे तो अपनी हाथ की छड़ी सड़क के किनारे लगी रेलिंग पर मारते चलते थे और उसके खम्भों को गिनते रहते थे। यदि वे बीच में गिनना भूल जाते थे तो वापिस लौट जाते थे और दुबारा शुरू से गिनना आरम्भ करते थे। उन्हीं के समान फ्रांस के प्रसिद्ध यथार्थवादी उपन्यासकार एमिल ज़ोला पेरिस की सड़कों की गैसलाइटें गिना करते थे।

नेपोलियन जो किसी भी समय सो जाता था यहाँ तक कि युद्धस्थल में घोड़े की पीठ पर ही अपनी नींद पूरी कर लेता था, फिर भी रात्रि में प्रकाश के रहने पर नहीं सो पाता था। लॉर्ड रोज़बरी सोने से पूर्व अपनी बग्घी में बैठकर सईस से अपने बाग के कई चक्कर लगवाते थे।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन में भी कई अद्भुत आदतें थीं। वे तब तक सोते रहते थे जब तक कोई उन्हें जगा न दे। रात्रि में वे तब तक जागते रहेंगे, जब तक कोई उन्हें सो जाने को नहीं कहेगा। जब तक उन्हें कोई खाने को लाकर नहीं देगा वे भूखे बैठे रहेंगे और खाना आरम्भ करने पर तब तक खाते चले जायेंगे जब तक कोई खाने से मना नहीं करेगा।

सर फ्रांसिस बेकन हर बसन्त की वर्षा में खुली गाड़ी में घूमते थे जिससे तरावट उनके मस्तिष्क में सीधा प्रवेश कर उन्हें तरोताज़ा करे।

सामरेट मॉहम अपने को अन्धविश्वासी नहीं मानते थे फिर भी वे अपने लिखने के काग़ज़ों, पुस्तकों की जिल्दों, घर के प्रवेश-द्वारों, यहाँ तक कि अपने खेलने के ताशों पर भी, दुष्ट नेत्र का चिह्न, जो अफ्रीका का एक जादू-टोना था, अंकित

करवाते थे। ऐसे ही सोते सोते लॉर्ड बायरन भयप्रद सपनों से बहुत डरते थे। उनके डर से वे हमेशा अपने सिरहाने दो भरे पिस्तौल रख कर सोते थे। रात्रि की शान्ति में वे यकायक जग जाते थे और दांत पीसते, चिल्लाते, पिस्तौल या तलवार ले इधर से उधर चक्कर काटते थे।

टाल्स्टाय को यह विश्वास हो गया था कि वह चिड़िया के समान उड़ सकेंगे। उनकी यह अजीब सनक यहाँ तक बढ़ी कि एक दिन वे अपने दुमंज़िले मकान से हाथ फड़फड़ाते कूद पड़े।

महाकवि शैली की कई मनोरंजक आदतें थीं। वे राष्ट्रों को शान्ति-सन्देश लिखते थे और उन्हें बोतलों में भर कर सागर में फेंक देते थे। उन्हें भरोसा था कि किसी न किसी दिन ये सन्देश अपने लक्ष्य तक पहुँच जायेंगे। शैली को कागज़ की नाव बनाने का भी बेहद शौक था। एक बार उन्होंने दस पाऊंड के नोट की भी नाव बना डाली थी।

स्वर्गीय प्रेमचन्द जी बड़े ही दिलचस्प व्यक्ति थे। सरस्वती और लक्ष्मी का निवास मुश्किल से कहीं एक साथ पाया जाता है। प्रेमचन्द जी भी इस नियम के अपवाद न थे। आये दिन पत्नी से कहा-सुनी हो जाया करती और वे चट से आत्महत्या की सोच बैठते। एक दिन इसी प्रकार सवेरे ही घर में कहा-सुनी हो गयी। प्रेमचन्द जी ने तय किया कि बस! आज तो मर कर ही दिखाना होगा। वे घर से निकल पड़े। दिन भर घूमते रहे कि आज घर नहीं जाता, आज तो मरना ही है, किसी न किसी तरह। लेकिन, यों नहीं, पिकेटिंग करने वाले कांग्रेसी स्वयंसेवकों के जत्थे में घुसकर सिर तुड़वाकर मरना ठीक होगा। अपने इस प्रयास में वे शाम तक भटकते रहे लेकिन कहीं सफलता नहीं मिली। जब बत्तियाँ जल गईं तो तीन घण्टे तक अकेले एक बाग में बैठकर मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहे। मगर मौत को न आना था, न आई। लाचार, ग्यारह बजे वे आहिस्ता-आहिस्ता घर को लौट लिये।

उपन्यासकार बालज़क की आदत थी कि वह बिना अपने बगल में जलता दीप लिये लिख नहीं सकता था, यहां तक कि दोपहर का प्रखर प्रकाश हो तब भी उसकी बगल में दीप जलता रहता था।

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री श्री चर्चिल की आदतें भी बड़ी मनोरंजक थीं। उन्हें सीटी से सख्त चिढ़ थी। एक बार वे 10 डाउनिंग स्ट्रीट से बाहर निकले थे कि एक पन्द्रह वर्ष का लड़का ज़ोरों से सीटी बजाता उनके सामने आ गया। चर्चिल ने डाट कर कहा— 'सीटी बजाना बन्द करो।'

लड़का तन गया— 'क्यों बन्द करूँ?'

इस 'क्यों' से चर्चिल को क्रोध तो बहुत आया, पर फिर भी कुछ सोचकर उन्होंने कहा— "मैं इसे पसन्द नहीं करता। बड़ी बेढब आवाज है।"

"तो आप अपने कान बन्द कर सकते हैं।" लड़के ने जवाब दिया और शरारत से सीटी बजाता हुआ आगे निकल गया।

लालसा मरने के बाद पूरी हुई

फिलेडेल्फिया का निवासी जॉन रीड जीवन भर थियेटर का अनन्य प्रेमी रहा। उसको दुख था तो यही कि अपने समस्त जीवन में वह स्वयं कभी स्टेज पर नहीं आया।

लेकिन उसकी यह लालसा उसके मरने के बाद पूरी हो गई। अपनी वसीयत में उसने अपनी खोपड़ी अपने प्रिय थियेटर को दान कर दी। उसके बाद सालों तक वह खोपड़ी हैमलेट के मरघट दृश्य में दिखाई जाती रही।

इसी तरह की लालसा पन्द्रहवीं सदी के जनरल जॉन ज़िज़्का ने अपनी वसीयत में लिखी थी। वह धर्म-सुधार आन्दोलन का एक नेता था। जब वह 1424 ईसवी में मरा तो उसने अपनी वसीयत में लिखा कि उसकी खाल एक ढोल पर मढ़ दी जाय जिससे वह मरने के उपरान्त भी अपने अनुयायियों को युद्ध में राह दिखा सके।

1952 में एक इटालियन संगीतकार ने मरते समय वसीयत द्वारा अपनी सारी हड्डियाँ एक वाद्य-बनाने वाली कम्पनी को दान कर दीं जिससे क्लेरीनेट के आगे के टुकड़े बनाये जा सकें। उसकी प्रार्थना पर अमल किया गया।

आँख बिकाऊ है

पिछली शताब्दी में यह साधारण बात थी कि निर्धन पुरुष अपने दाँत धनी पुरुषों को बेच दिया करते थे। पर यह तो इसी शताब्दी क्या, 1956 के अक्टूबर मांस की सच्ची घटना है।

इंगलैण्ड के वासी स्टीफेन कॉलिन्स के ऊपर काफी कर्ज़ हो गया था। उसको उतारने के लिये उसने विज्ञापन निकाला कि वह अपनी एक आँख 500 पौंड में बेचना चाहता है। उसे आशा थी कि इस प्रकार वह एक अन्धे आदमी को दृष्टि देने में सफल हो जायगा।

प्रेम की दुहाई

बहुधा प्रेमीगण प्रेम की दुहाई अकेले में दिया करते हैं। किन्तु कुछ सारे संसार को जताना चाहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मिनरल पाइण्ट नगर के निवासी बड़े अचम्भित हुए जब उनके नगर से बाहर की उबड़ खाबड़ पहाड़ी पर घास उगनी आरम्भ हुई।

जब वह बड़ी हुई तो लम्बे शब्दों में लगभग चौथाई मील की दूरी पर उसने लिख दिया— जूली फरनेकीज़।

यह घास 26 वर्षीय युवक जैक कैनयन ने लगाई थी। लेकिन वह इस घास द्वारा अपनी प्रेमिका के नाम को फलता हुआ नहीं देख पाया क्योंकि इससे पहले ही वह अपनी प्रेमिका को भगाकर किसी दूसरे नगर में ले गया था।

बर्फ से आरम्भ

यह जानकर सबको अचम्भा होगा कि महान् दार्शनिक फ्रांसिस बेकन ने भोजन को ठंडक में रख कर ताजा रखने की खोज की थी।

एक दिन जब उनके घर के आसपास खूब बर्फ पड़ रही थी तो उनके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा—मांस को शायद बर्फ में भी सुरक्षित रखा जा सकता है। विचार आना था कि उन्होंने उस पर फौरन अमल किया। बाज़ार से एक मुर्गा खरीद कर लाये और उसकी देह के चारों ओर खूब बर्फ लपेट दिया।

बर्फ उठाते उठाते उन्हें ठंड लग गई और वे भयानक रूप से बीमार पड़ गये। लेकिन वे उस दिन तक जीवित रहे जिस दिन उन्हें पता चल गया कि उनका प्रयोग सफल हुआ है।

यह आज के एक महान् उद्योग का प्रारम्भ था।

अविवाहित रहना अपराध

यूनान के प्रसिद्ध प्राचीन नगर स्पार्टा में अविवाहित रहना अपराध समझा जाता था। जो व्यक्ति तीस वर्ष की अवस्था तक विवाह नहीं करता था वह जेल जाने का हक़दार हो जाता था और जब तक वह विवाह नहीं करता था बाहर नहीं आ सकता था।

और सार्वजनिक छुट्टी के दिन वे वृद्ध जो इन सब के बावजूद अविवाहित रहते थे बाज़ार से केवल कमीज पहने जलूस के रूप में निकाले जाते थे। उन्हें एक गन्दा गाना भी गाना पड़ता था।

इस शताब्दी के आरम्भ तक कोरिया में जो 30 वर्ष से ऊपर के अविवाहित थे उनके पीछे बच्चों को लाठी लेकर भागने का क़ानूनी अधिकार था।

ईसापूर्व फिलिस्तीन में अविवाहित पुरुष को खूनी से भी अधिक भयंकर माना जाता था।

मेक्सिको के कुछ भागों में विवाहित पुरुषों को पूरी छूट है कि वे किसी अविवाहित को घेर कर उसके सिर के बाल जड़ से उखाड़ डालें।

यही नहीं आज से 200 साल पहले के अमेरिका में 100 पौंड से अधिक सम्पत्ति वाले अविवाहित को 5 पौंड प्रति साल टैक्स देना पड़ता था। यह मेरीलैंड राज्य का क़ानून था जो अधिक सम्पत्ति वाले पर बढ़ जाता था।

जब मृत्यु सामने होती है

संसार के प्रत्येक व्यक्ति के सामने किसी न किसी समय यह प्रश्न अवश्य आता है कि मरने के बाद क्या होता है। असली साम्यवादी मृत्यु है। वह धनी और निर्धन में अन्तर नहीं देखती, न राजा और मज़दूर में, न भंगी और ब्राह्मण में, न स्त्री और पुरुष में, न बच्चे और बूढ़े में ! सब को एक न एक दिन इस महानिद्रा की गोद में चिर शान्ति प्राप्त करनी होती है।

मृत्यु कैसी होती है? दुःखद होती है या सुखद? उस समय कैसा अनुभव होता है? कोई नहीं कह सकता। क्योंकि इसको अनुभव करने वाला हमेशा के लिये शान्त हो जाता है।

मृत्यु से अधिकतर सब मनुष्य भय खाते हैं जब वे उसके विषय में सोचते हैं लेकिन जब वे मृत्यु के समीप आ जाते हैं तब उसे एक साथी के समान गले से लगा लेते हैं। इस प्रसंग में महापुरुषों के अपने सामने मृत्यु को खड़े देखकर उद्गार हमारी आँख खोलने वाले हैं। उन्हें पढ़कर हमारा मृत्यु से भय दूर हो सकता है। इसका रोमांचकारी वर्णन एक रोमन गाथा में मिलता है। एक रोमन नागरिक को अपने हाथों अपना अन्त करने का दण्ड दिया गया था। चौराहे पर बने चबूतरे पर उसे खड़ा कर दिया गया। चारों ओर नगरवासी जमा थे। उस समय हाथ में कटार लिये वह हिचकिचा रहा था। उसकी पत्नी अपने पति की दुर्बलता देख कर बहुत लज्जित हुई। झपट कर पति के हाथ से कटार छीन कर उसने अपनी छाती में मार ली। कटार को धीरे धीरे बाहर खींचते हुई उसने कहा था— 'कष्ट नहीं होता पेइटस !' दूसरे ही क्षण वह पृथ्वी पर ढेर हो गई।

30 जनवरी का दिन था। बिड़ला भवन में प्रार्थना सभा के मंच पर पहुँच कर गांधीजी के हाथ नमस्कार के लिये उठे थे। तभी हत्यारे की तीन गोलियाँ उनके लगीं। उस समय उनके मुख से मानवता को रुलाने वाले ये शब्द निकले थे, 'हे राम, हे राम !'

ईसा को सूली पर चढ़ा दिया गया। क्रूर दर्शकों ने उन्हें चिड़ाया— 'तू तो सबको बचाता था, अब अपने को बचा।' वे खिलखिलाये, गालियां दीं, यहां तक कि उन्होंने ईसा पर थूका भी। हाथ-पैरों में कीलें ठुकी थीं। असह्य वेदना थी। मृत्यु सामने खड़ी थी। पर ईसा ने आकाश की ओर नेत्र उठा कर कहा— 'हे प्रभु, इन्हें समझ दे जिससे यह समझ सकें कि ये क्या कर रहे हैं।'

भगवान बुद्ध के महानिर्वाण के समय उनका प्रिय शिष्य आनन्द रो पड़ा। उसकी भर्त्सना करते हुए शाक्यमुनि ने कहा— 'स्वयं अपने दीपक बनो··· रोओ मत, रोने का अवसर नहीं, सदा निर्वाण के लिये प्रयत्न करते रहो।'

गुरु गोविन्दसिंह ने प्रयाण से पूर्व अपने शिष्यों को चन्दन की चिता सजाने को कहा और पाँचों अस्त्रों से सुसज्जित होकर वीरासन पर जा बैठे। तीन बार 'सत श्री अकाल' कहकर उन्होंने संसार छोड़ दिया।

आर्य समाज के संस्थापक और राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत स्वामी दयानन्द ने महाप्रस्थान से पूर्व अन्तिम इच्छा प्रकट की थी— 'मेरी राख को किसी किसान के खेत में डाल देना जिससे खाद के रूप में काम में आ सके।' और उनके अन्तिम शब्द थे— 'हे दयामय! तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! प्रभो, तूने अच्छी लीला की।'

यूनान के दार्शनिक सुकरात ने मृत्यु से पूर्व अपने साथी से कहा था, 'क्रीटो' हमें एस्क्यूलापियस को एक मुर्गा भेंट करना था।

सिकन्दर ने मरते समय इच्छा प्रकट की थी— 'मेरी अरथी में मेरे दोनों हाथ बाहर निकाल कर रखना जिसे मनुष्य देख सकें कि मैं खाली हाथ ही आया था और इतनी विजय करने के पश्चात् खाली हाथ ही जा रहा हूँ।'

श्री रामकृष्ण परमहंस के अन्तिम क्षणों में स्वामी विवेकानन्द ने उनसे पूछा था कि क्या आप वास्तव में अवतार हैं। परमहंस ने उत्तर दिया, 'जो राम है वह कृष्ण भी है और दोनों का मेल है रामकृष्ण।'

विख्यात व्यंग्य-विनोद-लेखक रैबेले का अन्त जब निकट आया तो कई डाक्टर उसे देखने आये और सबने अपनी अपनी दवाइयाँ उसके लिये लिखीं और उन्हें खाने की सलाह दी। रैबेले ने कहा— 'ईश्वर के लिये मुझे स्वाभाविक मौत मरने दीजिये।' मृत्यु के द्वार पर खड़ा होकर वह बोला था— 'परदा गिरने दो, प्रहसन समाप्त हुआ।'

यूटोपिया के लेखक टॉमस मूर को विद्रोह के अपराध में मृत्युदण्ड दिया गया था। गरदन पर कुल्हाड़ा पड़ने से पूर्व उन्होंने अपनी दाढ़ी को संवारा और आनन्द से सिर को उठाकर कहा— 'मुझे अफसोस है कि इसने बगावत नहीं की, फिर भी यह कटेगा।'

इसी प्रकार फांसी लगते समय एनी बोलीन ने कहा था— 'मुझे विश्वास है कि जल्लाद अपने काम में निपुण है और मेरी गरदन बहुत कोमल है।'

दार्शनिक हैले अपने अन्तिम समय तक अपनी नाड़ी की गति देखता रहा। मृत्यु के समय अपने साथी से उसने कहा— 'नाड़ी का चलना बन्द हो गया।'

दूसरे दार्शनिक शीलर के मुख से अपनी मृत्यु के समय यह निकला था— 'बहुत सी बातें साफ हो रही हैं और मेरी समझ में आ रही हैं।' यह क्या बातें थीं यह आज तक संसार को मालूम नहीं हुआ।

अंग्रेज़ दार्शनिक हॉब्स मरने के पीछे आत्मा की किसी रूप में भी स्थिति में विश्वास नहीं रखता था। मरने के समय वह बोला— 'अब मैं अन्तिम यात्रा करने वाला हूँ, अंधेरे में एक छलांग।'

जीवन से निराश प्रसिद्ध रोमान्टिक कवि लार्ड बायरन ने मरते समय कहा था— 'मुझे अब सोना चाहिये।' फिर वह चिर-निद्रा में सो गया था।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मृत्यु के समय सीधे हाथ की अंगुलियों से शून्य में कुछ रेखायें बनाई थीं और कहा था— 'मैं नहीं जानता क्या होगा, क्या होगा।'

श्रीमती सरोजिनी नायडू ने अपनी परिचायिका से गीत सुनने की इच्छा प्रकट की। परिचायिका ने कहा— 'मुझे गीत गाना नहीं आता।' वे बोलीं— 'जैसा भी आता है गाओ।' परिचायिका ने गाना गाया और काव्य-कानन की कोकिला अपना पिंजरा तोड़कर अनजान देश की ओर उड़ गई।

रॉबर्ट बर्न्स ने कहा था— 'मेरी कब्र पर भद्दे दस्ते को गोली न चलाने देना।'

अमर उपन्यासकार शरतचन्द्र एक पद कहते कहते दूसरे लोक में चले गये थे— 'अमा के दाओ, अमा के दाओ!'

उनका अंग्रेज साथी चार्ल्स डिकेन्स मौत के समय लड़खड़ा कर पृथ्वी पर गिर पड़ा था। जब उसे सोफे पर लिटाने लगे तब उसके मुख से केवल ये शब्द निकले— 'धरती पर।'

वाशिंगटन इर्विन्ग ने, जो अमेरिका का प्रसिद्ध लेखक था, कहा था— 'मुझे अपने तकिये एक अन्य थका देने वाली रात्रि के लिये ठीक करने चाहियें।' चित्रमयी कल्पना के धनी कवि कीट्स ने मृत्युशय्या पर अपनी प्रेयसी को याद किया था— 'मैं मौत सह सकता हूँ पर उसका वियोग नहीं सह सकता।'

महान् संगीतज्ञ बीठोवन मृत्यु से बीस वर्ष पहले बहरा हो गया था। अपनी मृत्यु के समय उसने अपनी यही मनोकामना प्रकट की थी— 'मैं स्वर्ग में सुन सकूँगा।'

संगीतज्ञ शोपेन ने अन्तिम क्षणों में एक धुन बजाने को कहा था— 'मेरी याद में मोज़ार्ट (अन्य महान संगीतज्ञ) बजाना।'

महान निबन्धकार चार्ल्स लैम्ब ने कहा था— 'मेरे बिस्तर के साथी दर्द और खाँसी हैं। हम तीनों एक ही बिस्तर में हैं।'

वाल्टेयर ने कहा था— 'मुझे शान्ति से मरने दो।'

गोपाल कृष्ण गोखले ने मरने से पहले यह विचार प्रदर्शित किया— 'अब तक इस ओर का तमाशा देखा। अब उस ओर का जाकर देखूँगा, वहाँ क्या लीला चल रही है।'

फ्रांस के राजनीतिज्ञ मिराबो ने कहा— 'मुझे आनन्ददायक संगीत की ध्वनि पर सो जाने दो।'

अमर शहीद यतीन्द्रनाथ दास ने लाहौर जेल में भूख हड़ताल कर प्राण विसर्जन किये थे। उन्होंने अन्त समय कहा था— 'मैं बंगाली नहीं, भारतीय हूँ।'

भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने फाँसी पर चढ़ने से पहले नारे लगाने की कामना प्रकट की थी। आज्ञा पाने पर उन्होंने नारे लगाये थे— 'इन्क़लाब जिन्दाबाद! साम्राज्यवाद का नाश हो।'

भारत के प्रसिद्ध विद्वान सर तेज बहादुर सप्रू ने मरने से पहले इच्छा प्रकट की थी— 'मैं भी वहीं जाना चाहता हूँ जहाँ महात्मा गाँधी गये हैं क्योंकि वहाँ दुःख-दर्द नहीं हैं।'

नीरो को मरते समय दुनिया पर रोना आया था— 'संसार मुझमें कितना बड़ा कलाकार खो रहा है।'

वूल्ज़े ने मरते समय अपने को कोसा था— 'जिस स्वामिभक्ति से मैंने राजा की सेवा की है, उसकी आधी भी यदि भगवान के लिये की होती तो वह बुढ़ापे में मेरा साथ न छोड़ता।'

अमेरिका के तीन महान प्रेज़िडेन्टों ने मृत्यु का बड़ी शान्ति से स्वागत किया था। प्रेज़िडेन्ट विल्सन ने कहा था— 'मैं तैयार हूँ।' जार्ज वाशिंगटन ने कहा था— 'मुझे लगता है अब मैं जाने वाला हूँ। डाक्टर, मुझे शान्ति से जाने दो।' प्रेजिडेन्ट रूज़वेल्ट भी पहचान गये थे— 'मेरे सिर में भयानक पीड़ा हो रही है।'

सीज़र ने अपने मित्र को विश्वासघात करते देख अमर पीड़ा प्रकट की थी— यह तू है ब्रूटस।

महान् जर्मन कवि गेटे बोले थे— प्रकाश और प्रकाश।

जोन ऑफ आर्क ने चिता पर जलते समय प्रभु के बेटे को याद किया था। उनके मुख से निकला था— जीसस।

मरते समय नैपोलियन के मुख से वीरों को शोभा देने वाले शब्द निकले थे— फ्रांस ··· सेना ··· सेनानायक।

भारतीय सेना का वीर सेनानायक ब्रिगेडियर उस्मान मरते समय बोला था— मैं मर रहा हूँ पर जिस इलाके के लिये हम लड़ रहे हैं वह शत्रु के हाथ में न जाने पाये।

बिल्कुल इसी तरह के वाक्य कनाडा में फ्रांस के ऊपर विजय पाने वाले अंग्रेज़ी सेनानायक जनरल वुल्फ के मुख से निकले थे। मरते मरते भी उसके प्राण विजय की प्रतीक्षा में अटक रहे थे। उसने अपने एक सहायक को चिल्लाते सुना— देखो, वह कैसे भाग रहे हैं। उठने का प्रयास करते हुए उसने पूछा— कौन भाग रहे हैं। 'शत्रु' उत्तर मिलने पर उसने ठंडी सांस ली— भगवान को धन्यवाद। अब मैं प्रसन्नता से मरूँगा।

मरते समय कार्डिनल रिशलू से पूछा गया— क्या आप अपने शत्रुओं को क्षमा नहीं करेंगे? इसका उत्तर उस महान मन्त्री ने क्या शानदार दिया— मेरा कोई शत्रु नहीं है सिवाय राज्य के शत्रुओं के।

रानी एलिज़ाबेथ प्रथम ने कहा था— मेरी सारी सम्पत्ति समय के एक पल के लिये।

अमेरिकन राजनीतिज्ञ जेम्स मैडिसन ने कहा था— मैं हमेशा कहता हूँ कि लेटना बेहतर है।

फ्रेंच राज्यक्रान्ति के सबसे महान् नेता दांतों ने गिलोटिन के सम्मुख जल्लाद से कहा था— याद करके मेरा शीश जनता को दिखा देना क्योंकि एक समय गुज़र जायगा जब वह इसकी बराबरी का दूसरा देखेगी।

उसी क्रान्ति में विधानवादी जिरोंदिन् पार्टी की नेता मैडम रोलैण्ड को जब गिलोटिन के नीचे खड़ा किया गया तो उसने दुखी अंतक़रण से यह प्रार्थना की— ओ स्वतन्त्रता, तेरे नाम पर कितने पाप हो रहे हैं।

छप्पर फाड़ कर

छोटे से छोटे विचार में भी धन छिपा रहता है। कभी तो ऐसा होता है कि जितना साधारण विचार हो उतना ही अधिक धन उससे प्राप्त होता है। हेयरपिन में घुमाव देने वाले, जिससे वह रमणी के बालों से निकल न पड़े, मनुष्य का नाम आज अज्ञात है, फिर भी इस छोटे से विचार के कारण उसने लाखों रुपया कमाया। इस तरह की अनेक चीज़ों का नाम लिया जा सकता है— काग़ज़ पकड़ने का क्लिप, फाउन्टेनपैन, जिप, कांटेदार तार, कैंची आदि। यह चीजें हमारे जीवन में ऐसा घर कर चुकी हैं कि हम नहीं सोच सकते कि इनकी खोज होने से पहले भी मनुष्य अपना काम चलाया करते होंगे। क्षण भर में आने वाले आकस्मिक विचार ने मनुष्यों के भाग्य पलट दिये।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में जब चरवाहे संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिम की ओर अपने पशुओं के साथ बढ़ रहे थे तब उनकी सबसे बड़ी समस्या थी कि अपने पशुओं को किस प्रकार एकत्रित रख सकें। उन्हें पता लग चुका था कि लकड़ी और तार के बाड़ों को वे तोड़ डालते हैं। इससे बचने के लिये कुछ काऊबॉय

(चरवाहों) ने तार में कांटे लगा दिये। इसके लिये उन्होंने छोटे छोटे तार के टुकड़े लिये और उन्हें बाड़े के लम्बे तार पर नुकीले कोने अन्दर को करके ऐंठ दिया। जोसेफ ग्लीडन नाम के चतुर व्यक्ति ने इस विधि का नाम कांटेदार तार रखा और अपना पेटेन्ट करा लिया। उसे एक उद्योगपति ने साठ हजार डॉलर एक साथ और प्रत्येक सौ पाऊंड तार के ऊपर 25 सेंट रायल्टी देने का समझौता किया। इस प्रकार उसको करोड़ों डॉलर प्राप्त हुए।

इसी प्रकार रबड़ के तले वाले जूतों की कहानी है। उनका आविष्कारक, डेनियल ओ'सलिवान, बिजली के सामान का परीक्षण किया करता था। बिजली के धक्के से बचने के लिये उसने पैरों के नीचे बिछाने के लिये एक रबड़ की चटाई ले रखी थी। बहुधा यह होता था कि वह चटाई लगाना भूल जाता था या उसे चटाई इधर उधर पड़ी रहने के कारण ज़रूरत के समय खोजनी पड़ती थी। इससे उसे बड़ी खीज चढ़ती थी। एक दिन उसे विचार आया कि इस रबड़ को काट कर अपने जूतों में लगा लूँ। फौरन ही उसे अनुभव हुआ कि रबड़ के तले वाले जूते बहुत आरामदेह हैं। उसने अपनी खोज का पेटेन्ट करा लिया। नये उद्योग का आधार रखा गया और उसका भाग्य चमक उठा।

इन सबसे साधारण एक और विचार था जो लाखों रुपयों में बदल दिया गया। हाईमैन लिपमैन नामक अमेरिकन ने पेन्सिल के ऊपर छोटा टिन का खोल चढ़ाकर उसमें रबड़ लगाने का विचार सोचा और उसे पेटेन्ट करा कर एक लाख डॉलर में बेच दिया।

आज से लगभग पचास साल पहले एक क्लर्क हेयरपिन को मोड़ तोड़ कर खेल रहा था। उसकी उंगलियों ने उस पिन को आज के मुड़े तार के काग़ज़ दबाने वाले पिन का रूप दे दिया। फिर क्या था, भाग्य उस पर हँस उठा।

इन सब का अर्थ यह नहीं कि केवल साधारण चीज़ें ही क्षणिक विचारों का परिणाम होती हैं। आजकल की कुछ पेचीदा खोजें भी आकस्मिक घटनाओं के परिणामस्वरूप हैं। खोज के लिये आवश्यकता इस बात की है कि कामगर अपने काम में आनन्द ले और अपनी आँखें खोल कर रखे।

सुरक्षा कांच का आजकल सर्वत्र प्रयोग है और यह भी सच है कि इसके कारण अब तक अगणित जानें बच चुकी हैं और दुर्घटनायें नहीं हुई हैं। यह वह कांच है जो टूटने पर चूर-चूर होकर बिखरता नहीं। इसकी गवेषणा बिल्कुल आकस्मिकता के कारण हुई।

एक फ्रेंच रसायनज्ञ एडूअर्ड बेनेडिक्ट्स ने अपनी प्रयोगशाला साफ करते समय एक बोतल नीचे गिरा दी जिसमें एसीटोन में सेलूलायड का मिश्रण रखा था। जब वह चूरा उठाने नीचे झुका तो उसने देखा कि बोतल का काँच चूरा चूरा होकर छितराया नहीं था, क्योंकि बोतल की अन्दरूनी सतह पर उस सेलूलायड का झीना

लेप था। उसने अपनी स्मृति-पुस्तिका में यह बात नोट कर ली। इसके कुछ दिनों बाद उसने एक मोटर दुर्घटना देखी जिसमें दो युवतियाँ शीशे के टुकड़ों से बुरी तरह घायल हुई थीं। अगले दिन ही उसने सुरक्षा कांच को खोज निकाला। एक गिलास के दोनों ओर एसीटोन में सेलूलायड का मिश्रण पतला लेप कर सूख जाने दिया। फिर उसने हथौड़े से परीक्षण किया। वह सफल हुआ था।

स्याहीसोख्ता काग़ज़ विश्व भर में प्रचलित है। एक दिन एक कामगर काम के बीच सो गया और काग़ज़ के कुछ गूदे को मशीन के अन्दर जाने दिया जो जाना नहीं चाहिये था। जो काग़ज़ बना वह खराब था और रद्दी समझ कर फेंक दिया गया। कुछ दिनों बाद उस काग़ज़ की मिल के एक क्लर्क ने स्याही का धब्बा साफ करने के लिये जो उसके डैस्क पर गिर गया था उस रद्दी कागज का एक टुकड़ा उठाया। उसने अचम्भे से देखा कि किस तेज़ी से उसने स्याही चूस ली। स्याही-सोख्ता काग़ज़ इन दो आकस्मिकताओं का परिणाम था।

रेयन (नकली रेशम) की ईजाद भी एक दुर्घटना के कारण हुई। काउन्ट इलेयर नामक व्यक्ति ने कोलोडियन की बोतल अपनी उंगलियों पर बिखेर ली। उसने असफलतापूर्वक उसे साफ करने का प्रयास किया। जब उसने अपनी उंगली खोलनी चाहीं तो देखा कि वे अगणित चमकते तारों के जाल से पुर गई हैं। यही नकली रेशम के महान उद्योग का आरम्भ था।

एक आदमी था एडवर्ड जी० एचीसन जो नकली हीरे बनाना चाहता था। नकली हीरा बनाने के लिये उसने कार्बन, मिट्टी, सिलीकेट और कोयले का मिश्रण एक नली में कर भट्टी में रख दिया और भट्टी का ताप एक हज़ार अंश सेन्टीग्रेड तक बढ़ा दिया। फल के ठंडा होने पर उसने नली में भूरे-काले रंग के टुकड़े पाये। ये इतने कठोर थे कि हीरे जैसे कठोरतम पदार्थ पर निशान डाल सकते थे। वह हीरा तो नहीं पा सका पर उससे भी अधिक उपयोगी वस्तु कार्बोरण्डम की खोज कर करोड़पति बन गया।

एक आदमी की पत्नी बहुत फैशनेबल थी। उसके बाल बहुत सुन्दर थे। वह उनमें हेयर-पिन लगाया करती थी परन्तु कठिनाई यह थी कि उसके कोमल, मुलायम और सुन्दर बालों से प्रायः हेयर-पिन निकल जाते थे। एक बार उसकी पत्नी अन्दर ड्रेसिंङ्ग टेबल पर बाल बना रही थी और वह पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था।

कालीन पर उसने अपनी पत्नी का एक हेयर-पिन पड़ा हुआ देखा और खाली बैठा कुछ न कुछ कर के अनुसार उसको हाथ में लेकर मरोड़ने लगा। उसने वह हेयर-पिन काफी टेढ़ा कर दिया।

जब पत्नी बाल बना चुकी तो कुछ हेयर-पिन लगाने के बाद बोली, 'तनिक कालीन पर देखिये, मेरा हेयर-पिन गिरा होगा।'

पति ने वह टेढ़ा हेयर-पिन आगे कर दिया और कहा, 'क्षमा करना, मैंने बदहवासी में इसे टेढ़ा कर दिया है।'

पत्नी ने वही टेढ़ा हेयर-पिन अपने बालों में लगा लिया और अपने पति के साथ डान्स पर चली गई।

जब दोनों पति पत्नी वापस आये तो पत्नी यह देखकर आश्चर्य-चकित हो गई कि उस टेढ़े हेयर पिन के अतिरिक्त उसके सारे पिन गिर गये थे। चूंकि वह टेढ़ा था इसलिये बालों में अटक गया था।

इससे पहले हेयर-पिन बिल्कुल सीधा हुआ करता था। जब पत्नी ने इसकी चर्चा अपने पति से की तो वह हर्ष से उछल पड़ा। उसने सर्वश्रेष्ठ हेयर पिन तैयार करने का उपाय मालूम कर लिया था। अगले ही दिन उसने उस स्टाइल का हेयर-पिन पेटेन्ट करा लिया और हेयर पिन तैयार करने वाली कम्पनी ने उसे 4,000,000 पौंड भेंट करके वह पेटेन्ट ख़रीदा। आज मिलने वाली सुइयाँ भी टेढ़ी होती हैं। औरतें उन्हें बालों में लगाती हैं पर वे गिरती नहीं।

अमरीका की एक यूनीवर्सिटी में कैमिस्ट्री के एक विद्यार्थी ने प्रयोगों से निबट कर जब भोजन आरम्भ किया तो उसे अपनी डबलरोटी बहुत मीठी लगी। वास्तव में वह हाथ साफ करने भूल गया था। उसकी डबलरोटी इतनी मीठी हो गई थी कि वह उसका कारण मालूम करने पर विवश हो गया।

उस नौजवान विद्यार्थी का नाम था फाहिल बर्ग। उसने मकान मालिक से इसकी चर्चा की और बची हुई डबलरोटी उसे खिलाई। उसने रोटी का टुकड़ा मुँह में डाला और कहा, 'वास्तव में यह बहुत मीठी है।' अचानक उसे याद आ गया कि उसने प्रयोग करने के बाद हाथ नहीं धोये थे। अब उसने यह अनुमान लगाया कि जिन दवाओं से वह प्रयोग करता रहा है, उनमें से एक दवा जरूर ऐसी होगी जो खांड से भी बहुत मीठी होगी। वह फिर अपनी प्रयोगशाला में गया और उसे मालूम हो गया कि वह सेक्रीन से प्रयोग करने लगा था। उस समय पहली बार यह ज्ञात हुआ कि सेक्रीन खाँड से पाँच सौ गुना अधिक मीठी वस्तु है।

आइसक्रीम की मशीन बनाने वाले किसी मिस्त्री ने जब एक मशीन तैयार की तो उसमें एक कमी रह गई। उसका फल यह निकला कि जब आइसक्रीम तैयार करने लगे तो उसमें से तैयार आइसक्रीम एक छेद के मार्ग से बाहर निकलने लगी। और जब वह मशीन दोबारा मिस्त्री के पास उस नुक्स को दूर करने के लिये लाई गई तो उसने सोचा कि यदि प्रत्येक मशीन में एक ऐसा छेद छोड़ दिया जाये तो तैयार होने के बाद आइसक्रीम मशीन को खोले बिना आसानी से निकाली जा सकती है। इस प्रकार एक नई लाभदायक मशीन का आविष्कार हो गया।

एक युवती अपने बच्चे के दूध की बोतल को एक कीटाणु नष्ट करने वाली दवा से साफ कर रही थी कि अचानक बोतल टेढ़ी हो गई और उसके कपड़ों पर वह दवा गिर पड़ी। संयोग से जिस जगह कपड़े पर वह दवा गिरी थी वहाँ ऐसे निशान और दाग-धब्बे थे जो धोबी से भी नहीं उतरे थे परन्तु उस दवा के गिरते ही वे धब्बे उतर गये। और इस तरह वह युवती यह मालूम करने में सफल रही कि कीटाणुविनाशक दवा कपड़ों से धब्बे उतारने में भी अद्वितीय है। उस युवती ने अपने पति द्वारा उसे पेटेन्ट कराया और आजीवन 300 पौंड प्रति मास रायल्टी प्राप्त करती रही।

इन दिनों प्लास्टिक का उद्योग संसार के श्रेष्ठतम उद्योगों में गिना जाता है। संसार के सब देश इस पर सफल प्रयोग कर चुके हैं और कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो प्लास्टिक से तैयार न की जाती हो। दैनिक प्रयोग की प्रत्येक वस्तु प्लास्टिक से तैयार की जाती है। प्लास्टिक का आविष्कार भी एक गलती का फल है, परन्तु वह गलती मानव की नहीं बल्कि बिल्ली की थी।

एक बार एक बिल्ली दूध पी रही थी। दूध का बर्तन एक प्रयोगशाला में रखा हुआ था और उसके पास ही बोतल में 'फार्मेडाइड' नाम की दवा रखी हुई थी। बिल्ली ने अपने पाँव से वह बोतल गिरा दी और वह दूध में गिर पड़ी। इसका फल यह हुआ कि दूध और दवा के मिलने से एक अनोखी वस्तु बन गई। जब सुबह वैज्ञानिक ने उसे देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया। यही संसार का सबसे पहला प्लास्टिक था।

पारदर्शी प्लास्टिक भी एक ऐसी ही गलती से बना है और यह गलती स्विट्ज़रलैण्ड के एक वैज्ञानिक से हुई। वह वैज्ञानिक लॉन्ड्री के धुले हुए कपड़े को भिन्न-भिन्न औषधियों से ऐसा बनाना चाहता था कि उस पर कोई दाग धब्बा न ठहर सके, परन्तु वह कपड़ा गत्ते की तरह साफ और सख़्त निकल आया। इस तरह वह कपड़ा इस्तेमाल के योग्य ही न रहा, परन्तु इसका फल यह निकला कि एक नवीन वस्तु दिखाई दी— एक ऐसा पारदर्शी प्लास्टिक, जिससे आर-पार की वस्तु तक दिखाई दे जाये।

यह आकस्मिक घटनाओं द्वारा खोज अब तक बीसियों पर दोहराई जा चुकी है। नोबेल ने विस्फोटक की खोज एक दुर्घटना के फलस्वरूप की, गुडइयर ने वल्केनाइज़्ड रबर की। एक्सरे का आविष्कार भी इसी की कहानी है। स्टेनलेस स्टील भी अकस्मात् ईजाद हुआ।

रैले की मृत्यु

वाल्टर रैले सोलहवीं शताब्दी के प्रमुख व्यक्तियों में हुए हैं। वे पद्य की अपेक्षा गद्य लेखक अधिक थे, विद्वान की अपेक्षा योद्धा अधिक थे। वे नई व पुरानी दोनों दुनियाओं में मशहूर थे।

उनके व्यस्त जीवन का अन्त हिंसापूर्ण और कदाचित् अन्यायी ढंग से हुआ। 29 अक्टूबर, 1618 को उनका सिर काट लिया गया।

फांसी के तख्ते से अपने चरित्र और चाल चलन के ठीक होने के बारे में भाषण देने के बाद उन्होंने कुल्हाड़ी ली और नगराध्यक्ष से बोले, "दवा तो यह तीखी है, परन्तु सब रोगों का अच्छा इलाज है।" अपना सिर उन्होंने सांचे में, जिसमें अपराधी से सिर रखने को कहा जाता था, अच्छी तरह से फंसा कर देखा। फिर उन्होंने जल्लाद को बताया कि तलवार चलाने को वे खुद हाथ उठाकर कह देंगे और बोले, "घबराना मत, एकदम वार कर देना।"

तब वे लेट गए। जल्लाद ने उनसे अपने सिर को दूसरी ओर रखने को कहा। उनका उत्तर था, "ठीक स्थान पर तो दिल को होना चाहिए। सिर कहाँ है, यह कोई चिन्ताजनक बात नहीं।" इशारा देने के बाद भी जल्लाद अपना काम एकदम नहीं कर सका। इस पर रैले चिल्लाए, "तुम मारते क्यों नहीं? भले आदमी मारो।" दो वारों में, जो उन्होंने बिना कष्ट प्रदर्शित किये सह लिए, इस निर्भय व्यक्ति का सिर धड़ से अलग हो गया।

जीवन का अन्त

सर टामस मूर ने फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए जल्लाद से कहा कि तख्ता तो बहुत कमजोर है। वे बोले, "मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे सुरक्षा सहित ऊपर पहुँचा दो। नीचे तो फिर मैं अपने आप आ जाऊंगा।"

चॉसर ने अपने अन्त समय में एक बैलड (गीत) की रचना की। उनकी अन्तिम रचना है, "मृत्यु-शैया पर अपने दर्दभरे अन्तिम क्षण बिताते हुए ज्यॉफ्रे चॉसर द्वारा रचित एक बैलड।"

प्रसिद्ध आयरिश दुखान्त-नाटक-अभिनेता टामस क्विन ने कहा था, "क्या ही अच्छा होता कि इस दुखपूर्ण दृश्य का अन्त हो जाता। फिर भी मुझे आशा है कि इस दृश्य में भी मैं अपना भाग आशातीत बड़प्पन के साथ अदा करूँगा।"

पेट्रार्क अपने पुस्तकालय में एक पुस्तक पर झुका हुआ पाया गया। वह मर चुका था।

रूसो ने मरते समय अपने नौकरों को आज्ञा दी थी कि वे उन्हें उठाकर खिड़की के सामने बिठा दें जिससे वे अपने बाग को देख सकें और प्रकृति को देखकर अपने नेत्र तृप्त कर सकें।

पोप हमें बताता है कि जब वह प्रसिद्ध चित्रकार सर गॉडफ्रे नैलर से उसकी मृत्यु के कुछ दिन पहले मिलने गया तो वह बैठा हुआ अपने ही स्मारक के बारे में योजनाएँ बना रहा था। मृत्यु में भी उसका गर्व स्पष्ट था।

लार्ड चैस्टरफ़ील्ड के सदाचार ने उन्हें मृत्यु के समय भी नहीं छोड़ा। अपने प्रमुख नौकर से उन्होंने अपने से मिलने आये एक व्यक्ति के लिए कहा, "ड्राइस्डेल के लिये एक कुरसी लाओ।"

महान ब्रिटिश राजनीतिज्ञ, विलियम पिट, विम्बलडन कॉमन पर बने एक अकेले मकान में एकान्त में मरा।

विरासत

शेक्सपियर एक दिवालिया कसाई बाप तथा अनपढ़ माँ का बेटा था। बीठोवन का बाप पक्का शराबी था और माँ को दिक़ था। शूबर्ट की माँ किसी के घर में नौकरानी थी और बाप किसान था। माइकेल फ़ैराडे एक अस्तबल में उत्पन्न हुआ था, उसका बाप लुँजा लुहार था, माँ आम नौकरानी थी, तथा उसने अपना जीवन लन्दन की सड़कों पर अखबार बेचने से आरम्भ किया था। लुई पास्चर, अर्वाचीन चिकित्सा का जन्मदाता, गवैये बाप का बेटा था।

प्रसिद्ध निःस्पृह यूनानी दार्शनिक एपीकेत (Epicetus) गुलाम उत्पन्न हुआ था और जीवन के कई वर्ष उसने दासता में काटे। महान् ब्रिटिश चित्रकार जॉन ओपी कॉर्नवेल में बढ़ई था। इस पद से ऊँचे उठकर वह रॉयल एकेडमी में चित्रकला का प्रोफेसर हो गया। महान् रोमन कवि वर्जिल का पिता या तो कुम्हार था या भट्टेवाला। कोलम्बस जुलाहे का बेटा था और स्वयं भी आरम्भ में जुलाहा रहा। लेखक बनयन फेरीवाले का, मिल्टन नोटरी का, टामस मूर बिसाती का और 'रॉबिन्सन क्रूसो' का लेखक डीफ़ो कसाई का लड़का था।

फ्रेंच लेखक रैबले दबाफरोश का, मोलियर टेपेस्ट्री बनाने वाले का और रूसो घड़ीसाज का पुत्र था। धर्म-सुधारक लूथर का बाप निर्धन खान-मजदूर था।

विद्यासागर और भौंरा

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कहीं न्योते पर गये, तो उनकी दाल में एक भौंरा निकल आया। गृहिणी उनके सामने ही बैठी थी। उसने घबरा कर पूछा, "क्या है?" विद्यासागर ने जल्दी से उस ग्रास को मुँह में रख कर कहा, "कुछ नहीं।" गृहिणी को पता लग जाने पर उसे कितना मानसिक कष्ट होगा, इस विचार से विद्यासागर ने भौंरे को भी निगल जाना ही श्रेयस्कर समझा।

वसीयतनामा

भारत में जैतपुर रियासत का राजा जगतराज था जो अपने दूसरे बेटे पहाड़सिंह को अपना सारा राज्य सौंपना चाहता था। सन् 1758 में जब वह मरण-शैया पर पड़ा हुआ था तो अन्य दावेदारों ने वहाँ से लिखने की सब सामग्री नष्ट कर दी जिससे वह

वसीयत न लिखकर छोड़ सके। राजा ने अपने भावी उत्तराधिकारी पहाड़सिंह को मिलने बुलाया और उसकी बाँह पर अपने रक्त से एक छोटी वसीयत लिखकर हस्ताक्षर कर दिये। पहाड़सिंह ने पिता की समस्त सम्पत्ति पाई।

अपराध और दण्ड

डेनमार्क की राजकुमारी लियोनोरा (1621-1698) का भाई फ्रेड्रिक तृतीय (1609-1670) डेनमार्क का राजा था। एक दिन लियोनोरा भाई का राजमुकुट लगाकर देख रही थी। सहसा वह उसकी उंगलियों से फिसल गया और उसको कुछ हानि पहुँची। इस 'अपराध' पर उसकी भाभी रानी सोफिया अमेलिया ने उसे जीवन-कारावास का दण्ड दे दिया। नन्द को पूरे बाईस वर्ष कारावास में गुज़ारने पड़े जब तक कि उसके भाई की मृत्यु पर उसे छोड़ नहीं दिया गया। नन्द भाभी के झगड़े पर हमारा कॉपीराइट नहीं यह अन्तर्राष्ट्रीय है।

सबसे महंगा गाना

बहमनी राज्य में 1366 में सुलतान मौहम्मद राज्य करता था। एक दिन उसके दरबारी गवैयों ने एक शास्त्रीय गान की दो पंक्तियाँ सुनाईं। गान अमीर खुसरो ने राजाओं की प्रशंसा में लिखा था। उस गाने को सुनकर सुलतान को बेहद खुशी हुई। उसे इतनी प्रसन्नता हुई कि उसने तुरन्त उनको अपने पड़ौसी विजयनगर के राजा पर पांच लाख की हुण्डी लिखकर दे दी। विजयनगर के राजा को यह हुण्डी देखकर बहुत क्रोध आया और उसने उसे सकारने से मना कर दिया। इस पर मौहम्मद ने युद्ध की घोषणा कर दी। पांच साल तक भयानक युद्ध चला और दोनों ओर के लगभग पाँच पाँच लाख व्यक्ति मारे गये।

अभागों का कन्सर्ट

अल्जीरिया के कॉन्सटैंटाइन प्रान्त का शासक 1826 से 1837 तक हाजी अहमद बे था। इस प्रान्त में जितने भी संगीतकार थे उन सबको बुलाकर उसने अपने हरम के लिये एक ऑर्केस्ट्रा बनाया। लेकिन क्योंकि किसी विवाहिता स्त्री को पर-पुरुष द्वारा देखना मना है, इसलिये बे ने ऑर्केस्ट्रा के हर सदस्य की आँखें निकलवा डालीं।

इच्छा-शक्ति

अलेक्ज़ेण्डर ड्यूमा ने अपना नियम बना रखा था कि वह इतने पृष्ठ प्रति दिन लिखेगा। जब तक उन पृष्ठों की प्रत्येक लाइन नहीं भर जाती तब तक वह कलम नहीं रखता था। एक बार लिखते लिखते उस दिन के अन्तिम पृष्ठ के बीच में 'तीन तिलंगे' उपन्यास समाप्त हुआ। ड्यूमा ने उसके नीचे एक रेखा खींच दी और यह

हैडिंग लिखा— काउण्ट आफ मौंटे ड क्रिस्टो, एक रोमान्स, लेखक अ० ड्यूमा और इसके नीचे उसने मौंटे ड क्रिस्टो का आरम्भ का आधा पृष्ठ लिख डाला।

प्रेरणा या कार्य करने की इच्छा एक ही वस्तु के दो नाम हैं। यह हमेशा अपने आदेश पर कार्य करनी चाहिये। जिस लेखक की इच्छा-शक्ति या प्रेरणा समय पर बुलाने पर नहीं आती, जो कहते हैं आज मूड नहीं है, वे लेखक नहीं छिपे सियार हैं।

केवल साठ सैन्ट

इंगलैण्ड में ग्लैस्टनबरी नगर के पोर्टर्स लॉज मकान की बैठक की अंगीठी (Fireplace) 1648 में कूड़ा कर निकाल दी गई और वह अनेक सालों तक सामने सड़क पर पड़ी रही। मालिक को उसका कोई खरीददार नहीं मिला, यहाँ तक कि उसका मूल्य तीन रुपये लगा दिया गया। उसकी सबसे बड़ी बोली 2 रुपये 10 आने लगी। मालिक की एक पुत्री को घर के सामने कूड़ा पड़ा देखकर बहुत क्रोध आया और उसने नौकरों को आदेश दिया कि अंगीठी को टुकड़े करके ले जाया जाये। काटते समय उसके एक गुप्त खाने में से सौ सोने के सिक्के खनखनाते निकल पड़े जहाँ वे तीन सौ से अधिक वर्षों से पड़े थे।

सबसे आसान पास

इतिहास का सबसे आसान पास तुर्की में था। सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक तीन सौ साल तक यदि तुर्की प्रजा के किसी व्यक्ति को महान् वज़ीर से कोई शिकायत होती थी तो वह फौरन सुलतान तक पहुँच सकता था। इसके लिये उसे अपने सिर पर जलती आग का कुंडा रखना होता था। यह जलता अग्नि-कुण्ड उसका दरबार में घुसने का पास होता था और रक्षक उसे फौरन सुलतान के पास ले जाते थे।

किन्तु यह केवल घुसने का पास था। यदि उसकी शिकायत सही नहीं उतरती थी तो उसका सिर फौरन क़लम कर दिया जाता था।

सबसे बड़ी ज्वार-तरंग

इतिहास में ज्ञात अब तक की सबसे बड़ी ज्वार-तरंग 7 जौलाई, 1737 को आई थी। यह भारत में बंगाल की खाड़ी में उठी थी। इसने तीन लाख मनुष्य मार डाले थे और बीस हजार नावें नष्ट कर दी थीं।

सोडे की झील

फ्रैंच नाइजीरिया में तिदिची के ज्वालामुखी से निरन्तर सोडियम कार्बोनेट निकलता रहता है जिसके कारण पांच मील लम्बी तथा 1312 फीट गहरी सोडे की झील बन गयी है। यह झील हर साल बड़ी होती चली जा रही है।

कूड़ा गाड़ी (Wheelbarrow)

बैंक में जो धन जमा किया जाता है उसका कुछ प्रतिशत वे अपने पास रखते हैं, और शेष को सूद पर दे देते हैं। यदि कभी सब जमा करने वाले एक साथ रुपया निकालने लगें तो बैंक नहीं दे सकता और वह फेल हो जाता है। कभी भी किसी बैंक के बारे में अफवाह उड़ती है तो उस पर भगदड़ पड़ जाती है और वह नहीं संभल पाता। 1830 में इंगलैंड में लुटरवर्थ के एक बैंक पर भगदड़ पड़ी। वहाँ के मैनेजर ने एक कूड़ागाड़ी में सोने की गिन्नियां भर कर बाहर के द्वार से अन्दर, पीछे के छुपे द्वार से फिर बाहर, गली पार करके फिर बाहर के द्वार से अन्दर, इस प्रकार एक ही कूड़ागाड़ी के पूरे सौ चक्कर लगवाये। बैंक में इतनी सारी गिन्नी आते देखकर जो लोग घबराकर पैसे निकालने इकट्ठे हुए थे, निश्चिन्त होकर वापस लौट गये।

निहत्थे चीते से युद्ध

सर एडवर्ड विंटर (1622-1685) ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी के अन्दर मद्रास में 42 साल गुज़ारे थे। उन दिनों वहाँ एक चीता नरभक्षक हो गया था जिससे सब परेशान हो उठे। सर एडवर्ड विंटर ने उस चीते के शिकार के लिये जानबूझकर निहत्थे जाने का कार्यक्रम बनाया। वे उस ताल के किनारे जा बैठे जहाँ वह चीता बहुधा पानी पीने आता था। चीता आया और उन्हें देखकर क्रोधित हो उठा। जैसे ही वह उनके ऊपर उछला, उन्होंने उस भयंकर जीव को अपने हाथों में थाम लिया लेकिन उस उछाल के झटके से दोनों जल में जा पड़े। वहाँ उन्होंने उसके सिर को पानी के अन्दर डुबाये रखने में सफलता पाई और चीता डूबकर मर गया।

यह गाथा लन्दन की बैटरसी में स्थित सैंट मेरी चर्च में उनकी कब्र के पत्थर पर लिखी है।

लेखन और लेखक

स्वर्गीय रांगेय राघव के बारे में दो चुटकुले प्रसिद्ध थे। वे हिन्दी के महान् लेखक थे और इतनी कम अवस्था जीने पर भी उन्होंने लगभग दो सौ पुस्तकों से हिन्दी साहित्य का भण्डार भरा। डा० नामवरसिंह कहते थे, "हमने सुना है कि तरुण आलोचक कहा करते हैं, रांगेय राघव रोज सुबह आधा सेर काग़ज़ तोल कर बैठ जाते हैं कि आज तो इन्हें रंग कर ही मानूँगा।" दूसरे की शिकायत थी कि अनेक बार रांगेय राघव को पढ़ने का निश्चय करके बैठा, पर, वाह रे लेखक! हम दो पुस्तकें समाप्त करते थे और तीन बाज़ार में नई आ जाती थीं। डा० रांगेय राघव स्वयं स्वीकार करते थे कि वे प्रतिदिन 80 पृष्ठ फुलस्केप के हिसाब से लिख सकते हैं।

लेखन में तेज़ और अधिक लिखना या कम लिखना लेखकों के ऊपर निर्भर रहता है, लेकिन इससे रचना की उत्कृष्टता नहीं मापी जा सकती। कुछ महान् लेखकों

ने संसार को केवल दो तीन रचनाएँ दी हैं, कुछ महान् लेखकों ने अनेक। न रचना के निर्माणकाल से उसकी श्रेष्ठता की परख हो सकती है। चतुरसेन शास्त्री के चालीस वर्ष के लेखन-अभ्यास और अध्ययन-मनन का परिणाम 'वैशाखी की नगरवधू' है तो डा० रांगेय राघव ने केवल 21 दिन में 'मुर्दों का टीला' लिख दिया था।

शरत् ने बहुत अधिक लिखना और जल्दी लिखना दोनों को लेखक का नहीं क्लर्क का गुण बताया था। परन्तु कभी कभी कोई रचना भीतर से उबल कर लेखक को इतना विवश कर देती है कि वह समय के बारे में सोच ही नहीं सकता। केशवदास ने अपनी 'रामचन्द्रिका' एक ही रात में लिख डाली थी। टी०ई० लारेंस ने 'सेवन पिलर्स ऑफ विज़डम' (बुद्धिमानी के सात स्तम्भ) को सूर्यास्त से आरम्भ कर सूर्योदय तक समाप्त कर दिया। बल्कि एक बार उसकी पाण्डुलिपि रेलयात्रा में खो जाने के उपरान्त उसे फिर इतने ही समय में लिख डाली थी। आर्थर विंग पिनरो ने 'टू हंड्रेड ए ईयर' केवल दोपहर में लिख दी थी। लिखने के बारे में प्रसिद्ध जासूसी-उपन्यास-लेखक एडगर वैलेस विख्यात था। वह बिना रुके अपना एक पूरा उपन्यास डिक्टाफोन में बोलकर लिखा दिया करता था। बाद में उसका सेक्रेटरी टाइप करता रहता था। एलेक्ज़ेंडर ड्यूमा भी बहुत तेज लिखने वाला था। उसके नाम में लिखे 1200 उपन्यास हैं। सर वाल्टर स्कॉट के पड़ौसी ने उसके बारे में लिखा है कि वह अपनी खिड़की के सामने स्कॉट को रात भर पन्ने के बाद पन्ने भरते हुए देखा करता था।

अनेक उदाहरण ऐसे हैं जब लेखक ने छाती पर खड़े कम्पोजीटरों की मांग पूरी करने के लिये दमादम लिखा है। लेकिन दुर्गाप्रसाद खत्री की तरह इतनी लम्बी पृष्ठभूमि पर आगे पीछे के सूत्र जोड़ते हुये चन्द्रकान्ता सन्तति के एक के बाद एक भाग देते जाना संसार में अनूठा है। इसी प्रकार जॉनसन की जीवनी के प्रणेता बॉसवेल ने लिखा है कि डा० सैमुएल जॉनसन ने 'रेसेलस' हफ्ते भर में सन्ध्याओं में लिख डाला था और जितना वे लिखते जाते थे, प्रेस को भेजते जाते थे। प्रेमचन्द ने 'रंगभूमि' को इसी प्रकार लिखा था। इस पुस्तक के लेखक ने भी कभी कभी ऐसा किया है।

न्याय की सुनहरी ज़ंजीर

जब बादशाह जहाँगीर 1605 ई० में मुगल साम्राज्य की गद्दी पर बैठा तब उसने अपने आगरे के किले की बुर्जी में न्याय की सुनहरी ज़ंजीर लगवाई। वह ज़ंजीर ठोस सोने की थी। उसका वज़न बीस मन था और लगभग 45 लाख रुपये मूल्य था। वह यमुना के तट पर बनाये पत्थर के खम्भे तक फैली हुई थी। इस ज़ंजीर में 80 सोने की घण्टियाँ लटक रही थीं।

बादशाह की कोई प्रजा, जो यह सोचती थी कि उस पर अन्याय किया गया है, इस घण्टी को बजा सकती थी। उसे यह निश्चय था कि उसकी फरियाद सुनी जायेगी और उस पर किये गये अन्याय को दूर किया जायेगा।

ज़मीन पर समुद्री लड़ाई

कोई अगर यह कहे कि हमने खेतों में जहाज़ी बेड़े को लड़ते देखा है तो आपको उसकी बुद्धि पर सन्देह होने लगेगा। लेकिन यह बात अद्‌भुत होते हुये भी सत्य है। डच लोगों ने स्पेन से स्वतन्त्रता का युद्ध छेड़ रखा था। 1574 में एक स्पेनिश सेना ने हॉलैण्ड के लीडन शहर का घेरा डाला और वह उसे जीतने वाली थी। स्थिति को गम्भीर देखकर डचों ने अपने समुद्री बाँध तोड़ दिये जिससे समुद्र हॉलैण्ड में फैल गया। साथ ही उनके समुद्री बेड़े ने अन्दर घुस कर स्पेनिश सेना को नष्ट कर डाला।

भूमध्यरेखा

भूमध्यरेखा जिस जिस स्थान से होकर गुजरती है वह श्वेत चमड़ी वालों से सैंकड़ों साल पहले अमेरिका के प्राचीन निवासी इन्काओं ने पता लगा लिया था। अपने देश के जिन जुड़वां पर्वतों को वे पृथ्वी के मध्य का प्राकृतिक चिह्न सूचक मानते थे, आज बिल्कुल उसके मध्य में वैज्ञानिकों ने भूमध्यरेखा दिखाने वाला स्तम्भ खड़ा किया है।

पवन-चक्की

पवन-चक्की डच चीज़ नहीं है। इसकी खोज सर्वप्रथम पूर्व में की गई थी और वहीं इसका प्रयोग आरम्भ हुआ था। वैसे आजकल ये केवल हालैण्ड में पाई जाती हैं।

प्राचीन काल में इंग्लैण्ड में एक बार बहुत तेज हवा चली। पवन-चक्की की पंखुड़ी इतनी तेजी से घूमी कि हवा के साथ घर्षण के कारण उसमें आग लग गयी और पवन-चक्की जल कर राख हो गई।

विचित्र युक्ति

लैंगहॉर्न क्लीमैन्स महोदय जो अमेरिका में रहते थे एक दिन अपने मित्र जार्ज लैंगडोन से मिलने गये। वहाँ उन्होंने मित्र की बहन ओलिविया लैंगडोन का चित्र देखा और भले आदमी को पहली दृष्टि में प्यार हो गया। उन्होंने मन ही मन ठान लिया कि विवाह इसी सुन्दरी से करूंगा। भगवान् की कृपा हुई, कुछ दिन बाद एक भोज में प्रेमिका के दर्शन भी हो गये। शीघ्र ही उसके पिता के घर जाने का निमन्त्रण भी हस्तगत हो गया। अन्धा क्या चाहे, दो आँखें! बिस्तर बांधकर वे अतिथि बन ठहर गये।

प्रेम का विष तेजी से प्रभाव डालता रहा। आखिर जिस दिन लौटने का समय आया, उस दिन दिल ने धड़कने से भी मना करना आरम्भ कर दिया। पर आदमी

तेज़ थे। मेजबान के कोचवान को पटाया। उसने गाड़ी की सीट इस प्रकार फिट करा ली कि जैसे ही गाड़ी चले सीट उलट जाये। विदा लेने का समय आया। सबसे विदा लेकर क्लीमैन्स गाड़ी पर चढ़कर सीट पर जा बैठे। कोचवान ने चाबुक फटकारा और घोड़ों के पैर बढ़ाते ही सीट उलट गई और वे जमीन पर लुढ़कते हुये आ गिरे। उस क्षण उनके नेत्र बन्द थे और वे अधमरे हो गये। उन्हें फौरन उठाकर अन्दर ले जाया गया और डाक्टर बुलाया गया। दो सप्ताह तक खाट पर रहना पड़ा, नर्सों की देखभाल रही, साथ में प्रेमिका की सेवा शुश्रूषा भी। इन दिनों में प्रेम पक्का हो गया और अन्त विवाह में हुआ।

इन लैंगहॉर्न क्लीमैंस की लेखनी में जादू था। इन्होंने अपने पाठकों के पेट में हँसाते हँसाते बल डाल दिये। इन्होंने कोई विशेष शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, फिर भी ऑक्सफर्ड और वेल्स विश्वविद्यालयों ने इन्हें सम्माननीय डिगरी प्रदान कीं। संसार में ये मार्क ट्वेन के नाम से प्रसिद्ध हैं।

अनोखी भेंट

पोलिनेशियन द्वीपसमूह में एक स्थान है— ताहिती। यहाँ की कबायली जातियों में शादी के पूर्व ईश्वर की स्वीकृति लेने की प्रथा है। इस स्वीकृति को प्राप्त करने के लिये वधू के घर के आंगन में एक वेदी बनाई जाती है। इस वेदी पर वधू के पूर्वजों की हड्डियाँ और खोपड़ियाँ टांग दी जाती हैं। इसके बाद वर-वधू इस वेदी से कुछ गज़ की दूरी पर खड़े हो जाते हैं और पुजारी उनकी ओर से भगवान की स्तुति करता है। इस अवसर पर वधू के सम्बन्धी 'शार्क' मछली के दांतों से अपने चेहरे को खूब खुरचते हैं और उससे जो खून निकलता है, उसे एक कपड़े पर रखते हैं। जो सबसे अधिक खून निकालता है, उसी की भेंट सबसे अधिक मूल्यवान समझी जाती है।

अद्भुत एकाग्रता

बाण ने सम्राट् हर्ष के बारे में लिखा है कि वे राजकाज, वार्तालाप और काव्य-रचना एक साथ कर लेते थे। कुछ लेखकों के मस्तिष्क अद्भुत होते हैं। वे अन्य काम करते हुये भी लेखन में मस्तिष्क को एकाग्र कर लेते हैं। लोगों का कहना है कि मैथिलीशरण गुप्त चौपड़ खेलते जाते थे और साथ ही साथ पास में रखी स्लेट पर साकेत के पद लिखते जाते थे। वृन्दावनलाल वर्मा ने स्वयं लिखा है कि उन्होंने अपने उपन्यासों के कुछ अध्याय उस बैठक में बैठकर लिखे हैं जहाँ दोस्त लोग गप्पों में मस्त रहते थे। जेन आस्टेन दिन भर घरेलू नौकरानी का काम करती थी और रात में कुत्ते-घोड़ों वाले कमरे में बैठकर 'प्राइड एण्ड प्रिजुडिस' (Pride and Prejudice) लिखा करती थी। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने अपने नाटकों के कुछ भाग नाच-मुजरों के बीच में लिखे हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि शेक्सपियर नाटक

लिख लिख कर देता और साथ ही उनका रिहर्सल भी होता जाता था। फ्रांस के कई लेखकों ने अपनी रचना की पाण्डुलिपि भीड़-भाड़ में बैठकर लिखी है। बृहदाकार उपन्यासों का पिता डोस्टॉयवस्की ज़िन्दगी भर इधर से उधर भागता रहा और अपने चलाये पत्र को उसे स्वयं ही भरना पड़ता था।

बड़े दिन का उपहार

अमेरिका के आस्टिन नामक एक छोटे नगर में ऐथल नाम की अनुपम सुन्दर लड़की रहती थी। उसके प्रेमी तो अनेक थे, पर अन्त में उसका विवाह एक सुन्दर धनाढ्य युवक से निश्चित हो गया। ऐथल की दृष्टि एक दुकान में काम करने वाले युवा व्यक्ति बिल पर पड़ी। वह अपने साथ सितार और शब्दकोष लेकर चलता था। दोनों का परिचय हो गया। वह ऐथल को अपने सितार पर राग-रागनियाँ सुनाता, ऐथल पुलकित हो जाती। शब्दकोष से वह शब्दों के अर्थ, उत्पत्ति, व्याख्या का अध्ययन करता क्योंकि उसके हृदय में लेखक बनने की लालसा लगी हुई थी। दोनों में प्रेम हो गया।

दोनों प्रेमी एक दिन चुपचाप नगर से बहुत दूर ओहियो रियासत में भाग गये। वहाँ विवाह कर प्रणय-सूत्र में बँध गये। दोनों प्रसन्न और सुखी थे। एक दिन संकट के बादलों ने आ घेरा। बिल एक फर्म में काम करता था। उसने फर्म के रुपयों में कुछ गड़बड़ कर दी। इस पर फर्म के मालिक ने उस पर गबन का मुकदमा चला दिया और कैद से बचने के लिये ऐथल को छोड़ कर वह फरार हो गया।

एथेल को बहुत दुख पहुँचा। घोर दरिद्रता में वह किसी तरह अपने दिन काटने लगी। तभी क्रिसमस आया। वह अपने पति को कुछ भेंट भेजना चाहती थी लेकिन सवाल पैसे का था। आखिर उसने बड़ी मेहनत करके अपने हाथों एक गले का हार तैयार किया जो बाजार में 25 डॉलर का बिक गया। उस धन से उसने मनचाही चीज खरीद कर बिल को भेजी।

प्रिय का वियोग, आर्थिक संकट और भविष्य के बारे में चिन्ता ने ऐथल को सुखा दिया और वह भयानक रूप से बीमार हो गई। यह खबर सुनते ही बिल पोर्टर वापिस लौट आया। परन्तु वह अपनी पत्नी को न बचा सका।

इधर कम्पनी को बिल का पता चल गया। उसने उसे गिरफ्तार करा दिया। मुकदमा चला और पाँच वर्ष की सजा हुई। यही बिल आगे चलकर ओ हेनरी नाम से महान् लेखक बना। पत्नी के उपहार से प्रभावित होकर उसने 'गिफ्ट ऑफ द मागी' कहानी लिखी जो संसार की सर्वोत्तम कहानियों में से एक है।

विश्व की प्रथम उड़ाका महिला

विज्ञापन था, "आवश्यकता है एक अमरीकी महिला की, जो मृत्यु की परवाह न करे। रहस्य-की बात को संभाल कर रख सके। वेतन कुछ नहीं के बराबर।'

द्वार किसी ने खटखटाया और द्वार पर खड़ी थी एक महिला मुस्कराती हुई। उसने बताया, काम करती थी वह समाज-सेवा का, हॉबी उसकी थी उड़ानें भरना और नाम था— एमीलिया इयरहार्ट।

कुर्सी पर बैठा व्यक्ति था जार्ज पाल्मर पुटमैन— लेखक और प्रकाशक। उसकी खोज पूरी हो गई थी। उसे इसी स्त्री की तो खोज थी। खोज थी ऐसी महिला की जो एटलांटिक के पार वायुयान में उड़ान भर सके।

एक वर्ष पूर्व लिंडबर्ग ने अमरीका से पेरिस तक की उड़ान भरकर रिकार्ड कायम किया। चार महिलाओं ने भी वैसी ही उड़ान भरने के प्रयत्न में अपनी जान गंवा दी थी। श्रीमती गैस्ट ने वैसी ही उड़ान के लिये वायुयान खरीदा था पर उनके परिवार के सदस्यों ने आपत्ति की तो वह रह गई। सो उनका स्थान लेने के लिये एक महिला की आवश्यकता थी।

जून महीने में एक रविवार को संसार के लोग रेडियो के पास कान लगाये बैठे थे। एक वायुयान न्यूयार्क से पेरिस के लिए चला था, पर रास्ते में कहाँ गया पता नहीं। उसमें एक महिला थी। उस महिला को जानने, उसका भाग्य जानने, को सारे लोग अधीर हो उठे। आंधी, तूफान और बर्फ में से होता हुआ वह वायुयान सही सलामत इंगलैंड में उतरा और एमीलिया की धूम चारों ओर मच गई।

दाँत और बन्दूक की गोली

अनजाने में 22 बोर की रायफल का घोड़ा दब गया और गोली दाँतों से जा टकरायी और टकरा कर वापस गिर पड़ी।

यह घटना है सिडनी, आस्ट्रेलिया की और दाँत हैं एक 26 वर्षीय स्पेनिश डाने स्पेहर के जो बाहर से आ कर वहाँ बस गया है।

डाक्टरों का दावा है कि स्पेहर की प्राण-रक्षा उसके दाँतों ने ही की है जिन्हें आसानी से वज्र-सदृश कहा जा सकता है। यह स्पेनिश जब अपनी 22 बोर की रायफल साफ कर रहा था तो अनजाने में रायफल का घोड़ा दब गया— गोली छूटी, होठों को चीरती हुई दाँतों से जा टकराई और टकरा कर वापस गिर पड़ी।

डाक्टरों का कहना है कि अगर गोली इस तरह दाँतों से टकरा कर न लौटती तो स्पेनिश अपनी जान से हाथ धो बैठता।

विचित्र व्यवसाय

टील्फ डेविड हेलफर जब दस वर्ष का अबोध बालक था तब उसने एक भयानक स्वप्न देखा कि वह एक तख्ते पर निरावरण लेटा हुआ है और नाना प्रकार के कीट-पतंगे उसके शरीर पर रेंग रहे हैं। उसका कथन है कि उसने उस समय किसी

प्रकार का भय अनुभव नहीं किया अपितु उसने प्रत्येक कीटाणु की हरकतों को बड़ी तन्मयता से देखा। आश्चर्यजनक बात यह है कि स्वप्न में उसने कई ऐसे कीट-पतंगे देखे जो पहले उसने कभी न देखे थे।

इस स्वप्न ने उसके विचित्र व्यवसाय की नींव रखी। उसके पश्चात् उसका प्रिय कार्य-व्यापार कीटों को पालना और उनको नित्य नये करतब सिखाना बन गया और आखिर इस कार्य-व्यापार ने उसे उन लोगों की सूची में ला खड़ा किया जो संसार में विचित्र धन्धा अपनाकर न केवल लोगों को विस्मित-विमूढ़ कर देते हैं अपितु दोनों हाथों से धन भी समेटते हैं।

घुँघराले भूरे बालों, तीक्ष्ण और नीले नेत्रों वाला इकत्तीसवर्षीय यह व्यक्ति अमेरिका में रहता है। इसके सुन्दर सुते हुये चेहरे से यह महसूस होता है कि वह किसी गहन चिन्तन में खोया हुआ है।

उसे अपने आश्चर्य और संकटपूर्ण व्यवसाय से जनून की सीमा तक प्यार है। यदि आप उसकी दोनों भुजाओं को देखें तो जगह-जगह उन पर कीट-पतंगों के काटने के जख्म दिखाई देंगे। कुछ जख्म भर चुके हैं और कुछ अभी तक हरे हैं। उनके सधाए कीट और जंगली जानवर फिल्म के पर्दे पर और टेलीविजन पर महत्त्वपूर्ण रोल अभिनीत करते हैं।

विरोधाभास

'विरोधाभास' अलंकार जानते हैं न?— जैसे यह कहा जाये कि मुहम्मद तुगलक बहुत बुद्धिमान मूर्ख था।

लगता है, जाने-अनजाने में हमारे नेताओं को भी 'विरोधाभास' अलंकार प्रयोग करने की आदत है।

कुछ वर्ष पूर्व श्री गुलजारी लाल नन्दा (तब केन्द्रीय मन्त्री) ने एक भाषण में कहा, "स्वर्गीय नेहरूजी लचीलेपन में दृढ़ विश्वास रखते थे ..."

और उसके कुछ ही दिन बाद (तब भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री) श्री मोरारजी देसाई ने कहा, "छोटे और दरमियाने समाचारपत्रों को बहुत बड़ा जनसमूह पढ़ता है ..."

नेता और विरोधाभास अलंकार— यह भी एक विलक्षण विरोधाभास है।

नोट जो छपे बिना रह गया

कुछ साल पूर्व की बात है। बम्बई में चैम्बूर की एक गृहिणी ने जब अपने पति की तनख्वाह का लिफाफा खोला तो नोटों में एक रुपये का नोट ऐसा भी था जो एक तरफ से कोरा था। नोट पर वित्त विभाग के सचिव के हस्ताक्षर थे और वह एक रुपये के सौ नोटों की गड्डी के बीच में था। नोट उक्त गृहिणी का पति एक स्थानीय बैंक से लाया था।

मुद्रा-विशेषज्ञों का कहना है कि यह 'अत्यन्त असामान्य' घटना है। एक विशेषज्ञ के अनुसार केवल एक नोट कोरा नहीं रहा होगा। बल्कि कागज की एक पूरी पट्टी ही एक तरफ बिना-छपी रह गई होगी।

रिजर्व बैंक के एक अधिकारी ने कहा कि यह छपाई मशीन की खराबी के कारण रह गया हो सकता है। दुर्लभ-मुद्रा इकट्ठी करने वाले एक व्यक्ति ने कहा कि ऐसा मामला पहले कभी नहीं देखा गया था। यह तो एक अरब नोटों में एक नोट का हो सकता है।

अट्ठाइसवर्षीया श्रीमती लीला शेट्टी ने बताया कि इस नोट की मुझे अधिक क़ीमत मिल रही है, लेकिन मैं इसे यादगार के रूप में रखूँगी।

आत्मकथा क्यों नहीं लिखी

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार शरत् बाबू से प्रश्न किया, "शरत् , तुमने अपनी आत्म-कथा क्यों नहीं लिखी ?"

शरत् बाबू मुस्कराये, फिर सहज भाव से बोले, "गुरुदेव, यदि मुझे मालूम होता कि मैं एक दिन इतना प्रसिद्ध हो जाऊँगा कि तो कुछ और ही तरह का जीवन जीता।"

दो उल्लू

कवीन्द्र के एक भतीजे थे सोमेन्द्र बाबू। वह बड़े मेधावी थे; किन्तु नये विचारों और नई धाराओं में ऐसे बहे कि उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह कर लिया। एक दिन सोमेन्द्र अपने घर में एक बड़ा पिंजरा बनवाकर ले आए। स्त्री ने पूछा, "इसमें क्या पालियेगा ?" सोमेन्द्र बोले, "अभी विचार कर रहा हूँ।"

और एक रात्रि को उन्होंने एक बड़ा खूसट उल्लू लाकर उसमें बन्द कर दिया। बेचारी स्त्री घर में उसकी उपस्थिति और रात्रि में उसकी वीभत्स चीत्कार से भयभीत हो गई। वह एक दिन गुरुदेव के पास पहुँची और उनसे अपने पतिदेव के अद्भुत आदर्श की कथा सुनाई।

कुछ समय बाद एक दिन सहसा गुरुदेव सोमेन्द्र के घर पहुँचे। सीधे वहाँ चले गए जहाँ पिंजड़ा रखा था, और पक्षी के निकट जा बड़े नाटकीय ढंग से राइट-अबाउट-टन होकर बिना पीछे देखे फाटक तक पहुँच और फिर घूमकर बोले, "सोमेन्द्र ! इस घर में दो उल्लू नहीं रहेंगे। एक ही रहेगा, अच्छी तरह समझ लो।"

इतना कहकर वे चलते बने।

चूहे ने सांप को मारा

आस्ट्रेलिया के क्वीन्सलैण्ड राज्य स्थित हार्टलेज क्रीक चिड़ियाघर में 1965 में एक छोटे-से सफेद चूहे ने एक घातक जहर वाले विशाल सर्प पर हमला करके उसके प्राण ले लिये।

सांप अपने कटघरे में बन्द पड़ा ऊँघ रहा था कि अचानक ही एक सफेद चूहा कटघरे में रेंग कर जा पहुँचा और सांप की गर्दन पर चढ़कर उसे कई स्थानों पर कतर कर इस बुरी तरह जख्मी कर दिया कि सांप ने कुछ ही देर में प्राण त्याग दिए।

अभिनय और वास्तविकता

एक दरिद्र आवारा था जो इधर उधर चक्कर काटता फिरता था। उसने सिपाही के डंडे खांये, अनेक बार जेलयात्रा की, पत्थर तोड़े, भूमि पर सोया, केवल सूखी रोटी और पानी पर दिन गुजारे। एक दिन घूमता हुआ वह पुस्तकालय में जा पहुँचा जहाँ उसे 'राबिन्सन क्रूसो' पढ़ने को मिल गई। फिर क्या था, पुस्तकें पढ़ने की चाट लग गई। पन्द्रह-पन्द्रह घन्टे निरन्तर पुस्तकें पढ़ता रहा। फिर परिश्रम किया और तीन मास की कठोर पढ़ाई के बाद हाई स्कूल परीक्षा में सफलता प्राप्त की। केलिफोंनिया यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया।

वह अथक लेखक बन गया। 5000 शब्द प्रति दिन लिखने का वह अभ्यासी था। उसने 18 वर्ष लिखा। प्रति वर्ष उसकी तीन पुस्तकें तथा अनेक कहानियाँ छपती थीं। उसकी वार्षिक आय अमेरिका के राष्ट्रपति से दुगनी थी। उसका नाम था जैक लन्दन।

जीवन पलट गया

चिक्सेल अभिनेता था और नाटकों में हास्याभिनय बहुत सुन्दर किया करता था। साथ ही वह लेखक भी था। उसने जो पहली पुस्तक 'स्पेशलिस्ट' लिखी, उस पर उसे संसार का बहुत अधिक पारिश्रमिक मिला— लगभग पचास डालर प्रति शब्द। पुस्तक की जबरदस्त बिक्री हुई।

उसका एक सुन्दर युवती से प्रेम हो गया। लेकिन अजीब बात थी। जो आदमी सुन्दरतम अभिनय करता था, किसी भी प्रकार के संवाद बोल सकता था, अपनी प्रेमिका के सामने विवाह-प्रस्ताव नहीं रख सका। उसका गला रुंध गया और किसी तरह यह कहकर कि उसकी तबियत ठीक नहीं है वह भागकर अपने होटल लौट आया।

वहाँ पहुँचकर उसने प्रेमिका को फोन किया। युवती बहुत हँसी। विवाह प्रस्ताव आया, स्वीकार हुआ। फोन के माध्यम के द्वारा विवाह तय हो गया।

क्रिकेट सम्बन्धी कुछ पुराने रोचक तथ्य

सन् 1760 तक बल्ले का कोई रूप निश्चित नहीं था और जो जिस शक्ल का बल्ला चाहता था, बना लेता था।

1751 में क्रिकेट की गेंद लगने से फ्रेडरिक प्रिन्स ऑफ वेल्स की मृत्यु हो गयी थी।

10 मई 1760 को उल्टे हाथ से खेलने वालों के एक दल ने सीधे हाथ से खेलने वालों को 39 रनों से हरा दिया था।

1790 के करीब ड्यूक ऑफ क्लेरेन्स ने एक बल्ला बनवाया था। वह बल्ला वालनट का था और उस पर चांदी मढ़ी हुई थी। इसका मूल्य उस समय लगभग साढ़े सात सौ रुपये था। इससे उन्होंने बहुत से मैच खेले थे।

जब लैग गार्ड नहीं बने थे तो इंगलैण्ड का लौंग बॉब लकड़ी के तख्ते घुटनों से बांधकर क्रिकेट खेला करता था। इन तख्तों में जब-जब गेंद टकराती थी, फड़ाक की आवाज होती थी और हर बार दर्शक ठठाकर हँस पड़ते थे। लेकिन बॉब ने ये तख्ते बाँधना जारी रखा और इस तरह लैग गार्डों की नींव डाल दी। इसके बाद 1836 में एच० दो बेनी ने लैग गार्डों का आविष्कार किया।

सम्राज्ञी को द्वार नहीं खुला

सम्राज्ञी विक्टोरिया के पति एक बार अत्यधिक क्रुद्ध हो उठे और तिलमिलाते हुये अपने कमरे में जा बैठे। कमरा भीतर से बन्द कर लिया। विक्टोरिया भी बड़ी नाराज़ हुई। उसने बाहर से किवाड़ झंझोड़ डाले। एलबर्ट ने भीतर से पूछा— कौन?

'मैं हूँ सम्राज्ञी!' विक्टोरिया ने रौब से कहा।

एलबर्ट ने द्वार नहीं खोला, न ही कोई उत्तर दिया। विक्टोरिया अपमानित हो लौट गई। पर क्रोध शान्त न हुआ। दुबारा फिर किवाड़ खटखटाए; वही प्रश्न हुआ, वही उत्तर मिला; द्वार बन्द रहे। तीसरी बार पुनः यही नाटक हुआ। विक्टोरिया हार कर भी न हारी। चौथी बार किवाड़ खटखटाए जाने पर जब एलबर्ट ने पूछा— 'कौन?' तो धीरे से विक्टोरिया बोली— 'मैं हूँ, तुम्हारी पत्नी।' एलबर्ट ने किवाड़ खोल दिये।

गर्भवती होने पर विवाह

अफ्रीका के जंगलों में रहने वाले 'गुमानी' कबीले में पिता अपनी पुत्री को जिसे चाहे दे सकता है। जब लड़की युवा हो जाती है तो कोई भी व्यक्ति उससे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। सिर्फ लड़की के पिता को भेंट आदि से प्रसन्न करना आवश्यक होता है। भेंट आदि लेने के बाद पिता अपनी पुत्री को कुछ

दिनों के लिए उसके सुपुर्द कर देता है। नियत समय बीतने पर कोई दूसरा ग्राहक इस लड़की को उसी प्रकार ले जा सकता है; और यह सिलसिला वर्षों तक चलता रहता है।

इन लड़कियों की शादियाँ भी होती हैं, परन्तु उसी स्थिति में जब कि लड़की के गर्भ रह जाये। मगर यह जरूरी नहीं कि शादी पैदा होने वाले बच्चे के बाप से हो, वह तो केवल उस व्यक्ति से होगी जो लड़की के पिता को अधिक-से-अधिक भेंट देगा।

अनोखा शिकार

सन् 1819 में एक दिन एक ब्रिटिश अफसर शिकार की खोज में अजंता गांव के पास तक पहुँच गया, मगर इसका पता उसे न था कि वह किसी गाँव के पास है। पहाड़ियों में मारा-मारा घूमता रहा, किन्तु शिकार न पा सका। अचानक उसे एक लड़के की कर्कश-सी आवाज़ सुनाई पड़ी। शिकारी कैप्टेन ने अपने क़दम तेज किये और आवाज़ तक पहुँच गया। लड़के ने जो एक यूरोपियन साहब को देखा, तो चीते के मिलने का स्थान बताकर, पैसा पाने के लालच में उसने थोड़ी दूर चलकर सामने के पेड़ों के झुरमुट के बीच से एक स्थान की ओर संकेत किया और बोला 'साहब, वह देखो!' साहब ने उंगली के इशारे की दिशा में जो कुछ देखा, वह चीता नहीं था, बल्कि घनी हरीतिमा के अन्तराल में बैंगनी पत्थरों के खम्भों के बीच, सुनहरे लाल रंग में कुछ ऐसी चीज़ थी, जिसने कप्तान साहब को उत्साह से उछाल दिया। यह जानकर कि वे एक ऐसी चीज का पता दुनिया को देने जा रहे हैं, जो वास्तुकला की दृष्टि से निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है, उन्होंने तुरन्त गाँव से लोगों को कुल्हाड़ी और भाले तथा ढोल और टॉर्च आदि लेकर आने के लिये बुला भेजा। और इस प्रकार सदियों से भूले अजन्ता के गुफा-मन्दिरों तक पहुँचने का रास्ता साफ हो सका, जिससे कला-जगत बौद्ध-कला की इन महान् उपलब्धियों से परिचित हो सका।

मनुष्य की खोपड़ी में मदिरा

लॉर्ड बायरन लंगड़ा कर चलता था क्योंकि उसका एक पैर टेढ़ा मुड़ा हुआ था। वह तमाखू का बहुत प्रयोग करता था और अपनी उंगलियों के नाखून चबाया करता था। उसका मिज़ाज बहुत तेज था। लोग उसकी ओर घूरकर देख लेते थे तो उसे क्रोध चढ़ आता था।

फिर भी न जाने क्यों युवतियाँ उसे बहुत प्यार करती थीं। दर्जनों नारियों से उसका प्रेम-सम्बन्ध था। यहाँ तक कि अपनी सौतेली बहन से भी उसके सम्बन्ध थे जिसके कारण वह पूरे यूरोप में बदनाम था। लेकिन इससे उसके प्रेम जीवन में कोई अन्तर नहीं आया बल्कि उसकी और अधिक पूजा-अर्चना होने लगी। जब बायरन की पत्नी ने उसे त्याग दिया तो कई रमणियों ने उसे धिक्कारा और कवि के पास प्रेम-पत्र,

कविताएँ और बालों के गुच्छे भेजे। एक बड़े घर की धनाढ्य तिलोत्तमा नें युवक का वेश धारण कर घन्टों मूसलाधार वर्षा में बायरन की प्रतीक्षा उसकी गली में की। दूसरी उर्वशी ने उसका इंगलैण्ड से इटली तक पीछा किया। और अन्त में बड़ी प्रेम-तपस्या के बाद कृतकृत्य हुई।

उसके प्रासाद में जितने नौकर थे सब सुन्दर प्रसन्नवदना युवतियाँ थीं। उसके मित्रगण उसके साथ संन्यासियों का वेश धारण कर अनेक प्रकार के आनन्द मनाते थे, काम-किलोल करते थे। वे अप्सरा-सम नौकरानियाँ मदिरा उड़ेलती थीं और बायरन अपने मित्रों के साथ उसे मानव खोपड़ियों में ढाल ढाल कर पीता था। ये खोपड़ियाँ विशेष रूप से तैयार की गई थीं और पॉलिश के कारण चमाचम चमकती थीं।

दूल्हे का नाच

सुमात्रा द्वीप में एक बड़ा ही मज़ेदार रिवाज है। शादी के तुरन्त बाद दूल्हे को अपनी दुल्हन के सामने नाचना पड़ता है। दुल्हन उस पर चावल फेंकती जाती है। चावल फेंकने का मतलब यह समझा जाता है कि दुल्हन बहुत से बच्चों की माँ बनेगी।

प्रेरणा के स्रोत

इतालवी संगीत-वादक लोगू चरबानी हमेशा सुबह दो हजार क़दम चलता था। लौटने पर नाक में सींक डाल कर छींकता था और तब शान्ति से धुनें बनाने लगता था।

बिठोवन को संगीत-रचना में जब अटक लगती तो वह नल की टोंटी के नीचे सिर करके बैठ जाता था।

अद्भुत सत्कार

नेहरू और निराला एक दूसरे से खूब परिचित थे। एक बार नेहरूजी बहुत दिनों बाद इलाहाबाद आये। निरालाजी को खबर लगी तो हाथ से बनाकर एक प्याला चाय लिये ढाई मील चलते पहुँचे।

आनन्द भवन में दरबान ने भीतर जाने से रोका। निरालाजी बिगड़े। नेहरूजी निकलकर आये। देखते ही गले मिले और प्याले की वह ठण्डी चाय बड़े चाव से गुटक गये।

कंघे द्वारा प्रणय-प्रस्ताव

भारत की कई आदिम जातियों में विवाह से पूर्व युवक-युवतियों को एक दूसरे को समझने-परखने का मौका दिय़ा जाता है, ताकि उनका वैवाहिक जीवन सुखपूर्वक

बीत सके। विवाह से पूर्व युवकों और युवतियों के बेरोक-टोक मिलने के लिये प्रणय-गृह बने होते हैं। इन प्रणय-गृहें में कुमार और कुमारियाँ रात बिताते हैं और प्रेम के नाटक खेलते हैं।

मध्य प्रदेश के बस्तर जिले की गोंड जाति में प्रणय-गृहों को 'घोटुल' कहते हैं। अंधेरा होते ही गोंड युवक-युवतियों की हँसी और किलकारियों से घोटुल गूंज उठते हैं। नाच-गाने की महफिल गर्म हो उठती है। शराब के दौर चलने लगते हैं। घोटुल में हर युवती को कबीले के हर युवक के सम्पर्क में आने का अवसर मिलता है। इन लोगों में यौन सम्बन्धों पर कोई विशेष रोक-टोक नहीं। यही कारण है कि प्रायः सभी गोंड युवक-युवतियाँ विवाह से पूर्व ही घोटुलों में शारीरिक सम्पर्क स्थापित कर चुके होते हैं।

जब कोई युवक किसी युवती को पसन्द कर लेता है तो उसे महुए की लकड़ी का बना कंघा भेंट में देता है। युवक़ द्वारा युवती को कंघा देना प्रणय-निवेदन माना जाता है। यदि लड़की भी उस लड़के को पसन्द कर लेती है तो वह कंघे के बदले तम्बाकू देती है। तम्बाकू देने का मतलब है कि उसे उसका प्रणय-प्रस्ताव स्वीकार है।

यदि कोई युवती एक से अधिक युवकों को पसन्द करती है तो वह सबके कंघे स्वीकार कर लेती है। ऐसी स्थिति में पंचायत उसके लिये वर चुनती है। एक से अधिक कंघे पाने वाली युवती उनके समाज में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है। विवाह के बाद लड़की को अपने पति द्वारा भेंट किये गये कंघे के सिवा अन्य युवकों के कंघे वापस देने पड़ते हैं, अन्यथा उसे व्यभिचारिणी समझा जाता है।

पुरुषत्व की परीक्षा

नाइजीरिया के पूर्वी प्रदेश की विवाह-योग्य लड़कियाँ अपने पड़ोस की महिलाओं के सहयोग से इस बात की परीक्षा लेती हैं कि उनसे विवाह करने का इच्छुक 'लड़के' से 'पुरुष' बन गया है कि नहीं। इस बात को परखने का उनका तरीक़ा भी बड़ा अनोखा है। जिस लड़के की परख की जाती है, वह अपने सिर पर किसी जानवर का सींग रखकर खड़ा हो जाता है। लड़की की तरफ की औरतें उसके नंगे बदन पर कोड़े मारती हैं। कोड़े लगते हैं और वह लड़का मुसकराता रहता है। उसके सिर का सींग भी नीचे नहीं गिरता। हर पिटाई के बाद कुंआरी लड़कियों का एक झुण्ड उसकी तरफ बढ़ता है और वे उसकी सहनशीलता की प्रशंसा करती हैं। तीन बार पिटाई के बाद पुरुषों का एक झुण्ड उसकी ओर बढ़ कर उसके माथे का अच्छी तरह निरीक्षण करता है। अगर उसके माथे पर पसीने की एक बूँद भी हुई, तो वह इस परीक्षा में असफल समझ लिया जाता है।

चोटियाँ कौमार्य की सूचक

मलेनेशिया के फिजी द्वीप की लड़कियाँ दो तरफ बाल सँवारती हैं और वे चोटियाँ कानों के पीछे लटकाती हैं। ये चोटियाँ ही उनके कौमार्य की सूचक होती

हैं। शादी के दिन ही वे बाल काटे जाते हैं। दूल्हे के घर की औरतें लड़की को एकान्त स्थान में ले जाकर उसके सतीत्व की परीक्षा करती हैं। अगर उन्हें मालूम पड़ जाये कि लड़की उन चोटियों की अधिकारिणी नहीं है तो विवाह-भोज पर उसके माँ-बाप को लांछित करती हैं। खूब हो-हल्ला मचता है। क्रोध दिखाने के लिये मरे हुये सुअर के शरीर में चाकू भोंके जाते हैं। जितने घाव होते हैं, उतने ही उस लड़की ने सम्बन्ध किये हैं, ऐसा समझा जाता है।

खोपड़ी और पौधे

चीन में तिङ चेङ नाम का एक दरवेश रहता था। 1850 में उसने अपनी खोपड़ी में ताड़ के दो पौधे उगाये थे।

भविष्यवाणी

बाइजेंस का सम्राट् एंड्रीनिकस्ट (1125-1195) था। उसके लिये भविष्यवाणी की गई थी कि 'एस' से नाम शुरु होने वाला व्यक्ति उसका घातक होगा। इस पर उसने 'एस' से शुरु होने वाले नामों के 22,000 व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया।

पतंग से किला फतह

1662 में, मुगल सिपहसालार शायस्ताखाँ ने पूना जिले में चाकन के दुर्ग का घेरा डाला। यह किला 1000 फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित था, और इस पर पहुँचना बिल्कुल नामुमकिन समझा जाता था। शायस्ताखाँ को बताया गया कि उसका घिराव पागलपन है। लेकिन उसके दिमाग में कोई और तरकीब थी। वह बड़ा मशहूर पतंगबाज था। किले के बारूद के भण्डार का पता लगाकर उसने एक पतंग उड़ाई जिसकी पूँछ में जलती तीली लगी थी। पतंग ने अपना निशाना पा लिया और बारूद का ढेर भक् से उड़ गया। किला भी उड़ गया, पत्थर, ईंट, आदमी के अंग कबूतरों के समान आकाश में फैल गये। जो आदमी बचे थे उन्होंने हथियार टेक दिये।

बधाई

बधाई है वीर आयशा को— इस अठारह साल की युवती ने अकेले ही एक खूँख्वार जंगली भालू को मार डाला।

अक्टूबर 1967 में पहलगाम के पास आयशा मक्का के खेत में काम कर रही थी कि तभी एक भालू उस पर टूट पड़ा। अचानक हुए इस आक्रमण से एकबारगी तो वह भौंचक्की रह गई, लेकिन उसने साहस नहीं खोया। वह कुल्हाड़ी लेकर उस भालू से जूझ पड़ी और लगी वार पर वार करने। आधे घंटे तक संघर्ष करने के बाद बहादुर आयशा से उस भालू को धराशायी कर दिया।

छोटे पैरों का फरमान

चीन में कम्युनिस्ट होने के बाद परिवर्तन आया है। पहले चीन में रिवाज था कि लड़कियों के पैर बचपन से ही लोहे के जूतों में बन्द कर दिये जाते थे और चीनी स्त्रियाँ छोटे छोटे पैरों की लुढ़कती गुड़ियाएँ दिखाई देती थीं। आज से 3072 वर्ष पूर्व चीन की रानी ताकी थी जिसके पैर छोटे थे। उसने ही यह फरमान निकालकर 3000 वर्ष तक अपने देश की नारियों के पैर छोटे बना दिये थे।

वीरों का नगर

भारत में एक कस्बा उला था। उस पर डाकुओं का आक्रमण हुआ जिसका उसके निवासियों ने वीरता से मुकाबला किया और डाकुओं को मार भगाया। फिर कम्पनी के आदमी आये तो इस घटना का बड़ी नम्रता से जिक्र कर दिया। इस पर प्रसन्न होकर कलकत्ता कोर्ट ऑफ अपील्स ने इस नगर का नाम वीरनगर बदलने का आदेश दे दिया।

विषकन्या

केथरीन वायजन नाम की एक फ्रेंच विषकन्या थी जिसे 8500 व्यक्तियों को विष देने के अपराध में सन् 1680 ईसवी में प्राणदण्ड मिला।

हीरे पहनने वाली प्रथम स्त्री

क्या आपको पता है कि संसार में सर्वप्रथम किस स्त्री ने हीरे पहने थे? प्राचीनतम ज्ञात स्त्री 100 वर्ष ईसा पूर्व की ग्रीक देवी की मूर्ति है जिसकी आँखों में हीरे जड़े हैं।

भूत लेखक

मार्को पोलो वेनिस का बहुत प्रसिद्ध यात्री था जिसने तेरहवीं शताब्दी में चीन की यात्रा की थी। वह अपने पिता और चाचा के साथ यात्रा पर निकला था। चीन में वह चंगेज़खाँ के पोते कुबलई खाँ का प्रियपात्र बन गया। उसने बड़ी दूर-दूर यात्राएँ कीं।

'मार्को पोलो की यात्राएँ' पुस्तक उसने स्वयं नहीं लिखी थी। इसे पीसा के रस्टीसिआनो ने लिखा था जिसे 1298 में जनोआ की जेल में मार्को पोलो ने अपने अनुभव सुनाये थे। इस जेल में दोनों साथ बन्द थे।

दुरंगी

बलूचिस्तान में एक लड़की यदि दो रंग की पोशाक पहनती है तो यह इस बात का सूचक होता है कि वह वर की तलाश में है।

अद्‌भुत स्मरणशक्ति

गांधी जी ने जब दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह छेड़ा था तब वहाँ के प्रधान मंत्री जनरल स्मट्स थे। वे विलक्षण व्यक्ति थे और बहुत वीर थे। उनके पुस्तकालय में पाँच हजार पुस्तकें थीं और उनकी प्रत्येक पंक्ति उन्हें जबानी याद थी।

चोर का स्मारक

सन् 1498 की बात है। जोर्गेन लैंगौस ने ल्यूबक में सैंट मेरी की चर्च का ग़रीबों का बक्सा तोड़कर उसके अन्दर पड़ी पेनी चुरा लीं। कुछ दिनों बाद वह धनवान हो गया और बीस वर्ष बाद एक बार फिर वह रात के अंधेरे में चर्च में घुसा और उस बक्से में उसने चुराई हर पेनी के बदले एक सोने का सिक्का डाल दिया।

सवेरे बक्सा खोलने पर वह खजाना मिला। साथ में चोर द्वारा दस्तखत किया एक पत्र जिसमें अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी गई थी। नगराधिकारियों ने कई सालों तक उसकी खोज कराई जिससे उसे बताया जा सके कि उसको माफी मिल गई है। आखिर असफल रहने पर उन्होंने माफी के रूप में चोर की प्रतिमा बक्से के सामने स्थापित करा दी।

अजीब तकिया

अलसेशियन रेजिमेन्ट के एक कर्नल के बालपुत्र प्रिंस लुडविग के लिये एक तकिया तैयार किया गया था जिसमें 100 सिपाहियों की मूँछें भरी थीं।

हाथी ने राज्य दिया

450 ईसवी में कनारा में शातकर्णी वंश कोई वंशज न रहने के कारण समाप्त हो गया। प्रजा की समझ में नहीं आ रहा था कि किसे राजा बनाया जाय। आखिर उन्होंने इस बात का भार राजा के हाथी पर सौंप दिया। उसकी सूंड में एक फूलों की माला पकड़ा दी गई— जिसके गले में वह माला डाल दे वह राजा बना दिया जायगा। हाथी ने माला एक ग़रीब गडरिये जयन्ती के गले में डाल दी जो कृष्णवर्मा कदम्ब के नाम से राजगद्दी पर बैठा। उसने कदम्ब कुल चलाया जिसने 600 वर्ष तक कनारा पर राज्य किया।

राज्य-लिप्सा

श्रीलंका की रानी अनुला स्वयं राजा के अधिकार से राज्य करना चाहती थी। इस कारण उसने लगातार 6 राजाओं से शादी की और प्रत्येक को विष देकर मार डाला। फिर वह स्वयं 47 ईसा पूर्व में गद्दी पर बैठी लेकिन पाँच वर्ष के शासन के बाद कूटकण्ण तिस्स ने उसे हराकर गद्दी से उतार दिया।

अटूट मैत्री या ?

1700 ईसवी में बहराइच का राजा अलावल खाँ अपने पड़ौसी गोंडा के राजा दत्तसिंह से एक अटूट मैत्री की सन्धि कायम करने के लिये मिला। सन्धि पर हस्ताक्षर होने से पहले दोनों गले मिले। तभी अलावल खाँ ने जो पूरा देव का देव था भीषण गलती कर डाली। उसने दत्तसिंह को ज़मीन से अधर उठा लिया। दत्तसिंह ने तत्क्षण सन्धि रद्द करके युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध 157 वर्ष तक चलता रहा और अलावल खाँ तथा उसके साथी नौ राजाओं का नाश हो गया।

भिखारी की दुआ

सूरत के अब्दुल जफ्फार ने जीवन एक निर्धन स्कूल अध्यापक के रूप में आरम्भ किया था। तभी उसे एक अजनबी दुआ मिली। उसने एक भिखारी से मित्रता की जो 1688 में मर गया और उसके लिये 19 नारियल के खोल और 85 अनार के दाने छोड़ गया। साथ में भिखारी ने इच्छा प्रकट की कि काश! ये 19 जहाज और 85 लाख रुपये होते। अब्दुल धीरे धीरे अमीर हो गया और उसके पास 19 जहाज और 85 लाख रुपया हो गया। जीवन भर वह अपनी सम्पत्ति को एक जहाज या धन से बढ़ाने में लगा रहा पर सब निष्फल रहा। जैसे ही वह एक नया जहाज खरीदता था, पुराना कोई जल जाता था, टूट जाता था या डूब जाता था। जब अब्दुल मरा तब उसने अपने पीछे 19 जहाज और 85 लाख रुपये छोड़े।

खाली बैठने का भुगतान

जौनपुर के गवर्नर मुनीम खाँ ने 1560 में एक नाचने वाली खमकी को मुजरे के लिये बुलाया। वह दरबार में पहुँची पर मुनीम खाँ 7 मिनट 12 सेकिण्ड लेट पहुँचे। उसको इन्तज़ार करने के समय का मुआवजा देने के लिये मुनीम खाँ ने हर 24 सेकिण्ड का (जो उस समय हिन्दुस्तानी समय का एक सूचक था) एक गाँव दिया। इस प्रकार उसे खाली बैठने के 18 गाँव मिले।

रोमानोव हीरा

ज़ार पीटर तृतीय (1728-1762) को ज़ारीना एलिजाबेथ ने एक हीरा भेंट किया था। उस हीरे को पाने के बाद वह गद्दी से उतार दिया गया और कत्ल कर दिया गया। उसके पुत्र पॉल प्रथम ने वह हीरा एक बार पहना। उसकी भी हत्या कर दी गई। इसके ८० वर्ष उपरान्त अलेक्ज़ैण्डर द्वितीय ने वह हीरा खोज निकाला। वह बम से उड़ा दिया गया। उसके पौत्र निकोलस द्वितीय ने उस हीरे को पहना और बोल्शेविकों ने उसे मार डाला। कोई नहीं जानता कि आज यह मनहूस हीरा किसके पास है।

'हिमश्वेत' मन्दिर

जहानाबाद का यह मन्दिर वहाँ के राजा बलाई ने अपने धोबी को देने वाली भेंट के रूप में बनाया था।

अद्भुत आँखें

पूर्वी साम्राज्य के सम्राट अनस्टेसियस प्रथम (431-518) की एक आँख काली थी और दूसरी आँख नीली। लेकिन जब वह क्रोध में भर कर किसी को घूरता था, तो आँखें आपस में रंग पलट लेती थीं।

गिरजे का वरदान

लन्दन का प्रसिद्ध सेंट पॉल का गिरजाघर 1675 ईसवी में बनना आरम्भ हुआ और 1710 में बनकर पूरा हुआ। इस पूरे पैंतीस साल के समय में उसी शिल्पी ने इसे पूरा किया जिसने इसका नक्शा बनाया था, एक ही आर्कबिशप इसका अध्यक्ष रहा और राज मज़दूरों की पूरी टीम भी वैसी की वैसी बनी रही, यहाँ तक कि उन 35 वर्षों में कोई मरा भी नहीं।

सोने-चाँदी का भवन

बर्मा में राजा दमथावका ने 1091 ईसवी में पॉक नगर में 50 फीट ऊंचा शिव-मुक्ता पैगोडा बनवाया था जिसमें सोने और चाँदी की ईंटें लगी थीं। किन्तु केवल चार वर्ष उपरान्त नरपदी-सीथु नाम के आक्रमणकारी ने इस पैगोडा की सोने और चाँदी की ईंटे लूटकर उसके स्थान पर सादा पैगोडा बनवा दिया था।

पानी का धत्ती

श्रीलंका का राजा पराक्रम बाहु प्रथम (1153-1186) जब गद्दी पर बैठा तब उसने प्रण किया था कि मेरे राज्य में पानी की हर बूंद सिंचाई के काम में ली जायगी। इसके लिये उसने 1477 नकली झीलें बनवाई, 1859 प्राकृतिक झीलों को बड़ा किया और 600 नहरें निकालीं। उसके बनवाये सिंचाई के साधन आज 770 वर्ष बाद भी उसके देश को लाभ पहुँचा रहे हैं।

बदला लेने वाला फांसी का तख्ता

बुट्टायागुदेम नाम के एक निर्दोष ग्राम मजिस्ट्रेट को फांसी पर लटकाने के लिये पोलावरम, दक्षिणी भारत, में कोम्मी रेड्डी नाम के डाकू पर 1858 में मुकदमा चलाया गया। जब उसे दोषी पाया गया और फांसी का हुक्म सुनाया गया, तभी बाढ़ में बढ़ी नदी पास के नगर से एक फांसी का तख्ता बहा लाई जिस पर कोम्मी रेड्डी ने मजिस्ट्रेट को लटकाया था। वह उसी फांसी पर चढ़ा दिया गया जिस पर उसने अपने शिकार को चढ़ाया था।

अद्‌भुत स्मृति

फ्रांसिस्को सुआरेज़ (1548-1617) ने जो स्पेन में पादरी था सेन्ट आगस्टाइन का सारा लेखन याद कर रखा था। सेन्ट आगस्टाइन का लिखा साहित्य 80 लाख शब्द थे जो 14 भागों में आते थे। 18,011 पृष्ठों में से भाग का, पृष्ठ का और रेखा का नम्बर बताने पर वह उस रेखा को फटाफट सुना देता था।

परिश्रमी लेखिका

चार्लोट एम. ब्रेम एक अंग्रेज़ी लेखिका थी जो केवल 48 वर्ष जीवित रही, फिर भी उसने पूरे साइज़ के 200 उपन्यास लिखे।

महंगी छींक

मदुरा के राजा तिरुमल नायक्कन (1623-1659) को बड़ी जालिम ठण्ड लग गई और लगातार छींकें आने लगीं। जब जुकाम ठीक नहीं हुआ तो उसने प्रण किया कि जितने दिन उसे छींक आती रहेंगी, उतने मन्दिर वह अपने राज्य में बनवायगा। उसकी छींकों को तीन मास बीत गये। आखिर 96 दिन में जाकर वह ठीक हुआ। 1626 में एक शुभ मुहूर्त पर उसने एक साथ 96 मन्दिरों को बनाना आरम्भ किया।

सुपुत्र

पेरिस के रहने वाले लुई ल क्रेज़ (1799-1869) की माँ बहुत बीमार हो गई। उसकी भली भाँति देखभाल करने के लिये लुई ने 66 वर्ष की अवस्था में डाक्टरी पढ़नी आरम्भ की! कुछ साल बाद वह डाक्टर बन गया, लेकिन अफसोस! कुछ माह बाद ही चल बसा।

एक दिन में बनाई नहर

चौदहवीं शताब्दी में चीन ने बर्मा पर आक्रमण किया। परन्तु आक्रमक सेना को हराकर बन्दी बना लिया गया। बर्मा की थिंडवे नहर जो 21 फीट गहरी, 21 फीट चौड़ी और 12 मील लम्बी है, हारे हुए 90,000 चीनियों की इस सेना ने 11 घंटे में बना दी क्योंकि उन्हें चेतावनी दी गई थी कि जब तक नहर पूरी नहीं होगी, उन्हें खाना नहीं मिलेगा। यह नहर आज 660 वर्ष बाद भी बर्मा के काम आ रही है।

तोप से तन्खा:

रायद्रुग का शासक बोम्मला अपनी सेना को तोपखाने से तन्खाः देता था। हर दसवें दिन किले की प्राचीर पर रखी तोप के मुंह में सिक्कों के थैले भरकर 600 फीट दूर परेड के मैदान में जहाँ सेना एकत्रित होती थी छुटाये जाते थे।

घूमती इमारत

महाराजगंज में स्थित भैरों का स्मारक पहले अयोध्या में स्थित था जो उससे 80 मील दूर है। इसे सन् 1522 ईसवी में 1000 व्यक्तियों तथा 1 हाथी ने चला कर वर्तमान नगर में जमा दिया।

घंटों ने बचाया

सन् 610 ईसवी में राजा क्लोतेयर द्वितीय ने फ्रांस के सैन्स नगर का घेरा डाला। धीरे धीरे स्थिति गम्भीर होती गई और नगर का पतन अवश्यम्भावी हो गया। अन्तिम समय की प्रार्थना के लिये नारियों और बच्चों को बुलाने के लिये बिशप लुपु ने सेन्ट स्टीफन के गिरजाघर के घण्टों को ज़ोर ज़ोर से बजाने का आदेश दिया। फ्रांस में आरम्भ में केवल इसी गिरजे में घण्टे लगे थे। घण्टों की ध्वनि से घेरा डालने वाले घबरा उठे और भयभीत हो घेरा उठाकर भाग निकले। यह गिरजा आज भी स्थित है।

कीड़े की भिनभिनाहट

सन् 1549 ईसवी में बीजापुर और अहमदनगर में युद्ध चल रहा था। बीजापुर की सेना का सिपहसालार इब्राहीम शिविर डाले था। उसे तभी पता लगा था कि अहमदनगर की फौज चालिस मील दूर है और वह उससे लड़ने के नक्शे बना रहा था। सहसा उसे एक भिनभिनाहट सुनाई दी जो कोई साधारण मच्छर कर रहा था। इब्राहीम ने उसे दुश्मनों की तुरही की आवाज़ समझा और अपने को तैयार न समझने के कारण फौज समेत रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया। अहमदनगर की फौज उस जगह तीन दिन बाद पहुँची।

तेज़ी

हंगरी का कवि सैन्डोर पेटीफी दोनों हाथों से एक समय में ही लिख सकता था और उसके दोनों हाथों की लिखावट बिल्कुल एकसी थी।

बौना दानव

डेविड रिशी (1740-1811) जिसे सर वाल्टर स्कॉट ने "काला बौना" के रूप में अमर कर दिया, केवल साढ़े तीन फीट लम्बा था। वह आधा बौना था और आधा दानव। उसने कभी जूते नहीं पहने। उसके पैर तिरछे-बंके थे और वह बड़ी मुश्किल से चल पाता था। फिर भी वह इतना शक्तिशाली था कि एक तारकोल के पीपे के ढक्कन को या मजबूत से मज़बूत दरवाज़े को सिर मार कर तोड़ डालता था और केवल अपने हाथों से एक बड़े पेड़ को जड़ से उखाड़ फेंकता था।

दुखी रानी

हंगरी की रानी बीट्रिक्स अपने युग की सबसे सुन्दर स्त्री कही जाती थी। फिर भी दो बार उसकी शादी हुई और दोनों बार उसके पतियों ने दूसरी नज़र देखने पर उसे छोड़ दिया। तीसरा पति पोलेण्ड का प्रिंस लेडीस्ला था जिससे कहा गया था कि विवाह के उपरान्त उसे हंगरी की गद्दी मिल जायेगी। उसने शादी कर ली, सिंहासन पर बैठा और हंगरी पर 26 साल तक शासन किया (1690–1516)। लेकिन सिंहासन पर बैठते ही उसने तुरन्त शादी तोड़ने का आदेश दिया।

जहरीली दाँत-कुरेदनी

फारस का शाह मलिक शाह एक जहरीली दाँत-कुरेदनी से मार डाला गया था।

शाही ख़रीद

इंगलैण्ड का राजा जॉर्ज तृतीय बहुत दिनों से एक नया महल बनवाना चाहता था, लेकिन पार्लियामैन्ट उसे इस चीज़ के लिये पैसे देगी भी इसका उसे भय था। इसलिये उसने 1761 में एक पुराना निजी भवन सवा पाँच लाख रुपये में ख़रीद लिया और उसमें कुछ तबदीली करने के लिये पार्लियामैन्ट से पैसे माँगे। पार्लियामैन्ट इस बात के लिये तैयार हो गई और राजा ने जो आज बकिंघम पैलेस कहलाता है, उसे ठीक कराने में एक करोड़ पच्चीस लाख रुपये लगा दिये। इतने रुपये में दो नये महल बनाये जा सकते थे।

अन्धा वैज्ञानिक

स्विट्जरलैण्ड का लियोनार्ड यूलर (1707-1783) गणित के अर्वाचीन विज्ञान का जनक समझा जाता है। वह बहुत ही तेजस्वी और प्रतिभाशाली था। उसने गणित और भौतिक शास्त्र में सबसे अधिक कार्य अपने जीवन के अन्तिम 17 सालों में किया जब उसकी दोनों आँखों की रोशनी चली गई थी।

क़ीमती ज्वालामुखी

इण्डोनेशिया में ल्यूज़र ज्वालामुखी अपने पेट में हीरे भरे हुये है। जब वह फटता है तो लावा में क़ीमती पत्थर भी निकलते हैं।

अद्भुत प्रतिभा

प्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक अगस्ते कॉम्ते (1798–1857) ने अपनी 6 खण्डों की पुस्तक "ए कोर्स इन पॉज़िटिव फिलॉसफी" जिसमें 4712 पृष्ठ और 7 लाख शब्द हैं अपने मस्तिष्क में तैयार की थी। उसने जब तक यह पूरी की पूरी पुस्तक मस्तिष्क में

तैयार नहीं हो गई काग़ज़ पर एक शब्द भी नहीं लिखा। फिर बाद में बिना किसी नोट या स्मृति-सहायक के उसने बारह साल तक (1830-1842) उसे मस्तिष्क से काग़ज़ पर शब्द-प्रतिशब्द उतार कर रख दिया।

भाग्यवती स्याहीदानी

दमगढ़ के छोटे गाँव का एक गरीब किसान टिकायतराय अपना खेत जोत रहा था जब उसके हल से एक पुरानी स्याहीदानी ज़मीन से निकल आयी। वह उसे लेकर अवध की राजधानी जा पहुँचा जहाँ उसे अवर्णनीय इनाम मिला। अवध के नवाब आसफुद्दौला ने उसे अपनी रियासत का प्रधानमंत्री बना दिया। वह 1791 से 1796 तक इस ऊँचे पद पर रहा। स्याहीदानी अवध के प्रधान मन्त्रियों का चिह्न थी और उसका पाया जाना नवाब ने शुभसूचना समझा।

इतिहास का सबसे प्रसिद्ध छिप्पू यात्री

वास्को न्यूनेज द बलबोआ (1475-1517) सैन्टो डोमिन्गो देश का एक कर्ज़ से दबा हुआ किसान था। एक बार उसके खेत से भोजन एक जहाज़ पर लादा जा रहा था जो खोज और विजय के लिये बाहरी दुनिया को जा रहा था। कृषक के जीवन से घबराकर बलबोआ भोजन के एक पीपे में छिपकर जहाज़ में बैठ गया। नयी दुनिया के एक विजेता के रूप में वह बहुत प्रसिद्ध हुआ और प्रशान्त महासागर को खोजने वाले के रूप में अमर हो गया।

पोलो का शौकीन

लोदी वंश का सुल्तान सिकन्दर लोदी जिसने भारतवर्ष पर 1488 से 1517 तक राज्य किया पोलो का बहुत शौकीन था। एक बार लगातार चार साल तक उसने प्रतिदिन आठ घंटे के हिसाब से पोलो खेली।

भाग्यवान् भूकम्प

फ्रांस का रहने वाला लुई गाल्दी जैमेका के पोर्ट रॉयल का वासी बन गया था। 1692 के बड़े भूकम्प का जब पहला झटका लगा तो जमीन फट गयी और वह उसमें समा गया। तभी दूसरा झटका आया जिसने उसे जमीन से बाहर समुद्र में फेंक दिया। समुद्र के ठंडी पानी से उसको होश आया और वह तैरकर ज़मीन पर लौट आया। इस घटना के ४७ साल बाद तक वह जिन्दा रहा।

तीन दवाइयाँ

आइल ऑफ मैन द्वीप में किसी स्त्री को उसका प्रेमी धोखा देदे तो वहाँ शताब्दियों से एक रिवाज़ चला आता है जिसमें उस स्त्री को एक रस्सी, एक कुल्हाड़ी

और एक अंगूठी दी जाती है। या तो वह आदमी पछतावा दिखाये और उस स्त्री से शादी करले या वह स्त्री उसे क़ानूनन रस्सी से गला घोट कर या कुल्हाड़ी से काटकर मार सकती है।

विचित्र गुण-परीक्षा

सन् 1416 ईसवी में सुकेत राज्य (क्षेत्रफल 350 वर्गमील, जनसंख्या 60,000) की प्रजा अपने राजा के विरुद्ध उठ खड़ी हुई और राजा को गद्दी से उतार दिया। उन्होंने गुणों की परीक्षा द्वारा नया राजा चुनने का निश्चय किया, किन्तु यह गुण-परीक्षा संसार की विचित्रतम थी। एक महान् हिन्दू ऐतिहासिक नाटक का महल के बाग में सार्वजनिक प्रदर्शन रखा गया और भारत के सारे प्रसिद्ध हिन्दू अभिनेताओं को उसमें भाग लेने के लिये बुलाया गया। जिस अभिनेता का सबसे अच्छा अभिनय होगा, वह नया राजा मान लिया जायगा। विजेता मियाँ मदन था। वह मदनसैन के नाम से राजसिंहासन पर बैठा और 26 वर्ष तक उसने राज्य किया। उसके वंशज 1947 तक राज्य करते रहे।

नौत्रे देम का गिरजाघर

फ्रांस के मान्ते का नौत्रे देम का गिरजाघर विलियम द कॉन्करर ने सन् 1087 ईसवी में जला दिया था। विलियम का घोड़ा जलती ढिबरियों पर ठोकर खाकर गिर पड़ा और उसके बहुत सख़्त चोटें आईं। राजा ने अपने एक नौकर को धन देकर हिदायत दी कि वह गिरजाघर को दुबारा बनवा दे।

गिरजाघर दुबारा 1187 में पूरे सौ साल बाद बना जब उस नौकर के वंशज को विलियम का भूत सपने में अपने को डराता धमकाता दिखाई दिया।

अन्धविश्वासी हीरो

फ्रांस का फील्ड मार्शल निकोल-आगस्ते द मान्त्रेवेल (1646-1716) सौ युद्धों का यशस्वी हीरो था। उसे अलसास का गवर्नर बनाया गया और वहाँ जाने से पहले वह ड्यूक द बीरों के महल में 11 अक्टूबर, 1716 को खाना खा रहा था। सहसा किसी मेहमान से नमकदानी उलट गई। इससे उस अन्धविश्वासी वीर को इतना सदमा पहुँचा कि तत्क्षण मर गया।

तिरछी मीनार

ईरान में सेमनन में स्थित मिनार एक ओर को झुकी हुई बनाई गई थी क्योंकि जिस मुसलमान की स्मृति में वह बनाई गई थी वह कुबड़ा था।

अद्‌भुत तीर

बड़ौदा के एक सरदार श्री आबासाहब मजूमदार के देव-गृह में एक तीर है। इसकी लम्बाई एक इंच और घेरा डेढ़ इंच है। इसकी एक नोक पर चने की दाल के बराबर का एक धब्बा है। यह धब्बा चन्द्रकला की भाँति कम-अधिक होता है, इसलिये इसने 'चन्द्रशेखर' बाण कहते हैं।

जिस समय ज़ोर की बरसात होती है, उस समय इसका रंग एकदम काला रहता है। बनारस में तो इसका रंग बारहों महीने काला ही रहता है। इसका रंग कब बदलेगा, इसका कोई अन्दाज़ नहीं; कभी-कभी दो-तीन महीने तक रंग नहीं बदलता और कभी-कभी हाथ के हाथ में वर्णान्तर हो जाता है।

भारतीय तथा विदेशी शास्त्रज्ञों ने यह तीर देखा है। लन्दन म्यूजियम के क्यूरेटर ने भी इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है। किसी विद्वान् ने इसके रंग-परिवर्तन के सम्बन्ध में अभी तक स्पष्टीकरण नहीं किया— शायद कर नहीं सके।

अखण्ड ज्योति-पुंज

रूस में कैस्पियन समुद्र के किनारे बाकू नाम का एक गाँव है। इस गाँव में पारसियों का एक देवालय है। इस देवालय में ज़मीन से अनेक ज्योतियाँ निकलती हैं। ये ज्योतियाँ हजारों वर्षों से इसी तरह प्रज्वलित हैं, वे बिना लकड़ियों के जलती रहती हैं। जिस-जिस स्थान से ज्वालाएँ निकलती रहती हैं, उन-उन स्थानों पर अग्नि-कुण्ड बनाये गये हैं। उनमें भी ज्वालाएँ एक-सी निकलती रहती हैं। हजारों लोग भारत के ज्वालामुखी तीर्थ की तरह इनको देखने जाते हैं।

चल अचल

उत्तर इटली के मोदेना नाम के शहर के समीप स्थित एक प्रचण्ड पर्वत सरक रहा है। इसके कारण तलहटी में रहने वाले लोगों के प्राण मुट्ठी में आ गये हैं। उसे रोकने का कोई उपाय नहीं दीख रहा है। यह पर्वत जबसे सरकने लगा तब से कितने ही घर जमींदोज हो गये और कुछ मकान कुछ ही इंचों से बच गये।

तैरता पत्थर

नागपुर में नये गीता-मन्दिर के पास बने मठ में एक साधु रहता है। उसके पास एक चट्टान का भाग है। उसकी लम्बाई दो फीट और चौड़ाई साधारणतः एक-डेढ़ फीट है। इस पत्थर की विशेषता यह है कि यह पानी में फेंकने पर काठ की तरह तैरने लगता है। यह दीखने में सछिद्र है और इसका वज़न लगभग तीन सेर (दो-सौ चालीस तोले) है। यह चमत्कार देखने के लिये नागपुर के हजारों स्त्री-पुरुष प्रति दिन जाते हैं। इस सम्बन्ध में जन-प्रवाद है कि यह चट्टान का अवशेष राम के सेतु का ही होगा।

दर्शनीया देवी-मूर्ति

नागपुर से दस मील पर कोटली नामक एक स्थान है। वहाँ देवी का एक मन्दिर है। उस देवी की मूर्ति की विशेषता यह है कि प्रातः उसका मुख-मंडल बालिका जैसा कोमल दीखता है, दोपहर को युवती की तरह तेज-पुंज दिखाई देता है, और शाम को वृद्धा की भांति झुर्रियों वाला चेहरा दीखता है। चैत्र-पूर्णिमा को यहाँ बड़ा मेला लगता है।

चिर-निर्झर

आबू-पर्वत से लगभग दो मील दूर पर एक गोमुख बना है जिससे चौबीसों घण्टे पानी का अखण्ड प्रवाह बहता है। इसके उद्गम का अभी तक पता नहीं चला है। जहाँ से पानी गिरता है वहाँ संगमरमरी पत्थर का गोमुख बनाया गया है। यह पानी एक हौज़ में गिरता है। प्रतिदिन शाम को हौज़ का पानी खाली कर दिया जाता है, क्योंकि हौज़ लबालब भर जाता है।

इसी प्रकार औरंगाबाद में भी एक पीर की समाधि पर एक उद्भिद झरना या स्रोत है, जिसका कारण पता नहीं चलता। कहा जाता है कि पीर साहब के हुक्म से यह जलधारा पृथ्वी से फूट निकली थी।

कुदरती बल्ब

हमारे यहाँ बरसात में जुगनू चमकते हुए दिखाई देते हैं। उनका प्रकाश अधिक तेज नहीं होता है। लेकिन दक्षिण अमेरिका में एक जुगनू की जाति है, जिसका प्रकाश बहुत तेज़ होता है। तीन-चार जुगनू एक जगह जमा कर दिये जायें तो उनके प्रकाश में आसानी से पुस्तक पढ़ी जा सकती है।

भेद की बात

रोमांचकारी जासूसी कहानियों के लेखक सर आर्थर कानन डॉयल ने एक बार अपने ऐसे बारह दोस्तों के पास तार भेजे जो शराफत और नेकी के लिए अपने अपने शहर में मशहूर थे। तार के शब्द थे: 'भेद खुल गया है, फौरन रफूचक्कर हो जाओ।' 24 घण्टे के अन्दर-अन्दर बारहों आदमी भाग खड़े हुए।

प्राचीन ज्योतिष

पिरैमिड में खास तौर से देखने की चीज़ है वह वैज्ञानिक ज्ञान जिसे उस ज़माने के मानवों ने प्राप्त कर लिया था।

पिरैमिड को इस तरह बनाया गया है कि प्रत्येक नये वर्ष के उषा-काल में जब लुब्धक तारा कर्क वृत्त को पार करता है और जब नये वर्ष के सूर्य की पहली किरण

उदय होती है तो वह पिरैमिड के बीचों-बीच बने राज-कक्ष के एक झरोखे से फूटकर सीधी मृत राजा के मुख पर पड़ती है।

मिश्रियों ने पिरैमिड बनाने के हज़ार साल पहले से ही वर्ष के दिन इसी आधार पर निश्चित कर लिये थे कि लुब्धक तारे का प्रत्येक उषाकालीन उदय 365 दिन बाद होता है।

नक़ल

हिन्द-चीन के फ्रेंच कमाण्डर स्व० जीन द लागे दा तासीनी नैपोलियन की युद्ध-कला के क़ायल थे। एक बार जब उनके सिपाहियों में निराशा की भावना विद्यमान थी, उन्होंने सिपाहियों को जाग्रत करने के उद्देश्य से नैपोलियन की तरह एक सिपाही के कान उमेठ दिये।

इस घटना के कुछ दिन बाद कमाण्डर ने फिर उसी सिपाही को देखा, पूछा— "क्या हम और तुम पहले कहीं मिले हैं?"

"शायद, वाटरलू की लड़ाई में मिले थे, सर," सिपाही ने उत्तर दिया।

क़ीमत कब और किसके लिये बढ़ती है?

डेनमार्क के प्रसिद्ध कवि जेन शेड एक बार एक पुस्तक-विक्रेता की दूकान पर अपनी ही लिखी पुस्तक की एक प्रति देख रहे थे। देखते-देखते पुस्तक-विक्रेता की आँख बचाकर कवि ने उस प्रति पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। इसके बाद, वे उसे लेकर पुस्तक-विक्रेता के पास गये और पूछा— "इसका मूल्य क्या है?"

"दस क्राउन, मूल्य पुस्तक पर लिखा भी है।"

"पर इस पर तो कवि ने अपने हस्ताक्षर कर रखे हैं। ऐसी प्रति का मूल्य तो अधिक होना चाहिये।"

"ओह! क्षमा करें। किसी मूर्ख ने इस प्रति को खराब कर दिया है। मैं दूसरी नई प्रति ला देता हूँ।"

क्षुद्र चोरी!

सर जॉन ए. मैक्डोनल्ड जब कॅनाडा के प्रधान-मन्त्री थे, तब एक बार विरोधी-दल के एक सदस्य ने अपने भाषण में कहा— "प्रधान मन्त्री ने कई बार हम लोगों के विचारों की चोरी की है।"

सर जॉन ने तुरन्त उठकर स्पीकर से कहा— "मिस्टर स्पीकर, माननीय सदस्य ने मुझ पर बहुत ही क्षुद्र वस्तु की चोरी का अभियोग लगाया है।"

तोतों का रोग मनुष्यों तक

एक बार एक विशेषज्ञ चिकित्सक किसी रुग्ण अंग्रेज़ महिला को देखने गया। अपने प्रायः सभी चिकित्सा-यन्त्रों का प्रयोग करने पर भी वह बीमारी का पता न लगा सका। उसके सामने एक जटिल समस्या उपस्थित थी। वह महिला चेतनाहीन सी पड़ी थी, किन्तु कुछ प्रश्नों का उत्तर दे पाती थी। चिकित्सक इस अर्ध-जाग्रत दशा का कारण खोजने में लीन था। इसी बीच उस परिवार की एक आठवर्षीया बालिका ने बताया कि मेरी मौसी की हालत उस तोते की बीमारी से मिलती-जुलती है, जो अभी हाल ही में इसी घर में मरा है।

परिवार के अन्य सदस्यों से पूछताछ की तो पता चला कि यही महिला तोते को स्नान कराती और खाना आदि दिया करती थी। उस समय महिला की दशा उस तोते की ही भाँति थी। जो कुछ खाती, क़ै कर देती और खाँसा करती।

चिकित्सक के एक मित्र ने भी उक्त घटना के चार मास बाद ऐसी ही बात बताई। एक महिला चिकित्सक ने एक पालतू तोता खरीदा। वह जब कभी किसी रोगी को देखने जाती तो उस तोते को अपने कंधे पर बैठा कर ले जाती। कुछ ही दिनों बाद वह तोता बीमार पड़ गया। पशु-पक्षी-चिकित्सक ने बताया कि इसकी बीमारी का प्रभाव किसी मनुष्य के स्वास्थ्य पर नहीं पड़ सकता। वह तोता मर गया और शीघ्र ही उस महिला चिकित्सक को भी फेफड़े की बीमारी हुई। उसे किसी प्रकार से बचाया न जा सका। यही नहीं इस तोते की बीमारी का प्रभाव उस नौकरानी पर भी पड़ा जो उसकी शुश्रूषा किया करती थी और वह भी मर गई।

तोतों की बीमारी मनुष्यों को भी हो सकती है, इसका एक और उदाहरण मिला है। बरमिंघम के एक प्रख्यात राजनीतिज्ञ को भी इसी प्रकार की बीमारी हुई। इस केस को विशेष महत्त्व दिया गया। छानबीन के बाद यह ज्ञात हुआ कि अभी हाल ही में विदेशों से आये हुए तोतों के कारण ही यह बीमारी फैल रही है। इस प्रश्न पर ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में भी गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ और अन्त में अब यह निर्णय किया गया है कि इस प्रकार के तोतों के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय।

आदिम जातियाँ

हैदराबाद के चेंचू लोग गरमी के दिनों में पेड़ों तले रहते हैं और जाड़े आते ही गुफाओं में बसेरा खोज लेते हैं। ठीक जैसे बहुत से चौपाये करते हैं। दक्षिण भारत की 'एनदी' जाति बाँस और पत्तों की उन भौंडी झोंपड़ियों, यदि यह नाम उन्हें दिया जा सके, में आसरा लेती हैं जिनमें घुटनों के बल सरक कर ही प्रवेश किया जा सकता है।

कपड़ा

अण्डमान की 'जरावा' जाति के लोग आज भी निरंग नंगे रहते हैं। कोई कोई ही नहीं, सभी। छोटे-बड़े, पुरुष-स्त्री निरपवाद रूप से सभी। छोटा-नागपुर के 'खारिया' लोग भी इसी तरह रहते हैं।

उड़ीसा की 'जुआंग' जाति के स्त्री-पुरुष इन लोगों की बनिस्बत बहुत 'आधुनिक' हैं। वे अपनी देह का निचला भाग बड़े कायदे से पत्तों द्वारा ढकते हैं। और जितना ही प्रकृति के वे कृतज्ञ हैं उतना ही प्रकृति भी उनके प्रति उदार है। तरह तरह की और दिन में कई कई बार ये लोग अपनी यह 'अति आधुनिक ड्रेस' बदला करते हैं; और इसमें उन्हें कभी कोई बाधा या कठिनाई नहीं आती। सच यह है कि पत्ते तो पत्ते है। थोड़ी ही देर में मसल जाते हैं या मुरझा कर झरने लगते हैं; और अंगों को ढका रखने के लिए उन्हें जल्दी-जल्दी बदलना होता है।

भोजन

अण्डमानी जातियों में अनेक बस्तियाँ हैं जो कच्चा ही मांस खाती हैं। आग जलाना और मांस पकाना उनके लिए अजानी और अबूझ बातें हैं। कोचीन के 'कदारों' में तो घर के मुरदे को भी बेकार नष्ट करना ठीक नहीं समझा जाता। गीदड़-गिद्ध दुर्गति करें उससे स्वयं उपयोग कर लेना अच्छा।

हैदराबाद राज्य के 'चेंचू', दक्षिण के 'इरुल्ला' और छोटा नागपुर के 'खारिया' लोग निरे मांस पर ही नहीं रहते। वे वन के कन्द, मूल, फल भी खाते हैं। केवल वे ही चीज़ें जिन्हें पाने के लिए उन्हें स्वयं कुछ न करना पड़े।

असम राज्य की कुछ नागा जातियाँ हैं जो बन्दर खूब चाव से खाती हैं; और जहरीले से जहरीले सांप तो उनके नित का ही आहार होते हैं। सिर काटा और उनका भोजन हो गया वह। चूहा, छिपकली, चींटे-चीटियाँ तथा अन्य कीड़े-मकौड़े और घोंघे आदि तो अनेक आदिम जातियों में आम तौर से खाये जाते हैं।

पाषाण युग का अवशेष

नीलगिरि के 'लोटा' लोग किसी सूखी चीज़ में घासपात भर कर लकड़ी की मथानी से उसे मथते हैं और यो रगड़ द्वारा आग उत्पन्न करते हैं। आपको इनके 'पिछड़ेपन' पर आश्चर्य होगा, पर इनकी भाई-बिरादर जातियाँ तो इनकी 'सभ्यता' पर ठगे-से रह जाते हैं।

विवाह

चेंचू, एनदी और जंगली गोंडों में किसी भी प्रकार की विवाह प्रथा ही नहीं है। कोई स्त्री किसी पुरुष के साथ रहने लगे; बस विवाह हो गया।

नागा जाति में जहाँ पिता की सम्पत्ति पर उत्तराधिकार पुत्र को मिलता है वहाँ सगी माँ को छोड़ सब विमाताएँ भी, सम्पत्ति का अंग होने से, पत्नी के रूप में उसे मिलती हैं। अपहरण की प्रथा भी इन नागाओं में चलती है। एक गाँव जब दूसरे पर हमला करता है तो माल के साथ स्त्रियाँ भी लूटी जाती हैं और फिर उन्हें भी सहज भाव से बाँट लिया जाता है।

हो, मुण्डा और खारिया जातियों में बहू का मोल चुकाना इतना कठिन पड़ता है कि आम तौर से लड़का लड़की आपस में ही बात तय कर लेते हैं, और जब लड़की को लिये हुए लड़का घर आता है तो माँ-बाप उसे अपहरण-विवाह मानकर स्वीकृति दे देते हैं। मुण्डा जाति में लड़के द्वारा चुनी हुई लड़की को माँ-बाप यदि पसन्द न करें तो लड़की को अधिकार होता है कि वह घर में घुस आये, रहने लगे और सेवा-टहल से उन्हें खुश करे। इसे अनादर-विवाह माना जाता है।

स्वयंवर प्रथा

भील 'गोल-गधेड़ो' नाम का एक उत्सव करते हैं। होली का दिन होता है, ताड़ के पेड़ पर गुड़ और नारियल की एक पोटली बाँध देते हैं और लड़कियाँ गोल घेरा बाँध कर लड़कों को पेड़ के पास आने से रोकती हैं। झाड़ू की मार की परवाह न करके, घेरा तोड़कर जो हिम्मत वाला लड़का पेड़ पर से वह पोटली उतार लाता है उसे घेरे की लड़कियों में से किसी को भी पत्नी के रूप में चुनने का अधिकार होता है।

आदिम खेती

उड़ीसा के 'खोंड' अपने खेतों को नर-रक्त से सींचते है। उनका विश्वास है कि इससे फसल खूब भरी पूरी होगी। नागा लोग भिन्न जातिवालों के सिर काटकर उनकी मुण्डमाल इसलिए पहनते और अपने द्वार पर लटकाते हैं कि उससे देवता प्रसन्न होगा, फसल खूब होगी, और ढोर कम मरेंगे। नागा लोग हल चलाकर खेती नहीं करते। उसकी जगह वे धरती की ऊपरी मिट्टी हटाकर सड़े पत्ते बिछा देते हैं और फिर बीज छींट दिया जाता है। खाद का काम वे जंगली पेड़ जलाकर उसकी राख से लेते हैं। कुछ जातियाँ अपने पुरखों से चली आयी रीतियाँ महज इस भय से नहीं बदलतीं कि उनका कुल-देवता रूठ जायगा।

मध्य-प्रदेश की बैगा जाति हल ही नहीं चलाती, कि उससे धरती माँ को कष्ट होगा। छोटा-नागपुर की ओराँव जाति में स्त्रियाँ यदि हल को छू भर लें तो सारी बस्ती दुर्भिक्ष और महामारी की आशंका से काँप उठती है।

विपत्ति का निराकरण

भीलों में मान्यता है कि विपत्ति चुड़ैलों के कारण आती है। इसलिए कभी कोई विपत्ति आते ही चुड़ैल की तलाश होती है और आम तौर से जब बस्ती की

किसी बाँझ औरत को ही चुड़ैल मानकर पेड़ से उलटा लटका दिया जाता है और नीचे मिर्च की धूनी जला दी जाती है। कभी कभी तो पत्थरों से मार मार कर उसकी जान ले ली जाती है।

विचित्र वसीयतें

शादी हुई नहीं कि बीमा एजेण्ट गिद्ध की तरह चक्कर काटने लगते हैं। "अब आप बीमा पालिसी ले लीजिये क्योंकि जीवन में जम गये हैं।"

जम गये हैं या उखड़ गये हैं? जीवन का भरोसा जाता रहा है, इसलिये बीमा कराने की ज़रूरत है? खैर दोनों प्रकार से ही बीमा कराना आवश्यक है। इनमें आपस में कोई मतभेद नहीं है। मेरी एक छोटी सलाह और है। वह यह कि अपनी पालिसी लेते समय आप उसमें दुर्घटना का रिस्क और शामिल करा लें।

दूसरी बात जिस पर मैं ज्यादा ज़ोर दूंगा, वह यह है कि जैसे आप शादी के बाद बीमा कराते हैं, उसी रिस्क को ध्यान में रखकर अपनी वसीयत भी लिखकर रख लें। क्या फायदा कि आपके जाने के बाद पीछे रहने वालों को किसी तरह की तकलीफ उठानी पड़े। अक्लमंद आदमी वही है जो आगे पीछे का इन्तज़ाम रखे। यह न हो कि भवितव्यता उसे ऊंघता पकड़ ले।

अगला सवाल यह है कि वसीयत क्या लिखी जाय। इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। हर केस के अपने गुण होते हैं और उन्हीं के अनुसार वसीयत तैयार करनी पड़ती है। ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि कुछ मुख्य निर्देशों पर टिप्पणी दे दी जाय।

एक प्रमुख वसीयत है जो तीन चार समस्याओं को एक साथ हल करती है। "मेरे मरने के बाद मेरी दुकान मेरे लड़के को मिले जो अब तक समझता रहा है कि उसमें रुपये के गुच्छे लगते हैं, मेरे सारे कपड़े मेरे नौकर को मिलें जो उन्हें चोरी छिपे पहनकर फाड़ता रहा है, मेरी मोटर मेरे ड्राइवर को मिले जो उसके पुरजे निकालकर बेचता रहा है और शेष सब कुछ पत्नी को मिले जो शेष सब कुछ के ऊपर मुझ से लड़ती रही है।"

यह आदमी मसखरी करता है, लेकिन आप गम्भीर हैं।

एक आदमी अपनी पत्नी से परेशान था क्योंकि वह बर्थ कन्ट्रोल की हामी थी और वह नहीं। उसके मरने पर जब उसकी वसीयत खोली गई तब एक लिफाफा निकला— मेरी मृत्यु के 6 सप्ताह बाद। 6 सप्ताह बाद नया लिफाफा निकला— जिसमें लिखा था— 6 मास बाद खोलिये। इस प्रकार अन्तिम लिफाफा उसकी मृत्यु के पांच वर्ष बाद खुला जिसके अनुसार उसकी सम्पत्ति उस वारिस को मिलती थी जिसके सबसे अधिक बच्चे हों।

अन्य दुखी पति ने अपनी पत्नी के लिये वसीयत में केवल ढाई रुपया छोड़ा था— एक रुपया यह याद दिलाने के लिये कि वह उसे मोटा सूअर कहती थी, एक रुपया उसके झापड़ खाने के लिये और आठ आने अपने दमे के मर्ज की मज़ाक उड़ाने के लिये। दूसरे दब्बू पति ने भी अपना बदला वसीयत में लिया। उसने पत्नी के नाम केवल एक रुपया छोड़ा जिससे वह फांसी लगाने के लिये रस्सी मोल ले सके।

एक पति ने अपनी सुन्दर पत्नी की बेवफाई का बदला मरते समय लिया। वह अपनी सारी सम्पत्ति उसके नाम कर गया लेकिन यदि वह किसी पुरुष से बातें करेगी तो 1000 रुपये, यदि किसी की ओर देखकर मुस्करायगी तो 250 रुपये, और यदि आलिंगन, चुम्बन आदि करायगी तो 10,000 रुपये हर बार उसके ज़ब्त होते रहेंगे। दूसरा व्यक्ति अपनी पुत्री से परेशान था। उसने लिखा कि मेरी पुत्री को अपना हिस्सा तब मिलेगा जब वह चोली-कट ब्लाउज़ पहनना और क्लबों में घूमना छोड़ देगी।

अपने पुत्र से तंग आया बाप लिखकर मरा कि मेरी सम्पत्ति मेरे पुत्र को तब मिले जब वह एक साल तक प्रतिदिन किसी नये आदमी से मेरी तारीफ करे। दूसरे नाराज़ पिता ने अपनी पूजा करने की शर्त लगा दी थी।

इसी प्रकार सम्बन्धियों से परेशान एक व्यक्ति ने अपनी वसीयत में एक कुत्ता मोल लेकर उन्हें भेंट करने को लिखा, साथ में यह भेंट-कार्ड जाना था कि सम्पत्ति के लालच में आप ठीक तरह से पूँछ भी न हिला सके। इसे सिखाने के लिये आपको कुत्ता भेंट किया जाता है।

एक व्यक्ति का कोई उत्तराधिकारी नहीं था। मरते समय उसने दो मुहर-बन्द पत्र छोड़े। एक पत्र अन्त्येष्टि-क्रिया के बाद उसके वकील द्वारा और दूसरा उसके शव को श्मशान ले जाने वालों के द्वारा खोले जाने की हिदायत थी। दूसरे पत्र के अनुसार उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया सुबह चार बजे सम्पन्न हुई। उस ठण्डे प्रदेश में सुबह चार बजे का समय बड़ा कष्टप्रद था। उसके केवल चार मित्रों ने उसके शव को श्मशान तक ले जाने का साहस किया, परन्तु उन चारों को अपने कष्टों का समुचित पुरस्कार भी मिल गया। जब दूसरा पत्र खोला गया तो सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसमें यह वसीयत की गयी थी— "मैं चार लाख डॉलर छोड़े जा रहा हूँ। जो लोग मेरी अन्तयेष्टि-क्रिया में सम्मिलित हुए हों, उनमें ये चार लाख डॉलर बराबर-बराबर बाँट दिये जाएँ।"

एक विनोदप्रिय अमेरिकन ने अपनी वसीयत में अपने पुत्रों को लिखा था— "मेरी मृत्यु के बाद मेरी अल्मारी में तुम्हें लकड़ी का एक मुहरबन्द सन्दूक मिलेगा। उस सन्दूक को कोठी के पीछे लॉन में ले जाना और मेरे वकील की उपस्थिति में बिना खोले जला देना।" लड़कों ने यह समझकर कि उसमें उनके निजी पत्र होंगे, बड़े भक्ति-भाव से सन्दूक को आग पर रख दिया। सन्दूक के जलने पर जब उन्होंने नाना प्रकार के आतिशबाजी के खेल देखे तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

एक धनी अमेरिकन सिगार पीने का बेहद शौक़ीन था, परन्तु उसकी पत्नी ने उसके इस शौक पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। अपने विवाहित जीवन की लम्बी अवधि में बेचारा पति सिगारों के लिए तरस तरस कर रह गया। अपने अन्तिम समय में वसीयतनामा तैयार करते हुए उस संतप्त पति को अपनी पत्नी से उसकी निष्ठुरता का बदला लेने का अवसर मिल गया। अपनी साठ लाख रुपये की जायदाद उसने पत्नी के नाम की तो अवश्य, परन्तु साथ ही यह शर्त भी रख दी, कि वह पाँच सिगार प्रतिदिन पिये; यदि किसी भी दिन अपने जीते-जी वह सिगार न पिये तो सारी सम्पत्ति उससे लेकर दान कर दी जाये। यह घटना सन् 1952 की है। तब से वह सिगारों से घृणा करने वाली स्त्री प्रति दिन पाँच सिगार पी रही है।

अमेरिका के एक लखपति किसान ने अपनी पत्नी के नाम अपनी सबसे पुरानी और फटी हुई पतलून की वसीयत की थी।

एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के नाम सिर्फ एक पेनी छोड़ी थी और यह भी लिख दिया कि उसे बैरंग लिफाफे में रखकर भेजा जाए।

एक नौजवान अमेरिकन ने अपनी वसीयत में लिखा कि मेरा सब धन मेरी मृत्यु के दस वर्ष बाद मेरी पत्नी को मिले।

कुछ व्यक्ति सनकी भी होते हैं, जो अपनी वसीयत में अपने सनकीपन का परिचय दे जाते हैं।

एक सनकी ने अपनी वसीयत में लिखा— "मेरा सब धन, मेरी सब जायदाद और मेरे सब मकान सार्वजनिक संस्थाओं को दे दिये जायँ किन्तु यदि मेरी क़ब्र पर पीली घास उगे तो यह सब मेरे परिवार वालों को मिले।"

एक अन्य सनकी ने अपनी साढ़े चार लाख रुपये की लकड़ियाँ अपने पुत्र के नाम वसीयत में छोड़ीं परन्तु शर्त यह रखी कि वह स्वयं उन्हें ढोकर बेचे।

एक सनकी महिला ने वसीयत में लिखा— "मेरा सब धन उन महिलाओं को मिले, जो अगले दस वर्षों में सब से अधिक बच्चे पैदा करे।"

वसीयत को पाने के लिए तीन महिलाओं में होड़ लग गयी। दस वर्ष में उन तीनों के नौ-नौ बच्चे हुए, इसलिए कुल धन को तीनों में बराबर-बराबर बाँट दिया गया।

स्विट्ज़रलैण्ड के एक शराबी ने आज से बीस वर्ष पूर्व मरते समय जो वसीयतनामा लिखा उसके अनुसार 100 पौंड प्रति वर्ष उन लोगों में बाँट दिया जाता है, जो शराब के बिना रह नहीं सकते।

यूगोस्लाविया के एक शराबी ने मरते समय वसीयत की। उस वसीयत के अनुसार, जिसे लगभग 100 वर्ष हो चुके हैं, हर साल उसकी कब्र को शराब से धोया

जाता है। कब्र के पास शहर के शराबियों को दावत दी जाती है, और उन्हें जी भर मुफ्त शराब पिलाई जाती है।

लन्दन के प्रख्यात शराबी मि० फाकिन्स के वसीयतनामे का हाल भी सुनिए। हर साल मि० फाकिन्स के जन्मदिन पर उनके घर का द्वार शराबियों के लिए खोल दिया जाता है। जो शराबी जैसी शराब चाहे, उसे वहाँ मिल जाती है।

एक महानुभाव की वसीयत के अनुसार उनकी दोनों लड़कियों को उनके भार के अनुपात में रुपया मिलना था। फलस्वरूप एक लड़की को दूसरी से पचहत्तर हज़ार रुपये अधिक मिले।

एक व्यक्ति की वसीयत के अनुसार उसका सब रुपया उन व्यक्तियों को मिलना है, जो सबसे पहले किसी दूसरे नक्षत्र में पहुँचे। यह रुपया अब तक किसी को नहीं मिला है और न्यूयार्क के एक बैंक में जमा है।

ये वसीयतें सदा काग़ज़ पर ही नहीं लिखी जाती थीं। अण्डों के छिलकों, सीढ़ियों के डण्डों, दियासलाई की तीलियों, वृक्षों की छालों और टोपी के फीतों पर लिखे वसीयतनामे भी मिले हैं। एक व्यक्ति ने अपनी वसीयत रसोईघर के किवाड़ों पर ही लिख डाली। अदालत में वसीयत की वैधता सिद्ध करने के लिए वह किवाड़ ले जाया गया था।

ऐसे ही एक क़ैदी ने अपनी वसीयत जेलखाने की दीवार पर लिखी थी। फलस्वरूप सबूत के लिए सारी दीवार को ही उखाड़कर न्यायालय में लाना पड़ा था।

बर्फ पर स्केटिंग करता हुआ कोई सालिसीटर नीचे गिर पड़ा। संकट के इन क्षणों में उसने बड़ी धीरता के साथ चाकू की नोक से बर्फ़ पर अपनी वसीयत घसीट डाली, लेकिन यह वसीयत इसलिए अवैध घोषित कर दी गई क्योंकि इसका कोई साक्षी नहीं था।

संसार में सबसे अधिक विचित्र लिखी गई वसीयत एक नाविक की पीठ पर खोदी गई थी और हस्ताक्षर उसकी जांघ पर किये गये थे। यह वसीयत क़ानून की दृष्टि में सर्वथा वैध समझी गई।

एक व्यापारी ने अपनी वसीयत केवल लिखकर ही संतोष नहीं किया, बल्कि उसका बोलता रिकार्ड और चलचित्र बनवाकर सुन और देख भी लिया। इस वसीयत में उसने अपने उत्तराधिकारियों के गुण-दोषों पर भी प्रकाश डाला था।

दुनिया की सबसे लम्बी वसीयत एक स्काटलैण्ड-निवासी ने लिखी, जो लगभग 4,800 पन्नों की थी। यह अब भी वहाँ के अजायबघर की शोभा बढ़ा रही है।

दूसरी लम्बी वसीयत एक महिला की थी जिसे उसने 94,000 शब्दों में लिखी थी और जिसके लिखने में उसने तीस वर्ष लगाये थे। यह महिला इस भारी दस्तावेज़

को सदा अपने सिरहाने के नीचे रखती थी। उसके मित्र समझते थे कि वह कोई अमूल्य ग्रंथ लिख रही है। इस वसीयत में महिला ने दस लाख पौंड के बँटवारे का विस्तृत ब्यौरा दिया था। लेकिन दुर्भाग्यवश मृत्यु के समय महिला के पास केवल 20583 पौंड ही निकले। इस घोटाले को साफ़ करने में अदालत के कई वर्ष लगे थे।

और सबसे छोटी वसीयत एक नाविक की थी जो उसने अण्डे के छिलके पर इन शब्दों में घसीट दी थी— "मेरा सब कुछ मेरी पत्नी को!"

कहते हैं कि ब्रिटेन के सोमरसेट हाउस में पाँच करोड़ से भी अधिक वसीयतें संभाल कर रखी हुई हैं जिनमें कोई किवाड़ों पर लिखी हुई है तो कोई अटलांटिक महासागर में डूबते नाविक द्वारा किसी तख्ते पर।

बड़ी से बड़ी मुसीबत में न घबराने वाला

नई दिल्ली स्थित प्रधान मन्त्री नेहरू के निवास-स्थान की लिफ्ट एक दिन आधे रास्ते में खराब हो गई। लिफ्ट के अन्दर इन्दिरा गांधी थीं। काफी देर की भागदौड़ के बाद लिफ्ट ठीक हुई और इन्दिरा जी बाहर निकल पाईं। शाम को इन्दिरा ने यह किस्सा नेहरू जी को सुनाया। सारा किस्सा सुनने के बाद नेहरू जी ने कहा, "मैंने कई बार सोचा है कि इस सम्बन्ध में हमें कुछ करना अवश्य चाहिए— हाँ, क्यों न पुस्तकों की एक छोटी-सी शैल्फ लिफ्ट के अन्दर रखवा दी जाए!"

चार वर्षों से सोया सौन्दर्य

13 वर्ष की लड़की मेरिया एलेना टैलो ने 22 नवम्बर 1963 को राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या का समाचार सुनकर निरन्तर रोना शुरू किया। तत्क्षण ही वह रोते रोते सो गई। और उसके बाद से आज तक नहीं जागी है। सान जुआन प्रदेश के डाक्टरों ने उसका भली भाँति से परीक्षण-निरीक्षण किया किन्तु वे उसकी नींद का निदान न कर सके।

चार वर्ष बार वह 17 वर्ष की युवती ब्यूनस आयर्स लाई गई। अर्जेन्टाइना के प्रमुख मस्तिष्क-सर्जन उसका परीक्षण कर रहे हैं।

दजूक और लजकती हड्डियाँ

विलियम ला वारी का नीचे लिखा किस्सा कितना अद्‌भुत, रोचक और अविश्वसनीय लगता है, किन्तु है सत्य।

मैं एक अविश्वासी आदमी हूँ। यह बात मैंने इसलिए कही कि मैं एक विलक्षण बात बताने जा रहा हूँ, जो मैंने दक्षिण अमेरिका में डच गायना में देखी थी, जब मैं गहरे जंगलों में जा पहुँचा था। इन जंगलों में ऐसे काले और भयंकर

आदिवासी रहते हैं जो अब भी स्वतन्त्र हैं और किसी का प्रभुत्व नहीं मानते। इनकी जनसंख्या 30,000 के लगभग है। ये 'दजूक' जाति के लोग हैं। इनके कुछ पूर्वजों को गुलामों का व्यापार करने वालों ने डचों के हाथ बेच दिया था लेकिन वे उन्हें गुलाम बनाकर नहीं रख सके। उनके भयानक आक्रमणों से घबरा कर डच लोगों ने उनके लिए पचास मील का जंगली हिस्सा छोड़ दिया, जहाँ वह आज तक विद्यमान हैं। इन लोगों का अपना एक राजा और अपने ही अजीब रीतिरिवाज हैं। कोई भी दूसरी जाति का मनुष्य बिना उनके राजा की आज्ञा प्राप्त किए उनके जंगलों में नहीं जा सकता।

पार-पत्र के रूप में मुझे एक खुदा हुआ डांड दे दिया गया था। यही राजा का अनुमति-पत्र था जिसे दिखाकर मैं नदी के ऊपर की ओर जा सकता था। एक दिन तीसरे पहर मैं 'देवताओं की नगरी' नामक गांव में पहुँचा। उस गांव का मुखिया दजूक जाति में सबसे बड़ा वैद्य था। वह आग के सामने एक स्टूल पर बैठा हुआ था। आग पर एक विशाल मटका रखा था। उसमें कोई तरल पदार्थ उबल रहा था। मुखिया एक लम्बी लकड़ी से उसे चलाता रहता था। वह लकड़ी भी अजीब थी। उस पर सांप तथा दूसरे विचित्र जन्तुओं के चित्र खुदे हुए थे। मैंने मटके में उबलती हुई औषधि के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की तो वह बोला नहीं, बस हल्के से अपना सिर हिला दिया। मैंने फिर पूछा कि यह किस लिए तैयार की जा रही है? वह फिर भी नहीं बोला। हाँ, उसने इधर उधर देखा और दूर एक झोंपड़ी के सामने बैठे एक बूढ़े को बुलाया। मुखिया का कुछ संकेत पाकर वह एक छोटी-सी कुटी में गया और बड़ी ही विचित्र वस्तु को लेकर बाहर आया। यह विचित्र वस्तु और कुछ नहीं, दजूक जाति का एक दुबला-पतला लड़का था। उसकी एक टांग धनुष की तरह झुकी और दूसरी बिल्कुल सीधी थी।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि कुछ सप्ताह पहले ही इस लड़के को यहाँ लाया गया है। तब उसकी दोनों टाँगे झुकी हुई थीं। अब उनमें से एक ठीक हो चुकी है और पन्द्रह दिन तक दूसरी टांग भी ठीक हो जाने की पूरी सम्भावना थी। लड़के के माँ-बाप इसके बदले में मुखिया को बारह चूजे, एक बत्तख, तथा एक डोंगी देंगे। मुखिया के साथ-साथ मैं चौपाल तक गया। वहाँ एक विशेष प्रकार की डोंगी रखी थी। उसके एक किनारे पर बैठने को जगह इस प्रकार बनाई गई थी कि उसमें से दो नालियाँ, ढाल की ओर बन जाती थीं। उस लड़के को उसी स्थान पर लाकर बिठाया गया और मुड़ी हुई टांग एक नाली में रख दी गई। फिर तीन आदमी एक झोंपड़ी में से एक-एक तूंबा ले आये। उनमें कुछ सफेद-सफेद तरल पदार्थ भरा हुआ था। उन्होंने मुड़ी हुई टांग पर, नाली में वह तरल पदार्थ उलट दिया जिससे लड़के की टांग दिखाई देना बन्द हो गई। इसके बाद काले मटके में से वह औषधि लाई गई जो मुखिया बना रहा था। वह भी उसकी टांग पर डाल दी गई जिससे सफेद पदार्थ की तह पर एक सतरंगी चमक पैदा हो गई। मैंने उस तरल पदार्थ में उंगली डुबो कर

देखा। फिर खाली तूंबों को सूंघना चाहा परन्तु वे लोग जल्दी से उन्हें उठाकर ले गये।

अगली सुबह मुखिया और उसके साथियों ने झुकी टांग वाले लड़के को वहाँ से निकाला और बाहर एक मेज़ पर बिठा दिया। उसकी ऐंठी हुई टांग की खाल पर हाथी खाल की तरह झुर्रियाँ पड़ गई थीं और पिलपिली नजर आती थी। मुखिया के सहायकों ने उसके टखनों और जांघों को मेज़ पर गड़ी हुई खूंटियों के साथ कसकर बाँध दिया और धीरे-धीरे मुड़ी हुई टांग को हाथों से दबाने लगे। थोड़ी ही देर में टांग बिल्कुल सीधी हो गई। तब उन्होंने टांग पर कपड़े की गद्दी रखकर उसे चमड़े के फीतों द्वारा मेज़ के साथ ऐसा कसकर बांध दिया कि जोर लगाने पर भी घुटना ऊपर न उठ सके। इसके बाद मुखिया और उसके साथी कुटी में चले गये। एक औरत चावल की रोटियाँ और शोरबा ले आई, जिसे लड़का शान्त होकर खाने लगा।

उसी समय मैंने चुपचाप, आँख बचाकर डोंगी में पड़े हुए तरल पदार्थ में से एक बोतल भर ली। मैं अमेरिका में लाकर उसका विश्लेषण करना चाहता था जिससे मालूम हो सके कि उस दवा में क्या-क्या चीज़ें पड़ी हुई हैं। परन्तु एक औरत ने मुझे देख लिया और शोर मचा दिया। मुखिया एकदम कुटी से दौड़कर आया और मुझसे बोतल छीन ली। वह बहुत बिगड़ा और बोला कि यह हमारी गुप्त चीज़ है जिसे आप नहीं समझ सकते। इसके अतिरिक्त भी जो-जो मैंने उससे पूछा वह सबका यही उत्तर देता रहा।

उसके साथियों ने बैंगनी रंग की जड़ों के गट्ठे को., जो कुटी के बाहर रखा हुआ था, सूखे हुए पत्तों और सफेद रंग के गोंद के बड़े-बड़े टुकड़ों से ढक दिया। मन मे ख्याल उठा कि क्या ऐसे अविकसित और आदिम दवाखाने में भी हड्डी को बाँस की तरह लचकदार बना देने वाले तरल पदार्थ मिलने सम्भव हैं? हाँ, सम्भव हैं। आज की अनेक दवाएँ जड़ों, छालों , बेलों और फलों द्वारा तैयार की जाती हैं। अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में अनेक ऐसे खोजी दस्ते जाते रहते हैं जो दवा-दारू के काम में आने वाली जड़ी-बूटियाँ खोजकर लाते हैं। बहुत-सी जंगली औरतें एक विशेष प्रकार की जड़ चबाती हैं जिससे उनकी प्रसव-वेदना कम हो जाती है। चिली देश में आरकेनियन लोग गर्भपात के लिए एक पौधे का प्रयोग करते हैं। अमेज़न इण्डियन एक ऐसे गोंद को जानते हैं जिससे घाव और फोड़े ठीक हो जाते हैं। वे एक ऐसा तेल भी इस्तेमाल करते हैं जिससे मछलियाँ और कीड़े तो तत्काल मर जाते हैं लेकिन आदमियों को कोई नुकसान नहीं होता।

यदि एक दिन और मैं वहाँ ठहरता तो शायद उस पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ जान पाता। लेकिन, मुखिया से जब मैनें कुछ दिन और ठहरने की बात की तो वह इसके लिये तैयार न हुआ। साथ-ही-साथ उसने कहा कि राजा ने अपने दूत के हाथ आपके लिए यह आवश्यक आदेश भिजवाया है कि सूरज डूबने तक आप उनके पास

पहुँच जायें। उन आदिवासियों से बहस करना बेकार था इसलिए मैं चुपचाप राजा के गांव की ओर चल पड़ा।

राजा का नाम आह-तु-दैन-दूने था। उसने बड़े प्रेम से मेरा स्वागत-सत्कार किया। महोगनी के एक हजार लट्ठों का सौदा करने के लिए मैं उनके पास आया था, इसलिए वह बहुत खुश था। उसने एक बहुत साफ़-सुथरे मकान में मुझे ठहराया और यह भी कहा कि जब भी जिस चीज़ की ज़रूरत हो, उससे कहूँ।

जब हमारा सौदा तय हो गया तो मैंने उनसे कहा कि मेरी एक इच्छा है जिसे पूरी करने में आप सहायक सिद्ध हो सकते हैं। 'देवताओं की नगरी' नामक गांव में मुखिया एक ऐसी दवा के बारे में जानता है कि जिससे टेढ़ी टांग भी सीधी हो जाती है। कृपा करके मुखिया के नाम एक ऐसा आदेश-पत्र देने का कष्ट करें जिससे वह मुझे बता दे कि उसमें क्या-क्या चीज़ें पड़ती हैं। और उनके कुछ नमूने भी दे-दें जिन्हें मैं अमेरिका ले जा सकूँ।

राजा ने साफ इन्कार कर दिया। वह बोला, "यह मेरे अधिकार के बाहर की बात है। उन्हें मैं भी आदेश नहीं दे सकता। यह उनका अपना रहस्य है। क्या आपकी सरकार अमेरिका के डाक्टरों को यह आदेश दे सकती है कि वे अपने रहस्य उद्घाटित कर दें?"

इस पर मैंने रिश्वत देकर काम निकालना चाहा, पर उसका भी कोई परिणाम न हुआ। उस दवा का रहस्य उन लोगों के अतिरिक्त और किसी को भी ज्ञात न था। पन्द्रह दिन बाद नदी से नीचे की ओर लौटते हुए मैं फिर 'देवताओं की नगरी' में ठहरा। अब उस लड़के की टांगें बिल्कुल सीधी थीं।

इसके दो सप्ताह बाद, वहाँ से लौटने पर एक रोज सरकारी अस्पताल के चीफ़ मेडिकल ऑफिसर के पास बैठा हुआ था। मुझे शक था कि यदि मैं इससे 'देवताओं की नगरी' में देखी विचित्र दवा का ज़िक्र करूँगा तो यह निश्चय ही मेरा मज़ाक़ उड़ायेगा। फिर भी साहस करके मैंने उससे कहा, "जंगल के बीच में जो आदिवासियों की दजूक जाति है उसके पास एक अजीब चीज़ है। उससे एक टेढ़ी टांगों वाले लड़के की टांगें मैंने अपनी आँखों से सीधी होते देखी हैं। आपको शायद यकीन नहीं आएगा लेकिन ···

"हाँ, हमें मालूम है।" डच डाक्टर ने बात काट कर कहा, "जिस तरल पदार्थ का वे प्रयोग करते हैं, उससे हड्डी बांस की तरह लचकदार हो जाती है। काफी दिन पहले एक अमेरिकन कौंसल के पास दजूक जाति का लड़का नौकर था। उसकी टाँगें घुटनों के बीच लगभग आठ इंच झुक गई थीं। एक दिन वह लड़का गायब हो गया और साल भर बाद लौटा। उसकी टाँगें बिल्कुल सीधी थीं। मुझे शक हुआ कि हड्डियों को तोड़कर शायद दुबारा लगाया गया हो, इसलिए मैंने उसका एक्स-रे लिया,

लेकिन वे बिल्कुल ठीक थीं और कहीं से भी तोड़ी नहीं गईं थीं। लड़के ने ही बाद में बताया कि कई दिन तक उसे गरम तरल पदार्थ में बिठाया गया था और बाद में मेज पर बाँध, उसकी टांग को हाथों से दबाकर सीधा कर दिया गया। बस, इससे ज़्यादा हम कुछ नहीं जानते।"

कुत्ता राजा

महाराजा साहू (1682–1749) के समय की बात है। एक दिन क्रोध से भरा हाथी महाराजा साहू पर झपटा, किन्तु महाराजा के स्वामिभक्त शिकारी कुत्ते (ग्रेहाउण्ड) ने हाथी पर आक्रमण कर महाराजा की जान बचा दी। कुत्ते से प्रसन्न होकर महाराजा ने अपनी पगड़ी उसके सिर पर रख दी तथा गले में अपनी मोतियों की माला डाल दी। साथ ही उसकी वार्षिक आय ढाई लाख रुपये बाँध दी और उसे बीस गाँवों का जागीरदार बना दिया।

अद्भुत चोरियाँ

हाल ही में अमेरिका में फ़्लोरिडा की एक पुलिस चौकी में चोरी हुई और चोर टेलीफोन चुरा ले गये। इससे भी ज़्यादा मज़ेदार चोरी पोलैंड की राजधानी वारसा में हुई, जहाँ चोरों ने पुलिस की चौकी में से सिपाहियों के जूते ही ग़ायब कर दिये।

आयरलैंड में टिपेरेरी के पास साढ़े बारह मील लम्बी रेल की पटरी चोर ले गये। बहुत दिनों तक इस पटरी पर रेलों का आनाजाना बन्द हो गया था और अब इस पर फिर गाड़ियाँ चलाने की बात उठी तो पटरी ही नदारद थी। रेल की पटरियाँ, पटरियों के नीचे के तख्ते, सिगनल के बक्से, सिगनल और रेल के फाटक सब ग़ायब हो चुके थे। स्पेन और पोलैंड के रेल-सामग्री-विशेषज्ञ चोर चुन-चुन कर चीज़ें चुराते हैं। इन दोनों देशों में चोरों ने लोहे के पुल तक चुरा लिये। पोलैंड में तो रात ही रात एक पुल चोरी चला गया। स्पेन में 20 फीट लम्बा एक पुल ज़रा आराम से चुराया गया; ५ चोरों ने 10 दिन में पूरे पुल का सफाया कर दिया।

कुछ देशों में ऐसा नियम है कि चोरी का माल अदालत में पेश किया जाता है। चोरी के एक मामले में फ्रांस के एक मजिस्ट्रेट की अदालत इतनी छोटी पड़ी की उसमें चोरी का सारा सामान आ नहीं सकता था। बात यह थी कि चोर ने 3 कमरे का एक मकान ही चुरा लिया था, जिसमें लोहे की तीन छतें थीं और 6 फीट ऊँची चहारदीवारी भी थी। यह चोरी रातों-रात हुई और जब पुलिस तहक़ीक़ात के लिए गयी तो एक भी ईंट— एक भी लकड़ी का टुकड़ा नहीं मिला। लन्दन के बाहर एक बस्ती में एक चोर ने एक ईंट का भट्टा, जिसमें 120 फीट ऊँची धुंएँ की एक चिमनी थी, चुरा लिया था। बाद में चोर पकड़ा गया और फिर उसे 3 महीने की सज़ा दी गई। युद्ध के पूर्व मौंट्रियाल में एक मकान-मालिक ने किरायेदार न मिलने के कारण अपने आठ मकानों में ताले लगा दिये थे। किराया घटाने से अच्छा समझा उसने

मकानों में ताला डाल देना और एक दिन उसने देखा कि आठों मकान ग़ायब हैं। ईंटें, शहतीर और बिजली की फिटिंग से लेकर नींव की कँकरीट तक चोर सब ले गये। एक अंग्रेज़ी परिवार को तो अपने मकान के खूबसूरत बगीचे से ही हाथ धोना पड़ गया था, जिसे उसने कई साल लगा कर बनाया था। गरमी की छुट्टियाँ बिता कर जब यह परिवार लौटा, तो उसने देखा कि बग़ीचे का बग़ीचा ग़ायब है। पड़ोसियों ने बताया कि उन्होंने देखा था कि कुछ लोग लारियों में आये और सारा लॉन खोद कर ले गये। उन्होंने समझा कि शायद लॉन बेच दिया गया है, इसलिए किसी ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया।

इन सभी चीज़ों का कोई न कोई इस्तेमाल है। लेकिन उन चोरों को आप क्या कहेंगे जो चौपाये और सीढ़ियाँ तक चुरा ले जाते हैं। पेरिस के चिड़ियाघर के लिए दो ऊँट भेजे जा रहे थे, लेकिन चोरों ने उन्हें रास्ते से ग़ायब कर दिया। दूसरे दिन सुबह पुलिस ने उन्हें कोई 20 मील दूर सड़कों पर भटकता हुआ पाया। 1957 में एक अज्ञात चोर ने एक अमेरिकी चिड़ियाघर में घुस कर एक बड़ा सुनहरा बाज़ चुरा लिया। आप जानते ही हैं कि बाज़ कितना खूँख्वार होता है और इस बाज़ की तो चोंच दो इंच से भी अधिक लम्बी थी और अपने बुरे मिज़ाज के लिए वह मशहूर था।

कुछ साल पहले चोरी का एक और मजेदार किस्सा सामने आया। 16 साल के एक बच्चे ने लन्दन के चिड़ियाघर से कोई 24 सांप चुरा लिये, जिनमें से 8 ज़हरीले थे। यह लड़का साँपों को पकड़ने और उनकी देखरेख में माहिर था। वह बड़ी होशियारी से उन्हें थैले में डाल लेता था। उसने अपने घर के पास खास तौर की एक गर्म जगह बनवा रखी थी, जहाँ वह उन्हें छिपा कर रखता था। इस लड़के को सज़ा तो नहीं दी गयी लेकिन मजिस्ट्रेट की अदालत में दो साल तक नियमित रूप से हाज़िरी देने की आज्ञा दी गयी। साँपों में उसकी दिलचस्पी के अतिरिक्त यह भी मालूम हुआ कि वह बच्चा दुनिया में बहुत अकेला है।

कुछ चोर सनक में चोरी करते हैं। इटली के एक पार्क में एक प्रतिमा थी, जिसे स्थानीय लोगों ने घड़ा था। यह विशालकाय भारी प्रतिमा रातोंरात ग़ायब हो गयी और बाद में एक कूड़े के गड्ढे में पायी गयी। इस चोरी के लिए तीन आदमी गिरफ्तार किये गये। उनमें से एक चोर ने कहा, "मुझे इस मूर्ति से नफ़रत थी। यह इतनी कला-विहीन और भद्दी थी कि मेरे सौन्दर्य-बोध को इससे बहुत आघात पहुँचता था।" फ्राँस की एक 40 वर्षीया अविवाहित स्त्री को विवाह की अँगूठियाँ चुराने का शौक़ था। उसके लिए विवाह की अँगूठी, उसके जीवन में जो कुछ नहीं मिला उसका प्रतीक थी। बात समझ में आती है कि अपने उदास जीवन में उन अँगूठियों को चुरा कर वह सुख का सपना देखती हो। लेकिन आप कैलिफोर्निया के उस चोर को क्या

कहेंगे जो एक विशाल भवन से, जिसमें चाँदी तथा बहुमूल्य वस्तुओं का अपार भंडार था, केवल सामने का दरवाज़ा चुरा कर ले गया। दक्षिण अफ्रीका में डरबन में एक दवा के कारखाने में चोर घुसे और सारी बहुमूल्य दवाइयाँ अछूती छोड़ कर केवल सिरदर्द की ढाई लाख गोलियाँ ले गये। मोटर-चालकों को साल-भर में ज़्यादा से ज़्यादा 8 प्लगों की ज़रूरत पड़ सकती है, लेकिन कोलोरेडो में एक आदमी के मकान की जब पुलिस ने तलाशी ली तो उसके पास मोटर के कोई 3 लाख प्लग थे। चोर ने कहा मुझे उनकी गोलाई अच्छी लगती है।

कभी-कभी प्रेम भी चोरियाँ करवाता है। लीओनार्दो दा विंसी का संसार-प्रसिद्ध चित्र मोना लिसा की चोरी इसका उदाहरण है। यह चित्र 1911 में पेरिस से चुरा लिया गया। 2 साल तक न तो चित्र का और न चोर का पता चला। इसके बाद इटली में एक चित्र-विक्रेता के सामने चोर ने यह चित्र बेचने का प्रस्ताव रखा। विक्रेता जब पुलिस के साथ इस आदमी के होटल में पहुँचा तो वह चित्र एक सूटकेस से बरामद हुआ। इस आदमी का नाम था पेरुगिया। उसने कहा कि मुझे यह चित्र बेहद पसन्द था और मैं उसे हरदम अपने पास रखना चाहता था। लेकिन ग़रीबी ने मुझे यह चित्र बेचने को मजबूर कर दिया। बात यह थी कि मोना लिसा की सूरत उस लड़की से मिलती-जुलती थी जिसे पेरुगिया ने प्यार किया था और जो तपेदिक़ में मर गयी थी। इस चोर को एक वर्ष की क़ैद की सज़ा दी गयी, जिसका कुल क़सूर इतना था कि वह अपने प्रिय की मुस्कान चुरा कर अपने पास रखना चाहता था।

गुमनाम प्रेमी

बुल्गारिया की एक जैम फैक्ट्री में काम करने वाली युवतियों के नाम लगातार प्रेमपत्र आ रहे थे। कोई प्रशंसक अपनी कलम चला रहा था। और एक दिन उस गुमनाम प्रेमी का नाम भी पता चल गया। उनमें से एक युवती ने अपने पड़दादा का हस्तलेख पहचान लिया। वे थे 83 वर्षीय लेडिस्ला गोम्सचेंक।

पुराना बदला

डेनमार्क के एक मजिस्ट्रेट की अदालत में 66 वर्षीय हेल्मुट जेन्सन को पेश किया गया जिन पर कार तेज़ चलाने का आरोप था। मजिस्ट्रेट ने अपने पुराने स्कूलमास्टर को पहचान लिया। उसने उन्हें सजा दी— 'मैं अधिक सावधानी से कार चलाऊँगा' एक हज़ार बार लिखकर देने की।

सुगन्धित मस्जिद

ईरान के तब्रिज नगर में खड़ी मस्जिद में बनाते समय गारे और मसाले के साथ कस्तूरी मिलाई गई थी और आज 600 वर्ष उपरान्त भी सुगन्ध महसूस की जा सकती है।

देश की नाक

एक अंगरेज़ युवती ने इटली से क़ीमती घड़ी खरीदी। इंगलैण्ड आने पर उसे ज्ञात हुआ कि घड़ी विशेष क़ीमती नहीं है, उसे ठग लिया गया है।

युवती ने शीघ्र ही इटली के तत्कालीन अधिनायक मुसोलिनी को पत्र लिख कर इस घटना पर अपना क्षोभ प्रकट किया। लौटती डाक से मुसोलिनी की ओर से क्षमायाचना का पत्र आया और क्षतिपूर्ति के पैसे भी मिल गये। इसके बाद घड़ी के व्यापारी का पत्र भी युवती को मिला। उसमें लिखा था—

"अपनी भूल के लिए हम हृदय से क्षमा-प्रार्थी हैं। व्यापार में अनीति के कारण हमारी सरकार ने दुकान पर सील लगवा दी है। अब यदि आप सिफारिशी पत्र लिखें तभी हमारी दुकान खुल सकती है, अन्यथा नहीं।"

अंगरेज़ युवती ने इस व्यवहार के फलस्वरूप मुसोलिनी को सिफारिश का पत्र लिख दिया।

वधू या भेड़

बात बनकर बिगड़ गयी— लागोस में बाईस वर्षीय नाइजीरियाई विद्यार्थी इगोज़ी नाका को केवल इस बात पर अपनी शादी रद्द कर देनी पड़ी क्योंकि अपनी वधू की क़ीमत चुकाने के लिए उसे अपनी एक प्रिय भेड़ से जुदा होना पड़ रहा था।

अजीब क्लब

लायन्स क्लब और रोटरी क्लब तो सुनने में आते थे किन्तु मैसूर में 'गर्दभ क्लब' नामवाला एक अजीब क्लब भी है। इस क्लब की सदस्यता उन व्यक्तियों को उपलब्ध होती है, जो स्वयं का मज़ाक़ उड़ा सकते हैं और अपने आदर्श— गधे के धैर्य, सहिष्णुता तथा अध्यवसाय जैसे गुणों का अनुकरण कर सकते हैं।

बार्टर

आस्ट्रेलिया की एक अदालत को श्रीमती ऐलीन वाइल्स ने बताया कि उस के पति महोदय ने अपने पड़ोसी से कहा था कि वह बीयर की कुछ बोतलों के बदले में उसे देने को तैयार है। पत्नी को तलाक़ मिल गया।

सनकी

एथेन्स (यूनान) के 68 साल के मित्रो मैनोलिस पैदल संसार की यात्रा कर रहे हैं, यह सिद्ध करने के लिए कि दुनिया गोल नहीं चपटी है।

शिकारी

अमरीका में अपना घर बेच कर बिल सिम्स शिकार के लिए नाइजीरिया (उ० अफ्रीका) आये, पर अपने होटल के कमरे में रात को मकड़ी देख कर इतना डरे कि अगले दिन ही घर लौट गये।

बीट-प्रेमी

जर्मनी के दक्षिण में स्थित आस्टेलशिप नगर में किशोरों का तेज़ गति का 'बीट' संगीत उस समय नहीं बजाया जाता जब गायों के दुहने का समय आता है। कारण गायें उस समय अपनी सुध-बुध भूल जाती हैं और दूध नहीं देतीं— मुग्ध हो, रस्सा तुड़ा कर वे उस ओर भागती हैं जहाँ यह संगीत बज रहा हो।

दूध का जला

स्विट्जरलैंड के एलोई क्लेयर ने सत्ताइस साल तक होटल के वेटर की नौकरी करने के बाद एक होटल खरीदा है, जिसे वह खाली रखना चाहता है। कारण— "मैं नहीं चाहता, अब कोई घंटी बजा-बजाकर मुझे बुलाये।"

देर आयद

बैंकाक के 92-वर्षीय किसान लिम बिमसोंग ने अपने विवाह की 73वीं वर्षगांठ के दिन तलाक की अर्ज़ी अदालत में पेश करते हुए कहा: "हम दोनों का स्वभाव मेल नहीं खाता।"

मान गये

नार्वे का पन्द्रह साल का जोजन वास्ड एक दिन अपने स्कूल में अपनी तीन छोटी शैतान जुड़वाँ बहिनों को ले गया ताकि अध्यापकों को बता सके कि वह किस कारण घर पर काम नहीं कर पाता है। तीनों बहिनों की शैतानी देखकर अध्यापकों ने उसे घर का काम देना बंद कर दिया।

नाम वाले पेड़

कनाडा के वेनकुअर नगर में 58 वर्षीय आर्ट लार्स ने अपने बगीचे के सभी पेड़-पौधों पर किसी न किसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के व्यक्ति के नाम का लेबिल लगा दिया है। जब भी कोई प्रसिद्ध व्यक्ति मरता है, वह उसके नाम वाला पेड़ काट देता है।

नातिन के बजाय नानी

अर्जेन्टाइना के ब्युनस एयर्स नामक नगर में 22 वर्षीय डोलर्स केरिलो अपनी 24 वर्षीया मित्र पंचो सेगुसा के साथ उसके घर उसके परिवार वालों से मिलने गया।

वहाँ वह सेगुसा की 80 वर्षीया नानी से इतना प्रभावित हुआ कि वह सेगुसा के बजाय उनसे ही विवाह-प्रस्ताव कर बैठा। बाद में उसकी नानी के साथ उसने विवाह भी कर लिया।

पहला काम

योकोहामा के कागतो मँनीची के मरने पर उसकी पत्नी तथा सातों बच्चों ने पहला काम जो किया, वह था एक अच्छे होटल में खाना खाना और सिनेमा देखना। मँनीची ने अपने परिवार को जीवन भर घटिया-सस्ता खाना ही खिलाया था, सैर-सिनेमा आदि तो दूर की बात रही।

आधुनिक बुद्ध

इस्तम्बुल के यूसुफ मुस्तफा की पत्नी जब दसवीं संतान को जन्म देने वाली थी तब वह घर छोड़ कर भाग गया। कई दिन बाद पुलिस ने उसे एक पहाड़ी की खोह से पकड़ा। मुस्तफा ने बताया कि वह नौ संतानों को ही कठिनाई से पाल रहा था, अब दसवीं के होने पर उसने घर छोड़ देना ही अच्छा समझा।

सास का सताया

रिओ ड जेनिरो (ब्राज़ील) की एक अदालत ने विंसेंजो नामक युवक पर 16 डालर जुर्माना किया। अपराध! उसने कुत्तों के सम्मिलित रूप से भौंकने की आवाज़ की रेकार्डिग कर रखी थी, और जब भी उसकी सास सोती थी, वह उस रेकॉर्ड को लाउडस्पीकर पर बजाने लगता था। स्पीकर सास की चारपाई के पास रख देता था। उसके अनुसार, वह सास से उकता गया था और उसे भगाने के लिए ऐसा करता था।

सीरे की बाढ़

1919 में बोस्टन में सीरे की भयंकर बाढ़ आयी थी। शराब बनाने के लिए वहाँ जिस टंकी में सीरा जमा था, वह फट गयी और सारे शहर में तीन फीट गहरा सीरा ही सीरा फैल गया। इसका प्रवाह इतना तेज़ था कि पुल और मकान इसमें बह गये। शहर से सीरे की पूरी सफाई को पाँच साल लगे और बाद में भी उसकी बू कई साल तक आती रही।

मेंढक और मछली बरसते हैं

वर्षा में कुत्ते और बिल्लियाँ तो बरसती नहीं, लेकिन मेंढकों और मछलियों की बरसात कभी-कभी हो जाती है। मेंढकों के छोटे छोटे अंडे बवंडर में ऊपर उठ जाते हैं। जब इन अंडों से बच्चे निकल आते हैं और इनका वजन बढ़ जाता है तो वे धड़ाधड़ नीचे गिरने लगते हैं। इस तरह यहाँ मेंढकों की वर्षा होती है। ठीक इसी

प्रकार समुद्री तूफान और लहरों की चपेट में आकर 1 किलो वजन तक की मछलियाँ एक हिस्से से दूसरे हिस्से में जा गिरती हैं।

मय जाम के पी गए

गौहाटी की बात है। वहाँ के मेडिकल कालिज में एक सज्जन आपरेशन कराने गए। एक महीने से उन्हें भयंकर दर्द और रक्त बहने की शिकायत थी। अस्पताल में ऐक्स-रे किया गया तो पता चला कि शरीर में कोई विजातीय तत्त्व मौजूद है। सर्जरी विभाग के अध्यक्ष डाक्टर सी. महंत ने आपरेशन किया और उन सज्जन के शरीर में से ह्विस्की का जाम बरामद किया।

पता यह चला कि वे सज्जन बड़े पियक्कड़ थे और एक दिन बेहोशी के आलम में मय जाम के शराब पी गए थे।

दंड जो भूला न जा सके।

ब्रिटेन पर सम्राट एडवर्ड सप्तम शासन कर रहे थे। स्वयं सम्राट ने एक ऐसा अपराध कर दिया, जो दंडनीय था। सम्राट को दंड दें या न दें— इस बात की चर्चा हाउस ऑफ कामन्स और हाउस ऑफ लार्डस् में चली। अन्त में यह निर्णय हुआ कि मामला अदालत के सुपुर्द किया जाय। न्यायलय ने तहक़ीक़ात की, तो इस बात का पता चला कि सम्राट अपराधी हैं। सम्राट ने भी अपना क़सूर क़बूल कर लिया।

अब न्यायालय के सामने यह समस्या उपस्थित हुई कि सम्राट को सज़ा दी जाय तो कैसी दी जाय। आखिर न्यायाधीशों ने पूरे मामले की विस्तृत नक़ल तैयार करायी और ब्रिटिश शासन के अंतर्गत जितने न्यायालय थे, सबकी राय लेने के लिए इस आशय का पत्र लिखा कि इस अपराध के लिए कौन-सा दंड दिया जाय।

नियत तिथि तक अनेकानेक न्यायाधीशों ने अपने मंतव्य लिख भेजे। पर किसी की राय संतोषजनक नहीं निकली। न्यायाधीश पशोपेश में पड़े थे कि मद्रास के उच्च न्यायालय से एक पत्र गया। वह सर टी. मुत्तुस्वामी अय्यर का था। उच्च न्यायालय के सर्वप्रथम भारतीय जज होने का गौरव आप ही को प्राप्त है।

मुत्तुस्वामी अय्यर ने अपने पत्र में लिखा था कि न्याय के सामने शासक और शासित दोनों समान हैं। दंडविधान में इस बात से फ़र्क़ नहीं पड़ना चाहिए। क़सूर करने वाला चाहे सम्राट हो या सर्वशक्तिमान ईश्वर हो, दंड का भागी है। अपराध तो अपराध ही है। अपराधी को उचित दंड मिले— यही न्यायसंगत है। इसलिए हाँ, सम्राट एडवर्ड को जो दंड दिया जाये, वह कई शताब्दियों तक लोगों की याद में रहे— ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। मेरा सुझाव है कि कम-से-कम एक करोड़ सिक्कों पर उनका चित्र बेताज के बादशाह के रूप में छापा जाय। उच्च वंश में जन्म लेने वालों को यही बड़ा दंड है। इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार के दंड की मैं आवश्यकता नहीं समझता।

यह राय ब्रिटेन के उच्च न्यायाधीश को बेहद पसंद आयी। उन्होंने भरे दरबार में सम्राट के लिए यह दंड सुनाया, तो चारों ओर वाहवाही मच गई।

सास का भय

हम लोग तो पत्नियों से ही भयभीत रहते हैं, पर एथेन्स के उस युवक को क्या कहिएगा जो पत्नी तो पत्नी, अपनी सास के ही दर्शन से कांपने लगता था। 33 वर्षीय ग्रेग्रोरी पौलोस को जैसे ही पता चला कि उस की सास लगभग छह महीने तक रहने के लिए उसके यहाँ आ रही है, वह इतना भयभीत हुआ कि उसने अपने घर में ही आग लगा दी। पुलिस को उसने बताया कि न घर होगा, न सास आएगी।

एक और सास का सताया

हालैण्ड की 60 वर्षीय कारेन हेल्मा पर अपने दामाद पर अत्याचार करने के आरोप में एक अदालत ने भारी जुर्माना किया है। दामाद साहब ने उस पर आरोप लगाया था कि पिछले कई वर्षों से वह उससे अपने घर के बर्तन मँजवाती रही है। सास का कहना था कि उसने उससे अपनी लड़की ही इस शर्त पर ब्याही थी कि वह नियमित रूप से उसके घर के बर्तन मांजेगा। अदालत ने यह बात स्वीकार नहीं की।

अकेलेपन से घबरा कर

ब्राज़ील के एक चिड़ियाघर से एक रात अचानक एक रीछ, दो हिरन, पाँच कंगारू, आठ मोर तथा दस कछुए ग़ायब हो गए। कई दिनों की खोज के बाद पुलिस ने ये पशु-पक्षी 71 वर्षीय फेलिप अराजो के घर से बराबद किए। उसका कहना था कि अपने जीवन के अकेलेपन से घबरा कर वह इन प्राणियों को चुरा लाया था।

औसान

जलालखेड़ा के एक व्यक्ति को जहरीले साँप ने काटा। उसने जख्म से जहरीले खून को चूसने के लिए अपनी पालतू मुर्ग़ियों को लगा दिया। एक-एक करके 30 मुर्ग़ियाँ वह खून चूस कर मर गईं, लेकिन वह बच गया।

प्रेरणा के बदले तलाक

लॉस एञ्जेलीस की सिविल अदालत ने श्रीमती एवलिन आकमेन की तलाक-अर्ज़ी मंजूर करते हुए कहा कि उसके पति ने वास्तव में उसके साथ बहुत अन्याय किया है। उसके पति राइस आकमैन ने अपनी पुस्तक 'आत्महत्या करने के सैंकड़ों तरीक़े' की भूमिका में लिखा था कि यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा उसे अपनी पत्नी से मिली।

शादी में बरबादी

प्राग के 30 वर्षीय कार्ल लुडमाक ने विवाह के एक घंटे बाद ही तलाक़ के लिए अर्ज़ी दे दी। उसका आरोप था कि उसकी पत्नी चर्च में एक अतिथि को निरन्तर घूर रही थी।

महारानी की प्राणरक्षा

घने कोहरे को तेज़ी से चीरती हुई एक्सप्रेस ट्रेन लन्दन की ओर बढ़ रही थी। इस गाड़ी में अन्यान्य आरोहियों के अलावा महारानी विक्टोरिया भी थीं। सहसा ड्राइवर को लगा कि दूर कोई दैत्याकार व्यक्ति अपनी लम्बी बाँहें बढ़ा कर गाड़ी रोकने के लिए इशारा कर रहा है। काफी मेहनत करने के बाद गाड़ी रुक गई।

ड्राइवर और गार्ड दोनों रहस्य की जानकारी प्राप्त करने के लिए गाड़ी से उतर आए। लेकिन तब तक दैत्याकार व्यक्ति ग़ायब हो चुका था। आगे बढ़ कर जाँच करने के बाद कारण ज्ञात हो गया। दो सौ गज़ आगे एक नदी पर का पुल टूट गया था।

यह समाचार सुनकर महारानी विक्टोरिया ने प्राणदाता व्यक्ति को खोज लाने का आदेश दिया, पर वह कहीं नहीं मिला। पुल की मरम्मत होने के बाद गाड़ी लन्दन वापस आई। लन्दन में नियमानुसार जब इंजन की जाँच होने लगी तब रहस्य ज्ञात हुआ। सर्चलाइट में एक बरसाती कीड़ा फंस गया था। घने कोहरे में जब वह अपने पंखों को फैला कर सर्चलाइट के सामने आ रहा था, तब ड्राइवर को भ्रमवश उसकी मूर्ति दैत्याकार और उसके पंख लम्बे हाथ जैसे दिखाई दिए थे।

महारानी विक्टोरिया के आदेशानुसार उस कीड़े को ब्रिटिश म्यूज़ियम में रख दिया गया।

दाँत का डॉक्टर

अर्गट जैसे पंख वाला 'लैप विग' परिंदा भयावने मगरमच्छ के लिए दाँत का डॉक्टर है! यह साहसी परिंदा मगरमच्छ के ठीक मुँह में घुसकर, उसके कील जैसे दाँतों में से पानी के कीड़े और खाद्यकण निकाल लेता है। मगरमच्छ भी अनजान नहीं, वह इस 'मेहरबान' परिंदे को कुछ नहीं कहता।

सबसे ऊँचा पर्वत

दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत पानी में है। इसका नाम है 'डॉलफिन राइज़', जो उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक फैला हुआ है। इस पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पानी के ऊपर द्वीप के रूप से आती है जो है 'अज़ोर' और 'कॅनरी' द्वीप। यदि 'माउन्ट एवरेस्ट' को इन पहाड़ों के पास रखा जाय तो वह पानी में डूब ही जायेगा।

देर है पर अंधेर नहीं

हाल ही में लखनऊ के एक अस्पताल ने एक व्यक्ति को सूचना भेजी है कि अब तुम्हारा नम्बर आ गया है अतएव आ कर भर्ती हो जाओ। वह व्यक्ति दो वर्ष पूर्व दुर्घटनाग्रस्त हुआ था और तब उसे कोई बैड खाली न होने से अस्पताल में भर्ती न किया जा सका था। उसका नाम वेटिंग-लिस्ट में रखा गया था।

"बच्चे ... और बच्चे ..."

"दो या तीन बच्चे— बस ... डाक्टर की सलाह मानिए"— परिवार-नियोजन के ये बोर्ड आप जगह-जगह देखते होंगे। पर यह बात तो भारत की है। अब हालैंड के ब्लेकनहाम क़स्बे में जगह-जगह लगे पोस्टर देखिए। वहाँ इन दिनों अभियान चल रहा है— "बच्चे ... और बच्चे ..." कारण? कारण बहुत सीधा-सादा है। वहाँ के लोग कोई सेना नहीं बनाना चाहते, बस अपने क़स्बे में एक सरकारी हाई स्कूल चाहते हैं। सरकार हाई स्कूल किसी जगह तभी बनाती है जब वहाँ बच्चों की एक निश्चित संख्या हो। इस समय उस संख्या से 50 बच्चे कम हैं, अतः ब्लेकनहाम के निवासी यथाशीघ्र यह संख्या पूरी कर लेना चाहते हैं।

हिसाब बराबर

सम्बन्ध एक चीज़ है और हिसाब दूसरी। इन दोनों का कहीं कोई मेल नहीं। अब बेलग्रेड के एक चोर बोरिस यानीविश का ही उदाहरण लीजिए। वह एक रात किसी घर से चोरी करके आया। उसकी पत्नी ने पूछा— कहो मियाँ, आज कितना हाथ लगा? वास्तव में उसने चोरी की थी 170 डालर की, पर पत्नी से कहा कि कुल 62 डालर मिले। पत्नी ने आधा माल अर्थात् 31 डालर उससे ले लिए।

पर उसकी पत्नी को भी क्या कहा जाय! अखबारों में जब उसने पढ़ा कि चोरी 170 डालर की हुई है तब वह अपने पति के धोखे से इतनी क्रुद्ध हुई ... इतनी क्रुद्ध हुई ... कि पुलिस स्टेशन पहुँच गई और बेचारे पति को पकड़वा दिया। इस तरह उसने हिसाब बराबर कर लिया।

भाग्य का खेल

टर्की के एक होटल-बेयरा ने मालिक से झगड़ कर नौकरी छोड़ दी और अपनी बचत से एक होटल खोल लिया। तक़दीर का खेल! बेयरे का भूतपूर्व मालिक अब उसके होटल में बेयरा है।

नहले पर दहला

बुडापेस्ट के एक संगीतज्ञ के ऊपर आरोप लगाया गया कि उसने अपनी पालतू बिल्ली को चमकदार वार्निश-पेंट से रंग कर 'पशु के प्रति निर्दयत्ता' का

अपराध किया है। उसे अदालत से तभी छुटकारा मिला, जब उसने यह सिद्ध कर दिया कि ऐसा उसने इसलिए किया था ताकि अँधेरे में बिल्ली की पूँछ पैर से न दब जाय।

जानबूझ कर लापरवाही

इटली के ट्यूरिन नगर की अदालत ने 44 वर्षीय टूलियो पेत्रा को लापरवाही के आरोप में छह माह की सज़ा दी। उसका अपराध यह था कि उसकी सास मरी नहीं थी, पर वह उसे दफ़नाने क़ब्रिस्तान ले गया था।

अनोखा क्लब

क्लब तो कई तरह के बनाये गए हैं, पर एथेन्स के डेमेट्रियो द्वारा चलाए गए क्लब जैसा अनोखापन किसी में नहीं रहा। उसके क्लब के केवल वही लोग सदस्य बन सकते हैं जिनके दोनों नहीं तो एक पैर तो अवश्य ही लकड़ी का हो। डेमेट्रियो के दोनों पैर लकड़ी के हैं।

नन्हाँ जादूगर

टोकियो के एक सात वर्षीय बच्चे ने टेलीविज़न पर एक जादूगर को कीलें आदि खाते देखकर स्वयं भी एक कील निगल ली। फलस्वरूप उसका आपरेशन कर उसकी जान बचाई जा सकी।

ऐसा भी होता है

भारत में सिर्फ मुसाफिर ही रास्ता नहीं भूलते, रेलगाड़ियाँ भी रास्ता भूल जाती हैं। पिछले दिनों हावड़ा से बम्बई जाने वाली एक ट्रेन टाटानगर से दूसरा रास्ता पकड़ कर एक अनजान पटरी पर चलती रही। 4-5 मील जाने के बाद इस भूल का पता चला, तब ट्रेन का मार्ग परिवर्तन किया गया।

एक लड़ाई का इतिहास

पिछले दिनों जर्मनी के हैम्बर्ग नगर में संयोग का एक अद्‌भुत उदाहरण देखने को मिला। एक चौराहे पर दो कारें टकरा गईं। दोनों ड्राइवर उतर कर एक-दूसरे पर झपटे और गुत्थमगुत्था हो गए। काफी घायल अवस्था में अस्पताल पहुँचाए गए। पता चला कि ठीक दस साल पहले इसी चौराहे पर दोनों की मोटर-साइकिलों की टक्कर हुई थी और दोनों इसी तरह लड़े थे। उसके भी दस साल पहले दोनों की साइकिलों की टक्कर इसी चौराहे पर हुई थी और दोनों खूब लड़े थे। और इसके भी दस साल पहले, जब वे बच्चे थे, इसी चौराहे पर स्कूल से पैदल लौटते समय लड़े थे।

पत्नी-बदल

पंजाब के एक गाँव के लोगों ने उस पार्टी में धूम-धड़ाके से भाग लिया, जो दो भाइयों की पत्नी बदलने के उपलक्ष्य में दी गयी। घटना यों हुई कि उन दो सगे भाइयों में से, जो दो सगी बहनों से ब्याहे थे, बड़े भाई की पत्नी मर गयी, जिसके कारण उसने एक शिक्षित कमसिन युवती से पुनः विवाह किया, किन्तु शिक्षा एवं उम्र के लिहाज़ से स्वयं को नवयुवती के अयोग्य समझकर बड़े ने छोटे से पत्नी बदलने की इच्छा प्रकट की और छोटे भाई ने बिना किसी ऐतराज़ के पत्नी बदल ली।

अजूबा

आस्ट्रेलिया का 'पलाटिपस' एक पशु है लेकिन परिंदों की तरह अंडे देता है। इसकी बत्तख जैसी चोंच होती है और उसके पाँवों की उंगलियों में झिल्ली रहती है, जिससे वह बखूबी तैरता है। यह पशु शायद ऐतिहासिक काल से भी पहले की यादगार है, जब कि एक ही पशु में ज्यादातर मिले-जुले अंग— जैसे कि कुछ परिंदे के अंग, कुछ पशु के, रहते थे।

किश्ती ऊपर किश्ती

मैनचेस्टर में किश्तियाँ दूसरी किश्तियों के ऊपर से गुज़र सकती हैं। 'बार्टन एक्वीडक्ट' नामक पानी का पुल 'ब्रिजवाटर' नहर को 'मैनचेस्टर जहाजरानी नहर' के ऊपर से ले जाता है। 72 मीटर लम्बा यह 'एक्वीडक्ट' स्वयं ऊपर उठ जाता है और जहाजरानी नहर से बड़े बड़े जहाज आसानी से गुज़र सकते हैं।

मुर्गे लड़ाने का शौक़

मेड्रिड की घटना है। एक लड़की ने अपने प्रेमियों, 29 वर्षीय फिलिप रेवेलो तथा 27 वर्षीय अलफांसो केरेरा, से कहा कि वे दोनों कुश्ती लड़ें और जो जीतेगा वही उसे वरेगा। ताल ठोंक कर दोनों भिड़ गए। फिर कुछ देर एक दूसरे की टांग खींचने के बाद दोनों को ब्रह्मज्ञान हुआ। उन्होंने एक दूसरे से कहा कि जो लड़की शादी करने के पहले ही इतनी दुर्गति कर रही है, वह बाद में न जाने क्या करेगी।

आदिम युग की वापसी

लड़कियों को कपड़े पहनने की भी आवश्यकता नहीं, केवल शरीर के कुछ भाग रंग लेना ही काफी है, यह फैशन शुरू हो रहा है जार्जिया के अटलान्टा नगर से।

राख उड़ने लगी

पश्चिम जर्मनी की प्रसिद्ध 20 वर्षीया पाप सिंगर लिज़ेल ग्रुवर जिस समय रेडियो स्टेशन में अपने गीत 'अपने पीछे तुम आग और राख छोड़ते हो ...' की रिकार्डिंग करा रही थी, उसी समय उसके घर में आग लग गई। आग ने उसके घर को राख के ढेर में बदल दिया।

शर्त, सूअर और सूरमा

जान्सबर्ग का एक पचास वर्षीय किसान, नोह सापुद, एक शर्त जीतने के लिए 160 पौंड का सुअर अपने कंधे पर लाद 15 मिनट में एक मील की दौड़ लगा गया।

फीस में कान

मध्य प्रदेश के एक नगर में एक अध्यापक ने एक व्यक्ति का कान अपने दातों से काट लिया। उस व्यक्ति ने अपने भतीजे को पढ़वाने के बाद अध्यापक को ट्यूशन का पारिश्रमिक नहीं दिया था।

संगीत प्रेमी

मध्य प्रदेश के एक युवक के लिए मज़े-मौज का साधन ट्रांज़िस्टर भी आफत का कारण बना। घटना यों हुई कि देवी के दर्शन करके हाथ में ट्रांज़िस्टर लटकाये युवक जब वापिस आ रहा था, तो उसपर आ रही संगीत की स्वर-लहरी को सुनकर पास की झाड़ी से निकलकर सर्पराज ने उसका पीछा किया जिसके फलस्वरूप ट्रांज़िस्टर फेंककर युवक तो भाग गया, किन्तु सर्पराज तभी वहाँ से लौटे जब संगीत समाप्त हुआ।

आगे आगे देखिये

न्यूज़ीलैंड की सुन्दरी एला मिलर से विवाह कर उसके पति जैरी रॉक ने उसके बारे में एक पुस्तक लिखनी आरम्भ की, पर उसकी समाप्ति के पूर्व ही उसे जला दिया। कारण, उन्हीं के शब्दों में: "एला इस बीच में काफी बदल गयी है।"

ईर्ष्या

चेकोस्लोवाकिया के 24 वर्षीय जॉन क्लोक्स ने अपनी पत्नी के सुनहरी बालों की प्रशंसा में एक पड़ोसी द्वारा लिखी गयी कविता को पढ़ कर उसके बालों का रंग जबरदस्ती हरा करा दिया। अदालत ने उस पर जुर्माना किया है।

मुक्ति दिवस

जापान के एक तलाकशुदा पति हर साल अपनी 'मुक्ति' की सालगिरह मनाते थे। ऐसी ही एक सालगिरह में उनकी भेंट अपनी भूतपूर्व पत्नी से हुई। आज वे पुनः पति-पत्नी हैं।

गर्म झरने

न्यूज़ीलैंड, आइसलैंड और यलोस्टोन पार्क, व्योमिंग (यू० एस० ए०) जैसे ज्वालामुखी वाले इलाकों में 'गीज़र' नामक गर्म पानी के कुदरती झरने मौजूद हैं। इनके पानी का फव्वारा 76 मीटर तक ऊंचा उछलता है और पानी इतना गर्म होता है कि वहाँ के मूलनिवासी उसमें आलू और अंडे उबालते हैं।

जैट पक्षी

उत्तर ध्रुव की लम्बे पंख वाली बत्तख 'टेर्न' दाना-पानी के लिए एक पल भी बिना रुके, हर साल 'अतलांतक' पर से 35,400 किलोमीटर उड़कर जाती है। दूसरे क्षेत्र को जाने से पहले यह बत्तख अपनी चमड़ी के नीचे चर्बी के रूप में शक्ति जमा कर लेती है। इतनी लम्बी यात्रा के बाद उसका वजन 1/3 घट जाता है।

कलियुगी गाय

कलियुग का चौथा चरण गोहाटी (असम) में पड़ चुका है। वहाँ कामाख्या के मन्दिर की सीमा में घूमने वाली एक गाय मांसभक्षी बन गई है। वह चने और घास को सूँघ कर छोड़ देती है, पर मांस को बड़े चाव से खाती है। विशेषकर उसे कबूतरों का मांस प्रिय है। साधारणतया वह दिन भर में क़रीब छह कबूतर खा जाती है।

टोप की करामात

लन्दन की लम्बार्ड स्ट्रीट की घटना है। किसी दफ्तर की सेक्रेटरी महोदया तेज़ कदम बढ़ाती हुई जा रही थीं। एकाएक तेज हवा का झोंका आया और मिस साहिबा का टोप उड़ा ले गया। कई बांके-छैला नौजवान मिस साहिबा का टोप पकड़ने दौड़े, पर वह तो शायद छूमंतर हो गया था। मिस साहिबा का चेहरा रुआंसू हो चला तभी आकाशवाणी हुई— "यह टोप आपका है क्या मिस साहिबा?" मिस साहिबा ने आंखे ऊपर कीं और देखा— पचास फुट की ऊंचाई से एक क्रेन ड्राईवर उनका टोप हिला रहा है। हुआ यह था कि जैसे ही मिस साहिबा का टोप अंतरिक्ष-यात्रा के लिए उड़ा क्रेन-ड्राइवर ने उसे बीच में ही लपक लिया।

बात मिस साहिबा के शुक्रिया के साथ समाप्त नहीं हुई। इस भेंट के चार महीने बाद मिस साहिबा और क्रेन-ड्राइवर का विवाह हो गया।

नीरो : ओलम्पिक विजेता

हाल की खोजों से एक दिलचस्प तथ्य सामने आया है कि रोम के इतिहास-प्रसिद्ध सनकी राजा नीरो ने 66 ए. डी. में हुए ओलम्पिक खेलों में चार मेडल प्राप्त किये थे। यह खोज की अमेरिका की 'नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी' ने 'ओलम्पिक हिस्ट्री' लिखते समय।

'ओलम्पिक हिस्ट्री' के अनुसार रोम का यह अत्याचारी राजा ओलम्पिक खेलों में भाग लेने ग्रीस गया था। रथों की दौड़ में 29 वर्षीय नीरो अपने रथ से गिर पड़ा था, पर अन्य प्रतिद्वन्दियों ने उसके पद को देखते हुए अपने रथ रोक दिए, और जब नीरो पुनः अपने रथ पर सवार हो गया तब फिर से दौड़ शुरू हुई। गायन प्रतियोगिता में भी नीरो को प्रथम पुरस्कार मिला था। इनके सिवाय उसे वाद्यवादन तथा लम्बी दौड़ प्रतियोगिताओं में भी प्रथम पुरस्कार मिले थे।

पशुओं से सीखो

26 वर्षीय फ़िट्ज़ रियर और उसकी पत्नी एल्सा के बीच किसी झगड़े को लेकर हेम्बर्ग (प० जर्मनी) की अदालत में मुक़दमा चल रहा था। जज ने दोनों को चिड़ियाघर में कुछ दिनों तक रहने का आदेश दिया ताकि वे पशु-पक्षियों के प्रेमपूर्ण तथा सफल दाम्पत्य जीवन का अध्ययन कर सकें।

अक्लमन्द

कनाडा के एक उद्योगपति थियोडोर लावेल ने अपनी कोठी के दोनों ओर की कोठियाँ भी खरीद ली हैं। लेकिन रहने के लिए नहीं। केवल इसलिए कि पति-पत्नी के झगड़े का आनन्द पड़ौसी न उठा सकें।

शाही शवयात्रा

पूना के रविवार पेठ की एक गली में 'लम्बू' का जनाज़ा बड़ी शान से निकला। यह मिस्टर लम्बू सन्त-महन्त और कोई लब्धप्रतिष्ठ नेता नहीं बल्कि अपनी ईमानदारी और नेकचलनी के लिए प्रसिद्ध एक कुत्ता था। उसकी सेवाओं को याद कर गली के लोगों ने उसकी जो शाही शवयात्रा निकाली उसमें आगे आगे थे बाजे वाले, बीच में हाथगाड़ी पर था लाल वस्त्र में लिपटा, पुष्पों और गुलाल अबीर से अर्चित कुत्ता और उसके पीछे थे शोकमग्न नागरिक।

चोर की दाढ़ी में तिनका

इस्तम्बुल के एक अमीर ने सरकार से एक हवाई जहाज मार गिराने वाली तोप को खरीदने की अनुमति माँगी है। उसके अनुसार उसके महल के ऊपर कई विमान काफी नीची उड़ानें भरते हैं और पायलट ऐसा जानबूझ कर करते हैं ताकि उसके हरम की बेगमों को देख सकें।

गायक बन गया

ट्रिनिटी कॉलिज, केम्ब्रिज के सफाई करने वाले फ्रेंक क्लार्क से प्रिंस चार्ल्स को शिकायत थी कि वह प्रति सुबह 'ओ कम आल ई फेथफुल ...' गाना इतने जोर-जोर

से गाता था कि उनकी नींद खुल जाती थी। उनकी इस शिकायत पर क्लार्क वहाँ से हटा दिया गया और अखबारों में इस बात की चर्चा हुई। लोगों को आश्चर्य तब हुआ जब बाद में पाई कम्पनी ने क्लार्क से उसी गाने को रिकार्ड करने के लिए अनुबन्ध कर लिया।

सुख की खोज

मेड्रिड की सैनोरा थेरेसा लुज ने अपनी शादी के लिए फिर विज्ञापन दिया है। उसके 61 तलाक हो चुके हैं। यह उसका 62वें पति के लिए विज्ञापन है। और उसकी उम्र इस समय 97 वर्ष है।

अद्‌भुत मकड़ी

उत्तरी थाईलैंड की 'नेफिला' नामक मादा जाला मकड़ी 18 सेंटीमीटर चौड़ी होती है। इसके इतने बड़े जाल में छोटे-छोटे पक्षी तक फंस जाते हैं। इस जाति का नर मकड़ा मुश्किल से ढाई सेंटीमीटर चौड़ा होता है, और अपनी जान बची रहे, इसलिए वह अपनी मादा मकड़ी की पीठ पर सवारी करता है।

करकैंटा

दुनिया की सबसे बड़ी बह्मनी (करकैंटा) 'कामीदी' है, जिसकी लम्बाई 3 मीटर है। यह लेसर सनडेश (इन्डोनेशिया) में पायी जाती है; इसका वजन 135 किलो होता है। इस जाति की बह्मनियाँ हिरण और जंगली सूअर जैसे तेज़ जानवरों का पीछा करके उन्हें खा जाती हैं।

नकली दाढ़ी

विशेष समारोहों और शव-यात्रा के समय, पुराने ज़माने में मिस्र के शाही खानदान के लोग नकली दाढ़ी लगाया करते थे। इसे 'पॉस्टेश' कहा जाता है। तब यह सार्वभौमिकता की निशानी मानी जाती थी। यहाँ तक कि रानी भी दाढ़ी लगाया करती थी; फ़र्क इतना था कि उसकी दाढ़ी सोने की हुआ करती थी।

नाम और काम

कहानी लिखते समय बाल्ज़ाक को पात्रों के नाम रखने होते तो वह घूमने निकल पड़ते और घर के बाहर नेम-प्लेटें देखकर अपनी पसन्द के नाम चुन लेते। उन्हें एक कलाकार के नाम की ज़रूरत पड़ी। बड़ी खोज की उन्होंने— तब कहीं एक नाम भाया। वाह, यह आदमी ज़रूर कलाकार होगा।

बाल्ज़ाक ने अपने मित्र से कहा— 'पता लगाओ कि यह आदमी क्या करता है?' मित्र ने मालूम किया— आदमी दर्ज़ी निकला।

बहुत दुःख हुआ बाल्ज़ाक को— इतने सुन्दर नाम वाले व्यक्ति को तो ऊंचा कलाकार होना चाहिए था।

मित्र को बुलाकर बाल्ज़ाक ने कहा— 'कोई परवाह नहीं, मैं उसको प्रसिद्ध करके ही छोड़ूंगा— कलाकार बनाकर दम लूंगा।'

अन्त में वही हुआ। 'द अननोन मास्टरपीस' कहानी में वही दर्ज़ी एक कलाकार के रूप में चित्रित होकर अमर हो गया।

घर की फौज

इस्तम्बुल का फैयद जियाद नामक व्यापारी अपनी 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपने पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों आदि को दुनिया की सैर को भेज रहा है। उन सब की संख्या 136 है।

चोर की गांठ कटी

सिडनी के एक चोर की किस्मत! गया था बेचारा चोरी करने पर अपनी जेब कटवा कर चला आया। उसे उस घर में चोरी करने लायक़ तो कुछ मिला नहीं, उल्टे वापस आते समय उसका पर्स वहीं गिर गया। पर्स में 45 डॉलर के नोट थे।

चींटियों का टिकट

गर्मी की तेज़ लहर ने आकलैण्ड की चींटियों, मक्खियों तथा मच्छरों की नस्ल का ही नाश कर डाला है। मनुष्य इससे भले ही राहत की सांस लें पर कीबी तथा एन्ट-ईटर जैसे प्राणियों की इससे भूखों मरने की नौबत आ गई है। इन प्राणियों को भूख से मरने से बचाने के लिए वहाँ के चिड़ियाघर के अधिकारियों ने प्रवेश शुल्क एक डिब्बा चींटियाँ तथा मक्खियाँ निश्चित कर दिया है।

एक धंधा फायदे का

मिलान के एक सरकारी गुप्तचर सेबासटिनो अमार को भिखारियों का धंधा समाप्त करने का काम सौंपा गया। अनुभव करने के लिए वह एक दिन स्वयं भिखारियों जैसी पोशाक पहने भीख माँगने बैठ गया। शाम को उसने आश्चर्य से देखा कि उसके पास 50 डालर की रक़म इकट्ठी हो गई है। उसने अब नौकरी इसलिए छोड़ दी है क्योंकि वह समझता है कि यह धंधा कहीं अधिक आसान तथा फायदे का है।

हनुमान की पूंछ

केवल 176 एकड़ में फैली झील जिसमें से प्रति घण्टा दिन रात 1 लाख गैलन पानी निकाला जाता है, किन्तु फिर भी उसकी जल-सतह नहीं घटती।

यह दक्षिणी आस्ट्रेलिया के माउण्ट गैम्बियर की ब्लू लेक का वर्णन है। इस झील में से प्रतिदिन लगभग 25 लाख गैलन पानी नगरपालिका के स्टोरेज टैंकों में उलीचा जाता है— साल में लगभग 80 करोड़ गैलन पानी।

इस झील में कोई नदी या झरना आकर नहीं मिलता, न इसमें अन्दर ही अन्दर कोई पानी का स्रोत ढूंढा जा सका है। फिर भी लगातार इतने विशाल परिमाण में पानी कम होने पर भी इसकी सतह सर्वदा एकसी रहती है।

बहुत दिनों तक यह सोचा जाता रहा कि इस झील की तह नहीं है किन्तु अब पता चला है कि इसकी अधिक से अधिक गहराई 266 फीट है।

साथ ही यह झील अपना रंग भी बदलती है। हर साल नवम्बर या दिसम्बर में इसका रंग गहरा नीला हो जाता है और फिर जून में दुबारा हरा। नीला रंग इतना सुन्दर होता है कि झील आस्ट्रेलिया का प्रसिद्ध पर्यटक स्थान बन गई है। इस रंग परिवर्तन का पानी पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता, वह स्फटिक के समान स्वच्छ रहता है।

विश्व का सबसे शालीन भिखारी

पोर्तुगाल का देशभक्त, अन्टोनियो वियइरा (1608-92) अनेक वर्ष तक राजा जॉन चतुर्थ के सिर रहा कि धन बचाकर एक जलसेना बनाई जाये क्योंकि पोर्तुगाल की उसकी बहुत सख्त ज़रूरत है। किन्तु राजा का हर बार उत्तर था कि राजकोष बिल्कुल खाली पड़ा है और इस बारे में सोचना भी पागलपन है। इस पर वियइरा ने भिखारी के फटे पुराने वस्त्र पहने और पोर्तुगाल की सड़कों की खाक छाननी आरम्भ की। हर यात्री और गुज़रने वाले से वह भीख मांगता था। जब उसके पास लगभग तीन लाख क्रूसेडो (पोर्तुगाली सिक्का) हो गये तब उसने 15 पोत ख़रीदे जिनमें से प्रत्येक पर 15 तोपें चढ़ी हुई थीं और यह जहाजी बेड़ा सरकार को भेंट कर दिया।

संसार की सबसे अजीब खुराक

इटली में फ्लोरेन्स का रहने वाला एन्टोनियो मेग्लियाबेची (1633-1714) ग्रांड डयूक कोसियो तृतीय का पुस्तकाध्यक्ष था। उसे यह विश्वास था कि कड़े उबाले हुए अण्डे खाने से उसकी स्मृति बढ़ेगी, इसलिये उसने 40 वर्ष तक इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं खाया। वह अपने पुस्तकालाय की 30,000 पुस्तकों में से किसी का कोई भी वाक्य या पूरे पैरे के पैरे स्मृति से सुना सकता था।

केवल एक दिन

सूरत ज़िले में उनई का गरम पानी का झरना है जिसकी बड़ी मान्यता है और वर्ष भर वहाँ यात्री एकत्रित होते रहते हैं। फिर भी वे उसमें नहा नहीं सकते क्योंकि पानी इतना गरम है कि त्वचा उसे सह नहीं पाती। साल में केवल एक दिन ऐसा है

जब उसके पानी का तापक्रम नीचे गिर जाता है। मार्च की पूर्णमासी को उसका ताप 20° नीचे गिर जाता है और यात्रीगण उस दिन उसमें नहाकर पुण्य लूटते हैं।

मास्को लन्दन के कूड़े से बना

मास्को 1812 की महान् अग्नि में बहुत नष्ट हो गया था। रूसी सरकार ने लन्दन के बैटल ब्रिज के पास एक टीला खरीद लिया। उसमें से राख की एक लाख से ऊपर गाड़ियाँ भरी गईं। इस अंगार राख से बनी ईंटों से मास्को दुबारा बनाया गया।

पेटदर्द का इलाज

पीथमपुर की मुरमरी नामक स्त्री पेट के भयंकर दर्द से पीड़ित थी। उसे दवाई के रूप में बताया गया कि वह बिना खाना खाये, पानी पिये तथा सोये चावल के दस लाख दाने छांटकर अलग करे। यह काम उसने 92 घंटे में पूरा किया। और उसका पेटदर्द का रोग बिल्कुल गायब हो गया।

छप्पड़ फाड़कर

काउन्टेस पेम्ब्रोक का पुत्र तथा उत्तराधिकारी राबर्ट हेनरी आवारा और घरफूंक निकला तो उसने अपने लगभग 70 लाख रुपये के हीरे, मोती और नीलम लोहे के सन्दूक में बन्द करके लन्दन के एक बैंक में सन् 1831 में रखवा दिये। और फिर दोनों इस सन्दूक के बारे में भूल गये। यह खज़ाना बैंक में 80 वर्ष तक रखा रहा और पेम्ब्रोक के अर्ल को बैंक ने 1911 में लौटाया। बेचारा अर्ल छप्पर फाड़कर आई दौलत से भौंचक्का रह गया।

हिनहिनाने का साम्राज्य

दारयवहु महान् ने (521-485 ई० पू०), जो अपने समय के सबसे बड़े साम्राज्य का सबसे महान् सम्राट् था, फारस का सिंहासन अपने घोड़े के हिनहिनाने पर जीता था। अपहारक स्मर्दिस के मरने के बाद फारस के सिंहासन के सात उम्मीदवार थे। यह तय हुआ कि सातों अपने अपने घोड़ों पर चढ़े सूर्योदय के समय नगर के बाहर किसी स्थान पर मिलेंगे और जिसका घोड़ा पहले हिनहिना देगा वह फारस का सम्राट् बन जायगा। चालाकी से दारयवहु का घोड़ा पहले हिनहिनाया। वह गद्दी पर बैठा और 36 वर्ष राज्य करके अमर हो गया।

झील जो बनी और मिट गई

न्यूज़ीलैण्ड में टूटीरा के पास 1931 में भूचाल आने के कारण एक झील बन गई जिसकी लम्बाई $1\frac{1}{2}$ मील, चौड़ाई $\frac{1}{2}$ मील और गहराई 100 फीट थी। सात वर्ष बाद वहाँ भयानक बाढ़ आई और पानी उतरने पर वह झील गायब हो गई थी।

मौनव्रतधारी

बर्मा में यामेथिन का राजा थिलवा बहुत शान्त रहता था। लगातार पचास वर्ष तक वह किसी भी दिन तीन शब्द से अधिक नहीं बोला।

भविष्यवक्ता बुद्ध

मांडले में सेतक्याथिन पैगोडा की कांस्य की बुद्ध की मूर्ति राजा बाग्यीडा ने बनवाई थी। उसे यह चेतावनी दी गई थी कि यदि मूर्ति अपने स्थान से हिलाई गई तो राष्ट्रीय संकट उपस्थित हो जायगा। राजा ने चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया और मूर्ति को 1823 में आवा में स्थानान्तरित कर दिया। उस वर्ष प्रथम एंग्लो-बर्मी युद्ध छिड़ गया। फिर मूर्ति को 1852 में अमरपुर में ले जाया गया और उसी वर्ष द्वितीय एंग्लो-बर्मी युद्ध आरम्भ हो गया। तीसरी बार उसे फिर मांडले में 1885 में ले जाया गया और तीसरा एंग्लो-बर्मी युद्ध छिड़ गया। तब से मूर्ति नहीं हिलाई गई है।

पागल कवि

फ्रीडरिख हील्डरलिन (1770-1843) जर्मनी का प्रसिद्ध साहित्यिक व्यक्ति है। उसकी कुछ सर्वोतम कविताएँ तब लिखी गई थीं जब वह निपट पागल था। अपने जीवन के अन्तिम 41 वर्ष उसने पागलपन में काटे।

भुतहा महल

इटली में उस्सेल का भुतहा महल 1350 ई० में बनाया गया था। यह केवल सूर्योदय या सूर्यास्त के समय दिखाई पड़ता है। बाकी समय जब सूर्य की किरणें तेज़ सीधी इस पर पड़ती हैं तब यह जिस पहाड़ी पर खड़ा है, उसमें घुल मिल जाता है और अन्तर्धान हो जाता है। भवन-निर्माताओं को उस समय भी प्रकाशिकी का अद्‌भुत ज्ञान था और यह जादूगरी उन्होंने पत्थर के रंग, भवन की वस्तुतः स्थिति, तथा छाया और प्रकाश के अद्‌भुत मेल से प्राप्त की।

भूत का बदला

नाइजीरिया की इक्वे जनजाति में खूनी पर न मुकदमा चलाया जाता है, न उसे सज़ा दी जाती है। वहाँ यह विश्वास है कि मृतक की आत्मा स्वयं खूनी को मार डालेगी और इस विश्वास के कारण खूनी सर्वदा साल भर के अन्दर-अन्दर स्वयं मर जाता है।

वोट का मूल्य

लार्ड चैस्टरफ़ील्ड अपने मित्र के लिये पार्लियामेन्ट की वोट मांग रहे थे। यकायक उन्हें एक वोटर ऐसा मिला जिससे मिलना मुश्किल था। उन्हें पता चला कि

वह एक डाक्टर है और उसे रक्त निकालने का मीनिया है। वे एक तथाकथित रोगी का रूप धर कर उसके शफाखाने में पहुँचे। चैस्टरफ़ील्ड के काल्पनिक रोग को डाक्टर ने रक्त निकाल देने से अच्छा होने की युक्ति बताई और लार्ड ने बड़ी नम्रता से यह बात मान ली। उनके रक्त का एक पिन्ट निकल गया किन्तु वह वोट मित्र को मिल गई।

सबसे लम्बा शासन

मिन्दी (1272-1385) बर्मा में अराकान राज्य की गद्दी पर सात वर्ष की अवस्था में 1279 ई० में बैठा था और उसने लगातार 106 वर्ष तक शासन किया जब तक कि वह 113 की अवस्था में 1385 में मर न गया। वह लौंगयत वंश का नवम राजा था। उसके पिता मिन्बिलु ने उसे पैदा होते ही मार डालना चाहा। उसे नदी में फेंक दिया गया और मरा समझ लिया गया। लेकिन उसे एक मछेरे ने बचा लिया जिसने उसे राज्य के सुदूर भाग में भेज दिया। बाद में उसे सिंहासन मिल गया जब वह सात वर्ष का था। उसका शासन इतिहास में सबसे लम्बा है।

मोची बादशाह

5 अगस्त, 1695 को विद्रोही सैनिकों ने अल्जीयर्स में शाही महल पर हमला किया और शासक हाजी छबन को उतार कर क़ैद कर दिया। उन्हें उसका उत्तराधिकारी बहुत शीघ्र ढूँढना था। जैसे ही वे महल से बाहर निकले, उन्हें सबसे पहले हाजी अहमद नाम का गरीब मोची मिला जो महल के बाहर बैठा जूते गांठ रहा था। जब तक उसकी कुछ समझ में आये कि क्या हुआ है, सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया, महल के राजदरबार में ले गये और वहाँ उसको अल्जीयर्स का नया शासक बना दिया। हाजी अहमद ने अल्जीयर्स पर 5 अगस्त 1695 से जुलाई 1698 तक शासन किया जिस दिन वह प्लेग से मर गया।

आरामदेह बिस्तर

खुमारबे को, जो मिस्र का 884 से 896 तक सुलतान रहा, नींद न आने की बीमारी थी। इस बीमारी को ठीक करने के लिये वह एक अजीब तरीक़ा काम में लाया। उसने 100 फीट चौकोर की एक झील बनवाई और उसमें पारा भरवा दिया। पारे के ऊपर उसने चमड़े का गद्दा बिछाया जिसमें हवा भरी थी। गद्दे के चारों कोने चांदी के खम्भों से रेशमी रस्सी से बंधे थे। कुछ साल हुए पुरातत्वविदों ने इस पारे की झील को खोज निकाला है।

प्रायश्चित का पैगोडा

धम-यन-गई का पैगोडा, जो बर्मा में पगन नामक नगर में स्थित है, राजा नरथू ने 1187 ई० में अपने 101 वर्षीय पिता राजा अलौंग-सिथु को, जिसने पगन पर 75

वर्ष तक (1112-1187) तक राज्य किया था, गला घोंट कर मार डालने के प्रायश्चित्त-स्वरूप बनवाया था। हत्या के उपरान्त, नये राजा ने स्वप्न देखा कि उसके पिता उसके सम्मुख खड़े हैं और उसे आदेश दे रहे हैं कि वह एक पैगोडा बनाये जिसमें उनकी 101 सोने की मूर्तियाँ— उनकी अवस्था के हर वर्ष के लिये एक— लगाई जाय। ऐसा ही नये राजा ने किया।

अद्‌भुत सड़क

श्रीलंका के राजा मदथिका महा नाग (6-18 ई०) ने कदम्ब नदी के तट से नवनिर्मित अम्बथला पैगोडा तक एक सात मील लम्बी सड़क बनवाई थी और उस सड़क पर सारी लम्बाई पर कीमती पूर्वी कालीनों का फर्श लगवाया था जिससे उसकी प्रजा पूजा करने के लिये स्वच्छ पगों से पैगोडा में घुसे।

संयोग की बात है ...

इटली के सम्राट उम्बर्टो को 28 जुलाई, 1878 के दिन जैसा व्यक्ति देखने को मिला था, वैसा उन्होंने जीवन में पहली और अन्तिम बार ही देखा था। उस दिन सम्राट एक बड़े होटल में अपने सेनापति के साथ भोजन कर रहे थे। अचानक उन्होंने एक व्यक्ति को अपने सामने आते देखा। देखने में वह होटल का मालिक मालूम पड़ता था। कुछ ही पलों में वह सम्राट के क़रीब आ गया तथा उन्हें फटी-फटी आंखों से देखने लगा। सम्राट भी उसे देखते ही आश्चर्य से बोले—

'आपका परिचय? कहीं पहले देखा मालूम होता है?'

'जी दर्पण में देखते ही होंगे। मुझे उम्बर्टो कहते हैं। मैं 18 मार्च 1844 को पैदा हुआ था।'

'कमाल है। यही तो मेरा नाम और मेरी जन्म तिथि है। आपकी पत्नी— बच्चे?'— सम्राट बोले।

'जी मेरी पत्नी का नाम मार्गरीता है और मेरे एकमात्र पुत्र का नाम विन्तोरियो'— व्यक्ति ने कहा।

'अद्‌भुत, सब कुछ मेरा ही मेरा। यह होटल तुमने कब सम्भाला?'

'9 जनवरी, 1878 से।'

'उसी दिन तो मैंने राजगद्दी सम्भाली थी। आश्चर्य है, हम दोनों अब तक न मिल सके, कल मुझसे फिर मिलोगे क्या?'

'ज़रूर, कल आप खेलों में पुरस्कार देने तो आयेंगे ही, तभी आपसे फिर मुलाकात करूंगा।'

परन्तु दुर्भाग्यवश दोनों पुनः न मिल सके। दोनों ने पुनः मिलने के पूर्व ही दुनिया से विदा ले ली। होटल मालिक उम्बर्टो सुबह ही अकस्मात भरी बन्दूक का निशाना बने और सम्राट उम्बर्टो को खेल समारोह के मध्य एक आततायी की दो गोलियों ने ठण्डा कर दिया।

चार का अंक

जर्मन सम्राट चार्ल्स के साथ 'चार' के अंक का विशेष संयोग था। दरअसल सम्राट स्वयं भी 'चार' के अंक का प्रेमी था। वह नित्य चार प्रकार के भोजन करता था और चार तरह की शराब पीता था। उसने चार महल बनवाये थे। प्रत्येक महल में चार कमरे थे। प्रत्येक कमरे में चार खिड़कियां, चार दरवाजे, चार मेज़ें और चार कुर्सियां थीं। उसके मुकुट में चार धारियां थीं और प्रत्येक धारी में चार उच्चकोटि के लाल जड़े थे। वह चार भाषाओं का ज्ञाता था। उसके चार ही विवाह हुए। उसकी प्रत्येक पत्नी के चार बच्चे पैदा हुए। उसकी शाही बग्घी में चार घोड़े जुतते थे। उसने अपने साम्राज्य को चार भागों में बांटा था। प्रत्येक भाग में चार कप्तान और चार जनरल नियुक्त थे। उसकी मृत्यु के समय चार डाक्टर उसके पास थे। वह चार नवम्बर, 1378 को चार बजकर चार मिनट पर मरा था तथा जिस दिन मरा था, उस दिन उसके राजकाल का चौथा वर्ष पूरा होना था।

कल्पना सत्य हुई

वेण्डी ब्याइज़ नामक एक लेखिका ने एक अमेरिकी उपन्यासकार के उपन्यास के बारे में अखबारों को बताया था, जिसमें एक काल्पनिक समुद्री जहाज 'स्टान' की गाथा लिखी थी, जो अपने समय का विशाल जहाज था। यह प्रथम बार यात्रा पर निकला तो प्रशान्त महासागर में बर्फ के तूफान में फंसकर दब गया। इस काल्पनिक कथा के लिखने के 14-15 वर्ष बाद अप्रैल 1912 में इंगलैण्ड से अमेरिका जाने वाला एक विशाल जहाज तूफान में फंसकर तबाह हो गया तथा उसमें सवार 1500 व्यक्ति डूबकर मर गये। अजीब और अद्‌भुत संयोग ये था कि दोनों ही जहाजों के नाम एक थे। दोनों के साथ एक सी दुर्घटना घटी थी और तारीख महीना भी एक था। जिस स्थान पर यह वास्तविक घटना घटी थी, उपन्यास में भी उसी स्थान को दुर्घटना स्थल बताया गया था।

लिंकन और केनेडी

इस विचित्र संयोग को तो सब ही जानते हैं, जो अमेरिका के राष्ट्रपतियों अब्राहम लिंकन और जान० एफ० केनेडी के साथ घटा। लिंकन को 1860 में और केनेडी को 1960 में कत्ल कर दिया गया था। दोनों की हत्या रहस्यमय हत्यारों द्वारा हुई। दोनों के उत्तराधिकारियों के नाम एक जैसे थे। लिंकन के उत्तराधिकारी एण्ड्रम्

जानसन का जन्म 1808 में हुआ था तथा केनेडी के उत्तराधिकारी लिंडन जानसन का जन्म 1908 में हुआ था। लिंकन के हत्यारे का जन्म 1839 में और केनेडी के हत्यारे का जन्म 1939 में हुआ था। दोनों की हत्याओं के मुक़दमों के निर्णय से पूर्व समाप्त करना पड़ा। लिंकन के सेक्रेटरी का नाम केनेडी था और केनेडी के सेक्रेटरी का नाम लिंकन था। दोनों के सेक्रेटरी ने उन्हें बाहर जाने से मना किया था। दोनों के हत्यारे रहस्यमय ढंग से अपने अपराध के विषय में कुछ बताने से पूर्व ख़त्म कर दिये गये तथा संसार को मालूम न हो सका कि उन्होंने हत्याएँ क्यों और किसके इशारे पर की थीं।

पुस्तक के लेखक श्री अरुण एक अध्ययनशील व्यक्ति है। वर्षों के अध्ययन के आधार पर आपने अपनी प्रस्तुत पुस्तक **'धर्म और संस्कृति कोश'** में आश्चर्यजनक और कौतूहलपूर्ण घटनाओं एवं प्रसंगों का रोचक वर्णन किया है। इस विशाल संसार में, जिसमें हम रहते हैं, अद्भुत और आश्चर्यजनक बातों का अपूर्व भंडार है। अतीत में बहुत सी ऐसी बातें घटी हैं और सैकड़ों प्राकृतिक तत्व ऐसे हैं, जिनके विषय में सुनने और पढ़ने से सहज में विश्वास नहीं होता है, पर यह ध्रुव सत्य है कि अविश्वसनीय होने पर भी वे अवश्य घटित हुई हैं।

ऐसे ठीक राह दिखाने वाले धर्म को, उससे उत्पन्न विचारों को और उनसे आच्छादित मानवों को मैंने इस कोश में एकत्र करने की चेष्टा की है।

हमारे विद्वानों ने थोड़े में बहुत को कहने का प्रयास किया है। ऋग्वेद में उसे सूक्त कहा गया है, कुछ शब्दों में बहुत समझाने का। पाणिनी ने तो अपने सूत्रों में सीमा पार कर दी, चार पाँच शब्दों का अर्थ समझने-समझाने में पूरा पृष्ठ लगता है। मैंने भी धर्म सम्बन्धी रीति को कम से कम शब्दों में व्यक्त किया है।

मनुष्य पर संस्कृति की क्या प्रक्रिया चलती है, उसके क्या अनुभव होते हैं और उसकी क्या मानसिक प्रतिक्रियायें होती हैं तथा वे उन्हें कैसे अपने लेखन में उजागर करते हैं। उन सुभाषितों को भी मैंने इस कोश में स्थान दिया है।

साथ ही दैनिकी, रोजनामचा, जर्नल के साथ, कुछ स्पष्ट विचार, विचारों के टकराव और अनुभवों को मूर्त रूप में प्रकटाया है।

पुस्तक को पढ़कर पाठक का मनोरंजन तो निश्चय ही होगा, पर साथ ही साथ उसे सैकड़ों नयी बातों का भी परिचय प्राप्त होगा, जिससे उसका ज्ञान का भण्डार बढ़ेगा। ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से यह पुस्तक अद्भुतता और रोचकता के लिए सत्य का बोध कराती है।

विश्वास है अरुणजी की अन्य कृतियों की भांति उनकी इस कृति का भी स्वागत होगा।

ISBN: 81-7487-488-7 (Set)
ISBN: 81-7487-489-5 (भाग-1)
ISBN: 81-7487-490-9 (भाग-2)

Rs. 1150/-
(दो भागों में)